महामहोपाध्याय पं० शिवदत्तशर्मा

तत्त्वका उचित उपदेश पाये विना इस संसारमें अबतक किसी प्रकारकी उपासना विधिका हम अल्पज्ञजनोंको ज्ञान नहीं हुआ और उपास्य उपासकके तत्त्वका विचार उपास्य और उपासकके स्वरूपका पूर्णज्ञान हुये विना इस तत्त्व (ब्रह्म) की मूर्तिको विना हृदयमें धारण किये उपासना और साधन कार्य कदापि पूर्ण नहीं होसकता तब उन भक्तजनोंका प्रेम देखकर श्रीस्वामीजीनें अपना अनुभव कथन किया ऐसा प्राकृत भाषामें सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार ग्रंथ रचकर प्रगट किया और यह ग्रंथ वास्तवमें योगमार्गहीका कथा वरन् समग्र ४ सम्प्रदाय वैष्णवादिका मत सब धर्म मजहबका मत पथ आसुरी व दैवी प्रकृतिका वर्णन श्रावक और श्वेताम्बरी जती ढूंढियोंका धर्मका वर्णन इसमेंहै उक्त महाराजको बाल्यावस्थासेंही परमेश्वर के भजन गानेमें कथा श्रवण करनेमें सत्संगी जनोंका संगकरनेमें बड़ाही प्रेम था महाराजने जो संसारकी लुभानेवाली अतुल संपत्तिको तिनकेकी समान समझकर भगवत्प्रेममें मतवालेहो वानप्रस्थ आश्रम धारण कर वनकोचलेगये थे क्योंकि (तृणं ब्रह्मविदः स्वर्गस्तृणं शूरस्य जीवितम्, जिताक्षस्य तृणं नारी निस्पृहस्य तृणं जगत्) इत्यादि वचनोंसें महात्मा संसारमें विरक्तही होवेहैं जिस समय यह ग्रंथ प्रारंभ किया तब उक्त महाराजका निवास राजधानी अलवरके स्टेशनसें कुछ दूर जंगलमें सेठोंके बागमें था सो कुछ वर्ष वहां निवास करते रहे बादमें मेरे रामके बहुतही आग्रह करनें सें मुझ सेवक पर दया कर स्टेशन कुपामनरोड पर पधारे यहांभी एकान्त स्थानमें निवास किया और मेरा राम महाराजकी तन मन धन सें सेवा करता रहा फिर सं १९६३ कार्तिक मासमें स्वामीजीको बुखार और कास की पीड़ा हुई ऐसी शरीरकी दशामेंभी स्वामीजीनें अपना भजन ध्यानका विराम नहीं किया याने धारणा ध्यानक करते ७ ही पौषकृष्णा ६ षष्ठी शुक्रवार को अपने आनंद पदमें लवलीन होगये स्वामीजीने अपने शरीर त्यागनेकी बाद ११ मासके पूर्वही सैन देदीथी और मुझे आज्ञा देदीथी के इस ग्रंथको हमारी सर्व मुमुक्षुके कल्याणके अर्थ वेंकटेश्वरप्रेसमें छपाकर प्रसिद्ध करदेना सो महाराजकी आज्ञानुसार छपाके प्रसिद्ध किया उक्त महाराज६८ हायनमें थे भविष्यमें महाराजके रचेहुये और भी कतिपय ग्रंथ प्रकाशित किये जायगे ।

प्रिय पाठकवृन्द जो पुस्तका सार रूप और साधनाका परम लक्ष्यहै जिस्के द्वारा तृष्णा दूर होजातीहै मनुष्यका प्राण उस अमृतको पान करनेके लिये सदा उत्कठितरहै इस अमृतका स्वाद ग्रहण करनेके लिये तैयारहो आलस्य न करो देव भोग्य अमृतभी इसके आगे तुच्छ ज्ञात होगा इत्यल विस्तरेण ।

आपका शुभचिंतक–

प०शिवनारायण शर्मा स्टेशन मास्टर कुचामनरोड

द.पः रामानदात्मज–

कल्याणदत्तशर्मण सति

॥ श्री ॥

अथ सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार ग्रंथकी विषयानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ

अष्टम प्रकाश।

नवम प्रकाश।

दशम प्रकाश।

एकादश प्रकाश।

द्वादश प्रकाश।

इति सर्वशिरोमणि विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नम ॥

अथ सर्वशिरोमणि सिद्धान्तसार।

तत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनामआनन्दमगलसवादप्रारभः।

॥ श्लोकाः ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगनः सदृशं तत्त्वमस्यादिगम्यम् ॥ एक नित्य विमलमचलं सर्वदा साक्षिभूतं जन्मातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥ ॥ १ ॥ सर्वालिप्त सर्वरूपं निर्गुणं गुणसंयुतम् ॥ शब्दरूपं निर्विकारं सद्गुरुं प्रणाम्यहम् ॥ २ ॥ सगुण सद्गुरो रूपं निर्गुणत्वेन व्यापकम् ॥ अलक्षमुभयातीत नामातीत नमाम्यहम् ॥ ३ ॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुः साक्षान्महेश्वरः ॥ गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥ अज्ञानतिमरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलित येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥

मगल कहतेहै कि सद्गुरुके चरणारविन्दकी अपार महिमा है । शेषशारदापैभी नही कहीजाती। कैसे हैं चरणारविन्द जिनके दर्शन करतेही दोनो ताप रज तम दूर होतेहैं। और प्रेम भक्तिके उपजानेवाले जनके मनको रंजन आनन्दके देनेवालेहैं । ऐसे सगुण चरणारविन्दकों मै निशिवासर प्रणाम कर्ताहूं । हे स्वामिन् ' मैं अज्ञ-

कामीकी यह विनती है कि मेरे बोधके निमित्त सर्वशिरो मणि सिद्धान्त कहिये जासो मैं ससारसैं निवृत्त होके आपके संग आपके धामकों जाऊं॥प्रश्न॥ कैसे यह सब सृष्टि मनुष्यसहित उत्पन्न होतीहै १, कैसे याका विनाश होताहै २, और मै कौनहूं ३, कहासैं आयाहू ४, और कौन कर्तव्य मोको करना योग्य है। जाकारिके में परमेश्वरको प्राप्त होऊं ५, इन पाच प्रश्नोका उत्तर कृपाकरिके कहिये और आपका मेरा संवाद जगत्मै सज्जनजन श्रवण करेंगे उनका वडा कल्याण होवैगा ॥

अनाम उवाच ॥ हे प्रिय ! सबका उत्तर देताहू और सरल वचनोंमें कहताहु जाको कम पटे मनुष्य भी अच्छीतरह समझ लैगे परन्तु सज्जनोके संगसेही तात्पर्य पावैगेमै तुम्हारे प्रश्नोका उत्तर देताहू सो सुनो। प्रथम तो तुम अपनेमै आप सावधान होके अपनी सुरत-दृष्टिको इधर उधर मत डुलावो मेरे वचनोंपर चित्त लावो जासों सब तात्पर्य समझमें आवैं सुरत मन एक करिके दृष्टिकों डाटके श्रवणोंके द्वारा श्रुति मेरे शब्दैंपै सावधान होके लगादो ऐसे सजम करिके नहीं सुनोगे तो तात्पर्य नहीं पावोगे॥प्रथमप्रश्नका उत्तर देताहू॥ हेप्रिय! सृष्टिकी उत्पत्ति कईप्रकारकीहै।ऋषि मुनि आचार्य अवतार पैगवरोंनें कहीहै॥ सो अपने २ ठिकानोपर सब सत्यहे मे तुमको दोप्रकारकी कहताहू॥ एक तो मनुष्यशरीरकी उत्पत्ति,दूसरी जब योगी

जीवात्माको परमात्मामें लय करता है । फिर उत्थान होके प्रगट होता है॥अब मनुष्यशरीरकी उत्पत्तिका कथन सुनो— स्त्रीके उदरमें नाभिके नीचे सीप होतीहै सबके एक होती है किसी २ के दो होतीहैं॥रतिके समय अकस्मात् खुलतीहै वामें साडे पाच रत्ती रजवीर्य समाताहै जो पुरुपका तीन रत्ती वीर्य होवे । और स्त्रीका ढाई रत्ती होवे तो पुरुप होवेगा । और स्त्रीका तीनरत्ती, पुरुपका ढाईरत्ती होवे तो स्त्री होवेगी और दोनूनका बराबर होवे तो नपुसक होवेगा । उस वीर्यकी बूंदमें अवाच्यसत्ता जो आकाशवत् सर्वव्यापक है उसके प्रभावसे। जैसा वीर्यहै वैसा समय पाके सब अग बनजाते है उदरमें माताकी नाभिसे लगाहुवा नाल इसकी नाभिसे पालन पोषण बढन होताहै ॥ और नौ दश मासमें महल तैयार होजाताहै उसमे उस समय नेतो अन्तःकरणहै नै प्राणका आवागमन है।सब द्वारबन्ध है । पूरा कुम्भक है। फिर माताके नाभिस्थानसे नाल छूटजाताहै।तब प्रसूतिका वायुकी प्रेरणासे बाहिर आताहै रस्तेका संकट और बाहरी पवन लगनेसे उसका कुम्भकपवन नासिकामें जोर देताहै। जब छींक आके बाहिर प्रगट होताहै । तब नेत्र मुख गुदा आदि नउं द्वार खुलजाते है । और बोधरूप श्रुतिसे अतिसक्ष्म मन प्रगट होके रुदन करताहै । फिर श्रुतीनमे लीन होके सुपुप्तिकी निद्रामे सोजाताहै पश्चात् अग्नि

वायुके प्रभावसैं मुखमैं दूध पीनेकी शक्ति प्रगट होजाती है। अब आगेकी क्या कहूं ज्यों ज्यों वृक्ष बढताहे। त्यों त्यों उसके तत्त्वगुणनके प्रभाव बढतेहे। और फैलावको प्राप्त होताहे। जब लवा बच्चा नींदसै जागता है। तब नेत्र खोलके देखता है। उस समय उसकी श्रुति और निगाह ठैरीहुई होती है। उसके नेत्र बहुतकाल ठैरे रहतेहैं पलक नहीं मारते। और श्रुति जब ठैरीहुई बिगड जातीहै तब सब शरीर हाथ पांव बहुत हलाताहे। और रोने भी लग जाताहे। जब माता उसको लाडके वचन सुनातीहै तब शब्द कानोंके द्वारा सुनके ठैर जाताहै पीछे मनके प्रभावसै माताकी त्वचाका स्पर्श दूधके स्वादका बोध होजाता है जबतक ग्रीवाको नहीं झेलता तबतक लवा बच्चा कहलाताहे।वो लयमें ज्यादा रहताहै एक वर्षतक महापरमहंस संज्ञाहे। पश्चात् पांचवर्षतक परमहंस संज्ञा है। सातवर्षतक हंससज्ञाहे। अज्ञानदशामें है। बाद बच्चासज्ञा यानें बडे विकारोंसैं बचा हुवाहे। पीछे किशोरसंज्ञा है। याने क्रीडाकरता है शोर करिके दशवर्षतक है पाचसै पन्द्रहवर्षतक ताड़नाके योग्य है पश्चात् सोलहवर्षसे लेके बाईस पचीस वर्षतक ब्रह्मचर्यमें रहना, सो उत्तम ब्रह्मचर्य है। अठारह वीसका मध्यम सोलह सत्रहका कनिष्ट है और जो पहिलैहीं कुसंग पाके बिगड़ जावे सो रोगी निर्बल बुद्धिहीन

अवगुणका धाम होजाता है माता पिताका इस उमरकी रक्षा करना योग्य है ॥

प्रश्न ॥ हे स्वामिन्! पूर्व आपनें कह्या कि गर्भमें नतो अन्तःकरण है, न प्राणका आवागमन है और ऐसाभी सुनाहे कि गर्भमें स्तुतिकरिके इकरार करता है, सो इसका तात्पर्य कृपाकरिके कहो ॥

उत्तर ॥ हे प्रिय! जिस गर्भमें ये काम कर्ता है, वो गर्भ औरहे जब कि जिज्ञासु बाह्यवृत्तिनका संजम करिके अभ्यन्तर नाभिमें स्थिर होताहे वहाका ये कथन है इस गर्भका नहीं ॥

अब दूसरी परमसन्तयोगीकी उत्थानदशासें उत्पत्ति होती है सो कहताहूं, श्रवण करो हेप्यारो! योगीकी उत्थानदशासें शरीररूप ब्रह्माण्डमें सब सृष्टिकी उत्पत्ति होतीहै इसी हेतुसें गीतामें मैंनें संसाररूप वृक्षका ऊर्ध्वमूल कह्या है जब कि परमसन्त योगी अपना जीवात्माकों योगमार्गकरिके परमात्मामें लय करते हैं, उस समय महाशून्य परमसुषुप्ति अवाच्य अनाममें लवलीन होजातेहै परमसमाधि अवस्थामे स्थित हैं उत्थानकी आदिमें स्वयम् श्रुती उत्पन्न होके ऐसा बोध होताहै कि मैं एकहू ये पुरुषसंज्ञा है। बहुत होजाऊं ये प्रकृतिसंज्ञा है पश्चात् पुरुषनें पराशब्द प्रकृतिका संग पाया ताका प्रभावसें महत्तत्त्व आकाश

उपजा यानें आकाशबोध हुवा इसको महत्तत्त्व कहते हैं आकाशसें पश्यन्ती शब्द अतिसूक्ष्मशरीर स्पर्शसें वायु उत्पन्न भया कहा वायु मालूम हुआ, वायुसें वोही पुरुष मध्यमा शब्दका रूपको प्राप्त भया। वासें तेज उत्पन्न हुवा तेजकी प्रकृति पाके वोही पुरुष मुखके द्वारा रसको प्राप्त भया। उससें जल उत्पन्न हुवा। जलका संयोग पाके वरुण-द्वारा गधकी प्रकृतिसे पृथ्वी उत्पन्न हुई और पुरुषसे प्रकृति अहंभावकों प्राप्त होके त्रिधा होतभई । सत, रज, तम पश्चात् आकाश तत्त्वसे श्रवण ज्ञानेंद्रिय और वाक्य कर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। और वायुतत्त्वसें त्वचा ज्ञानेंद्रिय हस्तकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। अग्नितत्वसे नेत्रज्ञानेंद्रिय और पादकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। जलतत्त्वसें जिह्वा रसलेनैवाली ज्ञानेंद्रिय और मूत्रत्याग शिश्नकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई । या शिश्नेंद्रियमें कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रिय दो हे जैसें जिह्वा रस भी लेती है और वाणी भी बोलती है ऐसेंहीं शिश्नेंद्रिय है जब मूत्र और वीर्य त्यागती है तब तो कर्मेंद्रिय है। और वायुतत्त्वका अत्यंत स्पर्श याके द्वारा त्वचाज्ञानेंद्रियकाभी है । जिह्वा आकाशकी कर्मेंद्रि और जलकी ज्ञानेंद्रि है ॥ और शिश्न जलकी कर्मेंद्रि और वायुतत्त्वकी ज्ञानेंद्रिय है। और पृथ्वीतत्त्वसे नासिका ज्ञानेंद्रिय वायुतत्त्वके सजोगसें हुई यामें भी दो इन्द्री हें । पृथ्वीतत्त्वकी ज्ञानेंद्रिय और वायुतत्त्वकी

कर्मेंद्रि क्योंकि वायुका आवागमन यामें रहता है और गुदा पृथ्वीकी कर्मेंद्रि और वायुतत्त्वकी ज्ञानेंद्रि है। क्योकि अपान वायु गमनकरती है। ऐसें ये तत्वनसे प्रकृतिका संयोग पाके ज्ञानेंद्रिय और कर्मेन्द्रिय उत्पन्न हुई। और एक २ इन्द्रिमें तीन २ भेद होते है। जेसे श्रवणेंद्रिमें श्रोता श्रवण शब्द । नेत्रमे द्रष्टा दृष्टि दृश्य । ऐसैही सर्वेंद्रियन मे जानो।श्रवणकाशब्द विषयहै, त्वचाका स्पर्श, नेत्रोंका रूप, रसनाका रस, नासिका का गध, वाणीका भाषण, हस्तोंका रक्षाकरना, लैना दैना पावनका गमन शिश्नका मूत्र वीर्यत्याग भोगविलास गुदाका मलत्याग अपानवायुका छोडना ये सब विषय इन्द्रियोंके है और सब तत्त्व आपसमे मिलेहुए गुण रखतेंहै । आकाशका शब्दगुण, वायुका शब्दस्पर्श, अग्निका शब्दस्पर्श रूप, जलका शब्दस्पर्शरूप रस, पृथ्वीका शब्दस्पर्शरूप रस गध गुण है ॥

अथ आकाशतत्त्वकी महिमावर्णनम् ।

आकाशतत्त्व केवल श्रुतीकरिके अनुभवमात्र है। निरूप निराकार लघुदीर्घतासे रहित सबका मूल सबतत्त्वनकी उत्पत्ति विनाशका कारण । सब सृष्टिके बाहिर भीतर आप निरूपाधिहै सबका लयस्थान अजर अमर

सबके विगडने सुधरनेसै रहित जाके भीतर सव रचना होतीहै और विनाश होताहै। आप सबसै भिन्न और मिलाहुवा है। या आकाशकी उपमा उस सत्तास्वरूपको दीजातीहै। परन्तु वो आकाशको भी उत्पन्न करनेवाला है और आकाशसै भी झीना अवाच्य अनाम है॥

अथ पवनतत्त्वकी महिमावर्णनम्।

पवनतत्त्व भी आकाशज है कहा आकाशसै उत्पन्न है। आकाशके भीतर गमन करनेवाला तेज जल पृथ्वीको धारण करताहै। और जल अग्नि याकी प्रेरणासै दौडते है। चैतन्यरूप सब मै व्यापक रोम २ में फिरनेवाला दीर्घतासै चार द्वारनमै गमन करता है। दोनूं नासिकाके द्वार नाभिचक्रसैं टक्कर खाके सदा जारी रहताहै। और मुख-गुदाके द्वार होके भी वहता है। महापराक्रमका धारक है। और मुनियोंके द्वारा पहिले मैंने सांख्य शास्त्रमे पवनके दशनाम कहेहै। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, कृकल, कूर्म, नाग देवदत्त, धनञ्जय, हृदयस्था नमे नासिकाके द्वार भीतर आवै जव प्राणरूप है अपान वो है जो नासिका और गुदासें वाहिर जावै तीसरा समान वायु नाभिस्थानके कमलमें है, उदान कंठमें है व्यान सवशरीरमें व्यापक है कृकल क्षुधा लगाताहै कूर्म पलक उघाडता है नाग वायुसै डकार आतीहै देवदत्तसे जंभाई आतीहै दशवां धनञ्जय जो मृतकशरीरकों फुलाता है॥

अथ तेजतत्त्वकी महिमावर्णन।

तेजतत्त्व वायुसें उत्पन्नहै, जासें वायुजतेज, चैतन्यरूप सूर्यचन्द्रमा, तारेनका प्रकाश करनेवाला, पालक विनाशरूप सबका भस्म करनेवाला,सर्वकार्यकी सिद्धि करनेवाला, महातेजस्वी पराक्रमी है, रोम २ प्रकाशकी जीवनरूप, नाभि-मुखनेत्रोंमें विशेष रहनेवाला, जठराग्निरूप, अन्नजलका पाचन करनेवाला, चार तरहका अन्न है। चाटन याने चाटकरिके जो खायाजाय, चूंसना जो चूंसकर भोजन कियाजाय, चिगडन जो चिगदकर खायाजाय, पीवन जो पीके भोजन कियाजाय,ये चारतरहके भोजनको तेज पाचन करनेवालाहै और ब्राह्मणोंका अग्नि सर्वकार्य सिद्ध कर्ता है। ब्राह्मण अपनी यज्ञाग्निको कदाचित् न भुजने देवै सो ब्राह्मण कौन? जो बडा उत्तम कर्म करे, बडा उत्तम कर्म प्राणायाम है। सो प्राणायामकी सिद्धि नित्य यज्ञाग्निसेंही होती है। सो वा नित्ययज्ञाग्निको न भुजनें देवै। सो नित्ययज्ञाग्नि कौन है? जठराग्नि है,नाभि यज्ञवेदी है,नित्य भोजन करना सोही आहुती है। याका भुजना यही है कि अयुक्त भोजन करनेसें मन्द होजाती है सो जुक्तभोजन करै, जासैं जगीहुई रहै। जब वो बडा उत्तमकर्म प्राणायाम सिद्ध होता है याही कर्मकी सिद्धीसें परमेश्वरकी प्राप्ति होती है जीव-

त्वतासैं रहित होके ब्रह्मभावको प्राप्त होजातेहैं याप्रकार ब्राह्मण सबसे बडे है ॥

अथ जलतत्त्वकी महिमावर्णन।

जलतत्त्व जीवनरूप पालक सृष्टिका उपजानेवाला,रसरूप अमृतकी खान पुष्टकरनेवाला, आनन्दस्वरूप, शान्ति स्वभाव, रोम २ मै व्यापक,उदरनिवासी छः स्थानोंमें विशेषकरिके द्रवता है । दोनूं नेत्रोमैं, दोनू नासिकाके द्वारोंमें, पाचवां मुखका द्वार आनेजानेका स्थान है।और छठा शिश्न हैं । सब शरीरमें व्यापक, रोम २ मे द्रवता है । जलसैंही सब सृष्टिकी उत्पत्ति होतीहै और या विनाश होजातीहै ॥

अथ पृथ्वीतत्त्वकी महिमा वर्णन।

ये पृथ्वीतत्त्व सबसैं दीर्घरूप यानें भारी है । सबका बीज धारण करनेवाली, सब तत्त्वनकी धारक चार सृष्टिके यंत्र जाकरिके प्रकाशित है ॥

प्रश्न—हे स्वामिन्! चार सृष्टि कौनसी है ?

उत्तर—हे प्यारा ! चार ये हैं । जरायुज,उद्भिज,स्वेदज, अण्डज, जरायुज वो है, जो जेर करिके उत्पन्न होतीहै। पृथ्वी तत्त्वकी विशेषता है । जामे उद्भिज वो है, जो जलतत्त्वकी विशेषतासै उगनी है । स्वेदज वो है जो अग्नितत्त्वकी उष्णता पाके पृथ्वीके पसीनेसें उत्पन्न होतीहै। अण्डज

वो है जामै वायुतत्त्वकी विशेपताहै अण्डासैं पैदा होतीहै पृथ्वी इन च्यारूं सृष्टीनकों धारण करतीहै और अण्डजके जीव जलमैं भी पैदा होतेहैं । परन्तु जल पृथ्वीपरही है ॥

प्रश्न–हे सर्ववोधक! जल आकाशसै भी तो वर्पताहै ॥

उत्तर–हां प्यारा! वर्पताहै परन्तु आकाशमै जव जल वनजाताहै तव पृथ्वीपेही आजाताहै?॥

प्रश्न–महाराज! आकाशमै जल कैसे वनताहै ॥

उत्तर–हे प्यारा! अग्नि सूर्यके प्रभावसैं पृथ्वीमै जो जल है उससे वफारे उठतेहैं, जैसे हाडीकी भाफ ऐसैं ये अत्यन्त वडी हाडी पृथ्वी है। इसकी भाफ ये वद्दल है उनका जल घनजाताहै तव नीचे गिरपडताहै । हे प्यारा! ये तो तत्त्वनमैंसे तत्त्व प्रगट होतेहैं, जव तुम अपने निजस्थानको भक्ति योगकरिके जावोगे तव तुमकों सव हाल मालूम होजावैगा और सवस्थान पृथ्वीतत्त्वसैही वनतेहैं । अनन्त प्रकारकी शक्तिनकरिके अनन्तप्रकारके छोटे वडे शरीर स्थावर जंगम सव पृथ्वीतत्त्वसैंहीं प्रगट होतेहैं। पृथ्वीतत्त्वमै वहुत गरवाई है याने भारापनहै । पृथ्वीसैं हलका जल है । जलसैं हलका अग्नि है, अग्निसै हलका पवनहै सो पृथ्वी जलाग्नि ये तो दृश्यरूप हैं,पवन अदृश्यहै, शरीरके स्पर्शसे मालूम होताहै और पाचवॉ आकाश अरूप निराकारहै, याकी महिमा पूर्व कहआयेहे । और पृथ्वी दीर्घताकरिके

स्थूलहै और आकाश निराकारहै । इन दोनूं पाटनके बीच मै तीन तत्त्व पवन जलाग्नि सर्व कार्य करतेहैं । जलतत्त्व सै कफ,पवनसै वायु, अग्निसे पित्त उत्पन्न होतेहैं । जो नाडी मैं विचार किये जातेहै, सो पहिलैं तुमकों मनुष्य शरीर की उत्पत्ति कही । दूसरी महायोगीकी जो समाधिदशासें उत्थानकों प्राप्त होताहै तिनको विचारो ॥

मंगल उवाच ।

हे सर्वलोकनिवासी ! मैं आपसे विनती करिके पूछता हू कि, ये जो आपनें उत्पत्ति कही सो तो मैंनें भलीप्रकार श्रवण करी, परन्तु आपने ये जो अक्षगोचर ब्रह्माण्ड दीखताहै इसकी उत्पत्ति नहीं कही । पृथ्वी, पहाड, सूर्य, चद्रमा, तारा और अनन्तप्रकारकी सृष्टि स्थावर जंगम ये कैसें उत्पन्न भयेहे, सो कृपाकरिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हे सखे ! इसका भी हाल संक्षेपतासें कहताहू सो सुनो। ये जो तुमकों चराचर चार खानिकी सृष्टि दीखती है, सो तो अनादि माया है, नैतो हुई नै होवे । दोनों वचनोंसैं रहित है । सो पहिलेही मैंनै वेद पुराण शास्त्रोंमे माया अनिर्वचनीय कहीहै और श्रावकधर्मके शास्त्रोंमे भी ऐसाही वर्णन किया है, और गीतामैं कह्या है ॥

श्लोक—नरूपमस्येहतथोपलभ्यते नांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा॥ इति।

सो ये माया ब्रह्म दोनूं अनादि है । माया ब्रह्म दो नाम जिज्ञासूकों समझानेके निमित्त कहेहें, वास्तव सत्तास्वरूपही सवकुछ होके अनन्तप्रकृतिरूप धारण करिके प्रगट होरहीहे। जैस वटका वीज विस्तार होकर दीखता है, सो वीजसै वाहिर कुछ नहीं है, वीजही सर्वरूपहे । सो ये सव सृष्टि अक्षगोचर कीहै, ऐसी सदैवसै है, इसका आदि अन्त नहीं। प्रवाहकारिके नित्यहै, चार खानिके पुराने शरीर नष्ट होते है, नये होतेजातेहैं ॥

प्रश्न—हे महाराज ! हमने ऐसैं सुनाहै कि, महाप्रलयकरिके जलमै शेषशय्यापर नारायण शयन करतेहं। उनकी नाभिकमलसै ब्रह्मा चतुर्मुख प्रगट हुवा, वासै चार वेद और सव सृष्टि उपजी। और ऐसैं भी सुनाहै कि, इस ब्रह्माण्डका अण्डासरीखा आकार होकर, वहुतकालतक जलमै रह्या, पीछे सवकुछ वामेंसैं उत्पन्न हुवा । जो सव सृष्टि दीखनेंमें आतीहै, सो ये भी तो आपनें पुराणनमें कथन कियाहै सो कैसैंहें कृपाकरिके कहो॥

उत्तर—हे प्रिय ! इसकाभी कथन सुनों। मै जो महायोगी परमसन्त होके जो कछ कथन करताहूं उसमैं जो गूढ

आशय है वा महाकाव्यको मै हीं जानताहूं । और कोईको उसके तत्त्व जाननेकी सामर्थ्य नहीं । क्योंकि, योगी मुनि चारूवाणी परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरीसें परे जो मै हूं, सो मोमैं लय होके मेरेही स्वरूप होके कथन करतेहैं, और मेरे निराकारस्वरुपकी मंहिमा आकारकरिके वर्णन करतेहै । उसको कोई बाह्यविद्या वेदशास्त्रपढनेवाले मेरे तत्त्वकों नही जानसक्ते । जवतक मेरी प्रेमभक्ति उनके हृदयमैं नै उपजै और महायोगी सन्त मेरा सगुणस्वरूप है । उनकी सेवा प्रेमभक्तिके साथ नै करैं, और उनका योगमार्गका वताया उपदेश भक्तिके साथ अभ्यास नैं करे । तवतक पण्डित जो वाक्यविलासमैं चतुर हैं परन्तु मेरी काव्यका तत्त्व नहीं जानसक्ते, उनको बाह्य- विद्याका घमण्ड होजाताहै, ताके विकारसै अंध होजातेहै। मेरी भक्तिसैं हीन मोको नही प्राप्त होते । मोकों भक्ति प्यारी है, परन्तु जो योगाभ्यासके साथ होवै तो मोको वाही जन्ममै प्राप्त होजातेहै। और मेरी महाकाव्यको मैही जान- ताहूं । या अनन्य भक्तियोगकरिके जो मोमै लय होतेहै वे जानते है उनसैं कुछ छिपा नहीं रहता ।सव गुप्तता प्रगट होजातीहै, येही तो मेरे नित्य अवतारहैं । पहिले हुये और अव हैं और होतेही चलेजायँगे।उनहीके द्वारा जैसा मैं समय काल देखताहूं वैसाही अनेक वैखरीकी न्यारी २ वोलीनमै

रोचक भयानक यथार्थशब्दनकरिके कर्म, उपासना, ज्ञान, तीन भेदसें कहताहूं सो सब वेदरूपहै।कर्मउपासनामै पृथक्ता होतीहै, ज्ञानसिद्धान्त सबका एकहै हे प्यारा! तुमसें मैंनें पूर्व सृष्टिकी उत्पत्ति दोप्रकारकी कही। उनहींके अन्तरभूत ये तुम्हारे प्रश्न है। तुमने कहा कि ब्रह्मासें सब सृष्टिकी उत्पत्ति सुनीहै, इसका व्याख्यान सुनो। जब महापुरुष परमयोगी मोमैं सब अगनसहित योगाभ्यास करिके लय होतहै वे महासुषुप्तिको प्राप्त होके अवाच्यपदकों पहुँचतेहै, इसहीका नाम महाप्रलयहै। फिर उत्थान जो जाग्रत् दशा है ताकों प्राप्त होके सब अंगनसहित शरीरको धारण करते है,तब प्रकाश तुरीय स्वरूपहै और मोमैं जो समाधि दशामैं शान्ति पाईथी, वोही शान्ति योगीकी उत्थानदशा मैं हो जातीहै, उस शान्तिका नाम जल है। और तुम जो ये जल समझोगे तो विना रचना जल कहासैं आया? और जलसें पहिले मालूम हुवा कि—अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी बहुतसी रचना होगईथी सो ये तुम्हारी अल्पबुद्धिकी समझ है, शान्तिका नाम जलहै, वो शान्ति जो ऊपर कहिआयेहैं और शेषनाम जो कुछ बाकी रहै ताकाहै। अर्थात् शान्तिमै शान्तिरूपही श्वास सोई शेषहै। तापै शान्तिरूप जलमैं योगी महाविष्णुरूप होके सोताहै अर्थात् आपेमै आप लय रहताहै। बाकी नाभिस्थानसें ऐसा

बोध होताहै किमैं एकहूं ऐसा स्वयंभू पुरुष ब्रह्मा प्रगट होता है बहुत होजाऊं यासैं चतुर्धा वाणीरूप होके वेद जो अपना भेद प्रजानिमित्त सुखरूप कर्म उपासना ज्ञान कहिके वाणी सें सबसृष्टिका हाल गुप्त प्रगटतासे महाकाव्यमैं कहताहैं सोही वचनरूप रचना, ब्रह्मासैं सब सृष्टि उत्पन्न हुईहैं। और दूसरा जो तुमनैं प्रश्न किया कि, अण्डा बहुतकाल जलमै रह्या। उसमैंसे सब सृष्टिकी उत्पत्ति भई उसकाभी तात्पर्य सुनों। पहले जो तुमसें मैंनें उत्पत्ति मनुष्यशरीरकी कही वाहीका आशय इस अण्डा सृष्टिमैंहै, जब रजो वीर्यकी गांठ बँधी वोही बहुतकालतक गोलाकार होके माताके उदरस्थान जलभागमे तेजसें पककर शरीरके सब स्थान बने और सब रचना क्रमसे उत्पन्न भई। येही मनुष्य शरीररूप छोटा ब्रह्माण्ड अण्डाकार जलमें-पककर तासैं सब सृष्टिकी उत्पत्ति भईहै। सो हे प्यारा! पहिली पक्षका ज्यादा भेद खोलना उचित नहीं है। इससैंनमें सब समझलो और सब हाल मेरे मिलनैंसे मालूम होवैंगे, कुछ इशारा तुम्हें रुचि उपजानेकों कहदिया है ॥

प्रश्न—हे कृपासिन्धो! आपके निजस्वरूपमें भक्तियोग करिके लय होनेसैं तो सब हाल मालूम होवैंगे, परन्तु ये आपका सगुणस्वरूपसें जो वचनप्रकाश होतेहैं उनसैं मेरे हृदयमें बडा बोध होताहै और मोकों श्रवण करनेमै अमृत

पनिेकासा आनन्द आताहे । सो हे सर्वज्ञ! जैसैं वाहिर ब्रह्माण्डमें आपने च्यारखानि सृष्टिकी कही वे मनुष्य-तनमें कैसे उपजे हे? क्योकि ये भी तो छोटा ब्रह्माण्ड है सो कृपाकरिके कहो ॥

उत्तरः—हे सुबुद्धे! येभी मे कहताहूं सो सुनो। वाहिर ब्रह्माण्डमै तो स्थूलसज्ञा करिके सृष्टि प्रगट होतीहै और मनुष्यशरीरमें सूक्ष्मरूपसें प्रगट होतीहे इसका ऐसाही नियम है। सो जरायुज सृष्टि सूक्ष्मशरीरसें ऐसें प्रगट होतीहे कि, अनेक कामना वुद्धिमे कामदेवके प्रभावसें गर्भित होके सकल्प विकल्पके साथ वहुतकालमें, कोई अल्पकालमै सिद्ध होतीहैं सोई जरायुजहे। और जे ताम-सकरिके वृत्तियॉ क्रोधकी उष्णतासैं जलदीही अनेकतर-हकी उत्पत्ति होतीहे, वो स्वेदजहैं। और जे रजोगुणका सग पाके वृतियॉ मोहरूप जलसैं अनन्तप्रकार करिके जडसंज्ञा अज्ञानताकों लीयें कोई ठैरके कोई उद्वेगतासें प्रगट होतीहे सो उदभिज्जहै । और जे रज तम लोभ वायुके संजोगसैं वृत्तियॉ पैदा होतीहैं और वहुतकाल से-वन होताहे जिनका,वो अण्डजहैं। ये सव शरीरसंयुक्त मन वुद्धिकी वृत्तियॉहै, इन्द्रियोंके भोग अर्थ सुखदु:खकरिके अनेकप्रकारकी उत्पत्ति होतीहैं ॥

अथ तीनोंगुणनका निर्णय वर्णन ।

हे प्यारा ! महतत्त्वसैं त्रिधा अहंकार होके तीन गुण उपजते हैं । रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण । रजोगुण नाम उसका है, जासैं सब इन्द्रियादि वृत्तिनका फैलाव होता है। अनेक तरहके खान, पान, वस्त्र, मकान, सवारी, अनेकतरहकी चतुराई, चिंता, मान, बडाई, छल, झूंठ, कपट, लोभ, मोह कामादि अनन्त बन्धन सब याहीसै उपजते है। और तमोगुण नाम उसका है, जो स्थूलादि सबकों धारण करताहै । ईर्षा, द्वेष, कलह, क्लेश, हिंसा, दुर्वचन, ऐठ, अकड, मत्सरता, लडना, रोना, दॉतपीसना, रूसना, आलस्य, दीर्घसूत्री, अनेकतरहकी खोटी वृत्तियॉ, अज्ञानादि सब दुःख याहीसैं उत्पन्न होते हैं। सतोगुण नाम उसका, है जाकरिके सुमति, सन्तोष, शीलता, समता, कोमलता, मधुर वचन, बुद्धि, विवेक, विचार, विद्या, ज्ञानध्यान, प्रकाशमय, सुखरूप, अनेक शुद्धवृत्तियॉ। यासै उत्पन्न होती हे। और सतोगुणसे देवता उत्पन्न होते है । रजोगुणसै दैत्य मनुष्य। तमोगुणसे प्रेत पिशाच नाग-पशु पक्षी आदि उत्पन्न होते हैं। रजतमसै असुर दानव होते हैं। ये मनुष्यशरीके भीतरकी वृत्तिनके नामहै। बाहिरभी येही वरततीहैं और सब तत्त्व परस्पर ऐसे मिलेहै कि, एकसैं एक भिन्न नहीं। सूक्ष्मदीर्घतासै ओतप्रोत होरहेहै, ऐसैही गुणइन्द्रियॉ अन्त.-

करण सब आपसमै मिलेहुये है। क्योकि सबका धारक वो सत्तास्वरूपहे जैसें बीजही सब अंगनसहित वृक्ष हो रह्या है । सूक्ष्मता स्थूलता सब वहीमे है, परन्तु अंगनके नाम जुदे २ हैं। और रसरूप सबमें व्यापक है। मूलसैं लेके शिखातक भराहुवा है। हेप्यारा!जो मैंने सूक्ष्मशरीरकी उत्पत्ति वेद पुराणमे कहीहैं तुम उनकों बाह्यदृष्टिकरिके स्थूल समझ रहेहो,इन सबका हाल तुमकों खोलाजावे तो कथनका क्या प्रमाण रहे। जब तुम सद्गुरुसगुणस्वरूप जो मौजूद है,उनकी भक्ति तनमनधनसे करोगे, उनकी कृपासैं प्रेमका पराक्रम लेके योगाभ्यास करोगे, तब सिद्धताके समय सब हाल मालूम होजावेंगे।नगुरेनकों मै नहीं प्राप्त होताहूं । नगुरेनका सब साधन श्रमरूपहे, कर्मनका फल उनको मिलजावैगा, लोकमैं वडाई हो जावैगी। परन्तु पूरा सच्चागुरूके विनामिलै तत्त्वको नहीं प्राप्त होते है, यानें मोको नहीं पातेहे। हे प्यारा ! जैसै वीज उदय होताहे जब वामैसे दो अकुर ऊपर नीचेको चलतेहै, ऐसैंही नरदेहीके बीजमेंसै मध्यभाग जासे नाभि वनेंगी वामेंसें दो अकुर अधउर्द्धकों चलतेहे, नीचेके अंकुरसे स्वाधिष्ठान और मूल ये दो कमल बनते हे । ऊपरके अंकुरसें हृदय कंठ भ्रुव सहस्रदल ये च्यार कमल वनतेहै। इनके मध्यमे मुख नासिका नेत्र कर्णादि सब

मरण समझके स्त्री पुत्र वान्धवनसै अपनें चित्तका हाल कहताहै और जो वहुतकालसें जिनकर्मोंकी सेवना करता था उनकी कल्पना चित्तमै उदय होतीहैं। जिनकर्मोंकी ये वासना थी कि ये अव सिद्ध होजावेंगे। वा समय उनकी वासनानमै चित्त फँसताहै । और अपनें वाग, वगीचा, मकान, महल, कोठी, कमरा और सवारी, ऊंट, हाथी, घोडा, जिनोंसै ज्यादा प्रीति थी, अपनी सव संपदा जेवर माल खजाना और प्यारे मित्रोंको याद करि करिके उनका भीतरहीभीतर सोच करताहै । और कामक्रीडा करिके जो सन्तान हुईथी,पुत्र पुत्री और स्त्री आदि जिनोंमें ज्यादा मोहथा, उन सवनकों देखके और अपना वियोग समझके रोताहै । और यमदूतनकी मार सहताहै । वा समय याको वहुत घवराट होताहै । उसवक्तके कष्टका हाल वचनसै कह्या नहीं जाता, उसीकों मालूम होताहै जासै वीतताहै । और वहुत तडफडाताहै उठ २ के भागताहै । कफ वात पित्त कोपभावको प्राप्त होजातेहै । और अनेक चेष्टा करताहै वा समय वाकों एक २ पल वहुत वडे कालकीसी मालूम होती है और भीतर वासनारूपी वृत्तिया वडेवेगसें अनेकतरहकी श्वास२ मै उदय होतीहै। वा समय इसके सामने जो याके निमित्त पुण्य खैरात करतेहैं । जव उसका अन्त करणमें

जो सर्व कर्मकरनेवाला अहंकारहै सो उन पुण्यकर्मोंकों देखकर शान्ति पाताहै। ऐसा समझके कि ये मेरे निमित्त पुण्य कियेजाते हैं और कष्टमैं आरामभी होजाताहै। क्योंकि मेरा अंश जो अहंकार है सो प्रसन्न होताहै। अच्छे बुरे कर्मनका फल इसलोकमैं और परलोकमैं पाताहै। यह लोकपरलोक कहा यह लोक तो स्थूलशरीरकारिके परलोक सूक्ष्मशरीरकरिके प्राप्त होता है। जो मनुष्य पहिलेसैंही शुभकर्म कर्ता है उसकों अंतसमय वृत्तिनके उद्वेगकी कमपीडा होतीहै। क्योंकि वाकी वृत्ति वैराग्यवान् होतीहै, वो अंतकालमें सुगमतासें गमन करताहै। और जे छोटी ऊमरसैंही प्रेमभक्तिके साथ श्रेष्ठकर्म कर्तेहै, वे बडी धीरजतासें उत्तम अंतःकरणके साथ उत्तमलोकोंमें जातेहै। और जे ऊमरभर भोग विलासके निमित्त खोटेकर्म कर्तेहैं वे नर्कगामी होतेहै।उनका हाल मैंनें व्यासरूपहो गरुडपुराणमैं कथन कियाहै।खोटेपुरुषनके नैंतो मेरी प्रीति है नैंडरहैं। शिश्नोदरके गुलाम आठ पहर धनभोगनकी तृष्णामें झूठ कपट छल छिद्रके साथ कर्म कर्तेहै। अहंकारी बहुत गालबजानेवाले, सूधेसच्चोंके वैरी, निर्दई, धर्मपुण्यको वाहियात वृथा समझनेवाले है। और उनसें कोई सज्जन कहे कि आप धनवानहै सब कुछ लायक राजाहैं। ईश्वरके नामपै कुछ खैरात कियाकरो तो उन अज्ञानीकों ये पवित्र कहना अच्छा नहीं लगताहै।और कहते हैं कि क्या हम ईश्वरकों रिश्वत देके अपना काम बनावै,

ऐसी उन अज्ञानीनकी तुच्छ समझहैं । क्योंकि उन्होंने कोई श्रेष्ठजनोंका संग नहीं किया । नें मेरे कहे शास्त्र ग्रथ सुणे न देखे उनकी अल्प बुद्धि हैं । देखो परमेश्वरकों मनुष्योंसें लेनेकी क्या इच्छाहै । जो रिश्वत देवेगे, सव कुछ तो परमैश्वरनेंहीं दियाहै । परमेश्वरके दियेहुये पदार्थ परमेश्वरकी प्रसन्नताके अर्थ जो आर्तजनोंकों देना योग्यहै उसको मन्दबुद्धि रिश्वत वतातेहैं । देखो ईश्वरनें इनका महल एकबूद रजवीर्यकी गाठ जठराग्निमें पकाके पेटमेंप्रति पालन किया,वाहिर दूध पिलाया, दत उगाके अन्नखवाया और सवतरहसें पालन किया।वाहिरके सव विषय भोग दिये फिर परमेश्वरकों ये क्यादेवेंगे । परन्तु उसकी आज्ञा ऋषि मुनि योगी पेगम्वरोंकी जवानीसे कहाहै कि तुम परमेश्वर की दीहुई वस्तु परमेश्वरके अर्पण करो। तो तुम्हारा कल्याण होवेगा । प्रथमतो उसकों प्रसन्नकरनेंके अर्थ उसके नामपे धन खेरात करो । पीछे तनदेके मन देवो तो उसकों पावोगे । उसमें लय होके उसीका रूप होजावोगे। और जो हुक्म नही मानोंगे तो हुक्मअदूलीकी सजा पावोगे। जो तैंने उसके नामपै धन खरच नहीं किया तो तन मन प्राण कैसें देवैगा । देखो सवकेवास्ते अपनी आमदसें दशाश देनेका हुक्म है । वाहिर दशाश धनका भीतर दशाश मनका देनाहै । क्योंकि दशों इन्द्रियनका अंश मन है सो मन देना ये भीतरका दशाशहै ।

सो सव धर्मी मजहवी उसके नामपर खैरात करनेहै और धनवान् और राजा होके जो कृपण होताहै वो अपजसका पात्र कीर्तिहीनहै परन्तु वो अच्छा संग पाके श्रेष्ठ होजाताहै। उत्तम संगसे उसके क्रियमाण कर्म अच्छे होजाते हैं। हेप्यारा! वहुतसे मन्दवुद्धि सत्संगहीन सूमताको धारणकरिके अनेक तर्करूप वचन कहके धर्मकी हानि करतेहैं। वे मूर्ख वहुतसी आफतनमे फसते हैं और रोगी होके क्लेश पातेहै। वे आज्ञा भंगकरनेवाले सजाके लायक होतेहै। मेरा अंश जो उनमे अहकार है वाकी मारफत मै सजा देताहूं ॥ याने वे अपनी चालमे आप ठगाजातेहै। सो हेप्यारा! अखीर जो अन्तकाल है वासमय वाकों भाईमित्रादि हेला देदेके अपनेकों पिछनवातेहैं और वाकों वुलाना चाहने है। परन्तु वे वासमय वाको दुःख देतेहैं और कईवात पूछतेहैं। परन्तु वो वोलनहींसक्ता। वाणी उसकी मनमे जा मिली मन प्राणमैं मिलगया। प्राण वैश्वानर जो साक्षीस्वरूपहै तामे लयहोगया। जो याकी सुषुप्तिअवस्थामै रहताहै। ऐसैं या शरीरस्थूलका नाशहुवा। और अनेक निमित्त करिके अनेक रीतिसै नाश होताहै। कोई ज्यादा कष्ट पाताहै, कोई कम पाताहै। ये प्रारब्ध क्रियमाण कर्मनके सयोगहैं। विनासमय नष्टहोना सो अकालमृत्यु कहलाती है। सोभी कई प्रकारसै होतीहै ॥

मंगल उवाच ।

हेस्वामिन् ! ये जीव पुनर्जन्म लेतेहैं कि नहीं । वेदपुराण तो जीवोंके अन्तसमयकी वासनानुसार और शुभाशुभ कर्मानुसार जन्म बतातेहै । और श्रावकमतवालेभी ऐसैंही कहतेहैं॥ परंतु यदि अंतमतानुसारही जन्महै तो स्वर्ग-नरकमें कौन जातेहै। क्योंकि जीवका तो वासनानुसार जन्म होगया । और यहुदी अंग्रेज मुसलमानोके पैगम्बरोंनें जन्म नहीं बताये।ऐसा बयान करतेहैं कि कयामतके वक्त सबका इन्साफ होवेगा। सो इनमैं कौनका कहना सत्यहै। जापे निश्चय कियाजाय सो मेरे बोधके निमित्त कृपाकरिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हेप्यारा ! इन सबनका कहना सत्यहै। जिनका जीवात्मा परमात्मामैं लयहुवाहै वे परमेश्वरके स्वरूपहै उनका सबही कहना सत्यहै ॥

प्रश्न–हेस्वामिन् ! अलग २ भेदनकरिके क्यों कह्या ।

उत्तर–हेप्यारा! मेरी मौजहै मोकों ऐसाही अच्छालगा। कि अलग २ भेदनसें मेरी उपासना करै । जो मोकों एकही मजहब करना होता तो एकहोता । फिर कौन दूसरा कर-सक्ताहै । और आगेको जैसा मुनासिब समझोंगा ऐसाही बदलतारहूंगा । जैसैं मेरी रचीहुई अनन्त सृष्टिहै । ऐसैंही

बहुतसी उपासनाहैं, परन्तु सबका एकही सिद्धान्तहै। मैं जो पवित्रलोगोंमैं होके कथन कर्ताहूं, वे पवित्र क्योकहलातेहै। वे प्रेमभक्तिकरिके योगाभ्यासके मार्ग अपना जीवात्मा मोमे लयकरतेहैं। वे मेरेही स्वरूप होजाते हैं। उन्होंने जो पहिले कह्या और अब कहतेहे। और आगेको कहेंगे उनके कहनेंमे हमेशा तीन तात्पर्य होतहै। अर्थात् कर्म, उपासना, ज्ञान, सो कर्मउपासनामैं तो भिन्नता होतीहै, ज्ञानसिद्धान्त सबका एकहै॥

प्रश्न—हेदीनबन्धो! हम कौनसाधर्म मजहबका निश्चय करैं॥

उत्तर—हेप्रिय! जिसमै तुम्हारा जन्म हुवाहै उसीप निश्चय करो। और जैसा आचार्योंनैं कह्याहै। उसीपै दृढविश्वास राखो। परमेश्वर जो सर्वशक्तिवान्हैं वो तुम्हारी सहाय करैगा। परन्तु हरेकजगह मनकी चचलतासै जो शैतान कहलाताहै उसकी बहकावटसैं उछलते मत डोलो दृढकरिके तो अपना जन्म धर्म पैही बनारहना श्रेष्ठहै। सर्वबातकी सिद्धि परमेश्वर ह्वाँई करैगा। दृढविश्वासीकी वो सहाय कर्ताहै। मनमुखीकी सुनाई कमहोतीहै। और निजमन जाको नूरी कहतेहैं वो विश्वाससै जैसा निश्चय करैगा वैसाही परमेश्वर कर्ताहै बन्धमोक्षका कारण मनहै, सो जैसा जाआचार्य नबीयोंनं कह्याहै उसको दृढतासैं जो

धारण करतेहैं उनका परमेश्वर वैसाही न्याय कर्ताहै। मूसाईशा महम्मदके मजहबीयोकी रूहनको बहुतकालतक जमीनके पडदेमै रक्खीजायँगी । पीछे अखीरमै जिलाके न्याय कियाजायगा । और शुभाशुभ कर्मनके भोग अनेक योनियोमैं भोगैगे । और ब्रह्मा ऋषि मुनि अवतारोनै जो कह्या है । उनके धारक सचित क्रियमाणकर्मनके संग अनन्त योनियोम भ्रमण करैगे । और हेप्यारा ! अन्तकी वासनान्यायके समय प्रधान समझीजातीहै न्यायका जैसा सुना सिव समझताहै ऐसा फल देके जन्मातर देताहै । मृत्यु तीनरीतसैं होतीहै । समयपाके अकाल योगाभ्यासकरिके जीवतैंही मरके अमर होना । और जन्मभी तीनरीतसैंह । कैई वासनाके अनुसार कोई भलेबुरेकर्मनका फल भुगताके केई प्रारब्धकर्मके भोग बाकीरहजायँ वा कारिके होतेहे । हेप्यारा ! परमेश्वरके एकपल सहस्रवर्षकी होतीहै । और सहस्रवर्ष एकपलके होतेहै । अनन्त कानूंनहै । सब कहनेमैं नहीं आते । ये गम्भीर आशयहैं । जे अनन्य भक्तियोग करैगे और मैं उनकों दिव्यदृष्टि देऊगा इतनें ये समझमै नहीं आते । जैसैं बच्चा शृगाररस नही समझसके समयपाके प्राप्तीसैं प्रत्यक्ष होताहै । सो हेप्यारा ! परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, सबका प्रेरक सबकुछ करसक्ताहै । वाको कोई बात भारी नहींहै ॥

दृष्टान्त—जैसै कोई वादशाहके वहुतसी पलटनहैं और उनके अलग २ कप्तान हैं और कवायिद उडदीका अलग २ कानून है । परन्तु वे सब पलटन वादशाहकी हैं। जो जापलटनमैं भरती होगया वो उसीकों श्रेष्ठ मानताहै । और कानूनमें दृढताभी ऐसीही रक्खीहै और जो अपनी २ पलटनमें कानूनके साथ काम करैंगे सो तरक्की पावेंगे । ऐसेही अनेक उपासना है । जे निजधर्मको निष्कपट दयासंयुक्त विश्वासके साथ सयमसैं सेवेंगे उनपै मैं कृपाकरिके सञ्चा सद्गुरु यानें कामिल मुरशिद होके मिलोगा । और वे प्रेमके साथ तनमनधनसें सेवा करैंगे । जव उनको संसार यानें दोजखसै काढके सारवचन उपदेश देके निजमार्ग जो अपक्ष है ताय वतला ऊंगा । जाका अभ्यास साथ गुरुभक्तिके करैंगे जव मोकों प्राप्त होवेंगे । तव सव गुप्त प्रगट भेदोंसै वाकिफ होजावैंगे उनसै कोई वात छिपी नैं रैहेगी । और जवतक तेरे भीतर परमेश्वर प्रगट नें होवै । वासै पहिलै सव वातनका न्याय मतकरै ॥ यावत् वे सच्चे पूरे सद्गुरु नैं मिलै तावत् जो तेरा धर्म जन्मका है उसको सत्यताके साथ विश्वाससै धारणकर फुकरा यानें सन्तसाधूनकी सेवा कियाकर । हसदेखा चाहे तो पक्षीचुगा । यासेवासे हसभी आमिलैंगे और हेप्यारा जेसैं जन्ममरण होतेंहै उनका कथन सुण मनुष्योंके कल्याणके अर्थ वचनों मै वहुतसे आवरण रक्खे जाते हैं

इनके जन्म ऐसे होते हैं। जैसैं मनुष्यकी सुषुप्ति अवस्था म तीनू गुणनकी वृत्ति लय होजातीहैं। फिर जाग्रतमैं जैसी जाकीहै वैसीही उदय होतीहैं। ये जो ब्रह्माण्ड अप्रमाण अनन्तहै, सो परमेश्वरकी अपार महिमाहै यामैं भी अनादिप्रकृति अन्तःकारण होके सृष्टि उपजावतीहै। और च्यारखानिके स्थूलशरीर धारण करतीहै सो जैसी वृत्तिनमैंसू ये जीव प्रारब्धके संस्कारसैं उपजतेहैं और प्रारब्धके सिवाय क्रियमाण कर्म करतेहे वे सब मिलके अन्त समय जिन २ वृत्तिनका इनको संग रहताहै, उनका संग पाके ब्रह्माण्डकी वृत्तिनमैं लय होजाते है। फिर उनही सस्कारोकों लेके च्यारूं खानोंमैं जन्म लेतेहैं।जो या वडा ब्रह्माण्डकी वृत्तिया हैं सो तो अनन्तजीवोके सचयरूप कर्म हैं वामैंसै जावृत्तिका सस्कार लेके जीव आके जन्म लेतेहैं, वे प्रारब्धकर्म कहलाते हैं। जो प्रारब्धकर्म करिके शरीर पायाहै वाके साथ संगकुसंग पाके प्रारब्धसैं ज्यादा कर्म करतेहैं वे कर्म इनके क्रियमाण कहलातेहैं॥सो इन जीवोके जन्ममरण वडा ब्रह्माण्डमै संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण तीनो कर्मनके सजोगसैं होतेही रहतेहैं ॥ जन्मैंहै और मरेंहै। जैसैं मनुष्योंकी स्वप्नावस्थामै सूक्ष्मशरीरसै अनन्त कल्पनारूपी सृष्टि उपजैहै ऐसैही बाहिर वडा ब्रह्माण्डमै स्थूलकरिके च्यारखानिके द्वारा उपजतीहै और इस

मनुष्यजन्ममैं हालमै भी जीतजी विनाबोध चौरासी भोगतेह । क्योकि चौरासी लक्ष योनिनकी इनके अन्तःकरणमैं वृत्तिया उठतीहें । जब ये श्रेष्ठसंग पाके अपने मनकी पहिचान करैंगे और अपने समान सबके सुखदु,ख समझकर दयासमताको धारणकरैंगे तब इनकी मनुष्यसंज्ञा होवैगी । जबतक मनको मनसैं परखनेका बोध नहीं होता तितनें पशुरूप हैं। सो मनुष्य थोडेहें और सब महापशुहे। और चौरासी लक्ष योनियेहै। चारतत्त्व, पृथ्वी, आप, तेज, वायु और दशइन्द्रिया, चारअन्तःकरण, तीनगुण, ये इक्कीस हुये। और जरायुज, उद्भिज्ज, स्वेदज, अडज, इन चारूं सृष्टिनकी इक्कीस२ लक्षयोनिहै सोई चौरासीहै। येतेरे बोधके निमित्त चौरासी कहीहै, कुछ योनियोका शुम्मार नही, अनन्त योनिह। हेप्यारा!कर्मनकी बडी गहनगति है,पिछलेजन्मोंम जो कर्म किये हैं सो तो अब हालमैं भोगतेहै और अब करैंगे जो आगे भोगेंगे। और बहुतसे कर्मनका फल अब हालमेहीं भोगतेहैं। ये मनुष्यशरीर सबसै श्रेष्ठ। सब कर्म शुभाशुभका क्षेत्र नरकस्वर्ग मोक्ष और परमेश्वरकी प्राप्ती सबका दैनेवाला है। याके साथ जैसा जीव कर्म कर्ते हैं उन्हींके फलोंसैं ऊच नींच लोकोंमै जातेहै। और जन्मान्तर पातेहं-जो मनुष्य जन्मपाके अनेकजन्मोसै श्रेष्ठकर्म

कर्ता चलाआवै फिर अन्तका जन्म जामैं मोक्ष होनैंवाली है श्रेष्ठकुलमैं मनुष्य जन्मपाके बाल्यावस्थासैंहीं प्रेमभक्तिके साथ च्यारूं आश्रमोंकों धारण कर्ताहुवा सद्गुरुकी सेवा करिके योगमार्गहोके सब वृत्तिनसे परे जो मैंहूं सो मोसैं मिलके मेरी अवाच्यमहिमाकों प्राप्त होजाताहै। ऐसाधाममैं चलाजाय जाको धाम भी वचन नहीं कहसक्ता। अकह अनाममैं लय होजाताहै। जाकी महिमा वेद नेति नेति कहतेहैं। हेप्रिय! और दृष्टान्तसुणो। एक किस्मके अतिसूक्ष्म देहधारी जीव वर्षाऋतुमै श्वेतवर्णके होतेहैं। लीख जो जूंस पैदा होतीहै ऐसा है छोटा अंग जाका सो च्यारपाऊंसैं चलताहै। और मुखकी फूंक दैंनेसे उसीजगै चिपटजाताहै तो देखना चाहिये कि अतिछोटा शरीरके भीतर उसके आकाशमैं अन्तःकरणकी वृत्तिया वाके शरीरकी रक्षा कर्तीहै। तो विचारो कि अन्तःकरणकी वृत्तिया कितनी सूक्ष्मतासैं काम करती हैं। तुम्हारे स्थूलकों देखतें वाका अतिछोटा शरीर है परन्तु जो अन्तःकरण तुम्हारे शरीरमैं काम कर्ताहै। वैसाही उसमै काम देताहै और रक्षा कर्ताहै। याहीप्रकार बडाब्रह्माण्ड और तुम्हारा शरीर छोटा ब्रह्माण्डमैं जानो बडाब्रह्माण्डका अन्तःकरणकी वृत्तियोंमैं तुम्हारा स्थूलसैं अन्त करण खिंचकर कारणरूप मै नाश होके अर्थात् लय होके, जास्थानकी वृत्ति अन्तमे रहतीहै, वोही महदब्रह्माण्डकी वृत्तिनमैं

जामिलतीहै। फिर त्रिविधकर्मनकी वासना शुभाशुभमैं जन्मपातेहे। ये सूक्ष्मज्ञानहै, तुम्हारी समझमै कम आवेगा। जव मोकों प्राप्त होवोगे तव जैसे है वैसा जानोंगे। ये जो मनुष्यका शरीरहे सो छोटा ब्रह्माण्डहे। याहीको योगीराज ऋपिमुनियोनें देखके सवकुछ वर्णन कियाहे। और वडा-ब्रह्माण्डकों देखनेकी किसीकी सामर्थ्य नहींहे। जो कुछ छोटामैंहे सोई वडामैंहे। ये वडाब्रह्माण्ड अप्रमाण अनन्तहे ताकों वहुतसे गोलाकार कहतेहै, तो क्या वे यासे अलग होके कही आकाशमैसै पृथ्वी देखीहे। क्या इनकी आंखनकी इतनीवडी निगाह होगई जासै सव पृथ्वीका अन्त नजर आया। ये तो फक्त पांच सात टापूनमैं डोलेहैं और दुरवीनके जरियेसै रेखागणित वीजगणितकी विद्यासै पृथ्वीका अनुमान करिके गोलाकार वतातेहैं। येतो मनुष्यकी समझसै वाहिर वातहे। पृथ्वी अनन्तहे, जल भी तो पृथ्वीपरही है। ये पृथ्वी कहीं कैसी कहीं कैसी कहीं ऐसी है कि जहा मनुष्यका कदाचित जाना नहीं होसक्ता ये महद्ब्रह्माण्ड आदि अन्तसैं रहितहे। पहलैं गीतामैं कहिआयेहे ॥

श्लोक—प्रथमप्रकाशमै है। ये मनुष्य वाह्यविद्यावानोनैं पृथ्वीका गोलाकारका नमूनां वनाके सूर्यकी चालके अंगका यम करिके वच्चेनकों मदरसेमैं पढातेहे याने गोलाकारका नकशा समझातेहे और कहतेहे कि पृथ्वी फिरती है सो

कहना इनका मिथ्याहै ये तो अचलाहै मनुष्यकी बुद्धिसैं अगम्यहै। हे प्यारा! ये मनुष्य बाह्यविद्या पढकर अभिमानी होजाताहै। और आपकों बडा बुद्धिमान् समझके मेरे वचनोंपै तर्क करते हैं। ये मन्दमति कामधनके गुलाम हैं। इनकों मेरे वचनोंका तत्त्वप्रकाश नहींहोता। जब ये मेरे प्रेमके साथ भक्त होवैंगे और दीन कोमलचित्त निरअहंकार होवैंगे। और मेरा स्वरूप सन्त योगीनका सत्संगसेवा करैंगे अपनीं बाह्यचतुराई छोडके उनका वचन सुणके विचारेंगे उनका उपदेशसैं योगमार्गका अभ्यास करैंगे। जब मेरी कृपासैं निजबोध पावैंगे तब तत्त्वज्ञानकों प्राप्त होवैंगे। हे प्यारा! विद्या अविद्या दोहै। विद्यानाम उसकाहै जाकरिके बहुतसे कर्मनके फन्देनसैं सुलझके अपने स्वरूपमै स्थित होवै और अविद्या वोहै जासैं अहंकार उपजै और बहुतसे कर्मनके फन्देनमै फँसै और अभ्यन्तर ब्रह्मविद्या योगकी सिद्धतासैं प्राप्त होतीहै ॥

प्रश्न—हे महाप्रभो! पैगम्बर नबियोंनैं जन्म नही बताये ऐसा बयान कर्तेहै कि कयामतके वक्त जैसै वर्षाकालसैं जमीनके बीज इकदम उपजतेहैं ऐसैही जमीनके पडदेमैंसैं सब रूह इन्साफ देनेकों खडीहोजावैंगी। और कान, आख, मुख, हस्त, पाव, सबही अग पुकारके अपनें २ भले बुरे कर्मनका बयान करैंगे। सो इनके कहनेका तात्पर्य भी तो कृपाकरिके कहो ॥

उत्तर–हे प्यारा! मूसायीशा महम्मदके वचनोकाभी येही तात्पर्य है। कि मै जो आकाशरूप पुरुषहू च्यारतत्त्व अन्तःकरणसहित प्रकृतिरूपी पृथ्वीहूं सो या पृथ्वीके पडदेमें अनेक जे वृत्तिया त्रिधारूपी रूह रहतीहै सो कया मत जो शरीरका अन्तहै, उसवक्त इनके जिगर्मे बीजोकी तरह भलेबुरे कर्मनकी कल्पना खडी होजातीहैं और अन्तःकरणकी मारफत सब हाल मालूम होताहै। उस वक्त इन्साफ जो इन्होंने शुभाशुभ कर्मकियेहैं। रूहकों जिलाके यानें जन्मान्तर देके उलवी सिफली दरजोंमें यानें दोजख बहिश्तमें अच्छेबुरेकर्मनका फल देताहू। सो सबका एकसिद्धान्तहै अल्पबुद्धियोंकों फरक मालूम होताहै मै बुद्धि बखशोंगा जाकरिके सबहाल जानैगा।

मगल उवाच।

हे सर्वबोधक! मुकुन्दस्वरूप आपने स्थूलशरीरकी सृष्टिका नाश तो कह्या सो तो श्रवणकिया अब दूसरी प्रलय सूक्ष्मशरीरकी जो सृष्टिनाश होतीहै सो कृपाकरिके कहो।

अनाम उवाच।

हे सुबुद्धे! अब दूसरी सुणो। हे अनघ! जब महायोगी बाल्यावस्थासैंही मेरी आज्ञा पालन कर्ताहुवा शुभकर्म कर्ता है और सद्गुरुका सग पाके उनकी कृपासैं मेरा योगमार्गका अभ्यास कर्ताहै तब अशुभकर्मनकों तो शुभकर्मनसैं नाश कर्ताहै और ससारके भोगरूपी वृत्तिनको मेरी प्रेमभक्तिका

जोर जो वैराग्यहै वासैं नाशकर्ताहै। आसनसै शरीरका सजम कर्ताहै । और प्राणायमका साधनसैं पाचतत्त्वनकी प्रकृतिनकों पाचोंतत्त्वोंमें मिलाताहै । सो एक २ तत्त्वकी पांच २ प्रकृतिहै सो श्रवणकरो । पृथ्वीतत्त्वकी पाच प्रकृतियेंहै।अस्थि पृथ्वीरूप पृथ्वीहै,त्वचा जलरूप पृथ्वीहै,मास अग्निरूप पृथ्वीहै, नाडी वायुरूप पृथ्वीहै, रोम आकाशरूप पृथ्वी है, ये स्थूलरूपहैं। अव जलतत्त्वकी सुनों। मेद पृथ्वीरूप जलहै, मूत्र जलरूप जलहै, रक्त अग्निरूप जलहै, कफ वायुरूप जलहै, वीर्य आकाशरूप जलहै येभी स्थूलरूपहै। अग्नितत्त्वकी सुनो। क्षुधा पृथ्वीरूपाग्निहै, प्यास जलरूपाग्निहै, आलस्य अग्निरूपाग्निहै, संगम वायुरूपाग्निहै, निद्रा आकाशरूपाग्निहै, ये स्थूल सूक्ष्म संवन्धीहै। वायुतत्त्व कीसुनों। सिमटना पृथ्वीरूप वायुहै, डोलना जलरूप वायुहै, फैलना अग्निरूप वायुहै, भागना वायुरूप वायुहै कपना आकाशरूप वायुहै, ये स्थूलसूक्ष्म संवन्धी हैं। आकाशतत्त्वकी सुनो। भय पृथ्वीरूप आकाशहै, मोह जलरूप आकाश है, क्रोध अग्निरूप आकाशहै, काम वायुरूप आकाशहै, लोभ आकाशरूप आकाशहै, ये सूक्ष्मसंवन्धीहैं। सव प्रकृति परस्पर मिलीहुई पचीसहैं सो योगी प्राणायामके वलसैं सवकों लय कर्ताहै योगधारणके समय योगी दशोंइन्द्रियोंकी वृत्तिनकों सूक्ष्मशरीरमें लयकर्ताहै और अन्त करण तीनों गुणसहित साक्षी जो तुरीयास्वरूपहै तामें लयकर्ता

है। और सद्गुरुकी भक्तिसैं योगका वल जो प्राणायामहै ताके प्रभावसैं तत्त्वनको तत्त्वनमें लयकर्ताहै। पृथ्वीको जलमें, जलको अग्निमें, अग्निको वायुमें,वायुको आकाशमें, आर सववृत्तियोंके अहंकारको महत्तत्त्व जो अपराप्रकृतिहै तामें, लयकर्ताहै अपराको पराप्रकृतिमें और पराप्रकृति जाको श्रुतीकहतेहै वो पुरुष जो सत्तास्वरूपहै तामें लयहो जातीहै। पश्चात् वहासैं परे जो परात्पर वो अवाच्य अकह अनाम है ऐसे सव वृत्तिनका योगी नाश करिके अर्थात् लयकरिके समाधिमें स्थित होता है सो सूक्ष्मशरीरकी सृष्टिका नाशहै।

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे
अनाम–मंगलसम्बादे उभयप्रकारसृष्टिनाशजन्मान्त
व्याख्यानवर्णन नाम द्वितीयप्रकाशः ॥ २ ॥

मंगल उवाच।

हे दीनवन्धो! हमनें ऐसें सुनाहै कि कलियुगमें समाधि संन्यास यज्ञ नहीं होसक्तेहैं सो इनका तात्पर्य कृपाकरिके कहो।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! येकहना सत्यहै। देखो कलियुग नाम कपटका है जिन मनुष्योंकी मलीन रज तम वृत्तियाहै उनके सव व्योहार दम्भ कपट क्रोध निर्दयतासैं भरेहुएहै ऐसी

दशामैं ये उत्तम कर्म कैसैं होसक्तेहैं। जिन मनुष्योंके रज तमशुद्ध प्रधान जिनके सतोगुणहै उनके सव कर्म, छल ईर्षा द्वेषसैं रहित दया धर्म सन्तोष कोमलता सत्यताकों लीयेहैं। उनसै ये उग्रकर्म होसक्तेहैं? देखो अव हालमे वहुतसे महात्मा योग समाधि सिद्धके प्रगट हुएहैं। कवीर, नानक, दादू, गरीवदास, रज्जव, राधास्वामी, आदिजानो। हेप्यारा! शुद्ध सतोगुणका नाम सतयुगहै जिनके सतोगुणी व्योहारहै वे सतयुगके वासीहैं और सतोगुणकों लीये शुद्ध रजोगुणका नाम द्वापरहै। जे सतोगुणके साथ शुद्ध रजोगण वर्ततेहै, वे द्वापरके वासीहैं। सतोगुणकों लीयें शुद्ध रजतम जामैं सो त्रेतायुगहै। जेसतोगुण वाणीकरिके शुद्ध रजतमके कर्म कर्तेहै वे त्रेतायुगके वासीहै। सत्वगुणहीन रज तम मलीन जामैं सो कलियुगीहैं। जे झूँठ, कपट, ईर्षा, द्वेषके साथ दयाहीन क्रोधी निठुर सूम अज्ञानी अतिकामी लोभ मोहके वसीभूत सवकर्म मलीनहै जिनके वे कलियुगी कहलातेहैं। भला अच्छे उत्तमकर्म मलिनसज्ञामैं कैसै होसक्तेहैं। पहिलैं कह्यागया सो ठीकहै। हे प्यारा! तुम तो सतोगुणी पुरुषहो तुमसैं ये शुद्धकर्म होसकैंगे खोटी वृत्तिवालोंकों मनाहै जैसैं किसान अपना शुद्धखेतकरिके समयपै वीज वोताहै वो ईश्वरकी कृपासैं फलदायक होताहै। सतयुगमैं रहनेवाले सर्वसकल्पसैं संन्यास होके योग मार्गमैं ध्यानसमाधिके

कर्म कर्तेहैं। द्वापरके रहनेवाले मलिन संकल्पसैं रहित शुभ इच्छा जो मेरे मिलनेकी भक्तिके साथ मेरा जो सद्गुणस्वरूप सद्गुरुका ध्यानकरनां योगाभ्यास करनां और सव शुभआचरण रखनां ये द्वापरके कर्महैं त्रेतामैं श्रेष्ठजनोकों पूजना भोजनवस्त्रसै सेवाकरना प्राचीन श्रेष्ठपुरुषनकी तसवीर या मूर्तिकी पूजा करना उत्तमजनोको और अपनें कुटम्ब मित्र पाडोसी आदिकों पुत्रकन्याके विवाहमै उत्सव जात्रानमै विधिपूर्वक मानसहित भोजन कराना ये वाहिरके यज्ञ करना संजमसै रहनां, ब्रह्मचर्यसहित सत्य वोलनां, ये त्रेताके कर्महै, और कलियुगमें ये ऊपरकहेहुए कर्म शुद्धतासैं नहीं वनसक्के विवाह नुक्ता कर्तेहैं परन्तु दम्भ अभिमांन कठोरताके साथ कर्तेहैं सो निष्फलहै। उनका यहीफल होताहै कि, उनकों करिके दम्भताकेसाथक हते डोले और अभिमानी होजातेहैं। हेप्यारा! कलियुगमैं सुमरन कीर्तन श्रद्धासहित दान दैनेंसैं शुद्ध होतेहै। और तीनों युगनमै मानसी पाप लगताहै। क्योंकि उनमें शुद्धमनसै सव साधन होतेहै और कलियुगमैं मानसी पुण्य तो लगताहै। पाप नहीं लगता सो कलियुगका न्याय वडा हलका रक्खाहै॥

प्रश्न॥ हे स्वामिन्! ऊपर जो आपने कथन किया उनमैं वाहिरके यज्ञ वतलाये भीतरके यज्ञ कोंनसेह। सो कृपाकरिके कहो।

उत्तर॥ हे प्यारा! भींतरके यज्ञ भीतरही होतेहैं। नरमेध, गोमेध, अश्वमेध, छागमेध, और वहुतसे भेदनकरिके वेदनमैं कहेहैं।

अथ छागमेधयज्ञवर्णनम्।

ये अज्ञानदशामे कामी क्रोधी लोभी जो अहकारहै सव कर्मनके संगमै कर्ताहै। सोई पशुरूप वकराहै। उसको क्षत्री जो योगधारण कर्ताहै सो योगी ज्ञानखड्गसे तुरीया ज्योतिरूप शक्तिके वलदान चढाताहै। अर्थात् उस अहकारको लय कर्ताहै। और सव द्वारसु प्मणारूपी सुपारीसैं वन्ध करिके ब्रह्माग्नि कहा प्राणायामकी अग्निमें हवन कर्ताहै। ये वाह्यकर्मी पढेहुए मनुष्य मेरी श्रुतीनके तत्वार्थकों तो समझते नहीं और वा वचनकी छाया वाधके वाहिर जो वकरा जीवहै उसके नऊ द्वार सुपारीनसैं वन्ध करिके हवन करतेहैं। हे प्यारा! वडे अनर्थकी वातहै कि पशुजीवके हवन करनेसै ईश्वर प्रजापति इन्द्रदेवादि प्रसन्न होवे। वेतो जव प्रसन्न होवेंगे तव तेरा पशुरूप अहकारकों ब्रह्माग्निमै हवन करैगा। तू आपेकों तो वचाताहै। दूसरेकी ज्यान लेताहै। विचारके देखो। जो पशुके शरीरका रस वाहिरकी अग्निकी मारफत प्रजापति आदि सवकों पहुंचैहै तो तुमभी पशुके आमिपका रस जठराग्निकीमारफत अपने शरीररूप ब्रह्माण्डका

प्रजापति जीवात्माहै ताको क्यो नैं पहुंचावो जैसै क्षत्री आदि व्रतसे मनुष्य गृहस्थाश्रममें कर्तेहे। अब क्या कहैं तुम्हारा भी दोप नही । वे श्रुतियोंके वचनही ऐसैहै कि अर्थ कुछ औरहै, और भाव कुछ औरहै । सो योगियोंके वचन योगीही जानतेहैं। ये वाहिरके यज्ञ नकलीहैं। अल्पहिंसाविशेपपुण्य होनेसै उनकी कामना सिद्ध होजाती हैं। जो विश्वासकरिके कर्तेहै क्योकि शुभाशुभ कर्मनका फल मिलताहै ।

अथ अश्वमेधयज्ञवर्णनम् ।

शुक्लयजुर्वेदस्य वाजसनेयिसंहिता ॥ महीधरकृतवेद दीपाख्यभाष्यसहिता । जीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्य्येण संस्कृता प्रकाशिता च द्वाविंशोऽध्याय. ।

मन्त्रेण ।

तेजोऽसिशुक्रममृतमायुष्या ॥ आयुर्मे पाहि। देवस्यं त्वा सवितुःप्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्यामाददे ॥ १ ॥ इमामगृभ्णन्रशना मृतस्य पूर्वआयुंपिविदथेषुकव्या ॥ सानोअस्मिन्सुतआवभूव ऋतस्य सामन्सरमारपन्ती ॥ २ ॥ अभिधाअसिभुवनमसियन्तासि

धुर्त्ता ॥ सत्वमग्निंर्वैश्वानरꣳसप्रथसंगच्छस्वा
हाकृतः ॥३॥ स्वगात्वांदेवेभ्यःप्रजापतयेब्रह्म
न्नश्वंभन्त्स्यामिदेवेभ्यःप्रजापतयेतेनंराध्या
सम्॥तंबधानदेवेभ्यःप्रजापतयेतेनंराध्नुहि॥४॥
प्रजापतयेत्वाजुष्टंप्रोक्षामिइन्द्राग्निभ्यांत्वाजुष्टं
प्रोक्षामि॥वायवेत्वाजुष्टंप्रोक्षामिविश्वेभ्यस्त्वा
देवेभ्योजुष्टंप्रोक्षामिसर्वेभ्यस्त्वादेवेभ्योजुष्टंप्रो
क्षामियोअर्वन्तंजिघांꣳसतितमभ्यमीतिवरु
णःपुरोमर्तःपुरःश्वा ॥५॥ * स्वयंवाजिस्तन्वं
कल्पयस्वस्वयंयजस्वस्वयंजुषस्व ॥ महिमा
तेऽन्येननसंनशे॥१५॥ नवाउएतन्म्रियसेनरि
ष्यसिदेवाँ २ ॥ इदेषिपथिभिःसुगेभिः । यत्रा
संतेसुकृतोयत्रतेययुस्तत्रंत्वादेवःसंवितादधा
तु ॥ १६ ॥ अग्निःपशुरासीत्तेनायजन्तसएतं
लोकमंजयद्यस्मिन्नग्निःसतेलोकोभविष्यतितं
जेष्यसिपिबैताअपःवायुःपशुरासीत्तेनायजन्त

* पन्दरहसें सतरहतक तेईसवीं अध्यायके मन्त्रहैं । और २१ मन्त्रसें लेके ३१ तक अश्लील अनुचितशब्दहैं यानें लिखने पढनेके योग्य नहींहैं ॥

सएतंलोकमंजयद्यस्मिन्वायुःसतेलोकोभंवि
ष्यतितंजेष्यसिपिबैताअपःसूर्यःपशुरासीत्तेना
यजन्तुसएतंलोकमंजयद्यस्मिन्सूर्यःसतेलो
कोभंविष्यतितंजेष्यसिपिबैताअपः ॥ १७ ॥

इति ॥

हेप्यारा! शुक्लयजुर्वेदमैं अश्वमेधयज्ञका वर्णन कियाहै कि जिस अश्वका हवन होवैगा वो कैसाहै सपूर्णका आश्रय सवका निग्रहकर्ता जगत्का धारणकरनेवाला पवन प्रजापतिकासा पराक्रम रखताहै ऐसा अश्वको वैश्वानर विश्वेभ्यःसर्वेभ्यः हितकारी। अग्नि सर्वत्र अधऊर्द्धमें फैलनेवालीमैं हवन कियाजायगा। पहिले श्वानकों मारके वैतचटाईके ऊपर अश्व और श्वानकों रखके जलमैं स्नान कराके तापीछे अश्वको रशनासे बाधके हवन करै। हेप्यारा! पहिले कैसे श्वानकों मारै ये जो ईर्ष्या द्वेष रखनेवाला अहंकारहै ताकों मार। वैतचटाई जो फलरहित कर्म ताके ऊपर उभयकों रखके। शान्तिरूप जलमैं स्नान कराके तिरावै। और रशना जो भींतर हलकमैं इस जीभकी जडके ऊपर छोटी जीभ औरहै। वासैं नासिकाके पवनकों रोकके यानें अश्वको बाधके हवन करै। ऐसा अश्व कौनहै। जो सवका आधार आश्रय सवका निग्रहकर्ता जगत्का धारणकरनेंवाला पवन प्रजापतिकासा पराक्रम रखताहै। हेप्यारा! ऐसा

अश्व ये वाह्यमन प्राणरूपहै । अनेक वासनानके सग डोलताहै । सो योगी महानृपति याकों सर्वत्र फेरके । पृथ्वी जो शरीर ताकी दिग्विजय करिके । पश्चात् आचार्य जो सद्गुरु याजकहैं सो श्रेष्ठवृत्तिनके संग प्राणायाम मूसलसे मारके ब्रह्माग्नि सर्वत्र फैलनेवाली तामें हवन करतेहैं । सो अश्वमेध यज्ञहै ॥

अथ गोमेधयज्ञवर्णनम् ।

हेप्यारा! गो जो इन्द्रियाहैं सो उसही अश्वमेधके अन्तर्भूत विश्वविजई जो नृपति योगीहै सो तिनको ब्रह्माग्निमै हवन कर्ताहै । सोई गोमेधयज्ञ है ॥

अथ नरमेधयज्ञवर्णनम् ।

नररूप महायोगी सर्वलोकविजई आप जो जीवात्मारूप है सो परमात्मा परब्रह्ममें धारणा ध्यान समाधिसें लीन होजाताहै । जहा एकोऽहं कलनाहू नही रहती वो नरमेधयज्ञ है। ओर सव यज्ञ इनही यज्ञनकी सिध्दताके अर्थ। वेदनमें अनेकभेदन करिके कहेहे सो सव यज्ञनका वेत्ता महायोगी होताहै । और हेप्यारा! तीनदण्ड मनुष्यनकों है॥ उनकों करेविना मनुष्योंके अन्त.करण शुद्ध नही होते।

प्रश्न—हेस्वामिन् ॥ तीन दड मनुष्यनकों कौनसे हैं। सो कृपाकरिके कहो ।

उत्तर—हेप्यारा! एक तो पितृदण्ड,दूसरा देवदण्ड तीसरा ऋषिदण्ड, सो पितृदण्ड तो पुत्रहोनेंसै दूर होताहै । क्योंकि कुलका धर्म धारणकरनेवाला होगया। जलदान, अन्नदान, पितृनके नामपर करैगा ।

प्रश्न—हे महाराज ! वहुतसे मनुष्य कहतेहैं कि, क्या पितृश्राद्धमैं जीमनेंको आतेहैं कि तर्पणका पानीपीते है ।

उत्तर—हेप्यारा! आचार्योंने पितृनसैं विशेपप्रीति करानेंके अर्थ उपदेश दियाहै। देखो मृतक पितृनके नामपै भी अन्न जल दान देनेकी आज्ञाहै तो विचारो कि जो मौजूदहै उनकी कितनी वडी सेवा करनीं चाहिये। पितृनके नाम पर उत्सव करना श्रेष्ठजनोको और कुटम्बको जिमाना सो उत्तमकर्म है। कर्मनका फल तो सव प्राणीमात्रकों मिलताहै, कर्मनकी वडी गहनगति है । सो पुत्रवान् पुरुप अन्तःकरणमैं सन्तुष्ट होजाताहै । हे प्यारा! संतुष्ट वो होवैगा जाको भक्तियोगकी इच्छा होतीहैं और देवदण्ड वाहिरके यज्ञनसैं दूर होताहै ॥ तीसरा ऋपिदण्ड जव निवर्त होताहै तव वेदशास्त्र महात्मा योगीजनोकी वाणियोंके प्रथनको श्रवण कर्ताहै।अथवा वाचताहै जव दूर होजाताहै । इस धर्मरूप दण्डके करनेसै याकी पशुसंज्ञा मिटजातीहै। क्योंकि शास्त्रोंके द्वारा याकों शुभाशुभ कर्मोंकी मालूम होजातीहै। इन तीनों आज्ञानकों जे

पुरुष भलीप्रकार पालन कर्ते है सो मेरी प्रेमभक्तिके योग्य होतेहै

अथ महात्मा और कवियोंके कथनका निर्णयवर्णन।

प्रश्न--हेमहाराज ! वाजे २ मनुष्य कहतेहैं। कि जैसैं ये महात्मा कथन करतेहैं ऐसै तो कविलोग भी ग्रथ वनाले ते हैं। सन्तौमैं क्या अधिकताहै। ये वुद्धिवानोंकी कहीहुई कहांनियाहै ॥

उत्तर--हेप्यारा ! ऐसैं कहनैंवाले मनुष्य अज्ञान अल्पवुद्धिहैं वे शब्दोके तत्त्वको नहीं समझते। इस हेतुसै कवियोंकी कहानी, और महात्मानकी वाणी, वरावर समझतेहैं विचारके देखो। कवि तो मनुष्यनकी चतुराईके ग्रंथ पढके कथन कर्तेहैं, सोभी जे राजसी लोगहै उनके रिझानेके वास्ते उनकी वंशावली या मनुष्यनके युद्ध या उनकी झूठी वडाई तथा कामक्रीडा चतुराई हासी ठट्ठा उपजानेवाले कथन कर्तेहै सो ऐसे कथन संसारमै फँसानेंवाले नरकमैं लेजाने वालेहैं। और कवि तो धन भोगनकीवासनामैं मलिन है। और महात्मा योगी जो कहतेहैं, वे वाही रहस्यमैं चलतेहैं और जो वात देखीहै सो कहतेहै। और उनका कहनां हरि सम्बन्धी भक्तियोग ज्ञानतत्त्वकों लिये हुयेहै। संसारसैं पारकरनैंके निमित्त है। मेरा खोज पता वतातेहै। और आप

उसहीमैं लगे रहतेहै । और मेरी ही प्रीति जिनके अन्तः-करणमैं है । ससारके सुखनसैं जिनकों वैराग्यहै, मोसै अनुरागहै, और अपना जीवात्माकौ योगकारिके मोमै लय-कर्तेहे वे मेरेही स्वरूप तारनातिरन हैं । जिनकी महिमा अपारहे उनका कहना कवियोंकी वरावर नहींहै, परन्तु जिन मनुष्यनकी छोटी वुद्धिहे वे ईश्वरकी महिमाके ग्रंथोंकों छोडके काम क्रीडाके विषय ग्रथ और मनुष्योंके युद्ध-नकी कहानी जे कवियोंनै वनाईहे उनकों वहुत राजीके साथ पढतेहैं । और कामरूपाग्निमे पडके रोगी होतेहै । और जे परमेश्वरकी महिमाके ग्रथ ऋपि मुनियोंनै कहेहै और योगी महापुरुष जो हालमै हुए उनकी सरल वाणी ! अनेक तरहकी मनुष्योके कल्याणके अर्थ कहीहैं उनकी तरफकों झाकते भी नहीं और नै मेरेनिमित्त कुछ कर्म कर्ते हैं । क्योंकि उनके मलिन संस्कारहे । और जे महायोगी अनेक देश २ की वाणीनमै कर्मउपासना ज्ञानका वर्णन कर्तेहै वे सव वेदरूपहे । क्योंकि जिनोंनै भक्तिसहित योगा भ्यासकारिके वेधे हैं अर्थात् छेदे है । प्राणायामका जोरसैं च्यारूँतत्त्वनको पाचवॉ जो आकाशहै वामै जाके परब्रह्ममै लयहुये हैं उस योगीका कहना चाहै जादेशकी वाणीमैंहो वेही वेद कहलातेहै । क्योकि उनकी जीवात्मा परमात्मा-मे लय होगई वे मेरेही स्वरूपहे यामै सदेह नही । योग वासिष्ठमै लिखाहै ॥

श्लोक—सर्वातीतपदालंबीपुर्णेन्दुशिशिराशयः ।
यस्तिष्ठतिसदायोगीसएवपरमेश्वरः ॥
इति ।

सो महापुरुषोंका तात्पर्यसिद्धान्त सबका एक है। बोली अनेकहैं ऐसा सन्देह नैं करना कि, अमुक महात्मा नैं सस्कृत या अरबी या फारसी तथा अंग्रेजीमें कथन क्यों नैं किया । जो वे महात्माहैं तो सब बोलीनमें कहना चाहियेथा सो बात नहींहै । मनुष्यशरीरका ऐसा नियम नियत अनादिकालसे है कि जा बोलीमें उसका अभ्यास ह उसीमें बोलैगा विना अभ्यास दूसरी बोली नही बोलसक्का।और बोली देश २ की अनेक प्रकारकी हैं । मैं जो सन्तयोगी महात्मा नबी पैगम्बर होके अवतार लेताहू उनके दो भेद हैं ॥ कारक और अवधूत कारक वे कहलातेहैं जे प्रजाका बन्दोबस्तके निमित्त कथन करते है और अवधूत वे हैं जिनका कहना प्रजानिमित्त कम है जिज्ञासूनके वास्ते मेरे मिलनेकी सेन कहते हैं जे कारकहैं उनकी तीन प्रकृति होतीहै कोईमें तो रजोगुण ज्यादा होताहै उनके कथनमें बहुत फैलाव होताहै कोईमे तमोगुण ज्यादा है उनके कथनमे तामस होताहै खंडनज्यादाकर्तेहै कोईमें सात्विकगुण विशेष है उनका सतोगुणी उपदेश ज्यादा होताहै और कोई २ गुणातीत अवधूत है चाहे जो कहतेहै उनकी वाणी वडे अधिकारवालेके निमित्तहातीहै और वे

छोटे अधिकारोंका खडन कर्तेहै सो योगीकी महिमा योगीही जानते हैं इनकी अपार महिमाहै और ऐसा नहीं समझना कि जानैं ज्यादा कथनकिया वो वडाहै कह २ के सव थक जातेहै कहना वाकीही रहजाताहै । मेरी अपारमहिमाहै वचनसे नहीं कहीजाती वेद पुराण आदि वहुत कहकेभी पीछे अन्तमैं ऐसैं कहतेहै नेति नेति मेरी महिमा सद्गुरुका भक्त होवैगा उसको मालूम होवैगी नगुराको कुछ प्राप्त नहीं होता नगुराका मेरे दरवारमैं दखल नहींहै सगुरा वोहै जो मेरी कही हुई आज्ञानकों धारण कर्ताहै वाके सव व्योहार कपटरहित कोमलता दयासंयुक्त होतेहैं । सव प्राणीनसे निर्वैर भक्तियोगका साधनेवाला है परन्तु जव मैं सद्गुरु होकर मिलोगा ताको मैं कृपाकरिके वुद्धियोग देऊगा वाकरिके मेरी गुप्तप्रगटमहिमाको जानैगा और दिव्यदृष्टि देऊगा जाकरिके मेररूपनसे वाकिफ होवैगा । सो हेप्यारा सद्गुरु मिलना भी मुशकिल है जिसके घटमे अनन्यभक्ति होवैगी वाकों मिलैंगे पाखंडी गुरु तो ससारमैं वहुतसे है वे मान वडाई धन पूजनेकी वाञ्छारखतेहैं और वहुतसे अपनी महिमाकेवास्ते चेलाकर्ते है और देखादेखी वहुत मनुष्य उनके शिष्य होके कंठीतिलक उनकेनामकी चपडास धारण कर्तेहैं औरवे गुरु गुसाई अनेक वाहिरकी जालसाजी झूठी भक्ति दीखा २ के स्वादिष्टप्रसादका लालच दे-

देके भेटलेते हैं और वे आप नगुरेहैं नै किसी महापुरुपनकी सेवा करते है नै साचीभक्ति कर्तेहैं नैं योगमार्गका साधन-कर्तेहैं नालायक शंठ मूर्ख ज्ञानसै हीन है रस खाखाके शरीर पुष्ट करिके दोच्यार वातैं वनाके सिद्धाई जतातेहै। उनकों तू निश्चयकरिके असुरसमझ वे संसारकों धोका देतेहैं और ऐसेही उनके शिष्य धनाभिमानी दक्षहोतेहैं। और कई साधु होके अपनी महिमा के वास्ते चेला कर्तेहैं वहुतसे आके मुडजातेहै जे पेटार्थी रोगी आलसी है कपट छलसै भरेहुये ऊपरसै स्वांग दिखाके उसी गुरूकी अजोग झूठी लोगोके सामनै वडाई कर्तेहै सो ऐसे वे गुरुभी नगुरे और उनकेचेले महानगुरे इनकी सोहवतसे सूधेलोग धोका खाजातेहैं और ससारीमनुष्य तो ऐसे पाखडी गुरुके गुलामहीं होजातेहै क्योकि उनके अन्त.करणमैं अनेक वासना होतीहैं उनकी सिद्धताके वास्ते उन कपटीयोको सेवते है ऐसैंही उनका झूंठा कारखाना वनाही रहताहै पीछे वे अपनी चालमैं आप ठगाजातेहैं, नष्ट होतेहैं, अपने कर्मनका फल पातेहैं उनकों मैं खोटीयोनिनकी वृत्तिया देताहू वे मेरे वैरी धर्मकी हानिकरनेवाले भलोके घातकहैं उनके मेरी भक्तिका लवलेश नहीं है क्योंकि जहा मेरी भक्तिहै वहा शुभगुण वासकर्तेहै दया धर्म कोमलता समता कहा समान देखनां सन्तोप निर्वैरता निराहकारता प्रसन्नता ज्ञानविज्ञान तृप्तात्मा दीनता सूधे

सरल गरीव होकर रहतेहैं और भोजन वस्त्र शरीरकी जरूरतके माफिक वर्तते हैं निष्कपट निर्पक्ष सववासनानसैं रहित सद्गुरुके सेवक योग मार्गके साधनेवालेहैं उनसे मैं सदा प्रसन्नहू वे मेरे और मैं उनका और सव मनुष्य अपनें कीये कर्मनको फल पावैंगे ।

मगल उवाच ।

हे सर्वदर्शी मैनें जो आपसे तीसरा प्रश्न किया कि मैं कोनहूं सो कृपाकरिके कहो ।

अनाम उवाच ।

हेप्रिय ! तू वोही है जो कुछहै तो मैं और मोमैं कुछ फरक नहीं स्थानका भेदहै तू अपने धुरस्थानसै दूर होके सृष्टिकी उत्पत्तिके साथ मेरा अंश जीवरूप है अर्थात् जो सवकों जिवावै सो चैतन्य श्रुति रूपहै। शरीरके संग इन्द्रिया अन्त.करण गुणरूप होके अनेककर्म शुभाशुभके संग सुखदु.ख भोग भोक्ताहुवा वाहिर ब्रह्माण्डमै अनेक प्रपंचके व्योहार करिके शरीरकी अवस्थाके संग फैलके अपने निजस्वरूपको भूलगया और चौरासीका भागी होगया ये तेरा जीवरूपहै अव तू मेरा सग पाके च्यारूं आश्रमोंकों साधताहुवा योगमार्गहोके मोमै समाया सो मेराही स्वरूपहै जैसैं पाला गलके पानी होगया ये समाधिदशा है पीछे उत्थान होके तुरीय ज्ञानस्वरूपहै ।

अथ नौ खण्ड वर्णन।

गुदा, शिश्न, मुख, नासिकाके दोद्वार, नेत्रनके दो, श्रोत्रनके दोद्वार, ये नऊं द्वारहै सो नौखंड है। दशवा खड ब्रह्मरन्ध्रहे जामैं ब्रह्मसृष्टि रहतीहै॥

अथ त्रिलोकी वर्णन।

त्रिलोकी नाम तीनलोकनका है। गुदासैं नींचे तमोगुण कारिके नागलोकहे, गुदासैं ऊपर रजोगुणकारिके नासिकातक मृत्यु लोकहे, भ्रुव सत्त्वकारिके स्वर्गलोकहे। यासै परै ब्रह्मलोक जाके भींतर अनन्तलोकहैं जिनका कुछ कथन नहीं होसक्ता। कुछ २ महायोगियोंके द्वारा कह्या गयाहै परन्तु अपार महिमाहै वचनसै कहीनही जाती। मैंनें वेद-व्यासमुनिहोके अठारह पुराण वर्णन करीहैं परन्तु उनकों सुनके जे मेरे विश्वाससै हीनहे उनकों भ्रम होजाताहै। जब मैं इसकी प्रेमभक्तिके प्रभावसै सगुण सद्गुरु होकर मिलोंगा तब मेरी कृपासैं योगाभ्यासकरिके सब कुछ आपेमै देखैगा। जब सब सशय निवर्त होजावेंगे इतनें मेरे वचनोंकों सुनकर सन्देह नैकरै। क्योंकि जब मेरी कृपासैं दिव्यदृष्टि होवेगी तब सब शब्दोंका तात्पर्य जानेंगा। पहले सुनकारि निन्दा नें करे, निन्दासैं पापका भागी होता है। जामनुष्यकों किसी व्याख्यानका मतलब समझमें नें आवे और अनुचितसा मालूम होवे जब वो ऐसे मनमें विचार

करै कि मेरे शुभकर्मनके प्रभावसें जव ईश्वर मनकी आख उघाडैंगे तव सव गुप्तवात प्रगट होजावैगी। अभी तो मेरी विषयनके संग अशुभकर्मोंकरिके मलिन वुद्धिहै जासो शब्द समझमै नहीं आते। हेप्यारा! जवतक तुमसैं वो प्रगट नैं होवै वासैं पहिलैं सव वचनोंका न्याय मतकरो। और जे वाह्यविद्याका अभिमान करिके मेरे कहेहुये वचनोकी निन्दा करते हैं वे महामूर्ख हैं। शुभकर्म और मेरी भक्तिसें हीन झूंठे गालवजानेंवाले हे। हेप्यारा! मेरा भक्त चाहै जैसी ऊच नीच जातिमे हो मोको भक्त प्यारा हैं। और जो भोलेभावसै मेरेनिमित्त कर्मकर्ताहै वो मोकों ज्यादाप्यारा है। जैसे छोटे वालककी रक्षा ज्यादा कीजातीहै और प्यार वहुत कर्तेहै ऐसै जानों।

प्रश्न–हेमहाप्रभो! सातद्वीप कोनसेहै?

उत्तर–हेप्यारा! ऊपर जो मैंने वर्णन किया उनहींके अन्तरभूत सातद्वीपहै। ये मेरी वचनरूपी रचना तेरे उत्साहकेवास्ते और प्रेमविश्वासके वढानेकेलिये अनेक प्रकारकरिके, कहीहैं॥

अव सातद्वीपका वर्णन।

द्वीपकहिये प्रकाशरूप। ये मेरा मस्तक महाकाशहै, यामैं ज्योतिरूपहोके मैं प्रकाश कर्ताहूं, वो अगम्य ज्योति- है उसकी झलक सवलोकनमे और सातो द्वीपोमैं प्रकाश

कररहीहै । प्रथम द्वीप मूलद्वार है, दूसरा शिश्न है, तीसरा द्वीप नाभिहै, चौथा हृदयहै, पाचवां कंठहै, छठा भृकुटी- नके मध्यहै, सातवॉ भ्रुवके ऊपरहै।एक वडाद्वीप भ्रुवके पीछे है । जाकों ब्रह्मरध्र भृकुटी गुफालोकभी कहते हैं वाके ऊपर सत्यलोकहै,जहा हंसनके वहुतसे द्वीपहैं।उनके ऊपर अगम्य अगोचर अलख अपार द्वीपहै, जहा परमहंस महायोगी परमसन्त रहतेहै । आगै अकह अवाच्य अनामहै । हे प्यारा ! पहिले तुम शुभकर्म करोगे जव शुद्ध अन्त करण होवैगा । तापींछे मेरी भक्ति सद्गुरुकी सेवाके साथ उनकी कृपाके वलसे योगमार्गका अभ्यास करोगे तव मनुष्य- शरीर छोटा ब्रह्माण्डमै सवकुछ देखोगे, यामै सन्देह नहीं । सातद्वीपोंका योगी महाभूप राज्यकर्ताहै, किसी द्वीपमै मलिनवृत्तियांरूप असुरपशु उदय होवैं तिनकी शिकार खेलताहै । मनरूप घोडेपै सवार होके विमलवोध वल्लमकों हातमै लियें मेरुदण्डकी वन्दूकको धारण करिके कुम्भकका कारतूस रखके सुरतिकी शिस्तसै कामरूप सूकरकों और क्रोधरूप सिहको भयरूप भगेंडेको मारके पृथ्वी शुद्ध कर्ताहै । तिनकी शिकारका आमिष खाताहै ॥

प्रश्न—हे सर्वप्रकाशी ! च्यारवेद कैसेंहैं, च्यारवर्ण कैसैंहै, च्यारआश्रम कौनसेहै, च्यारअवस्था कौनसीहैं, च्यारमुक्ति कैसैंहैं, इन पाचप्रश्नोंका वर्णन मोकों कृपाक- रिके कहो । आपके वचन अमृतवत् लगतेहैं सुनि २ के ज्यादा रुचि होतीहै ॥

उत्तर–हे सुरुचे ! सबका वर्णन कर्ताहूं सावधान होके श्रवण करो ॥

अथ च्यारवेदवर्णन ।

हे प्यारा ! सरस्वती महापुरुष ब्रह्माकी आज्ञा लेके दक्षिणदेशमै लघुरीतिसे च्यार व्याकरण और कोश च्यारू वेदोंके रचके दक्षिणीबोलीकी ध्वनि लेके वेदोको प्रगट करतीभई । पश्चात् दक्षिणी मनुष्योंकी मारफत वेदोंका प्रचार पृथ्वीपर हुवा । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद, ये च्यार वेद च्यारू तत्वहैं । महायोगीका निज-मन जो स्वयंभू ब्रह्माहै । च्यार अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, ये ब्रह्माके च्यारमुख हैं । मन नाम उसका है जो सबका मनन करै, सकल्परूपहै । बुद्धि नाम उसका है । जो सबका निश्चय करै । चित्त नाम उसका है । जो भूलीवस्तुको प्रगट करै । अहंकार नाम उसका है । जो सबको धारण करै । ये च्यारूं एकरूपहैं । प्रथम ऋग्वेद जामैं क्रमसैं प्रथम अधिकारका वर्णनहै । दूसरा यजुर्वेद दूसरे अधिकारका जामै वर्णनहै । कर्म शुद्धहोनेसे वृत्तिया शुद्ध होतीहै, जाकरिके जुडाहीरहै अपने स्वरूपमै । तीसरा सामवेद जामैं तीसरे अधिकारका वर्णन शब्द योगमार्ग कह्या, प्रेमके प्रभावसै अनन्तशब्दोमै लय होताहै । चौथा अथर्वणहै । जामैं चौथेअधिकारका वर्णनहै । समाधि

अपार ज्ञान योगीके महारहस्य का वर्णनहै। और हे प्यारा! पांचवा सुसम्वेदहै। अनुभवकरिके गम्यहै कागजपै लिखा नहीं जाता। च्यारूवेदनकी सिद्धताके पीछे सुसम्वेद प्रकाश कर्त्ताहै। सो कहन सुणनसै भिन्नहै, पवित्रात्माही जानताहै, वचनसे कहनहीसक्ता अनुभवगम्यहै।

अब च्यारवर्ण कहतेहै।

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, पाचवा अंत्यजवर्ण है। अत्यजवर्णके मनुष्य इन्द्रियोंके भोगनकी लोलताकरिके अशुद्ध महामलिनकर्म करनेवालेहै। वे अंत्यज कहलातेहै। उन अंत्यजोंमै कोई २ श्रेष्ठ सग पाके शुभकर्म कर्त्ताहै और श्रेष्ठजनोकी तनमनधनसैं निष्कपट होके सेवा कर्ताहै, वो शूद्र कहलाताहै। क्योंकि जानैं सेवाका अधिकार पायाहै ताते सर्ववातकी सिद्धि होवेगी। वासेवाके प्रभावसैं अनेक शुभकर्म अनेक शुभवृत्तिनका ज्ञानरूप धन होजाताहै। उस धनसै श्रेष्टपुरुषोके संग वचनविलासरूप व्योपार करनेलगा। उसव्योपारसै शुद्धवृत्तिया रूप धन वहुत होगया सो वैश्यहै। पीछे शुभगुण शुभवृत्तिया रूपधनकों काम क्रोध लोभ मोह की जो खोटी वृत्तिया तस्करहैं सो हृदयरूप घरमें धसके धन लेजातेहैं। अर्थात् शुभवृत्तिन का नाश कर्तेहै। उन तस्करोंकी रखवाली करनेलगा। श्रेष्ठभावना जो शस्त्र याने शील क्षमा सन्तोष दया विवेक

विचार ये शस्त्र बांधके ध्यानरूप धनुषको धारणकर अपनी श्रेष्ठ रहस्यरूपी धनकी रक्षा कर्ताहै ॥ और हृदयभूमिके खोटीवृत्तिरूप वैरीनको जीतके भक्तियोगाभ्यासके बलसें सबभूमिपर निष्कटक राज्य कर्ताहै । सो क्षत्रीहै । पीछे निर्भय निर्वैर होके रज, तम, सनकी सब वृत्तिया अपने आपेसें प्राणायाम जो उत्तम कर्महै ताकरिके ब्रह्माग्निमें हवन कर्ताहै । पश्चात् शून्य शान्तसमाधिमे स्थित होताहै। फिर उत्थानहोके समदृष्टिकरिके चराचरको ब्रह्ममय देखताहै सो ब्राह्मणहै ॥

प्रश्न–हेमहाप्रभो ! ये तो आपनें च्यारवर्ण भीतरके बताये । बाहिरके कैसेंहैं सो कृपाकरिके कहो ।

उत्तर–हेप्यारा! बाहिरभी इनहींकी छायारूप हैं बाहिर धर्मको प्रवृत्त कियाहै । जैसै एक दानी होताहै तो दानका लेनेवालाभी होताहै । सो ब्राह्मणोको ईश्वरका वचनसौंपागया और इनकों आज्ञाहै कि श्रेष्ठधर्मोको धारण करो परमेश्वरकी जो आज्ञा वेदशास्त्रनमैंहै उनका प्रचार कर्तेरहो शुभकर्मोमें सबको प्रवृत्त करो। इश्वरकों शम,दम, तप, शौच, शान्ति, धारण करिके भजो । आर्जवता धारणकरो यानें कोमलवचनसैं सबका आदर करो । ज्ञान विज्ञान आस्तिकतासै परमेश्वरका सेवन करो और जो तुमकों गायत्रीमन्त्र करिके उपदेशहै सो सुनो । तत् कहिये वो सवितुर्

कहिये सबकों पैदाकरनेवाला श्रेष्ठतेज । देव कहिये क्रीडा-करनेवाला । उसका हम ध्यान धरतेहै जो सबका प्रेरकहै सो हे ब्राह्मणहो, तुम चित्तवृत्ति प्राणनिरोध करिके ऐसे परमपुरुषका ध्यान धरो । और क्षत्री वैश्य शूद्र तुम्हारी सेवा करैंगे और क्षत्री प्रजाका पालन करै और शिकारके आमिषका भक्षण करै । क्योकि या कर्मके करे विना इन्होंमै शूरबीरता नही रहती । उत्तम कर्मोंके धारणकरनेवाले ब्राह्मणोंकी सेवा करै । वैश्य वणिज खेती गऊ और श्रेष्ठपुरुषोंकी सेवा करै । शूद्र खेती करै । तीनोवर्णोंकी गऊनकी सेवा करै । ऐसे ये धर्म बाधेगयेहै । एक पूज्य और पूजनेवाला सब धर्म मजहबोंमै ईश्वरनै प्रबन्ध कियाहै ॥ और संन्यासी अभ्यागत साधु सन्त सबके पूज्यहै इनसें सबका कल्याण होताहै ॥

अथ च्यार आश्रम वर्णन ।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यस्त, ये मेरा पूराणा प्राचीन सनातनका मार्ग वेदनमै ब्रह्मानैं कह्याहै ये मैंने बडी उत्तम रहस्य बाधीहै, किसीबातका जामैं विघ्न नहीहै । सूधीसडकका मार्गहे । जांमैं सब भोगनको भोक्ताहुवा मोको प्राप्त होताहै ॥

प्रथम ब्रह्मचर्याश्रमहै ताय सुनो।

वाल्यावस्थामै अपनी कुलविद्या सीखै और जिसके श्रेष्ठ सस्कारहैं वाके हरिकी भक्तिका जवहीसै अंकूर उदय होजाताहै धनउपार्जनके निमित्त वक्तकी विद्याकाभी अभ्यास करै और ब्रह्मचर्य राखै कहा स्त्रीसे वचा रहै । कनिष्ठ ब्रह्मचर्य सोलह सत्रहवर्पका, मध्यम अठारहवीसका, उत्तम वाईसपच्चीसकाहै । ज्यादा ब्रह्मचर्य रखनेसै नपुंसक होजाताहै। स्त्रीकाब्रह्मचर्य १३ तथा १५ या १७ वर्पकाहै । सो हेप्यारा! ब्रह्मचर्यही सवधर्मनका मूलहै । विना ब्रह्मचर्य पकैं पहिले विवाह करना सो वडा अनर्थहै ॥

अब दूसरा गृहस्थाश्रम सुनों ।

ब्रह्मचर्यके पश्चात् विवाह करै । गृहस्थाश्रम सेवन करै, अपनी एक स्त्रीसेहीं संगम करै। जव वो रजस्वला होय ताके च्यार दिन पीछे एक २ दो दो दिनके अनन्तरसैं च्यारदिनतक वीर्यदान दे। पश्चात् ब्रह्मचर्य राखै । शुद्धतासैं धन कुमाके लावै अजुक्त धनका लालची नैं होवै । जासैं विघ्न उठै । झूंठ कपट और दु ख देके लियाजाय सो अजुक्त धन है । वासै वचारहै और आपत्तिकालमैं जैसै वनै तैसै कुटम्वका पालन करै । आपत्तिके पीछे उत्तम आचरण राखै । अपना धर्मको नै छोडै । वडेजनोंकी सेवा कर्ता रहै । माता पिताको सदा प्रसन्न राखै । अपनें कुट-

स्त्रीलोगोसे और सवसैं मिलाहुवा रहै । दूसरेका अपराध क्षमा करै । कृतघ्नी नैं होवै । सवके साथ नेकी करै । दुर्वचन कदाचित्किसीकों नैं कहै । सवका आदर सत्कार अधिकारके माफिक राखै । अपने उद्यमके कर्म करिके गुरुका संग करै । सवप्रकारसै सेवा भक्तिके साथ गुरूकों प्रसन्न राखै । परमेश्वरके मार्गका साधन कर्ता रहै । सर्व कर्म ईश्वरके मिलनेके निमित्त करै । फलवाछा नही राखै । जामैं परमेश्वरके कर्म नही होसकै ऐसा घनापसारा कर्मोंका नैं वधावै । यथालाभ सन्तोपमैं रहै । आमद देखके खरच करै कुछ आपत्तिकालकेवास्ते वचाके राखै । संसारके कर्म और योगाभ्यास परमेश्वरकेकर्म उभयकर्म नित्यप्रति करै । याका नाम कर्मयोगहै । ऐसै करते २ पैतालीस या पचास वर्षतक गृहस्थाश्रम सेवै ॥

अथ वानप्रस्थाश्रमवर्णन ।

हेप्यारा ! तापीछै शनैः २ वानप्रस्थाश्रमको अभ्यन्तर धारण करै अर्थात् गृहस्थाश्रममैंहीं रहके सर्भ छुटकारेका देखता रहै । विपयभोग लोभ मोह क्रोधसै अपनी वुद्धिकों समेटै और ध्यानयोगमैं ज्यादा तत्पर होवै भीतर सवसें वैराग्यको धारण करै, याकानाम कर्मसन्यास योगहै ओर कोई वक्त मन नैं रुके किसी भोगके अर्थ विघ्न उठावै तो उसको भोग भुगाके पुन· संजमध्यानके आन-

न्दमैं लगावै सत्संग सद्गुरुकी सेवा कर्ता रहै । उनकी आज्ञा लेके सबकुछ करै ऐसेंही मनसैं सजमरूपी लडाई कर्ता रहै, परमेश्वरके मार्गको विशेष करिके सेवै सो वानप्रस्थ अवस्थाहै । जब गृहस्थाश्रममैंहीं वानप्रस्थ अवस्था पकजावै और सब कर्मनसैं अरुचि होजावै, जैसे भोजन करिके तृप्त होजाताहै तब पदार्थोंकी उच्छिष्ट छोडदेताहै और उनसें अरुचि होजाती है । ऐसे जानो और धारण ध्यानमे श्रुती ज्यादा लय हो जावै । और बार २ उपरामका उद्वेग होवै ताकों रोक २ के पकावै । ये वानप्रस्थाश्रम योगाभ्यासीका है । और इसको भी वानप्रस्थ कहतेंहै ॥ जे स्त्रीसहित वनमैं रहै । जो स्त्री कुटुम्बमैंही रहना चाहै तो आपही निर्विघ्न स्थानमें एकान्त रहै । आसन नासाग्रके ध्यानसै मनका सजम करै । जप तप प्राणायामका अभ्यास कर्ता रहै । और जे समयपाके विद्यावान पण्डित होकेभी वानप्रस्थ सन्यास आश्रमोंके धर्मनको धारण नही कर्ते और कुटुम्ब के मोहमै फसके द्रव्य बधानेकी तृष्णामें अपनी सब आयु खोतेंहै वे महामूर्ख निजधर्मसै हीन विशेषदण्डके भागी होतेंहैं । हे प्यारा ! सनातन नाम परमेश्वरका है । जिन धर्मोंके धारण करनेंसै उसकी प्राप्ती होवै वेही सनातनधर्महैं । शुभकर्मोंसैं और उपासनासे अन्तःकरणकी शुद्धी होतीहै । जब अष्टांगयोगके अभ्यासके लायक होता

स्त्रीलोगोसे और सबसे मिलाहुवा रहै । दूसरेका अपराध क्षमा करे । कृतघ्नी नै होवै । सबके साथ नेकी करे । दुर्वचन कदाचित्किसीकों नै कहे । सबका आदर सत्कार अधिकारके माफिक राखै । अपने उद्यमके कर्म कारिके गुरुका संग करे । सवप्रकारसैं सेवा भक्तिके साथ गुरूकों प्रसन्न राखे । परमेश्वरके मार्गका साधन कर्ता रहे । सर्व-कर्म ईश्वरके मिलनेके निमित्त करै । फलवाछा नहीं राखै । जामै परमेश्वरके कर्म नहीं होसकै ऐसा घनापसारा कर्मोंका नैं वधावै । यथालाभ सन्तोषमै रहै । आमद देखके खरच करे कुछ आपत्तिकालकेवास्ते बचाके राखै। ससारके कर्म और योगाभ्यास परमेश्वरकेकर्म उभयकर्म नित्यप्रति करे । याका नाम कर्मयोगहे । ऐसें करते २ पैंतालीस या पचास वर्षतक गृहस्थाश्रम सेवै ॥

अथ वानप्रस्थाश्रमवर्णन ।

हेप्यारा ! तापीछै शनैः २ वानप्रस्थाश्रमको अभ्यन्तर धारण करे अर्थात् गृहस्थाश्रममैंही रहके सभै छुटकारेका देखता रहै । विषयभोग लोभ मोह क्रोधसे अपनी बुद्धिकों समेटै और ध्यानयोगमैं ज्यादा तत्पर होवै भीतर सबसैं वैराग्यको धारण करै, याकानाम कर्मसन्यास योगहे ओर कोई वक्त मन नैं रूके किसी भोगके अर्थ विघ्न उठावै तो उसको भोग भुगाके पुन: संजमध्यानके आन-

न्दमै लगावै सत्संग सद्गुरुकी सेवा कर्ता रहै । उनकी आज्ञा लेके सबकुछ करै ऐसैंही मनसैं संजमरूपी लडाई कर्ता रहै, परमेश्वरके मार्गको विशेष करिके सेवै सो वानप्रस्थ अवस्थाहै । जब गृहस्थाश्रममैंही वानप्रस्थ अवस्था पकजावै और सब कर्मनसै अरुचि होजावै, जैसें भोजन करिके तृप्त होजाताहै तब पदार्थोंकी उच्छिष्ट छोडदेताहै और उनसे अरुचि होजाती है । ऐसे जानों और धारण ध्यानमें श्रुती ज्यादा लय हो जावै। और बार २ उपरामका उद्वेग होवै ताकों रोक २ के पकावै । ये वानप्रस्थाश्रम योगाभ्यासीका है । और इसको भी वानप्रस्थ कहतेहै ॥ जे स्त्रीसहित वनमैं रहै । जो स्त्री कुटुम्बमैही रहना चाहै तो आपही निर्विघ्न स्थानमे एकान्त रहै । आसन नासाग्रके ध्यानसै मनका सजम करै । जप तप प्राणायामका अभ्यास कर्ता रहै । और जे समयपाके विद्यावान पण्डित होकेभी वानप्रस्थ सन्यास आश्रमोंके धर्मनको धारण नहीं करै और कुटुम्ब के मोहमैं फसके द्रव्य बधानेकी तृष्णामे अपनी सब आयु खोतेहैं वे महामूर्ख निजधर्मसै हीन विशेषदण्डके भागी होतेहै । हे प्यारा ! सनातन नाम परमेश्वरका है। जिन धर्मोंके धारण करनेंसै उसकी प्राप्ती होवै वेही सनातनधर्महै । शुभकर्मोंसैं और उपासनासैं अन्तःकरणकी शुद्धी होतीहै । जब अष्टांगयोगके अभ्यासके लायक होता

है। ब्रह्मचर्य गृहस्थाश्रममैं शुभकर्मों और उपासनासै अन्तः-करणकी शुद्धी करै । तापीछै जाकी उपासना कर्ताहै ताकों प्रत्यक्षमैं पाके याने सद्गुरुकों प्राप्त होके भक्ति सहित अष्टागयोगका अभ्यास करै । वा अभ्यासकों साधताहुवा वानप्रस्थाश्रममै होके समाधिसिद्ध संन्यासकों प्राप्त होवै । अर्थात् सनातन जो परमेश्वरहैं तामै लीन होवै। इसीका नाम सनातनधर्म है। ये आश्रमोका सनातनधर्म सव वर्णोंनै छोडदिया । इसी हेतुसैं सनातनके धर्मनकी नष्टता वहुतसी होगई । और ये धर्म औरोंनैं छोडदिये सो तो खैर। परन्तु ब्राह्मणोको तो छोडना वाजवी नहीं था। जो ये इन धर्मोमै वणेरहते तो औरभी वर्ण सुधेरे रहते। अव हालमैं सनातनधर्म प्रतिमापूजनही मुख्य रक्खाहे । पण्डितलोग इसीका उपदेश व्यारयान देते फिरैंहे । और जिन धर्मोमैं मोक्ष और परमेश्वरकी प्राप्ति होतीहै उन धर्मकर्मनका जिकरभी नही कर्तें मूर्तिपूजन तो फकत उपासनाके निमित्त है। जिसकी उपासना कीजातीहै उसमै भावना वधानेके वास्ते उनके नामकी प्रतिमा या तसवीर सामने रखलेतेहैं । कल्याण तो जव होवैगा जिनके नामकी तसवीर हे उनकों प्रत्यक्ष मे पावैगा । वे सगुणस्वरूप नरहारे सच्चे पूरे सद्गुरुहैं। उनहीके सव उत्तम नाम हैं । शिव शक्ति राम कृष्ण ऋषि मुनि आदिजानो॥ इति॥

अथ संन्यासआश्रमवर्णन।

अनाम उवाच।

हेप्यारा मित्र! वानप्रस्थके पश्चात् साठवर्षसै पहलै या साठतक सन्यास कहा सवका त्याग करै।ये वर्तमानकालकी आयु देखके आश्रमोकी आयुका विभाग कियाहै ऐसा लिखाहै'शतायुर्वैपुरुष.' इति श्रुतेः। परन्तु अव हालमैं सौ वर्ष की आयुका कोई २ पुरुष होताहै। क्योंकि ब्रह्मचर्य पकता नहीं॥ कनिष्ठ ब्रह्मचर्यमैही विगडजातेहै। मध्यम तकभी नहीं पहुँचते। हे प्यारा! सन्यास तीनप्रकारकाहै। वाह्य कर्मोंका संन्यास। शास्त्रोका ज्ञान विचारकरिके सन्यास। योगाभ्यास करिके संन्यास। विषयादिक कर्म त्यागके शरीरके कार्यकर्मकरना। सयमसै सात्विकीवृत्तिसे रहना सो वाह्यकर्मोंका संन्यासहै। ऐसे सन्यासी स्वर्गमे देवताहोके भोगनकों भोगके मृत्युलोकमै मनुष्यजन्म पातेहै। और जे षट्शास्त्रोंके विचारज्ञानसैं अपने आपैमै स्थिर होतेहै वो शास्त्रोके विचारज्ञानकारिके सन्यासहै। ऐसे संन्यासी महर्लोकतक जातेहै पीछे श्रेष्ठकुलमैं जन्म लेके योगाभ्यास करैंहे। और जे ब्रह्मचर्यआश्रमसैंहीं योगाभ्यासके साथ गृहस्थाश्रम वानप्रस्थ आश्रममै होके सद्गुरुकी कृपासै आसन प्राणायाम धारणा ध्यानके वलसे जीवात्माकों परमात्मामै लयकारिके समाधि अवा-

च्यपदकों प्राप्त होतेहैं सो योगसिद्धकरिके संन्यासहै ऐसे संन्यासी जन्ममरणसैं रहित होके सायुज्यमुक्तिकं प्राप्त होतेहैं । ऐसे महापुरुष चाहैं गृहस्थके स्थानमैं रहो चाहे एकान्तमैं रहो । परन्तु एकान्तमे निर्विघ्नता ज्याद रहतीहै । सगमें कुछ सगदोष लगताहै । परन्तु जायोगीक योग सिद्ध होगया । परिपक्क अवस्था होगई । वो सव स्थानोंमैं निर्विघ्न है । चाहे जहारहो वाकी मौज है वो तो योगी योगसिद्धके आनन्दमें आपेमैं आप रमण कर्ताहै । ब्रह्मानन्दमैं मग्न सिद्धसमाधिका सुख विलस्ताहै। उस महायोगीकी महामहिमा है और वाके रहस्यकी किसीको मालूम नही होसक्ती कृपाकरिके जाकों जनादे वो जानै । योगमायामै गुप्त रहतेहै । वे परमेश्वरके सगुण स्वरूप अवतार है ॥ सर्वसामर्थ्यहै । सर्वसिद्धी जिनके हाजर खडी रहतीहै । परन्तु वे निरइच्छा निर्वाणहै। करामातको करसे नहीं गहते है । सिद्धीनकों सूंघते भी नहीं। ऋद्धीनसें रूठे रहते हैं । निर्विकल्प अचिन्तसमाधिमैं लय रहते है ॥ ससारमे ज्ञानस्वरूपहोके सोलहवर्षकी अवस्था के भीतर २ रहते हैं । उनके प्रकाशमय वचन हैं । ये जो मैंने च्यारआश्रमोंका मार्ग वर्णन किया सो अतिउत्तम है और मार्गोंमे विघ्न होते हैं । देखो वेलके साथ फल पकता है । विनावेल कच्चा निरस रहजाताहै । विनासमय जे त्यागी होते हैं वे नष्टाश्रमीहैं । ऐसे त्यागी उभयस्थानो

सै भ्रष्टहोते है । अर्थात् नै ससारके रहे । नैं परमेश्वरके हुये । और उनका चित्त चंचल रहता है । भ्रमकानाश नहीं होता। पाखंडी होजाते है। और जो कोई शुद्धभाव विश्वास करिके होवै तोभी कईजन्मोंमैं उद्धार होता है, अन्तका जन्म पाके । इसही मार्गमै होके यानें च्यारूं आश्रमोकों शुद्धतासैं साधताहुवा परमेश्वरकों प्राप्त होता है। अन्तका जन्म वही है जामे मोक्ष होनेवाली है। क्योंकि च्यारूं आश्रम शुद्धहुये विना परमेश्वरको प्राप्त नही होते। एक दो आश्रम साधते है । वे जन्मान्तरही पाते है। अन्तमैं याहीमार्गहोके परमेश्वरकों प्राप्तहोवैंगे। योगाभ्यासकी सिद्धता इनहींमैं होवैहै। औरमार्गोंमे विघ्नोंसै विगड जाते है । क्योकि काम क्रोध लोभ मोह महाप्रवल है। सवको गिरादेतेहै। ब्रह्मा, महादेव, इन्द्र, नारद, चंद्रमा, श्रृंगीऋषि आदि वहुत ठगाये है । और च्यारआश्रमोंका मार्गमै काम क्रोध आदि सव योगीको गृहस्थाश्रममें योगके साधनके समय वल देते है क्योंकि ये पूजते रहते हैं। योगी इनकों प्रसन्न करिके योगमार्गमैं वल लेताहै। मेरे मिलनेका येही च्यारआश्रमोंका मार्ग है । उनके च्यारूंहीं शुद्धतासै होवैंगे । जे मोकों प्राप्त होते हैं। हे प्यारा! वहुतसे मनुष्योंके आश्रमो मै विक्षेप होजाता है। और गृहस्थकी रजोगुणके व्यौहारको सँभालनेवाली सन्तानभी नहीं होती है । ऐसे पुरुषनके पिछले सस्कार श्रेष्ठ

नहीं हैं। वे अब हालमैं पुरुषार्थकरिके जैसा बनसकै ऐसा परमेश्वरके निमित्त कर्म, उपासना, दान, ज्ञान, ध्यान और सत्संग करतेंही रहैं। और वे शान्तिसन्तोपकों लियें पवित्रताको प्राप्त होते हैं। हे प्यारा! कोईरीतिसैंहीं मनुष्योकों शान्ति सन्तोप होनाचाहिये। वेही जीवनमुक्तहैं॥

अथ च्यारअवस्थावर्णन।

हे सखे! च्यारअवस्था ये है। जाग्रत्, स्वप्न, सुपुप्ति, तुरीया। जाग्रत् अवस्था वो कहलाती है जो दशोंइन्द्रियां संजुक्त देहकेसाथ नेत्रहृदयमैं मनबुद्धिबैठके सब प्रपंचके कर्म करतें है और स्वप्नावस्था वो है जामैं अहंकारको आलस्यके संगसै मूर्छा होजाती हे जाकों निद्रा कहतेहैं। वहा बुद्धिरहित ज्ञानेद्रिय अन्तःकरणसयुक्त जाग्रत्की छायाके और कुछ अचवेकेभी कर्म लिंगशरीरसैं जो नौतत्वका कहलाता हे वासै कर्ता है। विचरता तो सवस्थानों में हैं परन्तु कंठहृदयमै ज्यादास्थिति रहती है। तीसरी सुपुप्ति अवस्था वो है जामैं घोरनिद्राआती हे सूक्ष्मशरीर नौतत्व का कारणशरीरमैं लय होजाताहे वेखबर अचिन्त्यदशाहे। जब जाग्रत् अवस्थामैं आता हे तब उसका जो साक्षी था वो कहता है कि आज मे ऐसा सोया जहा कुछ मालूम न रह्या ये जीवात्माकी समाधि हे॥

अथ चौथीतुरीयावस्था सुनो।

जिसका हाल कहनेमैं नहींआता । कुछ हाल ऋषि मुनि महापुरुषोंनै कह्याहै सोतो योगीकी जाग्रतावस्थामैं ज्ञान विचार तुरीयाहै वाका हाल कह्या है। और जो योग-सिद्ध तुरीया है सो तो योगाभ्यास करिके अनुभवगम्य है वचनसै कही नहींजाती । वो सवीज समाधि है और परमयोगीकी सिद्धाअवस्था जो है सो तुरीयासै भी परेहै तुरीयातीत निर्वीज अतितीव्रतर समाधि है ॥ इति ॥

प्रश्न–हे महाप्रभो ! वन्धमुक्त किसका नाम है ।

उत्तर–हे अनघ ! आत्मा अपना आपही शत्रु है। आपही मित्र है। जव ये अस्थूल सूक्ष्मशरीरके संग अजुक्त लोलुपताकरिके इन्द्रियोंके विपय भोगनकेसाथ प्रपचके कर्मोंकी वासनानके फन्देनमैं फॅसके चौरासीका भागी होताहै याहीका नाम वधनहै और जो याके पूर्वसस्कार श्रेष्ठ होवे ताके प्रभावसै परमेश्वरके मिलनेका प्रेम उपजै तव युक्त व्यौहारोंके साथ चित्तकी वृत्तिनको नासाग्रध्यानसै अजपाके साधनसै निरोध कर्ता है और योगाभ्याससे श्वासको जीतके सर्वातीतपदमैं लय होता है। याका नाम मुक्ति है सो मुक्तिके च्यारस्थान है ॥

अथ च्यारमुक्तिवर्णन ।

हे प्यारा ! चारमुक्ति ये हैं । सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य। प्रथम सालोक्यमुक्ति है । जा जननै श्रेष्ठ

कर्म करिके शुद्धवृत्तिनसैं नवधाभक्तिकरी कहा—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सखापन, आत्मसमर्पण, ये नव हैं। इनके प्रभावसैं परमेश्वरके लोकमें वास होता है अर्थात् मलिन रजतमसै रहित सतोगुणमें रहते हैं। जिनके कंठमैं कँठी शीलवचनरूपी तुलसीकी है याने तुल्य है शीलता जामैं सब ऊच नीच वृत्तिनवालोंसे क्रोधरहित हैं सोई तुलसीकी कठी है। जिनकी ग्रीवामैं तत्त्वरूप श्रीधारणतिलक अर्थात् श्री जो हरिकी प्रेमाभक्ति है सो दोनू भ्रुकुटीनके मध्यमैं श्रुतीरूप होकर विराजरही है। सो तिलक हैं जिनके और जटाकहा हैं। मनके संकल्पसैं फैलीहुई जो वृत्तियाहैं तिनकों संजमसैं समेटके बाधीहै जिनोंनें। सोई हैं जटा जिनके। ऐसे जे वैष्णवहैं। सो विष्णुके लोकमे रहतेहैं। सोई सालोक्यमुक्तिहै। ये आभ्यन्तर वैष्णवनका कथनहै।

अथ सामीप्यमुक्तिवर्णन।

दूसरी सामीप्यमुक्तिहै। परमेश्वरके सगुणस्वरूप जो नरहारि सद्गुरु हैं। उनके प्रेमी गुरुभक्त सदा समीप रहतेहैं। नित्य सुधर्मासभाका सत्सग। वचनविनोदके आनन्दका अमृत पीतेहैं। योगाभ्यास करतेहैं। सो सामीप्यमुक्ति है॥

अथ सारूप्यमुक्तिवर्णन ।

तीसरी सारूप्यमुक्ति है । जे नर हरिका सत्संग पाके पराभक्तिके प्रभावसे योगाभ्यास जो परमेश्वर निर्गुण स्वरूपका मार्गहै तामें मन बुद्धि प्राणसहित लयहोजातेहै । यानें योगसिद्धतुरीयस्वरूप होजातेहैं। वाकानाम सारूप्यमुक्तिहै। उन सारूप्यमुक्तिवालोंके च्यारभुजा होती हैअर्थात् सूक्ष्म शरीरके पवित्रअन्त करणरूपी मन, बुद्धि, चित्त, अहकार ये च्यार भुजाहै। च्यारूंभुजानमें च्यारआयुधयेहैं। शुद्ध अहकाररूपी भुजामै उत्तमज्ञानरूपी गदा ले उग्र दिव्यवचनोंसे खोटीवृत्तिनवाले असुरोंका संहार कर्तेहै। और दूसरी उत्तम निजमनरूपी भुजामे पद्मधारणकर राखेहैं कहा अभ्यन्तर पट्कमलनको मनसें मनन कर्ते रहतेहै। उनको सदा खिलेहुये प्रफुल्लित रखतेहैं॥ तीसरी निर्मलचित्तरूपी भुजामे चक्रधारण कररक्खाहै जिनोनें अर्थात् तेजवान प्रकाशमय ज्ञानरूप भ्रमणकारिके सबलोकनकी रक्षा कर्ताहै। सो सुदर्शनकहिये निजदर्शन करनेवाला बोधरूपकों धारण कर रक्खाहै जिनोंने। चौथी अविकारबुद्धिरूपी भुजामें शख धारण कररक्खाहै अर्थात सुबुद्धिकों सबसै उपरामकारिके अनहदशब्दोंमे जो प्रथम घोर शखध्वनि है तामें लयरहतीहै। वोही शंख बुद्धिरूपी भुजामें धारण कररक्खा जिननें। जब पृथ्वीपे अशुद्धवृत्तिन-

का नाश कर्तेहैं तब उस गखध्वनिसैं कर्तेहैं। जिनोंनै च्यारू-भुजा आयुधसहित धारण कर राखीहै वे सारूप्यमुक्तिहै ॥

अथ सायुज्यमुक्तिवर्णन ।

ये ऊपर कहीहुई योगीकों तीनों मुक्ति प्रकाश होजातीहैं इनके पश्चात् चौथीमुक्ति सायुज्य प्राप्त होतीहै । जब महायोगेश्वर शून्यसमाधिके निजानन्दमें मग्न होके परम शून्यका ध्यान धरतेहैं वो सत्यलोकसैं कईलोक परेहै ताकों परमशून्य तुरीयातीत कहतेहैं । जब महायोगी वाका ध्यान धरतेहैं वे अपना निज वैकुण्ठमैं सिद्धासन लगा शब्दरूपतुरंगपै असवार होके सब प्राणनका संजमकर आठवा जो केवल कुम्भकद्वारा महाकाशहोके परमशान्त निर्वाणको प्राप्त होतेहै । जिनकी महिमा ब्रह्मा, विष्णु, महेश नहींकहसकैं जहा एकोहं कलनाहू नही रहती वे अकह, अपार, अगम्य अनाममैं लय होजातेहैं । उसकों सायुज्यमुक्ति कहतेहैं॥

मगल उवाच ।

हे घणनामिन्! अब चौथेप्रश्नकी जो मैंने प्रार्थना कीथी कि मैं कहासैं आयाहू सो कृपाकारिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हे सुरुचे! उसकाभी कथन सुनों । तू मेरे कारणस्वरूपसें सैं प्रारब्धकर्मके संजोग पाके ब्रह्माण्डकी सात्त्विकीवृत्तिसै उत्पन्न होकर आयाहैं, तैंनै जो बाल्यावस्थामें भोलीभावनासै

मेरी प्रसन्नताके अर्थ अनेक शुभाचरण किये। वे मैं सब जानताहू। तैनै ब्राह्मणके घर जन्मपा सातवावर्षमें प्रेतनके डरसै हनूमानजीकी मूर्तिको वहुत ढोकदेके कहताथा कि, महाराज! भूतप्रेतनसै हमारी सहाय करो और नाम जपताथा। पीछे आठवैवर्षमैं गौडकां-करेकी एक मूर्ति भैरनामकी बनाके पूजताथा। दरजीनके पाससै कपडेनकीलीरलाके पोशाक ब-दलताथा। लोटाकटीरी वजा॥ वरावरके वच्चोके संग आरती उतार प्रणाम करिके मग्न होताथा। ये तेरे खेलथे और दशवा वर्षमै कथा सुणके बडा प्रसन्न होताथा और कथामैं श्रवण किया कि महादेवकी कृपासैं परमेश्व-रकी भक्ति मिलतीहै। तब तैनै महादेवका सेवन किया और ग्रीष्मकालमैं जलसेवा करताथा। महादेवकी प्रसन्न-ताके अर्थ चौदहवॉवर्षमैं महिमनस्तोत्रके ग्यारहपाठ नित्य करिके परमेश्वरका नाम गुप्ततासैं जपताथा। भक्त-नकी और सन्तनकी महिमा सुणके वहुत प्रसन्न होताथा। एकदिन एक साधू गरीबीहालमैं तोकों मिले, उनकी तैनैं सेवाकी और पूछा कि, आप कहासैं आयेहो? वानै कह्या मथुरा वृंदावनसै। फिर तैनै कह्या महाराज उत्तमभूमिकों छोडके ह्या कैसै आये? वानैं कह्या या अलवरके पहाडमैं हमारे गुरू रहतेहै। उनकी झाकीकरनेंको आयेहै। जब तैनै कह्या महाराज! हमकोंभी उनकी झाकी होवै तब

उसनैं कह्या तू आधीरातपै मदारघाटीकी ऊंची शिखरपै जावे तो होवे। फिर तैंनें कह्या महाराज आधीरातपै जानें-की जुरत नहीं। ऐसी कृपाकरो जासो जुरत होवै। तव उसनैं कह्या तू रोजीना प्रातःकाल उठतैहीं या पर्वतके दर्शन कियाकर और प्रणाम करिके अर्ज कियाकर तोकों झाकी होजावैगी। तव तैंनें सत्यविश्वाससै ऐसाही नेम धारण किया और बाजे २ दिन रोरोके एकान्तमैं प्रार्थना करताथा। इस अरसेमैं एक ब्राह्मणसे तैंनें स्वरोदा साध-नेका उपदेशलिया। जव तेरी ऊमर सोलहवर्षकी थी और तू इस भेदको पाके वहुत प्रसन्न हुआ। अजपाका जाप जपता और पहाडका गुप्तनेम रख स्वरोदाका स्वर देख-ताथा। स्वरोदामैं ऐसीप्रीति होगई कि, स्वप्नमैंभी स्वरो-दा देखता और पूरेसन्तनके मिलनेका वडा प्रेमथा। समयपाके सगुणस्वरूप धारण करिके वाहीपहाडमैं जाका तेरे नेमथा। मदारघाटीके नींचे छतरीमै मिला, मिलतैंही मेरा शब्द श्रवण कर तेरा हृदयकमल प्रसन्न होके खिलगया। मेरी महिमा तेरे हृदयमैं भरगई और वहुत वडा आनन्द तुझको आया सो तू सव जानताहीहै।जवहीसे तेरा मेरा एकतन होताही चलागया। जव तेरी वीसवर्षकी उंमरथी तव मेरा संग पाके तुझकों वडावेगसै उपराम हुवा। उसको मैंनें शिक्षा देदेके रोका। और च्यारूं आश्रमोंका

साधनेका उपदेश दिया। अव तेरे सवकारज सिद्धभये। च्यारू आश्रमोंकों साधताहुवा। योगमार्गहोके मोकों प्राप्तभया ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारे तत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसंवादे पाचप्रश्नव्याख्यानवर्णनो नाम चतुर्थप्रकाशः ॥ ४ ॥

मंगल उवाच ।

हेसर्वशक्तिवान्! पाचवा जो मैंने प्रश्नकिया कि मोकों कौनकर्तव्य करना योग्यहै सो कृपाकरिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हेसुबुद्धे! जो तोको कर्तव्यकरना योग्यहै सो सुण। हेप्यारा! तेरा जाधर्ममें जन्म हुवाहै वाही मार्गमै मोको खोजैगा और पहिले तेरे वहुतसे गुरु होवैगे। कोई शिक्षा-गुरु, कोई विद्यागुरु, कोई कंठीमत्रगुरु, ऐसे तेरीवासनाके प्रभावसै वहुतसे गुरु होवैगे। उनके सगसै जव तोकों मेरे मिलनेकी प्रेमभक्ति वढजावैगी तव सव गुरूनसो पीछै मेरा जो सगुण अवतार सन्तस्वरूपहै चाहै गृहस्थमै हो चाहै वैराग्यमै हो उनसौ मिलैगा। वे निर्मल निर्पेक्ष होकर रह-तेहैं और शरीरयात्रा मात्र ग्रहण कर्ते है। ज्यादा रजोगुण नहीं वढाते। नै त्यागका अभिमान रखतेहै। नै रागकरिके किसी व्योहारमै फॅसतेहै।सवसों समरूप रहतेहै। वडे छोटे कारिके नहीं देखते। अचाह निर्वैर निशंक सवजगतूसें

उदास शान्त निर्मल ज्ञानविज्ञानसहित अजवहै रहस्य जिनका और प्रकाशवान जिनके सहजके शब्दहै । योगसमाधिमें सिद्ध सबका सारतत्त्वके जाननेहारे । सबसिद्धि जिनके हाजर खडी रहतीहे । आप निर्भय अचिंत्य निर्वासना ब्रह्मानन्दमें मग्न दीनगरीबीकों लिये। सबकों सुखदेनेहारे भलोंके मित्र ओरोंकों मानदेंनेहारे आप निराभिमानी आनन्दमगलस्वरूप होकर रहतेहैं । अपारहै महिमा जिनकी वेही कृपाकरिके दिव्यदृष्टि देवेगे। जव उनकों जानैगा और वे अधिकारीशिष्यकों देखके वडे प्रसन्न होतेहैं। उनकी सेवासे सबकुछ प्राप्त होताहै । वे सद्गुरु नरहरिस्वरूपहैं । ऐसे सद्गुरु विना मिले। मैं कदाचित् नहीं मिलोगा। क्योंकि, वे मेरे सगुणस्वरूपहैं उनकी कृपासे मेरा निर्गुण स्वरूप पाके दोनोंसे परे परात्पर अवाच्य अनामको प्राप्त होतेहैं और गुरुनसों तोकों लोकपरलोकके सुख मिलजावेंगे। परन्तु मेरी प्राप्ति तो पूरे सच्चेगुरु नरहरिसेंही होवैगी और येभी तुझकों याद रहै कि जाकों मेरेमिलनेका ज्यादा प्रेमहै और स्त्री पुत्र धन धाम मान वडाईमें प्रीति कमहै । सब संसारसें अरुचि जो मेरेही खोजबूझके विरहमें लगाहै । सो मुझसद्गुरुको प्राप्त होताहै और मन्द अधिकारी प्रथम तो मेरेपास आवैं नहीं और जो आवै तो उनका मन चंचल अनेकवासनानसें मलिनहै सो ठैरते नहीं उनके चित्तकों उच्चाटन होजाताहै और जो

कोई ठेरह तो वडा अधिकारी होजावे । अव मैं तुझको वोवर्णन कर्ताहू । जो कि मैनै श्रेष्टकर्म धारण करिके सगुणस्वरूप सद्गुरुसैं मिलके जिनमार्गोमै होके गयाहूं और योगाभ्याससैं अपनी आत्माको परमात्मामै लय-करिके सवकुछ समाधिदशामैं देखाहे । फिर उत्थानद-शामै वाहीका रूप होके अपनी मौजमै तेरेनिमित्त कह-ताहू सो सुण । परन्तु मेरे वचन तेरे जव निश्चय होवैंगे तव तू मेरीसहायतासैं योगाभ्यास करिके देखैगा और मै तेरे भीतर श्रुतीरूप होकर लारै चलूंगा इतनै तू मेरेवचनोका भेद नही जानसक्ता । जादिना तू मेरे सन-मुख होवैगा तवहीसै तेरे कारज सिद्ध होवैंगे। नौ अधि-कारकरिके मेरे मिलनेंकी सीडींहे । उनका वर्णन कर्ताहू सो सुणो । प्रथमसीढीसैंहीं मेरे मिलापसैं वाकिफ होताहे। आठके वाद नोवींमै मोमै मिलजाताहै । प्रथमअधिकारकी सीढी प्रतिमापूजन, तमोगुणसैं अज्ञानदशामैहै । दूसरे अधिकारकी सीढी मानसीपूजन, शुभाशुभ कर्म विचार रजोगुणसैंहै । तीसरे अधिकारकी सीढी वृत्तिया शुद्धरखनी सात्विक गुणसे है। चौथे अधिकारकी सीढी नित्यानित्यका विचार, अध्यात्मविद्याका मननकरना, सद्गुरुके मिलनेका प्रेम रखना येहै । पाचवे अधिकारकी सीढी सद्गुरुकों पाके तनमनधनसैं प्रीतिकरना, आज्ञानुकूल रहना और यह

मनमै डर रखनां कि, मुझसै कोई ऐसाकर्म नै होवै कि, मोकूं ये अपात्र समझैं। जो ए कृपा नै करैगे तो मेरा कल्याण न होवैगा। छठे अधिकारकी सीढी जो सद्गुरु मार्ग वतावैं उसका अभ्यास करना । अभ्यासके जोरसैं और उनकी कृपासैं दिव्यदृष्टिका पाना। सातवें अधिकारकी सीढी विशेष अभ्याससै योगमार्गमैं प्रेमके जोरसैं लयता वढजावै और वडे २ कष्टनकों सहन करै तनमन प्राणका हवन करै। आठवे अधिकारकी सीढी षट् चक्रनकी वायुका जीतनां। सव कुछ जानके जीवात्मा जाग्रतावस्थामैं सुषुप्तिसा होना, पश्चात् गुणातीत तुरीयस्वरूपहो ईश्वरतासिद्धीनका प्रकाश होना, शून्यसमाधिमै लय होनाहै। नवैं अधिकारकी सीढी अगम्य शून्य महाशून्य परमाकाशमै अकह अवाच्य अनाम होना। ये सव तुझकों समझानेंके वास्ते नौ अधिकार या नौ सीढी या नौ भूमिका चाहै जोनसा नाम रखलो। ये नऊं परस्पर मिलीहुई है। एकसै एक भिन्न नही है। जैसै वृक्षके मूलसै सव उसके फैलावके अंग मिलरहेहै और न्यारे २ भी हैं ऐसै जानो ॥

अव प्रथमअधिकारकी सीढीका वर्णन।

हेआज्ञापालक! प्रथम सवमनुष्योंकी वुद्धिकी वाल्यावस्था होतीहै अर्थात् अल्पवुद्धि होतीहै। उस वुद्धिसैं आका-

र रूप जड संज्ञापर विश्वास लातेहै। जैसे बालकके पिता-
के घरमे असली हाथी घोडा गऊ पक्षी आदि होतेहै।
परन्तु जब बालक मट्टीके खिलौनें देखताहे तब उनको
बडे चावसैं मॉगके लेताहै और उनसैं बडीप्रीतिसै खेलाक-
र्ताहै। ऐसैही सबमनुष्य अल्पबुद्धिके प्रभावसै जडसं-
ज्ञाआकारौपै विश्वास लातेहै। कोई जंत्र तावीज गडा
पातडी बनाके गलेमै पहिरतेहैं। या चौतरे समाधि चरण-
चोकी पावडी आले गुम्मज भोमियां पचबीर सैयद मानके
सेवतेहे। या किसी देवता अवतारकी मूर्ति बनाके या भीं-
तमै माडके पूजतेहैं। तसवीरकी झांकी कर्तेहैं। तथा अग्नि
जल गिरि वृक्ष चंद्र सूर्यादिका विश्वास लाके या देखा-
देखी सेवा कर्तेहै और बहुतसे पुस्तकका पूजन कर्तेहै। सो
हेप्यारा! अनेकभेद करिके जडसंज्ञाके आकारोंपैही विश्वास
लाते हे परन्तु उन। विश्वासोंमै इन्होंकी कामना अलग
२ होतीहै। जो कामना सत्यविश्वासके प्रेमसै होतीहै वो
फलदायक होजातीहै। क्योंकि जाभावनासे जे विश्वास
लाके सेवतेहै ताहीको वो सर्वशक्तिवांन पूर्ण करदेताहै।
पर कोई२ मेरेनामकी प्रतिमा बनाकर भोलेभावसै मेरी
प्रसन्नताके अर्थ सेवन कर्तेहैं। वे सब पूजनेंवालोमै श्रेष्ठ
हैं। क्योंकि, जिनके हृदयमै मेरे मिलनेकी भावनाहे वो
बडा कल्याणकी करनेवालीहै। देखो या प्रथमअधिकारकी

सीढीके सेवनेकेअर्थ आचार्योंने दयाकरिके मनुष्योंके कल्याणके अर्थ कैसा उपदेश किया है सो श्रवण करो। जे मनुष्य रजोगुणी संपत्तिवान् राजाआदिहैं। जिनकी भोग विलासनसैं लोलुपता ज्यादाहै उनकेवास्ते उपदेश दिया कि तुम इष्टदेवका पूजन कियाकरो। तुम्हारे सर्वमनोरथ सिद्ध होवेंगे। अच्छा उत्तम स्थानकों सजके, चित्राम झाड गिलास लगाके इष्टमूर्तिका शृंगारकरि सिंहासनपै बैठाके तुम स्नानकरिके अष्टगंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य मेवा फल सब सामग्रीसहित पूजन कियाकरो। सो उन भोगविलासी पुरुषनकी आचार्योंनैं भोगनमैंही परमेश्वर-की भावना बधाई। उन महान्पुरुषोंने यह विचार किया कि, इन भोगविलासी मनुष्योंका भोगनसैं अलग होके परमेश्वरसैं मन नहीं लगैगा सो इन्होंकी भोगनके साथ मैंही परमेश्वरकी भक्ति बढावो जासैं इन्होका कल्याण होवै नहींतो ये इन्द्रियोंके भोगनमैंही पशुवत् क्रीडा करिके नाश होजावैगे, तो इन्होंको मनुष्यशरीर पायेका क्या फलमिला? जामैं परमेश्वरकी प्राप्ति होतीहै। स्त्री पुत्र इन्द्रियोंके भोग तो सबदेहनमैंहैं। मनुष्यदेह पाके-परमेश्वरकों नहीं खोजा तो सब पशुसमान है। देखो उन भोगविलासी पुरुषनकों भोजनके समय सब भोग मौजूदहैं। श्रवणोकों अच्छे २ छन्दनके मधुरवाणीसैं ध्यान

प्रार्थनाके श्लोक श्रेष्ठजनोके द्वारा अथवा अपनें मुखके द्वारा और गवैयेनकेद्वारा आत्मिक भक्तिपक्षके पदोंकी मधुर ध्वनि श्रवणइन्द्रियके विषय मौजूदहैं। अक्षगोचर मूर्ति-केध्यानमें लयहोना सो स्पर्श के विषय मौजूदहैं। क्योंकि, जामें प्रीति होतीहै वामें मन लीन होजाताहै सोई स्पर्शहै। नेत्रोंको अच्छे मकान, भाड, गिलास, मूर्तिका शृंगार, भूष-णवस्त्रादि विषय मौजूदहै। रसनाकों नैवेद्य पकवान मेवा' फलादि खानेके पदार्थ मौजूदहै। क्योकि, इनहीके खानेमै प्रसादीकेभावसै आवैंगे। और अष्टगंध,पुष्प, धूप, चंदनादि आपभी लेपन कर्तेहैं। सो नासिकाके विषय मौजूदहै। जब ये राजसी मनुष्य सबसामग्रीनके साथ परमेश्वरका पूजन करैंगे। पीछे कुछ मन्त्रका जाप जपैंगे। तो त्र पढेंगे, तो इन्होका घंटा दोघटा काल परमेश्वरके निमित्त लगैगा। जो ये राजसीमनुष्य पूजन नहीकर्ते तो सबकाल इनोंका हांसी ठट्टे बेप्रयोजनकी अयुक्तबात करनेंमें जाता। तथा इन्द्रियोंके विषयोंमे अहर्निशि खोते। तो इनका कल्याण नें होता। ऐसै भोगीजनोंकों तारनेकेवास्ते आचार्योंने उपदेशकियाहै। और विचारो कि, जब राजसीमनुष्य अपनें सजेहुये महलमें जावे। तब उनकेमनमें भोगवासना उदय होतीहै। और जब वाहीमहलमै कोई मकांन मन्दिरके नामसें प्रतिमा इष्टदेवकी सहितहो वहा जानैंसै उन

राजसीयोंके मनकी भावनां बदलजातीहै। मूर्ति देखके परमेश्वरकी याद आतीहै । प्रणामकर भेटचढाके बैठजातेहै । और परमेश्वरके गुणानुवाद श्रवण कर्तेहैं । तो विचारो कि, कितनेवडे कल्याणकी वातहै । हेप्यारा ! ये प्रथमाधिकारकी भूमिकामैं वहुत वडे कल्याणके गुण भरेहैं । और विचारो कि, मूर्तिके प्रभावसै कामनान्की सिद्धीके अर्थ कूवा, वाग, तिवारा, छतरी वनातेहैं। उनस्थानोंमैं तीनोंऋतुनकी तापसैं मनुष्य और बहुतसे जीव बचजातेहैं । तो देखो कितनी वडी दयाका कर्महुवा । और जो उन मकानोंमैं साधुसन्त आके निवास करैं । तो घरवैठैंही कैसी जगम गगा आजातीहै । जिनके सगसै परमकल्याण मनुष्योका होताहै । और प्रथमाधिकारकी सीढी उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ तीनों मनुष्योंको सुखदाईहै । उत्तमोंकों तो ऐसैंहै कि, साधुसन्त महात्मा मन्दिर देवस्थानमैं जावैंगे। तो उनकों भोजन, जल, वैठनेंकों मकान सवतरहका आराम मिलैगा। और आचार्यौंका औरभी मतलवहै कि, श्रेष्ठपुरुषनको निर्विघ्नसैं आराम रहनेंकी जुक्ति बनाईहै । जे च्यारूं आश्रमोको साधनेवालेहैं तिनको गृहस्थाश्रममै आराम दियाहै । कि, सुन्दरमकान परमेश्वरके नामका मन्दिर और भोजन वस्त्रका सुख जासैं वे अचिन्त्य होके भक्तिभावसन्तोषको धारण करिके शुद्धवृत्तिनसै या प्रथमाधिकारकी सीढीके आश्रय अष्टागयोग जो मेरे मिलनेका मार्गहै

ताका साधन भलीप्रकार करेंगे। पीछे परिपक्कहोके मौजमें चाहे जहारहे। जे श्रेष्ठ उत्तमजन हरिगुरु भक्त योगसाधनेवालेहैं। जिनकी भोगनमै विशेष प्रीति नहींहे। गृहस्थाश्रममें रहके कार्यनिमित्त रजोगुण वर्ततेहै। च्यारूं आश्रमोंकों साधनेवाले मेरे मिलनेकी चाह रखतेहे। ऐसे पुरुषनकों जे जन मन्दिर वनाके और उसमें जीवका काढके देतेहै वे धनवान राजसी धन्यहे। क्योंकि,उनके द्रव्यसैं परमेश्वरकी और उत्तमपुरुषोंकी सेवा होतीहै। परन्तु अव वो धर्म इनमन्दिरोंमें नही रह्या। कोई २ जगै तो कुछ भखे मनुष्यों की सेवा होतीहे। परन्तु महन्त गुसाईं अज्ञानदशामें इन्द्रियोंके भोगनकी लोलुपतामै निजस्वार्थी है। ठाकुरजीका प्रसाद किसी साधु सन्त अभ्यागतोंकों भोजन नही कराते। अपनें सेवक शिष्योंकोंही जिमातेहैं। अपनी इन्द्रियोंको लडातेहै। और सेवकशिष्योंको अनेक तरहके व्यजन स्वादिष्ठ वनाके प्रसाद करके देतेहे। और उनकों चटोकडे करतेहै। वाह्यभक्ति दिखातेहै। भीतर धनकी चाह रहतीहै। वे धनके दासहैं मेरेदास नही। और धनकी लालसा सव वुरायोकी जडहै। ये धन स्त्रीपुत्रनके गुलाम मानवडाईकी चाहमै फसेहै। धनवानोंकों धनकेअर्थ चेले करेंहै। देखादेखी जक्षनके किंकर और जक्षचेले होतेहै। वहुतसे मनुष्य इन कों धनवानोंके गुरु समझके और प्रसादके लालचसैं शिष्य होतेहै। गुसॉई जक्षोंके गुरु जक्षोके दियेहुये धनसै वडे धना-

च्यारसंप्रदायके आचार्योंने अपनी पद्धतियोमैं दोतरहका पूजन वर्णनकियाहे । सनिर्माल्य और अनिर्माल्य । सो ये वाहिरका पूजन तो सनिर्माल्यहे । यापूजनमैं भगवानके सवपदार्थ भोगेविलसे चढतेहें । देखो ! पूष्पनकों मक्खी भौरादि भोगजातेहैं । और चन्द्र, सूर्य, पवन भोगलेतेहैं । ऐसैंही सवसामग्री जानो सव भोगेहुये चढतेहै । दूसरी अनिर्माल्य मानसीपूजनहे । और जे जन या प्रथमाधिकारकी सीढीकों भक्तिभावसे सेवैंगे और जिनके हृदयमैं मेरे मिलनेका प्रेम होवैगा वे सवअधिकारोंपै चढतेही चलेजावैंगे । और जो मेरी सेवासे मै सिद्धि देताहूं उनमै फसजावेंगे । वे नही चढ सकैगे । परन्तु जाके मेरी लगनहै वो वडेअधिकारके गुरूनकों हेरताही चलाजावैगा । और उनकी सहायतासे याके सवकार्य सिद्ध होतेजावैंगे । और जिनके मन्दसस्कारहे क्रियमाणकर्मका पुरुषार्थ प्रवलनहींहे वे नही चढसकैगे । जिनके क्रियमाण कर्म प्रवलहैं वे । सव अधिकारोंपै चढतेजावैंगे ॥

प्रश्न.—हेभक्तवत्सल दीनवन्धो ! आपने कह्याकि, जिनके क्रियमाणकर्म प्रवल हैं । वे ऊंचेअधिकारोपै चढतेजा वैंगे । सो वे क्रियमाणकर्म कौनसेहैं ? सो कृपाकरिके कहो ॥

उत्तर:—हेधर्मधारक ! जीवात्माके संग तीनकर्म होतेहै । संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण । संचित उसका नामहै जे जी-

वात्मानें अनेकजन्मोंमै अच्छे बुरे कर्मकिये है। वे सब इकट्ठे रहतेहैं। जामै और प्रारब्ध उसका नामहै कि, उस संचित कर्मरूप खजानेंमैंसैं जिसकर्मका उदयकाल आयाहै उसकेसंग जन्मपातेहै। और जैसी प्रारब्ध होतीहै वैसा-ही उनका स्वभाव होताहै। और सग कुसंग पाके स्वभाव सै ज्यादा न्यूनाधिक कर्म होतेहै। वे क्रियमाणकर्म कह-लातेहै। ये क्रियमाणकर्म नई कुमाईहै। सचितकर्म खजा-नेकी भरनेंवालीहै। और प्रारब्धकर्महै सो संचितखजाने मैंसैं खर्च होताहै। सो हे प्यारा! सचितसबकर्मनका खजानां है और क्रियमाण इसका पुरुपार्थहै। यासै सबकुछ करस क्ताहै। या प्रथमाधिकारकी सीढीपै बहुतमनुष्य चलतेहै। उनमै कोई २ के शुद्धाचण होतेहै। वे ऊपरके अधिका-रोपैभी चढतेहै। और जिनके मेरे मिलनेका प्रेम नहीहै वे पोटार्थी धनकेदास या प्रथमाधिकारमैंहीं सब उमर खो-तेहै। और कोई २ इनमै कुमार्गीभी होजातेहै। वे अपने कियेका फल पातेहैं॥

प्रश्नः—हेमहाप्रभो! आपने प्रथमाधिकारवालोंको तमो-गुणी कैसे कह्या।

उत्तर—हेप्यारा! इनभक्तोंका स्वभाव तमोगुणीहीं होता है। किसीका कम किसीका ज्यादा। वास्तव इनमैं तमोगुणहीं रहताहै। गीतामैभी मैंनें कृष्णरूप होके ऐसाही वर्णन

कियाहै। कि तमोगुणीजन मेरे नामकी प्रतिमा वनाके मोको प्रतिमारूपही मानतेहें । ये नही सोचते कि, जिसपरमेश्वरनैं हमारा मनुष्यशरीर विचक्षणचैतन्य वनायाहे वो हमसैं अतिचैतन्यसर्वशक्तिवान् होवैगा । वाकों हम प्रतिमां वनाकर पूजते है । इस निर्वुद्धिभक्तिसें उसकी तुच्छ महिमा होती है। क्योकि, पूज्यतो जडसंज्ञारूप और पूजनेवाला चैतन्यरूप । परन्तु तुच्छवुद्धिके मनुष्योनैं पेटका रोजगार समझके और कोई २ अपना परमेश्वरमैं भावभक्ति वढानेकेवास्ते प्रतिमा वनाकर पूजतेहैं। और इनकों वहुत जलदी क्रोध आजाताहे । इसहेतुसैं तमोगुणी कह्या। और जे मोकों पृथक् २ करिके मानतेह वे रजोगुणीहे । और जे सव चराचरमैं मोंको एकही मानतेहे वे सात्विक ज्ञानीभक्तहैं ॥

प्रश्नः—हेगर्वगंजन ! हेसनातन !! वहुतसे महापुरुषोनैं अपनी वाणीवचनोंमे या प्रथमाधिकारकी सीढी प्रतिमा पूजनकी निन्दा करीहे। सो क्यों करीहै। याका व्याख्यान. कृपाकरिके वर्णन करो ॥

उत्तरः—हेसत्त्सगीश्रद्धावान् ! निन्दा नही करीहै। उन्होंनैं तो उपदेशके अर्थ याकों न्यून दिखाके चितायाहे । ऊंचे अधिकारपै चढानेंकेवास्ते । क्योकि, या प्रथमसीढीपहा सवनरनारीनकी भरती होजातीहै । सो इन्होंमे जाके

उत्तमसंस्कारहै। वाके वचनकी ताडना देके ऊंचे अधि कारपै लेजातहै । सो ये तो उनकी दयाहै । परन्तु जे इसप्रथमसीढीपैही दुनिया दिखानेकों दम्भतासैं प्रतिमा पूजनलीला कर्तेहैं और उनके मेरा प्रेम और हृदयमेंडर नहींहै । और वे वडे अधिकारीजनोको पाखंडी समझके अनुचितवचन कहतेहै। कि तुम नास्तिकहो येनहीं सोचते कि,जे भक्तिके प्रभावसैं योगमार्गका साधन करिके वडे अ-धिकारपै पहुँचेहैं।वे अपने आपमैं और सर्वत्रमैं परमेश्वरको देखतेहैं। वे नास्तिक कैसें हैं? वे तो पूरे आस्तिकहै।उनकी आस्तिकता परमेश्वरमै पूरी होगई कि, वा विना कुछ खाली नहीं समझते। सब चराचरकों वाहीका रूप समझ-तेहै।सो हेप्यारा! नास्तिक तो ये है कि,जाकरिके पाचौतत्त्व चंद्र सूर्यादि सबसृष्टि प्रकाश कररहीहै । ऐसा वो परमचैत-न्यकों पाषाण या धातुकी मूर्ति बनाके उसीके परमेश्वर मानतेहैं तो ये वाकी अवज्ञा कर्तेहैं । और निन्दाभी कर्ते है।परन्तु इनका दोष नहीं।क्योंकि,इनको वाकी महिमाका प्रकाश नहीं, इनकी बुद्धिकी बाल्यावस्थाहै।बालक चाहै जैसे खेलै वाका खेल सब खेलरूपहीहैं। परन्तु इन खेल नमैभी जैसे मैंने खेलनेकी आज्ञा दीहै वैसी भावना नहीं रखते ये इनका कसूर है । और आपेकों वडे भक्त समझ के अभिमानी होतेहैं । ऐसे अज्ञानी अभिमानियोके मान

भंगकरनेके अर्थ और उत्तमसंस्कारीनको चितानेके अर्थ महापुरुषोंनें वचन कहेहैं। उनके जो कोई वचन मानतेहैं उनके वडे उत्तम भाग्यहैं। सो वे महापुरुष तो ऐसैं दयाकरिके वचन कहतेहैं कि, जैसै किसीका पुत्र वर्णमालिका और पत्रमालिका पढकर फूलताहै। तव उसका पिता कहताहै कि, तू अभीतक कुछ नहीं पढाहै। जानैं सवशास्त्र पढलिये तू उसकी होड नहीं करसक्ता। तू वहुतसी जमाअत चढता चलाजावैगा। जव कुछ पढनेंका आनन्द आवैगा। अभी तो सौमणमैं पूणींभी नहीं कती। सो हेप्यारा! जैसै पिता पुत्रकों चितावाहै और उसकों आगेकों चढाया चाहाताहै। महापुरुषोंका वचन कहना ऐसैं जानो। परन्तु हेप्यारा! जिनकी कोई अधिकारपै नेष्ठा नहींहै और कुमार्गीहैं। ऐसे मनुष्य महापुरुषोंके कुछशब्द चितावनीके याद करिके प्रथमअधिकार प्रतिमापूजनकी निन्दा करतेहैं और आप परमेश्वरके निमित्त कुछभी कर्म नही कर्ते। ऐसे पुरुष कहींकेभी नहीं होते। नें उनके अपने कुलका धर्महै। नै किसी औरका धारण कर्तेहैं। वे वेमजहवी मनमुखी आजाद वेधर्मीहैं। सवकी निन्दाही करना सीखेहैं। स्त्री, पुत्र, धनके गुलाम वेठिकानेंहै। जैसैं धोवीका कुत्ता नै घरका न घाटका। भोग विलासोंकी चहामै अन्ध होरहेहै। हेप्यारा! किसी धर्म मजहवकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। सव धर्ममजहवोंका

सार परमेश्वरकी प्राप्तिहै । जो परमेश्वरको पातेहैं सो वाहीके रूप होजातेहैं । वेही अवतार नवी कहलातेहैं सो उभयप्रकारके होतेंहै । कारक और अवधूतकारक तो वे कहलाते हैं । जो धर्म मजहववाधके सवको चलातेहैं और अवधूत वो है । जो अपनी मौजमैं रहतेहैं और सव धर्मी मजहवीनको चितातेहै । उनका कहना धर्मीशैरैलोगोंको वरामालूम होताहै । परन्तु उत्तमाधिकारीका भला होताहै और वो उनसें मिलके उनहीकारूप होजाताहै । हेप्यारा! जो मनुष्य प्रथमाधिकारकी सीढी प्रतिमापूजन सच्चेभक्ति भावसें कर्तेहै उनकी दरिद्रता जातीरहतीहै । और जे संपतवान होके सेवतेहे उनकी परमेश्वरमै प्रीति वढतीहै। हेप्यारा ! परमेश्वरके उभयस्वरूपहै । आकार निराकार । आकार तो सव विश्व और मनुष्यरूप होके सद्गुरुस्वरूपहैं । और निराकार वा आकारमैही चैतन्यअन्तःकरण होके व्यापकहै । सद्गुरुका शरीर आकारस्वरूप होकर परमेश्वर नरहारिस्वरूप है । तामै चैतन्य अन्तःकरण श्रुतिरूप होके निराकारहै । और सद्गुरु दोनू स्वरूपनसौ परै, अर्थात् निर्गुण सगुणसै परै योग समाधिकरिके अपनें वास्तव स्वरूपमें लयहोतेहै । यानें निजरूपमें लीनहोजाते है । हे प्यारा ! पहले परमेश्वरकी उपासना आकाररूपही की होतीहै । पीछे निकारकीहै । जेसै मनुष्य मनुष्यकी उभयप्रकार

चाकरी कर्तीहे । तनसै और मनसैं, तनसै तनकी और मनबुद्धिसैं निराकार चैतन्यकी । जैसै मनुष्यका अंग चाहै जो नसा पकडले ग्रीवा, हात, पॉव, अंगुली, कमर आदि कोईसाही अंग पकडनेसैं वो पकडाजाताहे । ऐसैंही विश्वास करिके जिया आकारकी घ्यावना कर्ते है पाणी, पाहाड, वृक्ष, अग्नि, सूर्य, चंद्रमा, तसवीर मूर्तिकी उपासनाकी घ्यावनासैं परमेश्वर आकाररूप ग्रहण होगया। मूर्तिवनाके उपासनाकरनेकी ये आवश्यकताहे कि, जितनैं वे सच्चे योगसमाधिवाले पूरे सद्गुरु नै मिलै तितनें उनके नामकी मूर्तिकी उपासनाकरनी योग्यहे । उनके मिलनेके पश्चात् इस जडसंज्ञाकरकी भावना छोडके उस चैतन्याकार स्वरूपकी सेवा और आज्ञा धारण करना योग्यहे । यावत् वे नैं मिलै तावत् उनके नामकी मूर्तिकों पूजै । क्योंकि, उनके नामकी मूर्तिको प्रेम विश्वासकरिके पूजनेंसै वे मिलजातेहे । कोई साहीनामकी मूर्ति पूजो । क्योंकि, सवनाम उन्हीके है और वे वापै वडे प्रसन्न होतेहैं । जैसै कोई चक्रवर्तीराजा परोक्ष दूरदेशान्तर मैं रहै और कोई मनुष्य उसका चाहानेंवाला उसकी तसवीरका पुष्प, रूप, दीप, चंदनादि सामग्रीसैं पूजन करै तो राजा उस्की भक्ति सुनके राजी होताहै । और जो कोई तसवीरकी अविनय करै तो नाराज होताहै। और वो तसवीरकी भक्तिकरनेवाला राजाकों प्रत्यक्षमें पाके पीछे वाकी तसवीरसैं प्रीति उठजातीहै । ऐसैंही जब सगुणचैतन्य

सद्गुरु मिलजावैंगे तब और उपासनानमैं प्रीति नहीं रहेगी। उन सगुणसैं मिलके निर्गुणस्वरूपका प्राप्त होवैगा। योगसमाधिकरिके सगुणनिर्गुणसे परे अवाच्य अनाममैं लयहोवैगा। सो पहिलै आकारकी भावना करनेसैं अन्तःकरण शुद्धहोके स्थिर होताहै।क्योंकि,ये मनुष्यभी तो आकाररूप शरीरहै और आकारनसैंही प्रीति कर्ताहै। स्त्री, पुत्र, बन्धु, मित्र, गऊ, घोडा, हाकिम, राजादिसैं प्यार कर्ताहै। और अन्तःकरणमैं इनहीं आकाररूपोकी कल्पनाहोके झाई जाग्रत् स्वप्नावस्थामैं पडतीहै। तबतक आकारहीकी उपासनाहै। जब भक्तिज्ञानवैराग्यसैं निर्विकल्पचित्त हो जावैगा तब निराकारकी होवैगी। वो अनन्यभक्तियोग करिके ग्राह्यहै ॥

प्रश्न ॥ हेजगजीवन ! घणनामी या शरीरमैं कर्म मैं कर्ताहूं। तथा परमेश्वर कर्ता है याका निर्णय कृपा करिके कहो ॥

उत्तर ॥ हेसुबुद्धे ! जगत्मैं कर्महीं प्रधानहै,नींचसे उच्च, उच्चसैं नीच कर्मोसैंही होतेहै।सब शुभाशुभ कर्मोंका फल मेरा कारण स्वरूपसैं सब पातेहै। इनकों मालूम नहीं होता। सब कुछ मैंही कर्ताहूं। जे मोसैं डरतेहैं, मेरी आज्ञानकों पालन कर्ते हैं उनकी मैं तीव्रबुद्धि करदेताहूं।जाकरिके उनका सबतरह कल्याण होताहै और जे मेरी आज्ञानको भंगकर्त्ते

हैं मोसैं डरते नहीं । अधर्म, अन्याय, दगाबाजी, जालसाजी सबकेसाथ करतेहैं, उनके हृदयमैंसैं बुद्धिका प्रकाश नाश करदेताहूं । जासैं वे अनेक क्लेशोंमैं फसते है । सुबुद्धि कुबुद्धि का देनेवाला मैंहू जैसे जाके कर्महै वैसीही बुद्धि वाके हृदयमैं प्रकाश करतीहै । भोग और मोक्षकी देनेवाली बुद्धिहै सो मेरे आधीनहै । मैं सबका प्रेरकप्रकाशवानहू। सब कुछ मेरे अंशसै होताहै और मेरेही अंशके प्रभावसैं मनुष्योंके अन्तःकरणमैं अहंकार उदय होताहै -वाहकार सै उनकी रक्षा करताहू । सो बहुतसे कर्म तो वाहकारसैंही सिद्ध होतेहैं । जैसै क्षुधालगै जब भोजनकी इच्छा होतीहै तब मनुष्य यो कहै कि, परमेश्वर पेटभरैगा। सो ऐसा कहना याकी अज्ञानताहै । ये कर्म तो याहीके अहकारसैं सिद्ध होतेहैं।जब ये आटा, अग्नि, जल लाके पकावैगा पीछे ठढाकरिके हस्तसैं टूकतोडके मुखमैं देवैगा । चिगदकै जीवके टलकेसे भीतर करदेगा । इतने तो शरीरके अहकारका कर्म है । तापीछै याके अहंकारका कर्म नहीं । परमेश्वरके प्रभाव सै रसपाचन होके रक्त, मास, मेद, मज्जा, त्वचा, अस्थि, बीर्यादि सप्तधातु बनकर शरीर पुष्टहोताहै । वे सब कर्म परमेश्वरकी तरफसैं है।उनमै इसके अहकारका कुछ दखल नहीं है।सो हेप्यारा! बहुतसे कर्म तो इसके अहकारकी मारफत होतेहै और सब परमेश्वरसैं होतेहैं । परन्तु सब परमे

श्वरसैही सिद्ध होते हैं शरीरके भीतर जो अहंकार मनबु-
द्धि चित्त उदय हुयेहैं सोभी तो परमेश्वरके प्रभावसैं हैं।
मै सबकाकर्त्ता और अकर्त्ताभी हूं। कुछ नही कर्त्ताहूं स्वंय
मेरेप्रभावसैहीं सबकुछ होरह्याहे। जैसैं सूर्यको कुछ इच्छा
नही हैं कि, मोकरिके प्रकाश होवै, परन्तु वाका प्रभावही
ऐसाहे कि, सर्वत्र प्रकाशफैलजाताहे। जैसै चूम्बककी कुछ
इच्छानहीहे कि,लोहामो कारिके नॉचे,परन्तु उसके प्रभावसैं
नाचताहीहै ऐसै कर्ता अकर्ता दोनो जानो ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे
अनाममगलसम्वादे प्रथमाधिकारकी भूमिकावर्णनो
नाम पञ्चमप्रकाशः ॥ ५ ॥

अब दूसराधिकारकी सीढीका कथन सुन। अनाम
उवाच। हे सुरुचे! सब नरनारी बहुत भेषधारी या प्रथमाधि
कारकी भूमिकाके खेलमैही सब उंमर खोतेहै और मन्द-
रोके मनुष्य ठाकुरजीका प्रसादके रस खाखाके आलसी
होजातेहे। प्रसादका माहात्म्य ऐसा लिखाहे कि, प्रसादके
खानेसै दिव्यदृष्टि होजातीहै। सो ये तो नित्य खातेहैं और
दिव्यदृष्टि नही होती।चर्मदृष्टिही बनी रहतीहै। हेप्यारा! जा
प्रसादका माहात्म्य लिखाहै वो प्रसाद औरहै। शब्दके
च्यार स्थानहै परा, पश्यति,मध्यमा,वैखरी, सो वैखरीनाम
उसकाहै जे मुखसैं शब्द बोलेजातेहैं। मध्यमा उस्को कहते

हैं मोसैं डरते नही । अधर्म, अन्याय, दगावाजी, जालसाजी सवकेसाथ करतेहै, उनके हृदयमैंसैं वुद्धिका प्रकाश नाश करदेताहूं । जासै वे अनेक क्लेशोंमैं फसते हैं । सुवुद्धि कुवुद्धि का देनेवाला मैंहूं जैसे जाके कर्महैं वैसीही वुद्धि वाके हृदयमैं प्रकाश करतीहै । भोग और मोक्षकी देनेवाली वुद्धिहै सो मेरे आधीनहै । मैं सवका प्रेरकप्रकाशवानहूं। सव कुछ मेरे अंशसैं होताहै और मेरेही अशके प्रभावसै मनुष्योके अन्तःकरणमै अहंकार उदय होताहै वाहकार सै उनकी रक्षा करताहू । सो वहुतसे कर्म तो वाहंकारसेही सिद्ध होतेहै । जैसै क्षुधालगै जव भोजनकी इच्छा होतीहै तव मनुष्य यों कहै कि, परमेश्वर पेटभरैगा । सो ऐसा कहना याकी अज्ञानताहै । ये कर्म तो याहीके अहंकारसैं सिद्ध होतेहै। जव ये आटा, अग्नि, जल लाके पकावैगा पीछे ठंढाकरिकै हस्तसैं टूकतोडके मुखमैं देवैगा । चिगदकै जीवके टलकेसे भीतर करदेगा । इतने तो शरीरके अहकारका कर्म है । तापीछे याके अहकारका कर्म नहीं । परमेश्वरके प्रभाव सैं रसपाचन होके रक्त, मास, मेद, मज्जा, त्वचा, अस्थि, वीर्यादि सप्तधातु वनकर शरीर पुष्टहोताहै । वे सव कर्म परमेश्वरकी तरफसैं हैं। उनमैं इसके अहकारका कुछ दखल नही है। सो हेप्यारा! वहुतसे कर्म तो इसके अहकारकी मार फत होतेहै और सव परमेश्वरसै होतेहैं । परन्तु सव परमे

श्वरसैंही सिद्ध होते हैं शरीरके भीतर जो अहंकार मनबु-
द्धि चित्त उदय हुयेहैं सोभी तो परमेश्वरके प्रभावसैं हैं।
मैं सबकाकर्त्ता और अकर्त्ताभी हूं। कुछ नही कर्त्ताहूं स्वंय
मेरेप्रभावसैंहीं सबकुछ होरह्याहे। जैसैं सूर्यको कुछ इच्छा
नही हें कि, मोकरिके प्रकाश होवे, परन्तु वाका प्रभावही
ऐसाहे कि, सर्वत्र प्रकाशफैलजाताहे। जैसैं चूम्बककी कुछ
इच्छानहींहे कि,लोहामो कारिके नॉचे,परन्तु उसके प्रभावसैं
नाचताहीहे ऐसै कर्ता अकर्ता दोनों जानों॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे
अनाममंगलसम्वादे प्रथमाधिकारकी भूमिकावर्णनो
नाम पञ्चमप्रकाशः॥ ५॥

अब दूसराधिकारकी सीढीका कथन सुन। अनाम
उवाच। हे सुरुचे! सब नरनारी बहुत भेषधारी या प्रथमाधि
कारकी भूमिकाके खेलमैंही सब ऊमर खोतेहै और मन्द-
रोके मनुष्य ठाकुरजीका प्रसादके रस खाखाके आलसी
होजातेहै। प्रसादका माहात्म्य ऐसा लिखाहै कि, प्रसादके
खानेंसे दिव्यदृष्टि होजातीहै। सो ये तो नित्य खातेहैं और
दिव्यदृष्टि नही होती।चर्मदृष्टिही बनी रहतीहै। हेप्यारा!जा
प्रसादका माहात्म्य लिखाहै वो प्रसाद औरहै। शब्दके
च्यार स्थानहै परा, पश्यंति,मध्यमा,वैखरी, सो वैखरीनाम
उसकाहै जे मुखसैं शब्द बोलेजातेहैं। मध्यमा उस्को कहते

हैं जो भींतर मनन कीयाजाताहै।पश्यन्ति नाम उस्काहै जो स्वयसिद्ध ज्ञीनापनसै फुरना होतीहै और परानाम उस्का है। जाके प्रभावसै फुर्ना होतीहै सो वो परात्पर जो पराशब्दहै तासै योगीकी श्रुतिनैं प्रवेश किया। वाका वोध रूप जो शब्द सो प्रसादहै।जे महात्मा योगी परमसन्तनके वचन मनुष्योंके कल्याणके अर्थ वेद, शास्त्र, पुराण, वाणी ग्रथ कृपाकरिके कहे है वेही प्रसाद हैं। इनकों जे श्रवणरूप मुखकेद्वारा अन्तःकरणमें ग्रहण कर्ते है और आज्ञानुसार साधन कर्ते हैं उनकी दिव्यदृष्टि होतीहै। हेप्यारा! जव मनुष्य मेरे मिलनेके अर्थ वाहिरका पूजन कर्ता है। और कथा कीर्तन श्रवण कर्ता है और मेरे मिलनेका मार्ग खोजताही रहताहै।जव वो आगे दूसरे अधिकारकी सीढीपै चढना चहाताहै तव वाकों मेरी कृपासैं उसही अधिकारके गुरु मिलजातेहैं। जो ये पहिले वाहिर पूजन करताथा सो उनके उपदेशसे भींतरमानसी करनेंलगा।जैसें मन्दिर भगवानके वाहिरहै वैसेही भीतर अन्त करणमैं मन वुद्धिकरिके वनावे।जैसैं स्वप्नावस्थामें विनारचना सवरचना दीखतीहै। तैसेंही मनवुद्धिकरिके मन्दिर इष्टदेवका वनावे । सुवर्णका मणिमाणिकोंसै जडाहुवा, चित्रविचित्ररगोंसहित, और अपने इष्टदेवको जामै अपना प्रेम होवै। शक्ति, महादेव अथवा रामचन्द्रसीता, तथा राधाकृष्णको सिंहासनपै बै

ठाके आप सखीभावमै वहुतसी सखीनके संग मौजूद रहै और उबटना अतर सहित भगवान्कों गंगाजलसैं स्नान करावै। अगोछा देके धोवती पीताम्वरी या श्वेतपहिराके पीछे शय्या सिंहासनपै काच कगा करावै। चन्दन, केसर आदि लेपन करै और वस्त्र अपने प्रेमके अनुकूल पहिरावै। हरे,लाल, गुलावी, सोसनी, सुपेद, पीला, पंचरंगी पहिराके आभूषण पहिरावै। शिरपै मुकुट ताज पगडी फैंटा वांधके निरखै।कवहूँ अनेक तरहके पुष्पोंके शृगार करै।पीछे आरती उतारके प्रणाम करै। पश्चात् मेवा,मिश्री, मक्खन अनेक तरहके पकवान निवेदनकरै।कंचनकी झारी गिलाससैं जलपान कुल्ला कराके ताम्वूल देवै। पीछे पखा लेके पवनकरै।चरण सेवा करै। ऐसैं मानसी पूजन रात्रीकी चौथीपहरमै उठके शरीरके सवकर्म शौचादि करिके नेमसै नित्यप्रति करतोही रहै। और गृहस्थाश्रमका सव व्योहार शुद्धतासैं वर्तै। ये मानसी पूजन अनिर्माल्यहै। यामैं भगवानके जितनी वस्तु अर्पण कीजाती है सो सव मनकी भावनासै है। किसीकी भोगी विलसी नहींहैं। वाहिरकी पूजन सनिर्माल्य है। यामैं भगवानके सव वस्तु भोगीविलसी चढती हैं। जैसैं पुष्प चढाते है उनको पवन, सूर्य, चन्द्रमादि देवतानैं भोगलियेहै। और मक्खी भौंरादि जीवोंने भोगलियेहै। ऐसैही सववस्तु जानो। जे जन या मानसीपूजन

करतेहै तिनके मनकी वहुतसी चपलता जातीरहतीहै। और उनका मन परमेश्वरके प्रेममैं मग्न रहताहै॥

अथ तृतीयाधिकारकी सीढी वर्णन।

हेप्यारा! या मानसी पूजनकरनेंवालोकों अपने मनकी वृत्तियोंके देखनेका वोध होजाता है। जव रजोगुण तमोगुणकी वृत्तिनकों देखके उदास होता है, सतोगुणकी देखके प्रसन्न होता है। तव परमेश्वरसैं प्रार्थना करता है कि, हे स्वामिन् मेरी वृत्तिया जे मलिन उदय होतीहैं इनसैं मै कैसैं शुद्ध होऊंगा। जव गणनसै गुण वर्तताहै तव मलिनवृत्तियोंका त्यागकरिके उत्तमोंकों ग्रहण करता है याहीका नाम जागना है। क्योंकि, रज तमकी मलिनवृत्तियां जो रात्रि है तासैं सतोगुणरूप विचारज्ञान जो वोध है सोई जागना है। और जे वाहिरकी रात्रि मैं जागनेंका साधन कर्तेहै और दिनमै सोतेहै वे दम्भी अल्पवुद्धि है। और ग्रंथोके श्रवणमननसै सज्जनोंके संगसैं गुरुभक्तिके प्रभावसै याका हृदयमै वैराग्यउदय होजाता ह। तव रजतमकी मलिनता वहुतसी नष्ट होजातीहै। सतोगुण वढजाता है॥

अथ चतुर्थाधिकारकी सीढी वर्णन।

हेप्यारा! जव याकी सतोगुणवृत्तिया वढजातीहै तव याकों अध्यात्मविद्याके शास्त्र प्रियलगते हैं। जिनकों

सांख्य वेदान्त योगशास्त्र कहते है और महापुरुषोके कहेहुये ग्रंथ जे भाषावाणीमें है उनको श्रवण करिके वाचके वडा मग्न होता है । ये अध्यात्मविद्या देखनेसै नित्यानित्यका विचार होजाता है । जब शास्त्रोंकेद्वारा योगमार्गकी महिमां सुणकर योगमार्गमें चलनेंका भाव उदय होजाता है। तव योगसमाधि सिद्ध महापुरुषोंसैं मिलनेंका विरह उपजता है। जव जहा तहा महात्मानके दर्शन करता रहता है सो याको पहिलैं वहुतसे पाखंडी गुरु मिलते है परन्तु ये तो संयमीपुरुष गुरुमुखी है और मेरे मिलनेका याको प्रेम है जाकरिके उन पाखंडी गुरुनकी वृत्तियोंको ये परखलेता है और उनसै याकी अरुचि होजाती है। क्योकि, याकी वुद्धि मेरी भक्तिकरिके पवित्र है और ये मनमे वडा सोच कर्ता है कि,जो महापुरुष योगसिद्ध हैं उनके मै कव दर्शन पाऊंगा।उनके मिलनेकी चिन्तामें अहर्निशि रहता है सो चौथेअधिकारकी सीढी है ॥

अथ पांचवेंअधिकारकी सीढी वर्णन।

हेप्यारा ! जव वाके हृदयमै मेरे सन्तस्वरूपके मिलनेका वहुत विरह उठता है तव मै कृपाकरिके नरहरिस्वरूपसै मिलताहूं ।जास्वरूपकों परमसन्त सद्गुरु कहतेहै तव ये दर्शनकरिके वहुत प्रसन्न होताहै। जिनकी अजवरहस्य सवजगत्सै न्यारी सवसै अधिक गुणातीत

अवस्थामैं स्थिर हैं। प्रकाशरूप जिनकी सहजकी वाणी सहजस्वभाव रजतमसे रहित शुद्ध सतोगुणस्वरूप हैं। जिनके वचन सवशास्त्रोके सार भ्रमके दूरकरनेंहारे दीन गरीवी दुर्वलतामैं रहनेंवाले उनकी कृपाकटाक्षसें याके हृदयमैं उनकी महिमा भरजातीहै। और निश्चय होजाताहै कि, अव मेरे सर्वकार्य सिद्ध होवैगे। जव ये वडे प्रेमसैं उनके चरणारविन्दका ध्यान धरताहै और तनमनधनसैं परमप्रीति करिकेसेवा कर्ता है और वे सैंनवैनसें जैसी आज्ञा देतेहै सो धारण कर्ता है। हेप्यारा! या जीवात्माके वहुतजन्मोंके शुभकर्मोंके फलोंसें सगुणस्वरूप सद्गुरुकी झाकी होतीहै। जव ये उनका संग पाताहै याका नाम असलसत्संग है। उनके वचनविलाससै याके हृदयमैं वडे गुप्तज्ञानकी खानि उदय होतीहै और याको वे ऐसे प्यारे लगते हैं कि,जगत्मे कोईभी प्यारा नहीं।परन्तु उत्तम सस्कारीकी प्रीति वढेगी अल्प और मलिन संस्कारीको मिलभी जावैगे तोभी प्रीति नहीं करैगा।सो ये पाचवे अधिकारकी सीढी परमकल्याण करनेवाली है।

मंगल उवाच।

हेमनहरन! आपनै पूर्वकथन किया कि, या जिज्ञासूकों पहिलें वहुतसे पाखंडी गुरु मिलते है सो वे कैसेंहै उनके कुछ लक्षण कहो॥

अनाम उवाच।

हेसावधान धैर्यवान्! जगत्मैं उभयकहिये दों प्रकारकी सवरहस्यवस्तु होतीहै। एक असली, दूसरी नकली। और सृष्टिभी दोप्रकारकी है। आसुरी, दैवी। जब धर्मका उदय हूवा चाहताहै तव पहिलै धर्मत्याग आताहै। जैसैं रामचंद्रसैं पहिलै रावण, कृष्णसै कस प्रगटभये ऐसैं ही जे झूंठे योगी सामाधि वनरहेहै तिनके लक्षण सुनो। ये जो भेषधारी अनेकप्रकारके वनरहे है। साधु, संन्यासी- वैरागी, जोगी, जगम, गुसाईं, परमहस, उदासी, निरमले, गिरी, पुरी, भार्थी, सरस्वती, जती, महोवन्धे, दिगम्बरी, फकीरादि अनेक भेषधारी अनेक नामधर२के झुडनके झुंड फिरतेंहै सो इनका क्या वैराग्य है। किसीके तो स्व घरके मरजाते है, किसीकी स्त्री मरजाती है, किसीका विवाह नही होता, कोई शोगसैं, केई दरिद्रताकेमारे, कोईकों कुमाके नहीं खायाजाता। आलसी, केई सैलानी, वैरागीनके वहकाये उनके साथ होलेतेहै। केई घरकेनसैं लडाईकरके निकलजातेहैं। केई चटोकडे, केई खूंनी, केई चोर, केई रोगी पेटार्थी, ऐसै अनेकप्रकारकरिके किशोर या तरुणावस्थामैं घर छोड देतेहै। और कोई साही भेषकों धारण करलेतेहै। ऐसे मनमुखी मनकी चचलतासै वहुतसे फिरतेहं।कोई दो तीन केई इकल्ले इनकी क्या कथा कहूं।कुम्भके मेलेमैं इनका हाल देखो।हेप्यारा!इस नकली समूहमैं

कोई२ सच्चे असलीभीहै। वे गरीवीहालमैं निर्पक्ष छिपे हुये रहतेहैं। जो शरीर करिके देखोगे तो असली नकली एक सेहीहैं। जैसैं श्वेतकंकर और कपूर, परन्तु कंकर२ ही रहता है कपूर निराकार होके शून्यमै समाताहै और झूठे मोतीमैं वाहिरकी दमक ज्यादा होतीहै इसहेतुसैं जगत् उनका वहुत आदर करताहै। सच्चेमैं भीतरकी है उनको कोई उत्तम संस्कारीही जानताहै। ऐसैं साध असाधुका भेदहै जो जानै सोई जानै। और इनमै कोई २ सात्त्विक पुरुषभी है और पाखडी वहुतहै। वे पुजनेके निमित्त अनेक पाखड दिखातेहैं ॥

अथ मुद्रावाले जोगीनका व्याख्यानवर्णन।

हेप्यारा! जे मदिरा मास खानेवाले मनुष्यहैं वे जोगीनके भेषमै शामिल होतेहैं। सो कैसे जोगी हैं वहुतसे जटा राखके खाक रमाते है। सुलफा गाजेका ऐव सीखके ओरों कों सिखातेहैं। ओर वैराग्यकों धारण करिके मास खाते हैं, ये वडा अनुचित कर्म कर्ते हैं। और कानाचिराके काठकाचकी मुद्रा पहिरतेहै। महादेवका स्वरूप वनातेहै। परन्तु इनकों ये मालूम नहीं कि, महादेवयोगी कौनसी मुद्रा पहिरतेहै। मुद्रानाम योगवृत्तियोंकाहै। योगी अपनी योगवृत्तियोंमै शरीररूप व्रह्माण्डमें रमताहै सो कर्णमुद्रा नाम कानोमे योगयुक्तिसैं अनहदशव्दकी घोरध्वनि होती

है। उसमैं योगी अपनी श्रुतीकों लगा जगत्सै उदास होके सिमटजाताहै । उसकों उनमनीमुद्रा कहतेहैं. । कबू योगी योगयुक्तिसै भूमिकी सैल करताहै । वाकों भूचरी मुद्रा कहतेहैं । कबहूं योगी महापुरुष अपनें नेत्रोको मींचके भीनरसैं भ्रुवके वीचमैं जोडके चित्तको लयकरताहै ताको चाचरी मुद्रा कहतेहे । कभी योगी गगन जो खम् ब्रह्म है तामें विचरताहै वाकों खेचरीमुद्रा कहते है। कबहूं योगी महात्मा योगाभ्याससे अगममै गमकरता है वाकों अगोचरी मुद्रा कहते हैं। योगी परमसन्तोकी अनन्तमद्रा हैं। तिनमै ये पाच मुख्य है। ऐसी मुद्रा महापुरुष योगी धारण कर्ते हैं। ये असली मुद्रा है। कोई विरले महापुरुष शिवस्वरूप धारण कर्ते हैं । और जे कानोंकी त्वचाकों चीरके कई महिना बृथा क्लेशका नरक भोगके काचकाठ की मुद्रा नाम धरके पहिरते है सो नकली हैं । और महा देवस्वरूप योगीके जटा कहां हैं सो सुनो। ये जो रोम २ मै फैलीहुई प्राणवायु है ताकों प्राणायामके अभ्याससै सुषुम्णा मार्गहोके ऊर्द्धको ब्रह्मरध्रके पार सबवायुकों समेटके शिरमै धारण कर्ता है ताका नाम जटा है। और अहन्ता ममताकों धारण करनेवाला जो अहंकाररूप बकरा है ताकों महायोगी ज्ञानखड्गसैं मारके प्रकाशरूप जो तुरीया ज्योतिहै जाकों ये जोगी धारा कहते है वा महाशक्तिके बलिदान चढाता है। बलि जो अहंकार है ताका चढाना

क्या प्रकाशपै ठहराना उसी वलिदांन का योगी मास खाता है अर्थात् या साधनसैं शरीरका मास सूखजाता है सोई मासका खाना है। और तुरीया स्वरूपका जो आनन्द है ताका बोधमैं महापुरुषयोगी मग्न रहता है वोही मदिरा पान है। और महापुरुष योगी धूनी अधरअखाडे तपलो कमैं तपता है। धू कहते है स्थिरकों, नी कहते हैं निरन्त रकों, निरंतर स्थिर रहना सोई धूनीं है याधूनींमैं रज तमकी मलिनकल्पना सोई काठ ब्रह्माग्निमै होमाजाता है। ताकी विभूति शान्त आनन्दरूपी सूक्ष्मअगमै लिपटीरहती है। और ये जो नकली पचधूनीं तपते है जोगी वैरागी बाहिरकी अग्निसै शरीरकी त्वचा जलाते है या कर्म कर नेंसै ज्यादा अपराधी होते हैं। और वा अपराधसैं इनका तामसी स्वभाव होजाताहै। लकडी छाणेनमैं वेप्रयोजन बहुतसे जीवनका नाश होता है। और चतुर्मासमैं तो महा-पापके भागी होजाते है। ऐसी धूनीं तपनेंसैं ज्यादा कलं-की होते है और पाखंड झूठ अहकारके बलसै अनेक कास-नाकरिके या शरीरको दु:ख देतेहै तामें जीवात्मा परमेश्वरका अंश दु खपाता है।सो ये असुररूप कर्म कर्ते है।मैंने ऐसे पुरुषों के विचार करनेके अर्थ गीतामैं कथन किया है॥

श्लोक–अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः॥ दंभाहं कार संयुक्ताः कामरागबलान्विताः॥ कर्षयन्तः शरीरस्थं

भूतग्राममचेतसः ॥ मां चैवान्त-शरीरस्थ तान्विद्ध्यासुर निश्चयान् ॥" इति ।

हेप्यारा! ये दंभी अनेक घोरतपकारिके जीवात्माकों दुःख देते है। केई तो जाडेनमै जलमै पडते हैं। केई ऊपरकों पांव बांधके लटकते हैं। केई हस्त ऊपरकों रखके सूकाते है। केई बृक्षके नीचे सवऋतुनमै वैठेरहते हैं। केई खडेरहते हैं। उनके पाव स्थंवसे भारीहोजाते है। केई कीलनपर सोते हैं केई मौनीवनके दूधाधारी होते हैं। वहुतसे रात्रीमै जागते है और दिनमै सोते है। चांद्रायणआदि उपवास करिके भूखेमरते है, दिगम्वर रहते है। केई महामलीन मलमूत्र खाते है। ऐसे अनेककर्म करिके जीवात्माको दुःखदेतेहै। सो असुर दंभी अहंकारी आत्मघाती है। हेप्यारा! ये मेरे नामका झूंठा स्वाग वनाके मायाके रस भोगाचाहते है सो ये अपनें कर्मोंसे आप नरक भोक्ते हैं। जैसें मुडचिरे मूड चीरके वनियोसैं पैसे लेते हैं। ऐसें ये शरीरकों दुःख देके जगत्सैं भोगचाहते हैं। अनेकतरहके रस खाते हैं और धमकाके हुकूमत जंताते हैं और वहुतसे अज्ञानी इनकी सेवा करते हैं सो तो सेवाका फल पाते है॥

प्रश्न ॥ हे घणनामीसनातन! ये तप तो आपनें नकली पाखडीनकें वतलाये। असली सच तपनमैं मुख्य तप कोंनसेहै सो कृपाकरिके कहो॥

उत्तर ॥हेअनघ श्रद्धावान् तप अनेक प्रकारके हैं। स्थूल सूक्ष्म शरीरकरिके होते हैं। वे तप योगमार्गकी सिद्धतामें आते हैं। और पूरे योगीकी ऐसी रहस्य होती है कि, नै तो वो किसीसैं डरता है नैं डराता है। हर्ष,शोक,भय, उद्वेगसैं रहित समदृष्टि होताहै। गीतामैंभी ऐसाही कह्या है।

श्लोक ॥ "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः॥
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः॥"

और स्थूलसूक्ष्म संवन्धी तपकरनेकेयोग्य मैंने कृष्ण स्वरूप होके गीतामैं कहे है सो श्रवण करो। मन, वचन, काय, तपकरनेके योग्य है॥

अथ कायकतपवर्णनम्।

श्लोक ॥ देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्॥
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

अर्थ-देव कहिये उत्तमवृत्तियावाले और द्विज कहिये श्रेष्ठसंस्कारी और गुरु कहिये वडे, प्राज्ञ कहिये भक्त,पण्डित शास्त्रपुराणोके वेत्ता इनका पूजन करना शौच कहा। शरीर, वस्त्र, स्थान पवित्र रखना आर्जवता कहा। नरमाई को मलतासैं सवका आदर करना। ब्रह्मचर्यमैं रहनां अर्थात् अपनी स्त्रीकों रजोधर्मके च्यारदिन के पश्चात् कुछ दिनोंका अन्तर देदे के तीन च्यार दिनतक वीर्यदान देना।पीछे पीछे

ब्रह्मचर्यमें रहनां और शरीरसे जानबूझके कोई जीवधारीनकों नैं सताना ये शारीरिक तप हे ।

अथ बचनतप ।

श्लोक ॥ अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ॥
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥

अर्थ—अनुद्वेग कहिये जलदीसैं वचन न वोलना, मन्दगत धीर्यतासैं वोलना और सत्यवचन कहना, सत्यभी होवै और प्रियभी लगै ऐसा वोलना, प्रियभी होवै और हितकारी होवै अर्थात् कल्याणका करनेवाला होवै और स्वाध्याय कहिये आत्मज्ञानका वचन कहना, तथा वेदशास्त्रमहात्मानके कहेहुये ग्रंथोकों पढना, सो वचनोंके तप है ।

अथ मानसतपवर्णनम् ।

श्लोक ॥ मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ॥
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानस उच्यते ॥

अर्थ—मन सदा प्रसन्न रखना, सौम्य कहा सूधा सरल स्वभाव रखना, डरावना नै होवै। और मौन कहिये हरिसवन्धी कथन करना, वृथा ज्यादा नैं वोलना, और अन्तःकरण इन्द्रियोंका निग्रह करना, कहा सिमटेहुये रखना और अपने मनके स्वभावको सदा शुद्ध रखना, ये मानसतप है । ऐसे तपनसे सव क्लेश दूर होतेहैं । आपकों

और परको सुखदायक हैं। और इन तपनसें मेरी पराभक्ति प्राप्त होतीहै। और जे ये पाखंडी तप करें हैं उनसें दुःख उपजतेहैं। और दुःख पानाही इनका फलहै॥

मंगल उवाच।

हे अच्युत! वहुतसे जोगी वैरागी ब्रह्मचारी भेषधारी योगक्रियाके षट्कर्म साधते है। केई तो कपडेकी लीर वीस तीस हातकी प्रातःकाल मुखमें निगलके वाहिर निकालते हैं। फिर धोधोके खातेहै, याकों धोतीकर्म कहते हैं। और सूतकी डोरके मोम लगाके नाकमैं चढाके मुखमैं निकालते है, याको नेतीकर्म कहते है। केई कीकरकी या और वृक्षकी नरमसी डाली लाके वाका वोड चिगदके मुखमैं होके कंठके भींतर चलाते हैं। केई सूतकी हाथभरकी वनालेते है, वाकों दातनकर्म कहते हैं। केई पोलेवांसकी पगेली गुदाके द्वारमैं रखके जलकों अपानवायुसे खैंचना साधते हैं, वाकों वस्तीकर्म कहते है। केई रागकी या शीशाकी सलाई वनाके शिश्नके छेदमै चलाते हैं, वाकों गजकर्म कहते हैं। केई वहुतसा पानी पीके निकालते हैं, वाकों उदरशुद्धिकर्म कहते हैं। केई खडे होके गोडानपै दोनू हस्त रखके कटि मोड २ के उदरके नलोंको हलाते हैं, वाकों नलविलोवन कर्म कहते हैं। और कहते हैं कि, इन कर्मोंके करेविना योगसिद्ध नहीं होता। शरीरके कफ, वात, पित्त इनहीं कर्मोसैं शुद्ध होते

है। और कोई खेचरीमुद्रा सिद्धकरनेके अर्थ जीभके नींचै जो त्वचा है ताकों काटते हैं और कहते है कि, या त्वचाके काटनेसै जिह्वा लंभी होजाती है। जब नासिका के द्वारकों उलटके रोकलेती है तब समाधि लगती है। केई जीभके मोडनेके अर्थ जीभके नींचे सावत सुपारी रखते है और जभिके वधानेके अर्थ उसको अगुलीनसैं पकडके खींच २ के साधन करते है। वाद झाडीके गरम जलसैं वहुतसा कुल्ला करते हैं।सो हेस्वामिन्! इन कर्मोंका कथन हटप्रदीपिकाग्रथ और शिवसंहितामैं लिखे हैं और इनकी देखादेख चरणदासजीके ग्रथमैभी किसीनैं कथन करदिया है और लिखा है कि, इन क्रियानसें योगी आकाशमैं उडते है। आसन अधर होजाता है। एकठोर वैठे सवजगत्का हाल मालूम होजाता है। अदृश्य होजाता है सो इन सवनका तात्पर्य कृपाकरिके वर्णन करो॥

अनाम उवाच।

हेप्यारा! योगमै तो अनन्तसिद्धि हैं। योगीको सवसिद्धि आन प्राप्त होती है। परन्तु महायोगी किसीसिद्धिकी काक्षा नहीकरता।निर्वासना होके परमेश्वरमै लय रहताहै। ये जो हटप्रदीपका ग्रथ और झूठा शिवका नाम लेके शिवसंहिता नाम धरके जे ग्रथ हैं सो किसी सस्कृतपढने वालोंनें वनाके अपनी न्यारी दूकान रची है। राजसीलोगों

के गुरु वणनेंकेवास्ते अयोग्य दंभी ग्रंथ रचलिये हैं। हेप्यारा! ये दंभी ग्रंथ कैसैंहै। ऐसैंहै कि, ऊपर कहीहुई क्रिया किसी प्राचीनग्रंथोमैं नही वर्णन करी और हालके महापुरुपोनैंभी अपनें ग्रथेंमैं वर्णन नहींकरी। कवीर, नानक, दादू, रज्जव, गरीबदास, राधास्वामी आदिलेके किसीनैं इनका कथन नही किया और विचारकेभी देखो कि, इन कर्मोंके करनेसैं जे कफ वात पित्त नाश होते है तो विना इनके शरीर कैसै आरोग्य रहेगा। देखो धोतीकर्म करनेसैं लाल निकलती है। वासै उदरकी तरीका नाश होताहै। जो यो कहो कि कफ जो ज्यादा वढजाताहै सो निकलताहै। सो तो कहना ठीक नहीं। कफ तो अन्नजलके खानेंपीनेंसैं पैदा होता है। क्या ये कर्मकारिके औ जूं अन्नजल ग्रहण नहीं करोगे। तुम अन्न जल इतना क्यों नहीं खाते जाकों जठराग्नि अच्छीतरह पचावे और विकार नैं वढै। अजो ग्यकफ तो अजीर्णसैं पैदा होता है, जे ज्यादा खाते हैं। हेप्यारा! जो जन जुक्तिकरिके खातापिताहै वाके कफ पित्तके विकार कदाचित् नहीं वढेंगे, सो क्यों तो अयोग्य भोजन करना और क्यो रोजीना कफनिकालना, ये तो विल्कुल मूढता है, ऐसैंहीं नेतीकर्मको जानों। क्या नासिका मलसैं रोजीना वंध होजाती है। जाकों डोरीसैं खुलासा करता है। जो यों कहें कि, नेत्रोंके रोगनाश होते हैं सो तो इन्न

का कहना झूंठा है। वही अजोगभोजन करनेसे सबविकार बढते है और नासिकामें त्वचा अतिकोमल है जो वामें रग्गा लगजावे तो नयारोग पैदा होजावे। और वस्तीकर्म करिके कहते हैं, कि, गुदाका मल साफ करते है, सोभी दंभी कहना है। हेप्यारा ! गुदामें तीन कुण्डलनी होती है सो दोनूका तो मल गिरजाता है। तीसरीमै कच्चामल सदा बनारहता है, वासैंही शरीरमै बल है। कदाचित् वो गिरजाय तो शरीर निर्बल होजायगा। अच्छीतरह रसपाचन होजाय तो मल दोनू कुण्डलनींयोंका साफ होजाताहे। कुछ बास चलाके पानी चढानेंकी जरूरत नही। और शिश्नमै जो गज चलाते हैं क्या वो रुकजाती है अथवा छेदचौडा करते है। और कहते हैं कि, शिश्नके द्वारा तेल ऊपर चाढालेते हैं सो इसमें क्या सिद्धाई है थोडीदेरके बाद निकलआवैगा।जैसैं मूत्रके त्यागनेंके समय वाई वायु सै रोकलेते हैं। तो क्या औजूं नही गिरैगा। ये झूंठे पाखडी झूठेकर्म करिके झूंठेसिद्ध बनते हैं। हेप्यारा! परमेश्वरनें मनुष्यशरीररूप अपने मिलनेंका मन्दिर ऐसा बनाया है कि, जिसमैं कोई द्वार सुधारनेकी आवश्यक्ता नहीं। पवन, अग्नि सबकार्य कररहे हैं। योगी भी इनहींके युक्त सजमसैं सबकार्य सिद्ध कर्ताहै। युक्ताहारसैं कफ पित्त अजोग नही बढनें देता और नासिक

गुदादि सवद्वार। जठराग्निके शुद्धरखनेसैं और प्राणाया-
मसैं सहजहीं शुद्धरहते हैं। ये जो पाखंडी सूगले मलीन
कर्म कर्ते हैं सो पूजनेंकेवास्ते कर्ते हैं। हमेशांहि मलथू
कमैं मलिन रहते हैं। हेप्यारा! जे मेरी भक्तिसैं हीनहोके
सिद्धिनकी इच्छा कर्ते हैं वे मनुष्य ऐसेही मलिनकर्मोंमैं
फसते हैं और जन्मभर रोगी रहतेहैं। जीवतैंहीं नरक
भोक्ते हैं। और जे जीभकी नीचेकी त्वचा काटकरि कहते
हैं कि, जीभकों उलटाके नासिकाके द्वार रोकके खेचरी
मुद्रा सिद्ध करैगे। वे पाखडी कई मनुष्योंकों दुःख देते हैं।
जाकी जिह्वाकी त्वचा काटते हैं वासैं वहुत दिनोंतक भो-
जन नहीं कियाजाता। श्वासके वलसैं दूध लपटा पीता है।
जीभके हलनेंसैं वडी पीडा होती है। हेप्यारा! जीभकी जड
के ऊपर भींतरकों हलकमें एक छोटीजीभ और है वो प्राणा-
यामके अभ्याससैं ऊपर लगजाती है। नासिकाके द्वारोंकों
रोकलेती है। वो अवभी पवनको रोकती है। और टलकेसे
भोजन को भीतर करती है। इस जीभकी त्वचा काटनेंसैं
कुछ प्रयोजन नहीं। ये जीभ तो मुखदातनके वीचमेंही
रहती है। और वहुतसे मनुष्य कानों के वधकरनेके अर्थ
रेशमी कपडेकी ठींटी लगाते हैं। और वहुतसे लकडीकी
वनाके दुनियादिखानेंकों कानोंमे लटकाते हैं कि, लोग ये
जानेंगे ये योगी हैं। अनहदका वाजा सुनते हैं। हेप्यारा!

अनहद ठींटी लगानेसैं नहीं सुनाजावैगा। ये तो कानोंके वधकरनेंसैं गन्नाटा माळूम होताहै । जे योगी महापुरुष अनहद सुनते हैं वो तो प्राणायामके बलसैं सुणाजायगा। जाकी न्यारी २ ध्वनि स्थानें २ पर अलग २ होती हैं वो वजताही रहता है कुछ अगुली ठींटी लगानेकी जरूरत नहीं। ठींटी अगुली लगाके जो सुनते है वे नकली हैं। पहिलै नकली सुनतैं २ सद्गुरुकी कृपासै असलीभी सुणने लगजावैगा ॥

अथ मनमुखीनके कथनका व्याख्यान वर्णन।

हेप्यारा ! कोई २ इन दंभी मनमुखीनमैंसे वाह्यविद्याका बोधसैं तथा महात्मानकी वाणी शब्द यादकरिके आपभी कथन करते है। कुछ मनमुखीपनासै दुनियादिखानेकेवास्ते साधनभी कर्ते है और कहके सुनातेहैं कि, ये प्राणायामादि हमनै सब साध राखे हैं और हमनैं ऐसे किया हमने ऐसैं किया झूठी गलफटाकिया करते है और उनके बनायेहुये कथनमैं वडी गलती हैं । शिरकाकथन पावमैं लगाते है और पांवका पीठमैं । क्योंकि वे अजान हैं गुरुमुखी होके देखातो है नहीं वाह्यविद्याके जोरसें अथ-वा सुणसीखके कहते हैं सो उत्तमविचारवान् मनुष्य उन के कथनकों परखलेते है और उनकी यही पिछान है कि, मलिन आचरण उनके बनेही रहते है । क्योंकि मनमुखी

हैं और हेप्यारा! जे वैराग्य को धारण करके जगत्‌की वस्तु ज्यादा इकट्ठी कर्ते है वे बडे श्वपच हैं। जैसें जा श्वपचके ज्यादा उच्छिष्ट आवे वो श्वपचनमें वडा श्वपच कहलाता है। ऐसैंहीं या श्वपचके भी जानों। जगत्‌की दीहुई वस्त इकट्ठी करता हे सोई उच्छिष्ट हे। सो येभी वडेश्वपच हैं। वैराग्यमै तो शरीरकी जरूरतके माफिक ग्रहण करना योग्य है क्योंकि, वैराग्यमें तो त्यागकी महिमा है, धनसपतकी नहीं। देखो पहिलै वहुतसे राजा राज्य छोड २ के चलेगये परन्तु जिनकी कामना ससारके सुखनसैं तृप्त नही हुई है और सहजस्वभावही सन्तोष नहीं आया है ऐसे मनुष्य वैराग्य लेके भी ससारके सुखनमैंही फसते हैं। क्योंकि, इंद्रियोंके सुखनसैं जव वैराग्य आवैगा तव सद्गुरुकी कृपासै अतेंद्रिय आत्मानन्दकी प्राप्ति होवैगी ऐसे पुरुष वहुत कम हैं। हेप्यारा! जवतक सच्चा सद्गुरु नैमिलै तवतक नकलीनके आधीन रहता है। जाकों मेरे मिलनेका ज्यादा प्रेम होवैगा वाको पूरे सच्चेगुरुभी मिलजाते है तव वाके सवकारज सिद्धहोते हैं॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसवादे पाखडीनके व्याख्यान पाचवाधिकार वर्णनोनाम षष्ठप्रकाश॰ ॥ ६ ॥ ॥

मंगल उवाच ।

हेमनहरन ! अव कृपाकरिके छठेअधिकारकी सीढीका वर्णन करो ॥

अनाम उवाच ।

हे श्रद्धावान् ! पहिले मैने अष्टागयोग कथन कियाथा । यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान; समाधि अव तेरे निमित्त नवअधिकारकी सीढी वर्णन करी हैं अव छठे अधिकारका कथन सुणो । पांचवाधिकारी वर्तमान सच्चे सद्गुरुका सग पाके अतिमुदित होके उनसै प्रश्नकर्ता है कि, हे कृपानिधे ! मेरे ऊपर कृपाकरिके परमेश्वरके मिलनेका मार्ग वतावो । जव याको वे उत्तमाधिकारी समझके सैनबैनसैं योगमार्गका अभ्यास वतातेहै । प्रथम तो आहार जु क्तकरिके खावै यु क्तकहा जो ज्यादा खावै तो अजीर्ण होके पेटमै भारापण होजावै।कमखाय तो निर्वल होजावै । सो इतना भोजन करै जो अच्छीतरह पाचन होजावै। सात्त्वकीभोजन करै।भोजन च्यारप्रकारका होताहै। तामसी, राजसी,सात्त्वकी,गुणातीत जो लूखासूका उच्छिष्ट वासा और हिंसक मांसमदिरासहित होवै सो तामसी भोजन है और खट्टा तीक्ष्ण यानें चरपरा ज्यादा होवै और षट्रसनके व्यंजन वहुतसे होवै सो राजसीभोजन है और जो मधुर सचिक्कण होवै सो सात्वकीभोजन है और जो अनाश्रुत विना इच्छा प्राप्त होवै जाको महापुरुष

अधिक चलते है। सो इनकर्मोंकों यथायोग्यवर्तें। ज्यादा वरतनेंसैं आयु कम होती हैं। ब्रह्मचर्य और प्राणायामसैं वढती है सो नासाग्रका ध्यान धरै। ये जो प्राण आते जाते है इनकोंभी वैठैं लेटैं देखा करै। ये सुरतकरिके श्वासकी सुमरनी है।इसका नाम अजपा है यामैं सोहे ओं का कुछ चिन्तवन नहीं और जो आलंवबिना मन नैंठेरसकै तो अक्षरसहित अजपाकों जपै अर्थात् भींतर जव श्वास आवे तव तो सो अक्षरका चिन्तवन करै और वाहिरजावै जव हं अक्षरका चिन्तवन करै सोह २ होताही रहताहै। सुरतका पहरा राखै याकोंभी अजपा कहते है। और वैठैं या लेटैं कानोंको अगुलीसे वंधकरिके मस्तकका गन्नाटा सुरतीसैं सुणैं। ऐसे २ साधनोंसैं मनका सयम करै और दंभीपाखडी मनुष्योंनें कईवजेंके साधन वनां राखे है केई तो छायापुरुप देखते हैं। सो ये तो स्थूलकी छाया देखते हैं। छायांपुरुपतो सूक्ष्मशरीरका नाम है क्योंकि, सूक्ष्मशरीरजो है सो कारणशरीरकी छायाहै सो श्रुतिकरिके सूक्ष्म शरीरकों देखना चाहिये कि सूक्ष्मशरीर जो अन्तःकरण है तामें कौंनसे गुण वर्तरहे ये अल्पवुद्धि स्थूल शरीरकी छाया देखतेंहे और केई भींतपर कालाचिन्ह करिके निगाह डाटतें है। केई दर्पणमें निगाहसे निगाह जोडतेंहैं। केई दीपककी लोहकों देखतेंहे। केई सूर्यकी तरफ झाकते हैं। केई सिद्ध वणनेंकेवास्ते दूसरेको अंधेरेमैं लेजाके याके

नेत्रोंकों अंगुलीसें दावके नेत्रनके तेजकी झलक दीखातेहै । हेप्यारा ! ऐसे साधन करनेसै दृष्टिकी हांन होती है । ये क्रिया कहीं प्राचीनग्रंथोंमै नहींलिखी और नासाग्रका देखना तो गीता भागवत योगशास्त्रमैं और कवीर दादू गरीवदास आदि महापुरुषोंनै अपनें ग्रंथनमै कह्या है ! हेप्यारा । अव प्राणायामका कथन सुनो। पहलें गुदाका मल साफ अच्छीतरह होजाय कुछ अपान वायुकी उदरमै गडवड नैंहोय । तव पूर्व जो आसन कह्या ताकों लगावै।ग्रीष्म वर्षाकालमैं सीतल स्थान जहां समधरा होवै अर्थात् ऊची नींची भूमि नैंहोवै जहा हवा लगती रहै वहा अचिन्त निर्विघ्न होके एकान्तमै वैठै। पहिले भींतर सद्गुरुका ध्यान धरै पीछै इडापिंगला दोनूं स्वरोंमैंसैं। चाहे जोंनसा स्वर हो ताकों खैचके धीरजतासै धारण करै, इसका नाम पूरक है। प्रसन्नतासै जितनींदेर रहसकै तितनींदेर रोके याकानाम कुम्भक है । पीछै सहजमै शनै २ वहुत धीरैं २ श्वास छोडै, याकानाम रेचक है। ऐसैं प्राणायामका अभ्यास करै। जवतक चित्त प्रसन्न रहे तवतक करै । उभयकाल साधन करै प्रातःकाल और सायंकाल। जो एककालकी श्रद्धाहोयतो एकही कालकरै । सायकाल जव करै तव अन्नपाचन होजाय और मलविकार कुछ उदरमैं नैंहोय तव हवाकी जगै वैठै, क्योंकि प्राणायामसैं शरीरमै गरमी वहुत व्यापैंहे सो निवारण होतीरहै । हेप्यारा !

सब वेदशास्त्रपुराणनमैं कर्म उपासना ज्ञानके धर्म वर्णन किये हैं। वे सब प्राणायामकी सिद्धिकेअर्थहै और सब कर्मोंकी आदिमैं प्राणायाम पहिलैं करनेंकी आज्ञाहै परन्तु ये अतिउत्तम कर्म कईजन्मोंमै सिद्ध होताहै एकमैं नही॥

प्रश्न—हेमहायोगेश्वर! वहुतसे मनुष्य जमीनमैं पहाड मैं भी तो गुफा वनाके साधनकरि समाधि लगाते हैं।

उत्तर—हाप्यारा दभीमनुष्य पूजनकेवास्ते वनाते हैं और अपने साधकोसैं वचनरूपी डोंडी पिटाके कहते है कि हम एकमाहकी समाधि लगावैंगे जब ससाधिलगानेंवाला तो कही छिपाहुवा रहता हे और गुफाका द्वार साधक बंध करदेते हैं। एक दोदिन अवधमैं रहै जब साधक वाको भींतर गुफामै बैठादेते है पीछैं वो जगतमैं पूजता हे। और कोई २ यवन फकीरभी फोकट रचके कहते हे कि, हमभी इस गुफामै चालीसरोजका चिल्ला खैंचैंगे यानें चालीसदिनतक हबूसदम करिके समाधि लगावैंगे वेभी पूर्व कहीहुई जालसाजी करते हैं और हिन्दूनसौंही नागरी किताब पढके वाका मतलब उन्हींसे सीखके उन हींके गुरु पीर बनजाते है आप कुछ नहीं साधते औरोको पोथीनकी वातोसैं वहकाते हैं। फकत दुनियां दिखानेकों नाकमैं रुईका फोस रखके स्वरोदाके सिद्ध वनते है सो ये यवन झूंठ जालसाजीमैं वडे चतुर है और ये

हिंदू विचारे कामनांनकेमारे अपना धर्म छोडके इनके चरण दावते है,सेवा करते हैं और ये यवन फकीर अपने मजहवकों नहीं छोडते। होसके तो अपने मजहवमै करलेते है॥

अथ दंभीनके प्राणायामका वर्णन।

अनाम उवाच।

हेप्यारा! वहुतसे दभीमनुष्य क्या कहते है कि, मै एकघंटेतक प्राण रोकताहू। कोई कहे मै एकपहर रोकताहूं। जव उनसैं काई कहे हमैं रोकके दिखावो तव वो उसकों एकान्त लाके आसनपै अकडके उसके सामने वैठके कहता है कि, देख मै प्राण चढाताहूं। जव वो स्वर खैचके वहुत आहिस्ताके साथ निकालदेता है और स्वस्थ होके पेट हलनें नहीं देता। वहुत सूक्ष्मतासै हृदयके जोरसै नासिकामैं मन्दगतसे श्वास लियाकर्ताहै और घटा आधघंटा वैठा रहता है। पीछे वो परीक्षाकरनेंवाला वाकी वडाई कर्ताफिरे। तापीछे वो कोईकाल खापीके हातपडे सो लेके लवापडे। अपनी दुकान ओर जगै खोलै। हेप्यारा! घंटा दोघंटा पहर दोपहर तो क्या कही जाय असलमैं आदघडीभी कुम्भक रुकजायगा इस अरसेमैंहीं अजायवलीला दीखजावैगी। और ज्यादा क्या कहूं जीवसैं ब्रह्मभावकों प्राप्त होजावैगा। और सवजगत्सै उदा-

सहो एकान्त जावैठैगा। और जगत्के पदार्थोंसें अरुचिहोके ब्रह्मानन्दमैं मग्न होजायगा। और वाकी गतिकों वोही जानैं और कोई नहींजानैं या जाको वो जनादे वो जानैं। विचारके देखो एकमिनटकी मध्यमतासैं तालदे तो ८० ताल होती है सो तुम प्राणरोकके देखलो दोतीनमिन्टमैंही कैसा हाल होताहै । छ मिन्टमैं तो हात पावकी वायु खिचने लगजाती है और शरीर सिथल होजाता है और वहुत आनन्द उपद्रव खडे होजाते है। ये अपनी मौतकी सैल देखनी है। जाके पूर्वसस्कार श्रेष्ठ होते है और साचे गुरु योगसिद्धका सग होवै और जाके घटमै परमेश्वर सद्गुरुकी भक्ति होवे तव ये अतिउत्तमकर्म प्राणायाम सिद्ध होता है । याहीमार्ग होके परमेश्वरकी प्राप्ति होती है सो ऐसे पुरुष वहुतही कम होते है। वेही तो अवतार हैं। सवसिद्धि जिनकें हाजर खडीरहती हैं वे तारनतिरन है। और जो पूरे गुरुविना या कर्मको अहकारके वलसैं हठकरिके करै तो रोगीहोके नाश होजावैगा यामै सन्देह नहीं। योगसिद्ध ईश्वर सद्गुरुकी भक्तिसै होता है केवल हठके अभ्याससै नही होता। सो योग दोप्रकारका है। मन्द और तीव्र सो अपनें प्रेमके अनुकूल है, परन्तु सिद्धसमय पाकेही होताहै । हे प्यारा ! ससारके कर्मभी यथायोग्य कर्तारहे। ऐसा कर्म करै जामै फुरसत रहै और प्राणायामकाभी अभ्यास कर्ता रहे। देखो श्रीकृष्ण जव

देहसहित मौजूदथे तव अर्जुन और उद्धवको योगाभ्यास का उपदेश दिया कि, याऽभ्यासकरिके मेरा निजस्वरूप जो सगुणनिर्गुणसैं परैहे ताको प्राप्तहोवोगे। या विचारकरिके अभ्यासकरनाही कारण रह्या। जो श्रीकृष्णसरीखे गुरुभी मिलजावै तोभी अभ्याससैंही अपना कल्याण होताहै। जव सद्गुरुकी कृपासैं अभ्यास करै और विचार करै कि, संसार तो सत्यशरीरकी जाग्रतावस्थासै दीखता है। स्वप्नमै झाई है और सुपुप्तिमैं कुछ नहीं और स्थूल शरीर इन्द्रियोंकी चेतनासे सत्य दीखे है। जो इद्रिया नहीं तो शरीरभी नहीं और इद्रिया मनसे चैतन्यहै। जा इन्द्रियपै मन नही वोही शून्य है। मन प्राणसे चैतन्य है। शुद्ध प्राणके विगडनेसैं मनको मूर्छा होजाती है और मनप्राण एकरूप है। और प्राणजीवात्मा करिके चैतन्य है। और जीवात्मा परमात्मा जो सत्तास्वरूप है ताकरिके चैतन्य-है। परमात्मा आकाशवत्सर्वव्यापक है सो प्राणायामसै पावैगा। तव प्राणायामका अभ्यास करताहै। और मनइद्रियोंकी वृत्तियोको वाहिरसै रोकताहै। यहातक कुछ धारणा का अगको लिये यम, नियम, आसन,प्राणायाम, प्रत्याहार ये पाच अग योगके सधे। तापीछे अभ्यासके समय प्राणके वेगको देखता रहै कि, कुम्भकसैं प्राणवायु कौन २ से शरीरके स्थानमै जोरदेता है और कौन २ सी पीडा कर-

ताहै। कुछ २ कुम्भककों वढाता रहै। ज्यादा हठ नैंकरै। सहजस्वभाव और सद्गुरुकी सैनवैन विचारता रहै। उनका ध्यान धरता रहै। और अगले महात्मानके ग्रंथोकों पढता सुनता रहै। उनके शब्दोसे वहुतसी कठिनता खुलजाती हैं। क्योंकि, वे वारस्ते गयेहै और अन्तःकरणमे सद्गुरुश्रुति-रूपहोके वोधदीयाकर्ते हैं। और वाहिर बचनकी सैंनसै रक्षाकर्ते हैं। या अभ्यासवाला सद्गुरुका संग नै छोडे।नित्य-प्रति सग करै, आज्ञानुकूल रहै, अपनी बुद्धिकी चतुराई उनके सामने नैकरै, प्रेममै लगा रहै। ऐसैं साधन करते २ भीतरका हाल मालूम होनैलगै और कोई कालमैं अभ्यास सै अनहदकी ध्वनि खुलै। शंखनादकीसी आवाज आवै। तव वाको नादध्वनि सुणके वडा आनन्द होता है और निश्चय आजाता है। दिव्यदृष्टि हो वहुतसी गुप्तवात खुलजाती है। वडा प्रसन्न होता है। वा शखध्वनिकों एकान्तमै सुनताही रहता है। कभी २ वो वध होजाती है सो प्राणायामसैं फिर खुलजाती है। सयमसै रहै फुरसत पाके अभ्यास कर्ताही रहै। और जगत्मै अपना योगकर्मकों किसीकों नै जनावै। वहुतगुप्त राखै। गुरु जानैं या गोविन्दजानै। ये छठे अधिकारकी सीढी है। यहातक गृहस्थाश्रममैंही रहता है। हेप्यारा! योग तरुणावस्थामै सिद्ध नहीं होता है। हा अभ्यास खूवहोता है। वा अभ्यासके वलसैं अर्धायुके पश्चात् सिद्धताका समय है॥

अथ सप्तमाधिकारकी सीढी वर्णन।

हेप्यारा! ईश्वरस्वरूप सद्गुरुकी भक्तिसे और उनकी कृपासै और याके प्रेमके प्रभावसै योगाभ्यासके आनन्दमै मग्नरहताहै। और जब याके शरीरकी तरुणावस्थाका ढलाव आजाताहै। इन्द्रियोंके भोगनसैं तृप्ति होतीआवै। जब अभ्यासमें ज्यादा लयता बढजाती है यानें अभ्यास प्रेमसैं बल करिके कर्त्ताहै। कुम्भकके डाटनेंमै बल होजाताहै। और जो कुछ वाके साधनमैं कष्टहोतेहै उनकों सहनेकी याकों सामर्थ्य होजाती है। और सद्गुरुसबहाल पहलैंहीं वचनकी सैनसै फरमादेतेंहै। प्राणजीतनेंका याकों बल होजाता है और बहुतसे अचंबेनके दर्शन होतेहैं। और जब कुम्भकमें श्वास ठैरजाता है तब मूलाधारसै प्राणका गमन उर्द्धको होनेंलगता है। जब पृथ्वीतत्त्वकी पीडाकों सहताहै। और अन्नमयकोशका बोध होजाता है। तब बडेआश्चर्यनकी सैल देखता है। पीछे कोईकालमै स्वाधिष्ठानकमलपर आजाता है। वहाकीभी वायुकों जीतके मणिपूरक जो नाभिस्थानका कमल है वहाकी सैल देखता है। और अनेकप्रकारकी व्योममें रचना देखता है। और पाचरगनके जलके भौंरोंके सदृश भँवर पडतेहै। श्यामरग आकाश, वायु हरी, तेज रक्त, जल श्वेत, पृथ्वी पीतवर्ण है। और बहुतसी सिद्धि जहा हाजर होतीहै। और अनेकतरहके

कष्टभी सहता है। जलतत्त्वके उद्वेगोंकी जीत होती है। आगे हृदयकमलमैं जब योगी गमनकर्ता है तब कुम्भकके प्रभावसैं बडे २ अचंबेनके दर्शन होते है और अनेक प्रकारके कष्टभी उदय होते हैं । सद्गुरुकी कृपासै सबकों सहलेता है और अग्नितत्त्वके उद्वेगकों झेलता है । वा समय अन्नमयकोशसै उठजाता है । वहा अनहदकी ध्वनि, शखनाद, झालर, घंटादि वहुतसे वाजे वजते है । उनमैं योगी सुरत लगाके लयरहताहै । पीछै योगी प्राणायामके बलसैं, सद्गुरुकी कृपासै कठकमलमैं गमनकर्ता है । वहा पवनतत्त्वका वेग वढजाताहै । जहा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्तिकी झाई पडतीहैं और अनंतकला उदय होती है। और बडा घबराहट अविद्याका जोर होता है । योगी सद्गुरुके शब्दोंके ज्ञानविचारसैं ठैरारहता है । कुम्भकप्राणायामसैं जब योगी मूलद्वारसै गमन कर्ता है तब ऐसैं चढता है जैसैं वर्षाकालमै एक लट होती है वो अपनें मुखके अग्रभागसैं दोनू वगलमैं अरु सामनै अपने चटनेका स्थांन जाचलेती है जब आगै पाव जमाके पिछला उठाती है। ऐसैंहीं योगी इन अदेखभूमिनमै विश्वाससै और श्वासके शुमारसैं आगे चढताहै और परमेश्वरके दीदारके इश्कमैं आके मरना कवूल कर्त्ता है। और कोईवक्त कष्टोंके सबबसै कायरहोता है । परन्तु फेरू दृढ होकर चलता है

और जब कोई कष्ट ज्यादा होजावे तव वाको साधनके संजमसे निवारण कर्त्ता है । और सद्गुरुके सगुणशरीरका भीतर ध्यान धरता रहता है । और वाहिर नेत्रगोचर झाकी कर्ता है । उनकी सहायतासैं इन अदेख भूमिनमैं गमन कर्ता है । कंठस्थानमै वहुतकालतक युद्ध अपनें आपसै हुवाकर्ता है । तव प्राणमयकोशकी जय होती है । तापीछे मनवुद्धिकी वृत्तियोंसैं अलग होके आगे चढनेकी इच्छा कर्ता है । और भृकुटीनके मध्यमैं जाके धमक लगती है । ये सातवैं अधिकारकी सीढीका कथन है । या स्थानतक वानप्रस्थाश्रमम रहता है और योगके दो अग धारणा ध्यानतक सिद्ध होते है ॥

प्रश्न॥ हे महाप्रभो आपनें चक्रनके चढावमैं अनेकप्रकारके अचंवेनके दर्शन और अनेकतरहके वहुतसे कष्ट वताये परन्तु उनका तात्पर्य आपनें खोल २ करि अलग २ नही कहे सो कृपाकरिके सवका व्याख्यान वर्णन करो ॥

उत्तर॥ हे प्रिय ! उनका खोलना मैंनें उचित नहीं समझा। पहिलैं मैंने वहुत खोलराखेहैं। परन्तु उनकोभी मैंने गुप्ततासै खोले है। वाको मालूम होवेगा जो या मार्गहोके आवेगा । वेदशास्त्रोंमै वर्णन किये है। पुराणमैं वेदव्यासमुनिनै कथानके प्रसंगोमै जहा तहा आनन्द और क्लेश वर्णन कियेहै। ये मुनिवचनका समुद्र हुवाहै । वेदव्यास

नाम इसी हेतुसैं है कि, योगबलसैं वेदोके सब तत्त्व देखके अपनी अनुभवसैं अठारहपुराण, पट्शास्त्र, स्मृतिआदि सब याकेही कहेहुये हैं। और वेद जो किसी महापुरुषनैं वर्णन कियाहे यामैं क्रमसै कथन कम है। पहेलीनकीसी रीतपैंहे। अर्थात् छिपाहुवा जैसैं एक अणमिल महात्मा हुये हैं। उन्होनैं कह्या है कि-

"चींटी चाली सासरै, नौमन काजल सार।
हाथी लीयो हातमैं, ऊंठ दियो ललकार॥"

अर्थ-चींटी वो जो छोटापनकों लीये गरीबींहे वो पति परमेश्वरसै मिलनें चली। जब नौ मन काजल सारा याने नौ तत्त्वका जो सूक्ष्म अग है कहा पाचइन्द्रिया ज्ञानकी, च्यार अन्त करण मन, बुद्धि, चित्त, अहकार ये नौ अज्ञानतासैं कज्जलवत् होरहे हैं सो श्रुतिनैं अपने ज्ञानरूप नेत्रोंमैं सारलिये यानैं सावधान होगई और हाथी जो कामदेव है ताकों विवेकरूप हातसैं लेलिया। ऊंट जो देहाध्यासी अहकार है ताकों ललकारके हृदयरूपी भूमिसैं ताडदिया। इति॥ ऐसा वेदोंका कथनहै कहता कुछ और है, अर्थ कुछ और है, सो वेदोंकों देखते तो वेदव्यासकाही कथन क्रमसाहित है और है प्यारा। पुराणोंमैं मृतकोंकी कथा नहीं हैं, मृतकोंकी कथाके सुणनेंसै क्या फायदा है? इनमै तो चिरजीवोंकी कथा है। महायोगेश्वर वेदव्यासनै शरीर

रूप ब्रह्माण्डमैं ज्ञानाज्ञानके युद्ध वर्णन कियेहै और युद्ध-केही प्रसंगोंमै च्यारों वर्णाश्रमके धर्म राजा प्रजाको नीत-युद्धके धर्म स्त्रीनके धर्म मरजाद आचरण अनेक रीतसैं अनेकनाम नये धर २ के उपदेश किये हे। वेदोंमैं ऋषियोंके नाम कमहैं और अवतारोंका तो जिकरही नहीं। वेदसै ज्यादा वाल्मीकमुनिनै अवतार ऋषिमुनियोके नाम वर्णन किये है और सबसैं ज्यादा अवतारादि ऋषि मुनि अनेकरीतके देवतानके नाम नये २ धर २ के अनेक प्रसगनमैं वेदव्यासमुनिने कथन किया है। देखो महाभारतमैं अनेक प्रसंगनके सग धृतराष्ट्र युधीष्ठिरका युद्ध वर्णन किया है। धृतराष्ट्र कौन है जो शरीररूप देशकों धारण करै अर्थात् देहाध्यासी अहंकार अज्ञान मोहकरिके अंध है, याके सत पुत्र है, यानें दशों इन्द्रियोंके दशभोग, सो एक २ भोग-रूप मन दशोंनके सगमैं दशगुणे होगये । या प्रकार सौ भए।इनके ग्यारहक्षोहणी फौज हैं अर्थात् दशइद्रिया, एक मन, इनकी एक २ क्षोहणी हैं और युधीष्ठिर वो जो सदैव निज धर्मरूप युद्धमैं स्थिर रहै, ये पाच पाचौंतत्त्वनके अश हैं। इनके सात क्षोहणी फोजहे अर्थात् पवित्र च्यार अन्त.-करण, तीनगुण और दो सत्तास्वरूप श्यामसुन्दर कृष्ण आकाशवत् सव खेलका धारण करनेवाला है, सो निजधर्म योगरूप युद्धमैं श्वासका जीतना सोई जयहै। इसी जयके

हेतु शस्त्र जे श्रेष्ठगुण, अस्त्र जे तत्त्वनका बदलाव, इनसै योगी श्वासजित विजयको धारण कर्ताहै। महाभारतकी अपार महिमा है। वेदव्यासनैं तो एकलक्षही प्रगट करीहै, येही महाभारत स्वर्गमैं ग्यारलक्ष है। महर्लोकमैं २५ अरब है। श्वासजित योगीका जो महाभारत युद्ध है ताकी अपार महिमा है वचनसैं कहीं नहीं जाती। हे प्यारा! जेते शास्त्र पुराण है ते सब श्रेष्ठ है परन्तु हमारे विचारमैं तो जिज्ञासूका सबरीतसै कल्याण करनेवाले दोशास्त्र है गीता और रामायण, वाल्मीक हो चाहे तुलसीकृत हो, इनमैं धर्म, नीतमर्जाद, भक्ति,ज्ञान,ध्यान,परमेश्वरके मिलनेका योग, सबरीतका उपदेश है। भागवतकाभी सब तत्त्व इनहीके बीचमैं आगया और हे प्यारा! मनुस्मृतिमै ससारके कानूनका कथनहै। यामैं पढेहुये मनुष्योंनै वाग्यछल वहुत करादियाहै। देखो ब्रह्मचर्यकी तीन अवस्था कहीहैं ३६ वर्षका,२५का,९का, सो तुम विचारकरो कैसे भ्रमके वचनहैं। जिनमैं निश्चय नहीं होसक्ता ९ वर्षका क्या ब्रह्मचर्यहै। या ऊमरसैं क्या कामदेव उपजता है, सो ब्रह्मचर्य राखैगा और ३६ वर्षका ब्रह्मचर्यमैं अर्धतरुणाई चलीजातीहै। २५का उत्तम है और सन्तानके दश संस्कार कहे है। गर्भस्थिति, नालच्छेदन, मुन्डनादि जानों। सो विचारो कि जब नालच्छेदन कर्म कर्ते है वाके पूजनमै घटा दोघंटा काल लगजाता है,

इतने बच्चा वाहिर जमीनमैंही पडारहैगा और वाकी माता-
भीबैठी रहैगी तो उनके हिम ग्रीष्मऋतुकी वेदनासैं जरूर
पीडा होजावैगी और मुंडनसंस्कारके कर्म कहके पीछे दूसरी
अध्यायके ३४वे श्लोकमै क्या लिखताहै। "यद्वेष्टमङ्गलंकुले"
तथा अपने कुलकी रीतके माफिक करो। देखो या स्मृतिमैं
तो आदिसैं धर्मके कानून वाधे है तो मनुके कहनेंसै पहलैं
कुलरीत क्या है। रीतमरजाद तो मनुनैंहीं वाधीहै, सो ऐसा
कहना ठीक नहीं कि, अपने कुलकी रीतके माफिक बच्चेका
मुन्डन करलो। ऐसी२वहुतसी गलतीहैं वे अनुचित दु.खदाई
है और यशुमसीरूप होके अजील किताव कही है, जाको
वाईबिल्भी कहते है। वामै मेरे मिलनेके मार्गमै जे कष्ट होते
हैं सो वहुत साफ २ खोलके कहेहै। च्यारूं मगलसमा-
चारोंमै और पौलसकी पत्रियोमैं यूहन्नाके प्रकाशित वाक्यों-
मै मैनैं इन नवीयोंमै होके वर्णन किये है और ज्यादा
मिलोंनी ऊपरकी कथानकी नहीं करी है। जैसे वेदव्यास-
मुनि और मूसा पैगंवरनै वहुत वढा २ के कथन किया है।
अजीलमै तो कममिलौनी करिके कह्या है परन्तु उन वचनों-
परभी मेरी छाप है अर्थात् गुप्ततासै कह्या है। नष्ट होनेवा-
लोकों नही मालूम होवैगा सो हे प्यारा! पहिलै सवहाल
कहचुके हैं जव तू मेरे मिलनेका योगमार्गमै चलैगा तव
सव प्रत्यक्ष देखलेगा॥

अथ अष्टमाधिकारकी सीढी वर्णन।

हे प्यारा! इस सातवॉधिकारपै वहुतकाल साधन कर्ता-रहता है और अभ्याससे शरीर निर्वल होजाता है। क्योंकि, वाकी क्षुधा कम होजाती है तव ओजू रसनसैं और संयमसे शरीरकों पुष्ट करिके अभ्यासमै लगता है और साधन गुप्ततासैं कर्त्ता है। जव याकी तरुनाईका अन्त आजाता है योगाभ्यासके संग ससारकेभी सव दुःखसुख भोगलिये तव भोगोसैं गिलानीं आजाती है। जैसैं धापेहुये पुरुषके सामनैं खानेके पदार्थ पडेरहते है और उनसैं अरुचि हो-जाती है तैसैं सव भोगनका यानैं गुणदोप देखलिये और भोग भोगलिये और योगमार्गमैं अदेख भूमिनकों देखके याकों परमानन्द आता है और आत्मविलासका सुख और आत्मिक धनकी प्राप्तिसैं याको इन्द्रके सखभी तुच्छ लगते हैं और या मार्गमैं अपनी मौतकों सामनैं रखके आगेकों चलता है। हे प्यारा! जव मैं ऊपरसैं वल देताहू तवये ली-लागिरसैं आगे चलताहे। जव याकों अनेकप्रकारकी भूमि मिलती हैं। पहिलै लोहाकी, तापीछे तॉवाकी, पश्चात् चां-दीकी, ताउपरान्त सुवर्णकी, तदन्तर रत्नोंकी और मरकत-मणि आदि लेके अनेक मणियोंकी भूमिनमैं महायोगी गमन करता है और याकों एक वहुतपुराना प्राचीन फूटा दरवाजा मिलता है, वहा वत्तीसहजार महावीर विश्वपा-

लक शक्तिके सेवक याकों मिलतेहैं। वो शक्ति अतिसुन्दर, कोमलतन, लंबा है, आकार जाका ताके वांवनभैरू आज्ञा-मै रहते हैं, वे सव सृष्टिका काम कर्ते हैं, सव वीर और भैरू शक्तिसहित योगीकों आगे नहीं जानेदेते है। तव योगीनैं शिवरूपको धारण करि महापराक्रम करिके वीर और भैरू शक्तिसहित सवकों भीच देता है। और उनके डोलने फिरने का आकाश वध करदेताहै और महायोगी महावल करिके आगे चलताहै तव शक्तिका अग्रभाग फटगया और वाकों वहुत पीडा हुई। आगे क्या देखताहै कि, जाशक्तिका अग्र फटाथा वापै एक छोटीशक्तिनैं सवारी कर राखीहै, वा छो-टीशक्ति योगीका पराक्रम देखके उर्द्धमै जा चिपटी और एक महाप्रवल दोमुखका पुरुपसैं वडा युद्धकिया। वासमय रुधिरनदी वहनेलगी और फूटे दरवाजेसैं जव योगी पार गया तव चंद्र,सूर्यके लोक देखे, यहातक आवागमन वणा-रहताहै। जव चद्र, सूर्यके लोकोसैं योगीनैं आगे गमनकिया तव आकाशमैंसों चद्र, सूर्य खिचके एक होगये, जव वहुत वडा प्रकाश होताहै वाकी कुछ महिमा नहीं कहीजाय और वहा घटा उठतीहै,विजलियोका वडा झमझमाट होताहै और मेघकी गरज वहुत भारी होतीहै। वहाका ठैरना अतिक-ठिनहै। महायोगी या स्थानका वडा आनन्दमैं मग्न होजा-ताहै। सवसैं रहित होके गुणातीतावस्थाकों प्राप्त होता है। यहा मनोमय कोशकी जय होतीहै। तव महायोगी ज्योति-

कुछ चलता चलताहै जाको अक्षर तुरीय ओंकार कहतेहें। वहां अनन्त ईश्वरी दिव्यसिद्धि प्रगट होतीहैं। पचरंगी घटा उठतीहै। सूर्यमुखी फूल बहुतरगनके जहा खिलरहे हैं और नानाप्रकारकी दिव्यसृष्टि जहां प्रकाश कररहीहै। अनेकप्रकारकी अपार दिव्यरचना जहा दीखरहीहै। ये सर्व मनायेहै। तापीछे योगी पातालकी सैल कर्ता है। आगेसें खंभा पीछेको होजाताहै। तब लाल अर्श देखताहै। तब योगी पश्चिम होके गमन कर्ता है वहा महाघोर अंधेरेसें होके बिनाभूमि चलताहै। वासमय योगीको कालकाज्ञान नहीं रहता। अल्पकाल दीर्घसा मालुम होताहै और दीर्घ अल्पसा मालुम होताहै। कुंभकका कुछ प्रमाण नहीं रहता शरीरसें उठजाताहै। सूक्ष्मरूप जो आत्मिकहै ताकी सूक्ष्मरूप होकर सैलकर्ता है वा महाघोर अंधियारेमसे निकलकरि मैदानमें पहुचताहै। वहां मानसरोवरमें स्नान करिके बहुतसे हंसनकी झांकी कर्ताहै। आगे जाके देखा कि एक दरवाजा महावज्रके कपाटोंसें बन्धहै और जहा अनगिनती शूरवीर त्रिशूल लियें खडेहैं, वा दरवाजेके किवाडोंके तोडनेसें योगी बडाभारी युद्ध कर्ता है। वा युद्धसें पृथ्वी बहुत कांपतीहै और तत्त्वनका बडा शोरहोताहै। कदै जलका वेग उठताहै। कदै अग्निका। कदै महाप्रचड पवन चलतीहै। महाप्रलयकालका सा हाल होताहै। तत्त्व पिगलजातेहैं। योगी मर जीया होजाताहै। तापीछे सतगुरुका ध्यान धरके कोईका

ल विश्राम लेके आगे गमन कर्ताहै और परमयोगी जब युद्धमें घायल होजाता है तब वाकों जकपडती है। घायलहोनेंसे खुशी मानताहै और वार २ माराजाता है। फिर जिन्दा होजाता है। एकवेर वडाभारी अहंकारसै धनुष लेके महापराक्रम करिके आकाशको गमन किया वासमय महायोगीके चरणके बलसैं कूर्म, शेष, कुलमलाये और वडी पीडापाई। सप्तपुरीनमैं घबराट मचगया। परमयोगीनै महाबलसैं महावज्रके कपाट तोडके आगेजाके झडा गाडदिया। जब मुरली सहनाय आदि वहुतसे वाजे वजे और अत्यन्त सुगध आनेलगी। पिछले सब क्लेश नाशहोगये। आगे कोई क्लेश नहीं रह्या। सब रचना नई होगई। पुरानी सब जाती रही। जैसै स्त्रीके सन्तानका प्रसव होताहै तव अतिदारुण दु:ख पातीहै परन्तु जब पुत्रजन्म देखकर पिछला सब दु:ख भूलजाती है और वासमय आनन्दमै भरजाती है। ऐसैंहीं योगीके सद्गुरुकी दयासै निजस्वरूपकी प्राप्ति होती है तव अगले पिछले सब क्लेश नष्ट होजाते है और आत्मानन्दमै आनन्द शान्तस्वरूप होजाता है। तापश्चात् व्योममैं महायोगीनै सैलकरी। श्रुती मस्तहोके भीतर धसी। अनन्त दीप जहा दिखाईदिये। जहां तेजपुजकी सवसृष्टि देखी। ये आनन्दमय कोश है और वहा सत्य परमपुरषका दरबार देखा। श्वेतसिंहासनपर वैठे हैं

और सिंहासनके नीचे अतिउग्रतेजकी च्यार कला देखी। उन कलानके भींतर अनन्त नेत्र थे। एककलाका रूप धवलकेस दृश था। दूसरीका सिंहकासारूप था। तीसरीका बाजकासा रूप याने उकाबकासा था। चौथीका मनुष्यकासारूप था और वे कला वडेआनन्दमें मग्न होके गातीहैं और नृत्यकरतीहैं। सत्यपुरुषकी जहा परमहंसनकी मण्डलियां झाकी करतीं हैं। महर्षि मुनि जहा असंख्य खडेहै। अनन्त जहा झींनेवाजे वजरहेहै। नूर वर्षरह्याहै। तेजपुंजकी जहा उर्वशी रंभा नृत्य कररहीहै। अनेकप्रकारकी जहा सुगंध आतीहै। अमीके झिरनें झिररहेहैं, बहुतसी झीनेंस्वरोंसे वीना वजरहीहैं, अनेक तरहके रत्नोकी भूमि झलकरहीहैं। श्याम श्वेत पंचरंगी अनेकप्रकारके कमल खिलरहेहै। श्वेत भौरेनकी भनकार होरही है। नै जहा गरमीहै। नै सरदीहै। सदा वसन्तहै। वहाका सव आनन्द विलास वचनसें कह्या नहींजाता जो सद्गुरुकी कृपासें पहुँचताहै सो जानताहै। जेते संसारमैं उत्तम नामहै ते सव या स्थानपै पहुंचनेंवालोंके हैं। परमसन्त, महापुरुष, महायोगेश्वर, महापरमहंस, अवतार, परमात्मादि नाम जानों। यहांके आये फेर आवागमनमें नहींजाते। आठवें अधिकारकी सीढीका वर्णनहै। अव यहासे आगे क्याकहूं। या सत्य लोकमैं महायोगी परमसन्त आजाताहै सो आगेकों अपनी खुशीसें चलाजाता है। जो यहातक पहुंचजायगा सो अवश्य

आगेकी सेल करेगा वासैं आगापीछा कुछभी छिपानही रहता है। ये परमेश्वर सत्यस्वरूपका खास दरबार है याहीका नाम शून्यसमाधि है। यहा राज्ययोगसंन्यास सिद्धभया और अष्टागयोगके सर्वांग सिद्धभये और गीतामें योगके कई अंग कहेहैं सांख्ययोग, कर्मयोग, कर्मसंन्यासयोग, संन्यासयोग, आत्मसंयमयोग, भक्तियोगादि ये सब अंग योगकी साधनावस्थामें आजाते हैं और हेप्यारा! निजयोगका साधन तो गीतामैं छःश्लोकोंमैही कह्या है । पाच अध्यायका २७ वा श्लोक और अष्टमाध्यायमै १० श्लोकसै लेके १४ तक वर्णन किया है ॥

अथ नवाधिकारकी सीढी बणर्न।

हे प्यारा! योग अनेकजन्मोंकी सिद्धिसै सिद्ध होताहै। जे पुरुष भक्तियोगमै लगेहैं वे जन्मजन्मान्तरमै मनुष्यशरीरही पातेहैं और जन्म २मै अभ्यास करते २ परमपद पातेहै। ये जो मैंनै पाचवें अधिकारसै लेके आठवेतक कथन किया है सो अति संक्षेपकरिके तेरे बोधके निमित्त कह्याहै। विस्तारकरिके जो कह्याजाय तो कुछ महिमाका अन्त नहीं चाहै जितना विस्तारसैं कहदो, जितनां कथन करै तितनां थोडा, अपारमहिमाहै।वचनसैं कही नहींजाती। जैसै कारी ब्याहसिं पतिके मिलापका हाल पूछे सो ब्याहीहुई वचनसै कुछ कहतीहै परन्तु मिलनेसैं सब हाल मालूम होताहै।

है प्यारा! नवें अधिकारपै महायोगी परमसन्त आप सहजही चलाजाताहै जैसें मनुष्य जब सोताहै तब स्वभावस्थासें सुपुप्तिमें सहजही चलाजाताहै ऐसें जानों। या शून्यसमाधिमें जब महापुरुषकी लयता वडजातीहै उसहीको परमशून्य महाशून्य महाकाशकरिके कह्याहै । यहां चद्रमा पौषकी पूर्णमासीका और जेठका सूर्य दोनूनका अंग मिलावै ऐसी श्वेतझलक झलकतीहुई भूमिहै ये विज्ञानमय कोशहै अर्थात् विगतभयोहै ज्ञान जाको जहा आपाभी विलायगया, जहातक आपा रह्या तहांतक श्रुतिनैं वर्णन किया जहा आपा नहीं रह्या वहां पालागलके पानी होगया वो निरअक्षरहै अर्थात् क्षरअक्षर जहां दोनूं नहींहै वो सवका अन्त अलख, अरूप, सर्वातीत, अगम्य, अपार, अकह, अनाम है, ये महायोगेश्वर परमसन्तकी परमसमाधिहै । पश्चात् उत्थानदशामै महापुरुष योगी कदे अध:की सैल करताहै । कदै ऊर्द्धकी सातज्योतिनमैं विचरताहै । प्रथम ज्योति च्यारलक्ष कलानकों लियें कूर्मकी सवारीपै रक्ताम्बर ओढैं, सब विश्वकों धारणकरतीहै । दूसरी ज्योति छःलक्ष कलानको लिये मकरकी सवारीपै पीताम्बर धारण करिके सब सृष्टिकों उपजावतीहै । तीसरी ज्योति अष्टकलानकों धारण करिके गरुडकी सवारीपै श्यामाम्बर ओढे सब विश्वका पालन पोषण कर्तीहै । चौथी ज्योति बारहलक्ष कलानकों लियें सिंहकी सवारीपै श्वेताम्बरकों

धारण करिके सब विश्वकी हानिलाभ विचार करतीहै। पाचवीं ज्योति सोलहलक्ष कलानकों लियें रुद्रकी सवारीपै लीलाम्बर ओढैं सब विश्वसै काम लेतीहै। छठी ज्योति सहस्त्रलक्ष कलानको लियें हंसकी सवारीपै पंचरंग झिलमिले अम्बर ओढैं दो उग्र श्याम श्वेत कलानको लिये सब विश्वकों देखतीहै। सातवीं ज्योति अनन्त कलानकों लियें अगम्य अत्यन्त ऊंचेपर गोलोकके बीचौबीच है और हे प्यारा! परमसन्त महायोगीकी उत्थानसमाधि एक होजाती है वो सहजसमाधि है। देहमै विदेहरूप होके बालवत् निराहंकार लीला करतेंहै। अपारहै महिमा जिनकी शब्दसैं नही कहीजाती॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्र अनाममंगलसवादे पष्ठाधिकारसे नवमाधिकारकी सीढी वर्णनो नाम सप्तमप्रकाश ॥ ७ ॥

मंगल उवाच।

हे सर्वप्रकाशी! आपने परमगुह्य योगसाधनका वर्णन किया जे इन वचनोंकों मृत्युलोकमैं मनुष्य श्रद्धासें श्रवण करैंगे पढैंगे उनकों बडा परमबोध होवैंगा और सब संशय उनके निवर्त्त होजावैंगे और जे साधन करैंगे वे तुमकों प्राप्त होवैंगे।आपके मुखारविन्दसैं ये कथा सुनके अब कुछ श्रवण-

करना वाकी नहीं रह्या। हे दीनवन्धो ! जो कुछ कहने श्रवण करनेका तत्त्व था सो तो आपने सवकुछ वर्णन किया अव आपसे प्रजानिमित्त एक प्रार्थना कर्ताहू कि, ससारमें जीव आपसमै वडे क्लेश पारहेहै क्योंकि अवतार ऋषि मुनि आचार्य और पैगम्वर नवी रसूल जे होगयेहै उन्होंके शब्दजालमें लोग फस२के,आपसमें ईर्षा द्वेप वढारक्खाहै और एकका एक धर्म मजहव झूंठा वतातेहै और अपने धर्म मजहवको श्रेष्ठ कहतेहै और आपसमे कहतेहें कि, हमारे वेदशास्त्र परमेश्वर खुदाके वचनहै । तुम्हारे मनुष्योंके है और अपने धर्म मजहवकी पक्ष कर्तेहै दूसरेका अन्याय कारके नाश कर्तेहै सो मै इनको देखताहू कि ये आपसमे ईर्षाग्निमें जलरहे हैं । वर्णाश्रमी तो अपने अहकारमैं डूवरहेहे सवकों असुर समझतेहै और च्यारसम्प्रदायवाले कहतेहैं कि, हम वैष्णव सवसे वडेहे और श्रावकधर्मवाले सवकों पापी दयाहीन ठैराते है । आपको दयावान् श्रेष्ठ समझतेहैं और महोम्मदीलोग अपनें गरूरमें वडें गर्मेहै । अपने आपेको वहुत वडी शरीयतमै समझतेहैं और सवकों वेशरे काफर कहतेहै और ईसाईलोग कुछ ईर्षा कमरखतेहैं परन्तु अपने मजहवियोंसे वहुत राजी होतेहैं और मजहव वधानेंकी कोशिसमें उलझ रहेहै और एक राधास्वामीका मत चलाहे वे मनमे वडे योगी वनरहेहै और आर्यसमाजी अपना मत वधानेंमे वहुत परिश्रम कररहेहैं और नानकपथी, कवी-

रपथी, दादूपंथी, गरीबपंथी, गिरी, पुरी, भारथी, जोगी, गुसॉई, हरिनामी, सतनामी,परनामी आदि अनेक मत पंथ बनरहेहैं और ये च्यारमत मज़हबी तो मनुष्योंकों बडेही दुःख देतेहैं। एक तो चक्रान्ती छापनसैं शरीरकों दागते हैं। दूसरे जोगी जे कान चीरते हैं और यहुदी महोम्मदी जे शिश्नकी खाल काटतेहैं। हे स्वामिन्! इन सवनके गुण-दोषोंका तात्पर्य कृपाकरिके वर्णन करो जासैं श्रेष्ठपुरुष वचनभेदसैं वाकिफ होवैं ॥

अनाम उवाच।

हे सुबुद्धे! ये सब धर्म मजहब मत पथ परमेश्वरकी तरफसैं है और कोई २ असुर शैतानकी तरफसैंभी हैं। सबका मालिक एकहै ये जो वहुतोनैं वहुत तरहका उपदेश कर्म,उपासना, ज्ञानका कह्याहै जासैं अनेक होगये और वचनोंकी ऐसी ऑट लगाई है कि, कोई उत्तम संस्कारी या शब्दजालसैं पार होताहै। हे प्यारा! जिसधर्म मजहवमैं जिनोका जन्म हुवाहै वे वाहीके धर्म कर्म धारण करै। उनमैं जे श्रेष्ठ आचरण कहेहैं उनको धारण करै और मलिन छोडै और वडाई करै तो सद्गुरुकी करै,निन्दा करै तो अपनी करै और किसीकों वुरा नैंकहै। वर्णाश्रमी और च्यारसंप्रदायवालोंमैं आपसमैं वहुतसी फूटहै। केई तो वाममार्गीहै। केई दक्षमार्गीहैं। कहा केई शिवशक्तिका इष्ट रखतेहै। केई विष्णुका रखतेहै और आपसमैं विरोध रखतेहै। अनेक इष्ट

करलियेहैं जिनकी कुछ गिनती नहीं और वहुतसे मनुष्योंनै यथायोग्य आचारको छोडके वडा आचारका डिम्भ बनालियाहे। नैं किसी स्वजातीके हातकी रोटी खातेहैं। नै पॉनी पीतेहैं। जवतक जागतेहै तवतक पांनी माटीसेंही खेलाकरतेहै।मृत्तिका जलके कर्मोंसैंहीं फुरसत नहीं होती। देखो ये शरीर मल मूत्रका वनांहै, इसकों क्या शुद्धकर्तेहै याकी तो यह शुद्धताहै कि, शौंचजाके तीनच्यारवेर माटीसे हात धोना, दन्तधावन करिके स्नान करनां, धुयेहुये वस्त्र धारण करने, साफ पवित्र स्थानमै निवास करना, शरीरकी तो इतनीही शुद्धीहैं।ज्यादा शुद्ध तोअन्त करणकों करनां चाहिये जामैं खोटी वृत्तियोंके वहुतसे विकार भरेहै।जो अन्त.करण शुद्ध नैहुवा तो वाहिरकी अजोग शुद्धता किसकामकीहै। बृथा श्रम उठानाहै सो ये वडी फूटका धर्महै। यामै एकता कदाचित् नहीं होसक्ती क्योंकि इष्ट भोजन एक नहीं। हे प्यारा! आसुरी दैवी दोप्रकृति हैं सो अन्त करणमै दोनूं उदय होतीहै तिनके लक्षण वेदपुराणनमैं कहेहै॥

अथ आसुरीप्रकृति वर्णनम्।

कि दभी,अहकारी, क्रोधी, लोलुप,कपटी,अपने लालचके वास्ते दूसरेकों दुःखदैना, निर्दई, कठोर, बुरेके पक्षपाती, छलकरनेवाले, भलोंकेवैरी, अन्यायसैं धनके कमानेवाले, बिरोध ईर्षाके धारण करनेंवाले, जालसाजी, अपनें एक

पैसेके फायदेके वास्ते दूसरेके दशका नुकसान करदेना,झूंठे जालसाजियोके मित्र और श्रेष्ठकर्मकरैं तो दुनियांके दिखा-नेको करैं । व्यभिचारी याने परस्त्रीनको तकतेरहै, दूसरेकी हांसी ठट्ठा करनेंवाले, वहुत गालवजानेंवाले, बेप्रयोजनके वचन कठोर कहनेवाले,तुच्छ देवतानकों स्वार्थसै पूजनेंवाले, माता पिताकों दुःख दैनेवाले,धन स्त्रीनके गुलाम, नगुरे, धर्महीन, हिंसाके करनेंवाले, अज्ञानी, अपनें निज मतल-वकों वडे चतुर, कृतघ्नी यानें दूसरेनें अपनेसाथ नेकी करी तासै दुश्मनी करना वे कृतघ्नी कहलातेहैं । महाअवँ गुणोंकी खानि ऐसी जिनकी प्रकृतियाहै वे चाहे जा वर्ण-मैंहो असुरहैं ॥

अथ दैवीप्रकृति वर्णन ।

सत्यवक्ता, सरल,सूधे, दयावान्, सन्तोषी, कोमलदृष्टि जिनकी मधुर वचन कहनेंवाले,विवेकी, श्रद्धावान्, ईश्वरकी भक्तिके धारण करनेवाले, गुरुमुखी, श्रेष्ठकर्म गुप्ततासैं कर-नेंवाले, विचक्षण, व्यभिचाररहित, शुद्धतासैं धनके कुमाने-वाले, परउपकारी, छलहीन, धर्मात्मा, सज्जनोंकेसंगी, साधु-सन्तनके सेवक, मातापिताको सुख दैनेंहारे, भलोके मित्र, यथायोग्य सब व्योहार वर्तनेंवाले, श्रेष्ठकर्मोंको धारण करने वाले,सवके सुखदाई,जिन पुरुषोकी ऐसी प्रकृति हे वेही दै-वी प्रकृतिवालेहैं। हेप्यारा! प्रकृतिनकरिके येही मनुष्य असु-

रहैं और येही देवताहैं। अपनी वृत्तिनकों आप परखतोरहै जाका मन खोटी वृतिनमैं चलाजावे और वो विचारकरिके पिछतावै कि मोसैं कैसा अनुचित कर्म होगया वोभी दैवी प्रकृतिवाला है। उस पिछतावेके विचारसैं कोईकालमैं श्रेष्ठ होजावैगा और जे अैव करिके राजी होतेहैं,अकारण विरोध कर्तेहै,वे महाअसुरहै।हेप्यारा!मेरे भक्त तो दोनूं प्रकृतिनमैंहीं होतेहैं चाहै जोंनसी प्रकृतिमैं हो, जब मेरे सन्मुख होताहै तबही महाश्रेष्ठ होजाताहै। मेरे सन्मुख होवै जब ऐसैं जानों जैसैं तीव्राग्निमैं चाहै सूखाकाष्ठ होवै चाहै गीला होवै सब भस्म होजाताहै। मेरे सन्मुख होवै जब मैं पापीके पाप नहीं देखता और पुण्यात्माके पुण्य नहीं देखता,मेरा प्रेम देखता हूं और जे मेरे सन्मुख नहीं होतेहैं और बडे सुकृतके कर्नेवालेहै तो मेरे क्या कामकेहै वे अपने अच्छेकर्मोका फल उत्तमलोक पावैंगे और पापी अपने पापके फल भोगैंगे और मैं असुरोकों नाश कर्ताहू,देवतानको सुख देताहूं,परन्तु भक्त मोको बहुत प्यारेहैं और दैवीप्रकृतिमैं होवै तो क्या कहना है और जे वेद शास्त्र पुराणनके जाननेवाले पण्डित भक्तहैं वे मोको बहुत प्यारेहैं और जो भक्तियोगसैं ज्ञानी होतेहैं वे ज्ञानी मेरेही स्वरूप हैं। सब ज्ञानीनमैं ज्ञानी वे- हैं जिनकी आत्मा योगमार्ग होके मोमैं लयहुईहै। क्योंकि, अष्टांगयोग जो मेरे मिलनेंका मार्गहै यासैं मेरी गुप्त प्रगट महिमा सब प्रत्यक्ष होजातीहै याका नाम परमज्ञानहै।

अथ श्रावकधर्मको धारण करनेंवालोंका व्याख्यान वर्णन।

अनाम उवाच ।

हेप्यारा! श्रावक धर्म उत्तमहै। यामै निवृत्ति मार्ग प्रयोजन विशेषहै। आचार्यलोगोंनें आरम्भमात्रमै जीवहिंसा दिखाके मनुष्योंकों उपराम करायाहै परन्तु गुप्तताका विचारसै वाहिरका वैराग्यकों वन्ध करदिया यानें जो कोई वैराग्यकों धारण करै सो दिगम्बर रहै और चौडे मैदानमै परवतके ऊपर या भूमिमै रहै। तीनो कालोंकी वेदना सहै। हिम, ग्रीष्म, वर्षामैं मैदानमै वैठारहै। वृक्षकाभी आसरा नैं लेवै और जामें हिंसा होय ऐसा भोजन नैं करै सो नैं तो ऐसा होसकै नैं वैराग्यकों धारण करै। क्योंकि, ऐसी कठिन धारणामैं स्थूलशरीर नहीं रहसक्ता सो या विचारसै इनके मतमें कोईभी उपराम नहींलेता, सो ये तो आचार्योंने अच्छाकिया। अल्पवैराग्यके आड लगादी परन्तु ये दयाधर्मकों धारण नही कर्ते फकत छाणके पानी पीलेतेहैं। सुधारके अन्न खालेतेहैं सो इनकर्मनमै क्या दयाका पालन किया? जीव तो आरभमात्र कर्मोंमै मरतेहैं। चलनेसैं, वुहारीदैंनेसैं, कपडा फटकारनेंसै, अनेक कर्मोंसैं आरभमात्रमैं समझलो। जो ये जल छानतेहे वे जलके जीव तो कपडेका स्पर्श पातेहीं मरजातेंहै और जलभी जीवरूपहीहै और अन्नभी जीवरूपहीहै

हैं और अपनें मतका,फकत जानैं पानी छानके पीलिया और दिनमैं भोजन करालिया वाकी वडी पक्ष कर्तेहैं । चाहे वो झूंठ जालसाजीसैं धनसंचय कर्ताहै परन्तु ऐसेकेभी संगी होजातेहैं और ये नैं कोई रस्तेके नजदिक कूवा खुदाते हैं, नें धर्मशाला वनातह, नैं वृक्ष छायाके वास्ते लगातेहैं, जा कर्मकरनेंसैं वहुतसे जीवोकों आराम मिलै सो काम नहीं कर्ते और सव धर्मी मिलके मदिर वनातेहैं, वामै ऋषभदेवादि सिद्धोंकी प्रतिमाका सेवन कर्तेहैं और इनका सव धन मन्दिरकी आराशीमैं खरच होताहै और सुकृतमैं नहीं लगाते। जामै वहुतसे मनुष्यों और जानवरोंको आराम पहुचे सो कर्म नहीकर्ते और ज्यादा नेम धारण कर्ते हैं तो वहुतसे हरे सागपात छोडदेतेहैं और तप इनका यहीहै कि,पांच च्यारदिन भादवाका महिनामै लघन कर्ते हैं सोभी वैद्यकशास्त्रके विचारसै वर्षाकालमै लंघन करनेंसैं शरीरकी शुद्धि होजातीहै। कुछ जीवात्माके कल्याणका तप नहीं ऐसैं वहुतसे जीव कई महिनातक नें खातेहैं, नैं पीतेहैं, विशेष शीतकालमैं ततैयादि जानवर दो तीन महिनोंतक इकठोरे होके छिपे वैठे रहतेहैं सो उनके व्रत इनके व्रतनसैं वहुत अधिक हैं। हे प्यारा ! भूखा मरके अपनी जीवात्माकों दु.ख देना इस कर्म करनेंसैं आत्मघातका पाप लगताहै । जव हम और जीवोंकी दया करिके उनके दु.ख दूर करतेहैं और सुख देतेहैं तो अपनें जीवोंको दु ख दैंना ये तो महामूर्खताहै।

श्रावकमतमै वारह व्रत कहेहै। सत्यता, अचौर्यता, कोमलता, क्षमा, दया, निर्वैरता, शीलतादि बारह व्रतहैं। हां ये व्रत करनेंके योग्य है। जिनसैं अपनी आत्माका कल्याण होवै और सब जीवोंकों सुखदाई सो तो करैं नहीं और देखादेखी भूखे मरतेहै और दन्तधावन कुल्लाभी नहीं करैं। जिनके मुखमै दुर्गंध आने लगनीहै ऐसे व्रतनका दुःख पानांही फलहै। हे प्यारा जो आचार्यलोगोंका तात्पर्य था सो इनकी निगाहमै नहीं आया। उनका ये तात्पर्य था कि, आरभ मात्रमैं जीवहिंसा दिखाके इनको सब कर्मोंसैं वैराग्य उपजाया है असलमैं ये निवृत्तिमार्ग है सो मुनिऋषियोंसेही सधसक्ताहै। प्रवृत्तिमैं रहके केवल निवृत्तिका मार्ग नहीं सधसक्ता। देखो जो या धर्मकों राजालोग धारण करैं और कहैं कि, हम राज्य करैंरहैं तो ये वात नहीं वणसक्ती, राजानको जे गुनहगारहै उनकों सजा दैंनी होतीहे, किसीका हात काटतेहै, किसीको पिटवातेहैं, किसीकों जानसै मारतेहैं और कही राज्यमै जमीनके झगडेमै उपद्रव खडा होजावै तो लडाईमै हजारो पशु, मनुष्य मारेजातेहै सो क्षत्रीलोंगोकी इस धर्ममैं गुजर नहीं होती। विना पशूनकी शिकार खेलै इनमै वीरता नहीं रहती इसीहेतुसै वेदोंमैं किसी महात्माओंने प्रवृत्तिकर्म यज्ञनका वर्णन कियाहै, निवृत्तिमार्गमै ये मना है, सो विचारके देखो श्रावकमार्ग अतिश्रेष्ठ निवृत्तिका है।

सर्वारंभ तजके प्राणीमात्रसे निर्वैर होके शील समता,सन्तोष सत्यता,दया धारण करिके एकान्तमें निवास करै और अरिहंत सिद्धसै उपदेशलेवो अरिहन्त सद्गुरुसैं वडा कोई और गुरू नहीं है ॥

प्रश्न ॥ हेसर्वदर्शी! आरिहन्त किसकों कहतेहैं । हेप्यारा! आदिपुराणमै वर्णन कियाहै कि, मोक्षमार्गके पांच अधिकार हैं । साधु, उपाध्यायें, आचार्य,अरिहन्त, सिद्ध. साधु तो वे कहलातेहैं जे अपने स्वरूप खोजनेंके निमित्त गृहस्थाश्रमंमें रहके नेम धारण कर्तेहै । और जे नेमसहित शास्त्रोंके तात्पर्योंमैं विचक्षण होतेहै वे उपाध्याय याने पढानेवाले पण्डित कहलातेहैं । पश्चात् ऊंचे अधिकारीका सग करनां,अपनें अन्त.करणकी वृत्तिया जो मलिनहैं उनका त्याग करनां, श्रेष्ठवृत्तिनको धारण करनां, सव प्राणीमात्रसैं निर्वैर रहनां, कोमलदृष्टिसै सवसे मधुर वचन वोलना, मन, वचन,काय तीनोंसे पवित्र रहना और पर्मार्थके हेतु नींचले अधिकारीनकों उपदेश देना, क्षमा, दया, शील, संतोपादि शुभकर्मों कों धारण करना, उत्तम पुरुप जो आरिहन्तहैं उनके उपदेश का साधन करना उनको आचार्य कहतेहैं । या स्थानतक प्रवृत्तिमार्गमें रहके निवृत्तिका साधन करना, यहासे आगे तरुणावस्थाका अन्तमें सवका सग छोडके अरिहन्त जो सद्गुरुहै उनकी शरणागति जाना ये आचार्यका धर्म है । अरिहन्त वाका नाम है जे अरि कहियें वैरीनका हतनकरे सो वैरी

कौंनहैं जे जीवात्माकों भवसागरमैं डुबातेहैं और आत्मज्ञान सैं विमुख करतेहै अर्थात् काम, क्रोध,लोभ,मोह,दशों इन्द्रियां च्यार अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहकारादिकों हतन करना सोई अरिहन्त सच्चे सद्गुरु हैं, ऐसे अरिहन्तदेव सब वृत्तिनका संयम करिके, सब कषाय त्यागके आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधिमैं तत्पर होतेहैं सो प्राणायाम ध्यानसैं अनहद खुलजाताहै। सो लिखाहै कि अरिहन्तका जब जन्म होताहै तब आकाशमैं दुन्दुभी बजतेहैं और अरिहन्तकाही नाम चौवीस तीर्थंकरहै । आदिनाथ जो ऋषिभदेवहैं । उनसे आदिलेके नेमनाथ,पद्मनाथ, शीतलनाथ,मल्लिनाथ पारसनाथादि २४ नामहै सो २४ तत्वनकों जीतके अपनें निजस्वरूपमें लय होतेहैं । निर्वाणपदमैं स्थिरहुये सोई अरिहन्त सगुण अवतार वीतराग परमसन्त सद्गुरु है सो दिगम्बर होके तीनें। ऋतुनकी तापकों मैंदानमै स्थिर होके सहतेहै और ढिगंवर रहतेहै । तीनो ऋतुनकी ताप कैसें सहतेहैं सो सुणों। हे प्यारा ! ये आत्मा तीन शरीर करिके प्रकाशितहै, स्थूल, सूक्ष्म,कारण सो स्थूलको नंगा करना तो नकली ढिगंबरता है । स्थूल करिके तो बहुतसे पशू दिगम्बर रहतेहैं । देखो मृग दिगंबर रहके तीनो ऋतुनकी तापकों चौडेमैदानमै तृण खाके सहतेहैं सो ये दिगम्बरी, तो इनकी मूर्खता और पशूपनाहे । हे प्यारा!आरिहन्तासिद्ध तो सूक्ष्मशरीर करिके दिग

म्बर होतेहैं और उनका आत्मिकस्वरूपहै और आत्मिकही साधन है ये शारीरिक वृतियोमें नहीं रहतेहैं सो उनका जो सूक्ष्मस्वरूप है वासे दिगम्बर होतेहै याने शारीरिक जे दशों इन्द्रियोकी वृत्तिहैं सो पहिलैं सूक्ष्मशरीरनै धारण कर राखी हीं वेही सूक्ष्म शरीरके वस्त्र थे, उनको त्यागदिये और मेरुगिरिके शिखरपर मैदानमे जावैठे। मेरुगिरि क्या यह जो स्थूल शरीररूप ब्रह्माण्डहै ताका मेरु जो पीठकाऽस्थि गुदासे लेके ग्रीवातक वाके ऊपर याने प्राणायाम ध्यान के वलसे दशवा द्वार जो ब्रह्मरंध्र है ताके ऊपर जो मैदान है जामैं जावैठे। और तीनूं ऋतुनकी तापको सहन करतेहैं। तीनऋतु जो तीनगुण रज,तम,सत,अथवा तीन तत्व वायु• अग्नि, जल, वायु,रजोगुण रूपहै अग्नि तमोगुण रूपहै, जल सतोगुणरूपहै,इनके वेगनको सहतेहै यानें आकाशवत् होके अपना वास्तवस्वरूप जो सत्यहै तामै धारणा,ध्यान,समाधि करिके स्थितहै उनहीका नाम अरिहन्त है अरिहंतमें ओर सिद्धमें कुछ भेद नहींहै । जैसैं मनुष्य जाग्रतावस्थासे सुषुप्तिकों प्राप्त होताहै इतना भेदहै। उत्थानदशासें जाग्रत् स्वरूप अरिहन्तहै। समाधिदशा जो सुषुप्ति तामें सिद्ध हैं । सिद्धशिखर शून्य समाधीमें रहते हैं । मोक्षशिलापै स्थिर हैं और जव ये ज्यादा समाधिमें स्थिर होजातेहै। जो अगम्य, अपार, सवका अन्त, अकह, अनाममैं लय होतेहैं वे परमसिद्धहे । अव इस पचमकालमें नाममात्रके

जैनीं बनरहेहैं । ये उत्तम धर्म निवृत्तिका हालमें वैश्यलोगोंने ग्रहण कियाहै। सो इनके तो अन्त:करण मलीनहै और विना अन्त:करण शुद्धहुये सब नेम धर्म निष्फलहैं । इनमें केई तो हलवाईपना कर्तेहै। केई कपडे-नका व्योहार कर्तेहैं । केई लेनदेन आसामीनका कर्तेहै। केई साहूकारी कोठी चलातेहै। व्योहारी मनुष्योका मलिन अन्तःकरण होताहै। हे प्यारा! कदाचित् शुद्ध नही होता। क्योंकि अपना मतलब सिद्ध करनेको कपट छलके बचन बोलने पडतेहै । ये तो धनके गुलाम, भोगवासनानमै लोलुपहै और ये जो भगवानूकी मूर्तिकी सेवा कर्ते हैं तो उनके मन्दिरमें काचके कामकी मीनाकारी, झाड, गिलास, गालीचे, बनात, पारचेकी बिछायत कर्तेहे । गोटे किनारीनकी भडक देखातेहै। महाप्रपंच रजोगुणका स्थान करदेतेहै।जे दर्शनकरनेको जातेहै ते काचके चित्राम झाड गिलासादिको देखतेहैं। ठाकुरजीमें तो मनही नही लगता। हे प्यारा! उन मुनिलोगोकी मूर्तिकेभी अपनी मायाका विकार लगादिया याने वैराग्यमे रागप्रवेश करदिया। चाहिये तो ऐसाथा कि जामैं मुनिराज प्रसन्न होवै सो काम करनां इनकों वाजिब था सो अरिहन्त महाराज तो ज्ञान, वैराग्य, संयम, ध्यानसें राजी होतेहै और ससारके पदार्थोंसै उनकी अरुचिहै सो जासै उनकी अरुचिहै सोई ये करतेहैं, अपनें

नेत्रोंका विषय भोगतेहै और जासै वे राजी होतेहैं सो नहीं कर्ते और दूसरे धर्मके मनुष्योंकों पापी धर्महीन समझके निरादरतासै झाकते हैं। ये पंचमकालके जैनी इतनाही जैनधर्म समझतेहैं कि छानके पानी पीलिया, रात्रिमैं भोजन नही किया और कुछ मन्दिरकी आराशीमें खरच करदिया सो जैनधर्मतो अति उत्तम निवृत्तिमार्गहै। सो कोई विरले उत्तम संस्कारीसैं सधियाताहै और हे प्यारा! वडा अवगुण तो या धर्मके धारण करनेंवालोंमैं ये है कि कोई सच्चामहात्मा योगसिद्धका खोज वूझ नहीकर्ते। नें किसी साधु सन्तौंसै मिलतेहैं। नैं सेवा कर्तेहै। जे या संसारमै अरिहन्तस्वरूपहै उनका खोज नहींकर्ते। ये तो जो नगा नकली दिगवर रहताहै ताको पूजतेहै और वाहीकों साधु महात्मा समझतेहै और सवनकों पाखडी मानतेहैं और जो मैंनै पूर्व अरिहन्तका वर्णन कियाहै उनको ये नहीं खोजते जो ये खोजैं तो वे इनही भेषोंमै मिलजातेहैं। इसही सववसै इनके मतमै कोई आजतक योगसिद्ध महात्मा प्रगट नही हुवा और ये मत पुरानाहै। और जिस महात्मानै वेद प्रगट करिके वेदोंका धर्म चलाया सो वेदोंमै प्रवृत्ति और निवृत्ति दो मार्ग वर्णन किये। और श्रावक मतका आचार्यने वेदधर्मौसैं वहुत पीछे चारुवाक प्रगट होके प्राकृत संस्कृतसें केवल निवृत्तिमार्ग वर्णन कियाहै और प्रवृत्तिमार्ग जो है ताका निषेध कियाहै परन्तु या मतके जे

धारण करनेवाले हुये उन्होंनें आदिकवि बाल्मीक और वेदव्यासके पुरानोका अर्थ भाव वदल २ के वहुतसे ग्रंथ वनालिये। स्वर्ग और इन्द्र वहुतसे वर्णन किये। वहुत वडा प्रपञ्चशब्दका जाल रचदिया। जितने बाल्मीक वेदव्यासके कथनमैं अवतार राजादि वर्णन कियेहै उनको जैनमतके कवियोनैं जैनी वनाके वर्णन किये और छोटे वडे कवियोनैं जैनधर्मके वहुत शास्त्र रचलिये उन्हेंमै आत्मज्ञानका और निजस्वरूपकी प्राप्तिका कथन नहींहै। मतमतान्तरकी खैचातानीके कथन हैं। जे प्राचीन ग्रंथहै उनमै तो योगाग मार्गका कथनहै सो इनके मतमैं आजतक कोई योगसिद्ध महापुरुष प्रगट नहीहुवा जो ये सच्चे योगी महात्मानकों खोजैं और उनकी सेवाकरिके अपने स्वरूपकी प्राप्तिके अर्थ उपदेश लेके योगका अभ्यास करैं जव कल्याण होवै। वक्तका सच्चा अरिहन्त विनामिले आत्मज्ञान और निजस्वरूपकी प्राप्ती नहींहोती और विना आत्मज्ञान सव इनके नेम धर्म भाररूपहैं। हां शुभकर्मनका फल तो मिलजावैगा परन्तु सर्वकार्य सिद्ध जव होवैगे तव सच्चे सद्गुरु अरिहन्तस्वरूप मिलैंगे और सव दयानमैं मनुष्यकी दया करना सो प्रधानहै और महात्मापुरुषनकी सेवा करना उसका तो क्याकहनाहै। उनके तो सर्वकार्य सिद्ध होवैंगे।

प्रश्न ॥ हे भ्रमनाशक ! व्याकरण वहुतसे हैं इनका क्या भेदहै ? ॥

उत्तर ॥ हेप्यारा ये महापुरुषोंकी शब्दरचनाहै,ये ब्रह्माण्ड अनादिहै यासै पहिले जानै कितनें व्याकरण रचेगयेहै और राजानके राज्य नष्ट होनेंसैं वेभी नष्ट होगयेहे । राज्यसै पचास साठ वर्षतक उपद्रव रहनेंसे वर्तमानकी विद्या नष्ट होजातीहे । क्योंकि उपद्रवसै नैं तो किसीकी स्थिति रहे, नै विद्याका प्रचार रहै और उनके धारण करनेवालेभी नष्ट होजातेहैं और पिछली जो छोटी सन्तान वडी होतीहै वो विनाबोध ग्रंथोंका आदर नही देते तब वो विद्या लोप होजातीहे । पीछे समयपाके राज्यका वन्दोवस्त ठीक होजाताहै । जब महापुरुष प्रगट होतेही रहते हैं वे नये व्याकरण, कोश, काव्य रचके जगत्के हेतु कर्म उपासना परमेश्वरकी प्राप्तिका योगमार्ग वर्णन करतेहै । जब विद्याका औजू नवीन प्रचार प्रगट होताहे । ऐसेंही वेदोंके व्याकरण कोशादिसे पहिले औरभी व्याकरण थे, परन्तु वे कुसमय पाके नष्ट होतेरहे प्रगटतामें वेदोकाही रहगया, अब हालमै उनकाभी प्रचार वहुत कम होगया । वेदोके व्याकरण कोशादिकको कोई नही पटते कोई दो च्यार पढेहे तो क्या ज्यादा प्रचार नहींरह्या । क्योंकि वेदधर्मोके वहुतकालपीछे आदिकवि वाल्मीकमुनि प्रगट भये तब उनोनें अपनी काव्य प्रगटकरी याने नये संस्कृत वचनरूपी रचनाके अर्थ व्याकरण, कोश, काव्य, अलंकार, अनुप्रास छन्दनकी चाल बनाके उनमें जगत्के हेतु मरजादपूर्वक सब धर्म कर्म उपासना परमेश्वरके मिलनेके मार्ग ज्ञानसिद्धान्तोके ग्रथ

प्रगटकिये। वे कुछ वेदधर्मसै कम नहींहै। मुनिनैं वेदोंके तत्त्वभी अपने ग्रथोंमै भरदिये और अपनी निज अनुभव वहुतसी कही तब वाल्मीकके ग्रंथोका प्रचार पृथ्वीपर वहुत फैलगया, वेदोमैं अवतारनके कथनका तो जिकरभी नहीं और देवता ऋषियोंके नाम कम कथन कियेहे। वेदोसे ज्यादा वाल्मीकिनै अवतार और देवता ऋषियोंके नाम कथन कियेहै। ताउपरान्त वेदव्यासमुनि प्रगटभये।उन्होंनैं स्मृति शास्त्र पुराणादि वहुतसे ग्रंथ रचे और अपनें ग्रंथोमैं चौवीस अवतार वहुतसे ऋषि मुनि और अनेक प्रकारके देवतानके नाम वाल्मीकिमुनिसै वहुत ज्यादा कथनकिया और इनके वनायेहुये ग्रंथोका पृथ्वीमै प्रचार वहुत फैलगया। वेदोकी केवल महिमाही रहगई। कोई २ पढतेहै तो अपनें स्वार्थके हेतु कुछ अंग मूलमात्रही पढते हे अर्थ कुछ नही जानते। पश्चात् या आर्यदेशमैं यवनोका राज्य हुवा तव यवनोके व्याकरण कोशादि कितावोंकी कदर ज्यादा हुई। जो उनकों पढे तिन मनुष्योंका राजाके आदर ज्यादा हुवा, ता उपरान्त अव हालमै अंग्रेजलोगोका यादेशमैं राज्य हुवा तवसैं अंग्रेजी व्याकरण कोशादि कितावोंका आदर ज्यादा होताहै और अंग्रेजी पढेहुये मनुष्यों कों वडे २ अधिकार मिलतेहैं। यवनोके व्याकरणकी कितावोकी कमकदर होगई और संस्कृत व्याकरणका तो वहुतही कम आदर होगया और या पृथ्वीमै वहुतसी विलायतहै, उन्होंमैं महापुरुषोंनैं

भिन्न २ व्याकरणोंसे अनेक कर्म उपासनां ज्ञानोका वर्णन कियाहै । हे प्यारा ! पृथ्वीपर अनेक व्याकरण प्रगट होहोके नष्ट होगये और अनेक अब है, और आगे महापुरुषोके द्वारा प्रगट होतेहीरहैगे ॥

अथ श्वेताम्बरी और ढूंडियानका व्याख्यान वर्णन ।

हे प्यारा ! श्रावकमतकी एकशाखा श्वेताम्बरीनाम करके प्रगटहै वे अरिहन्तकी मूर्तिकों फकत जेवर पहिरातेहैं सोभी अनुचित करतेहैं अरिहन्तकी प्रतिमाको जेवरसे क्या प्रयोजनहै त्यागमैं राग नही सभव,वे तो संसारसे उदास रहतेहै। ये वा मूर्तिकों वस्त्ररहित जेवर पहिराके ओसवाल,पोलवाल, नाम करिके वैश्यलोग सेवा करतेहैं । इनमैंसेंही जती नाम धरके वैराग्यमतमै रहतेहे, सो इन्होका कुछ वैराग्य नहीं । वडे जत्र,मत्र, झूठे प्रपच करतेहै और त्यागी नाम धराके धनका सचय करतेहै । सो इनका क्या हाल कहू ये तो धनके दासहै और धनकी लालसा सब अेव बुराईयोकी जडहै । वडे छिपेहुये अनुचितकर्म करतेह और जे वैराग्यको धारण करके धन रखतेहे उनका कुछभी त्याग वैराग्य नहीं है और हे प्यारा ! श्रावकमतमेंहीं एक ढूडियामत चलाहै सो नाम तो ढूडिया परन्तु कुछ सत्यताको नहीं टूडते ऐसे अनुचित कर्म करतेहैं जिनका कुछ प्रमाण नहीं। अल्पाधि-

कारी मनुष्योकी कहानी कहके सेवकोंको कथा सुनातेहे। श्रावकधर्मके शास्त्र पुराणभी नही पढते। मन्दबुद्धि मनुष्योंके कहेहुये वचन पढतेहैं सुनातेहैं और मुखके कपडा वाधके पुन्छी रखतेहे, क्योंकि मुखकी हवासैं जीव मरतेहैं तो विचार करना चाहिये नासिकाकी हवासैं क्या नही मरतेहोगे और जो बोलनेसे जीव मरतेहैं तो शरीरके हलने चलनें का क्या ठिकानां है। इनके मतका तात्पर्य देखते तो मनुष्योंका जीना है सोई हत्याका कारणहै,क्योकि जव-तक जीवेंगे तवतक वोलना डोलना तो क्या इनके सिवाय सवकाम करनें होतेहे तो ऐसी भारी हत्यासे कैसें उद्धार होसक्ताहै इसवास्ते आत्मघात करिके मरना अच्छाहै, सो एतो ऐसाही करतेहै परन्तु वहुत काल जीके वहुत भारी हत्या कुमाके कुछ थोडीसी जिन्दगी रहै जव अपना मरण नजदीक समझके कोई २ अन्न, जल छोड देताहै तव सूक२ के क्लेश पाके अहकारके वलसैं प्राण त्यागतेहै और वहुतसे तरुणावस्थामें वैराग्य लेके घरसै निकलजातेहै और मलीन जल धोवनका, हातनके मेलका, जिसमै वहुतसी चीटी मक्खी मरजातीहै वाको नितारके पीतेहै,परन्तु रोटी अच्छी उमदा खातेहै.उनके सेवक अपने खानेमैसे या कोई पकवांनमैसें दे देतेहे और शीतकालमै एक वस्त्रसे कोई मकान ग्रामके भीतरहो वामें घास विछाके लुके रहतेहै,परन्तु एकान्त स्थानमै नहीं रहते ग्रामके भींतर ही रहतेहैं क्योंकि

धोवनका जल ग्राममेंही मिलताहै और ऊमरभर स्नान नहीं करते क्योंकि ये मत कमजलभूमि मारवाडमेंसूं प्रगट हुवाहै, कहतेहै कि ज्यादा पानी खरच नहीं करना पाप लगताहै सो विचारकरो कि पानीके खरच करनेमें क्या पापहै? पृथ्वीमेंसेंहीं आताहै, पृथ्वीमहीं गिरताहै, तुम निर्मल होजाते हो, ये नफाहै और एक वस्त्र धारण करतेहैं फिर उसकों धोतेनहीं, पसीनें शरीरके मैलकी वढवोसैं वो वस्त्र भरजाताहै और नाकका मैल और मुखके खकारको जमीनमें नहीडालते, ऐसा विचार करिके कि, इसमें जीव पडजायँगे अथवा कोई जीव इसके चेपमें आके मरजायगा, ऐसा विचार करिके अपने ओडनेके कपडेमेंहीं मललेतेहै, परन्तु मूतनेसें तो जीव मरतेहीहैं यामें चूकगये और जव ये फरागत जातेंह तव मलकों लकडीसें वखेरदेतेहैं परन्तु ये नहीं सोचते कि लकडीके छेडनेसैं यामें जे जीवहै सो मरजायँगे और ये जो तुमनें पेट मेंसूं मल वाहर पटकदिया इसमें वहुतसे जीव पैदा होकर मरजायँगे वा पापके भागी तुम होवोगे और जो तुम अन्न; जल खाते पीते हो वासें पेटमें और शरीरमें वहुतसे जीव पैदा होके मरते है वो पाप तुमको लगेगा, जो तुम अन्न, जल नहीं खावो पीवो तो या पापसें वचजावोगे और जव इनके शिरपर केश वढजातेंह तव नोच २ के उपाड गेरते है। हे प्यारा! ये ऐसा विचार नहींकरनें कि, हम या मनु-

ष्यशरीरको पाके कैसी कुचालमैं लगगये, तमाम ऊमर कष्ट पातेहैं और हत्याही हत्याकरना भासताहे, आत्मज्ञानका कुछ लाभ नहीहोता और या कष्टके भोगनेसैं ये तामसी होजातेहैं। वहुत जल्दी इनकों क्रोध आताहे और सेवकोको येही उपदेश देतेहै कि, कहीं कुवा वावडी मत खुदावो, ने कही धर्मशाला वनावो, ने कहीं जलकी प्याऊ लगावो, इन कर्मोंसैं वहुतसे जीव मरतेहे और पुन्छीसे जमीन झाडके, मुखको वाधके, नोकार मंत्रका जप करो और विचारी स्त्रीनकोभी येही उपदेश देतेहे, वेभी मुख वाधके नोकार मन्त्र जपतीहे और कोई २ वैराग्य लेलेतीहै, नोकार मन्त्रका ये तात्पर्यहे कि यामैं अरिहन्तादि सिद्धांको प्रणाम है सो केवल वचनसै उनके नामको प्रणाम करनेंसैं अल्प लाभहे, उनको खोज करिके प्रत्यक्षमैं पाके प्रणाम सेवा करना योग्यहे जासे इस जीवका कल्याण होवै और ये विचार नहीं करते कि और जीवनकों सतानेसे पाप लगताहे तो अपना जो जीवकों हम अनेक अज्ञानताके कर्मनसै दुःख देतेहैं इसका कितना वडाभारी पाप होवैगा। स्थूलको दुःखदेनेसे क्या सूक्ष्मशरीर शुद्ध होताहे। हे प्यारा! स्थूलशरीर तो सूक्ष्मशरीरका घरहे। स्थूल जो कर्म करताहे सो तो सूक्ष्मकी प्रेरणासे करताहे, स्थूल विचारेने क्या अपराध किया, जैसा सूक्ष्म कर्म करवाताहे ऐसा करताहे, सो

सूक्ष्मकों सब पापनसै बचाना चाहिये, यासै पाप नै होवें। स्थूल सै तो स्थूल चींटीआदि बहुतसे जीव नष्ट होतेहैं ऐसा सृष्टिका नियम नियत अनादिकालसैं है और यह जीव तो चिरंजीवहै ये तो मरताहीनही। सृष्टिका प्रवाहही ऐसाहै कि, सृष्टिसै सृष्टि उपजतीहै, पालन होतीहै और नष्ट होतीहै। यामै कोंनको पाप लगा, उसको लगताहै जो इच्छाकरिके किसीकों अहभावसै दुःख देतेहै वे पापके भागी होतेहै और जे स्वत सिद्ध जो स्थूलके व्योहारहैं डोलना, बैठना, बोलना, खाना, पीना सो तो याके पालनेंके निमित्तहै उनकों अज्ञानताके हठसे यथायोग्य नै करै तो यह जो जीव या शरीरमै वास करताहै ताका सबसै बडाभारी पाप लगताहै क्योकि सबसै भारी हत्या मनुष्योंके जीवकों दु.खदैनाहै। इसी हेतुसे ऐसे पापीको राजालोग यहाई सजा देतेहैं। हे प्यारा! जीवकी दोसज्ञाहे जडसंज्ञा ओर चैतन्यसज्ञा, जड-संज्ञा जीवोके दो भेद हें एक तो बहुत किसमके अन्नादि बीज, दूसरी बीजही जलका सजोग पाके हरे होके बढतेंहे, फूलतेंहे, कुमलातेंहे और बीजोंमै चैतन्यजीवभी प्रगट होतेहे और चैतन्यकी दो सज्ञाहे, चैतन्यसे जडसज्ञाभी होजातीहे, जैसे मेडक, गिजाई, गिडोलाती आदि अनेकजीव चैतन्यसै जडसज्ञा होजातेंहे, पीछे समय पाके ओजू चैतन्य होतेंहे और हे प्यारा! पशू पक्षी आदि सब देहनमे मनुष्य-देह श्रेष्ठहै। याका जीवको दुःखदैना क्या अपना क्या

विरानां सो सवसै अधिक पापहै और याकी रक्षाकरना सो सवठ्यानमे प्रधान दयाहै । अहंकार करिके अज्ञानताके हठसै अजोग कर्म करके दु.खदैना नहीं चाहिये। ये नरदेह सवसै श्रेष्ठहै जैसै स्थूलशरीरमेंसै कोई केश उपाडले, अथवा अंगुली काटले, तथा हात,पॉव, काटदे सो केश उपाडनेका पाप कमहै,वासें ज्यादा पाप अगुली काटनेका है,यासै ज्यादा हात पॉवनकाहै परन्तु सवसैं ज्यादा पाप नेत्र फोडनेका है, सो जैसै शरीरमे नेत्र श्रेष्ठअंगहै ऐसै सवशरीरोंमे मनुष्य शरीर श्रेष्ठहै याका जीवको अज्ञानताका कर्मोसै हठ करिके जे खाने पीनं, वस्त्र स्नानादिका दु ख देतेहैं वे ज्यादा पापी हैं।याको दुःख मतदेवो,स्थूलको दुःख देना ये वडी अज्ञानता है।याके भीतर जो सूक्ष्मशरीरहै ताको पापनसें वचावो अ-र्थात् स्थूल सवन्धी कर्मोंकी लोलुपतासै वचाके आत्मज्ञानका साधन करो, ये जो सूक्ष्म मन, वुद्धिरूपी शरीरहै यासै स्थूलके युक्त कर्म करवाके याने खाना, पीना, शाच, स्नान, पवित्रस्थान, स्वच्छवस्त्रादिसै पोलन पोषण करना और सव कर्म यथायोग्य वरतना । अयुक्त जो ज्यादा विषय चाहताहै वा पापसै वचावो और या शरीरको आवश्यक कर्मताकरनाहीं योग्यहै, उनकों नै करे तो पापका भागी होताहै । क्योंकि जीवात्मा दु.ख पाताहै और आवश्य कर्म तो इन दुंडियोको भी करने पडतेहै, परन्तु उन कर्मो-

कों ये मलीनतासे करतेहे, मलीन पानी पीतेहैं, जो इनका कथन पूर्व कहआये वे सब कर्म मलीनतासैं और क्लेशतासैं करतेहैं सो इन कर्मोंका येही फलहै कि दु:ख पातेहैं, केवल झूंठा अहंकार करिके आपेको अहिंसक मानतेहैं,वडे गरूरसैं रहतेहैं और मनुष्योंको पापी समझतेहै, परन्तु ये निज जीवको दुःख देनेवाले आत्मघाती वहुत वडे पापी है। हे प्यारा! जो श्वेताम्बर अरिहन्तनें उपदेश कह्याहै वाका तात्पर्यको भूलके स्थूलको दुःख देनेके कर्मोंमै लगरहेहैं सो ये श्वेताम्बरी नहींहैं जो या शरीर नाशवानपर श्वेत वस्त्र पहिरतेहैं, ये वस्त्र तो चाहे श्वेत पहिरो, चाहे पीतपहिरो, ये तो शरीर और वस्त्र दोनू नाशवान् मलीनहै। अरिहन्त महावीर तो मलिन वृत्तियोंकों हतन करिके विशद स्वच्छ शान्त जो श्वेताम्बर निर्वाणपद है ताकों धारण करतेहै, तासे दिगम्बरी और श्वेताम्बरी है। ऐसे जे अरिहन्त श्वेताम्बरी महाराजहैं उन्होनें ऐसा उपदेश आदिपुराणादिकमें दियाहै कि ये जों शरीर स्थूल नाशवान् मरणस्थानहै याके नाशवान् भोग कर्मनके सग जीव जाताहै सोई जीवका मरना है और आत्मज्ञानकों जीव धारण करताहै येही जीवका जीवनाहै। सो हे प्यारा! या पुद्गलके सग अजुक्त कर्मनमें जाना यही जीव मारनेका पाप हो ताहै। क्योंकि इसके सग लोलुपतासें अजुक्त कर्मनमें जाना यही निज

जीवका मारनाहै, सो निज जीवकौ बचावै यानें लोलुपता-सैं याके संगमैं नैं जावै और आत्मज्ञानका साधन करै यही निज जीवका बचानाहै। सो हे प्यारा! अष्टागयोगका साधन करै अर्थात् यम १, नियम २,आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८,यम नियम कहा ज्यादा विषयनके कर्मनमें नै उरझै, शरीरकी जरूरतके माफिक बरतै, इतना कि जामें शरीरकौ क्लेश नै होवै यही यम नियम है और यम इनकाभी नामहै शौच १, ब्रह्मचर्य २, अहि सा ३, आर्जवता ४,अचौर्यता ५,ये पाचहे और नियम येहैं सत्य१,धैर्य २, जप३, तप ४, सन्तोष ५,ये पाचहै। इनकौ धारणकर षट् अगनका अभ्यास करिकै जीवात्माको परमात्मामें लयकरै सो ये तीन शरीरहै। स्थूल१,सूक्ष्म २, कारण ३, सो आसन प्रत्याहारके साधनसै स्थूलकी वृत्तिनको तो सूक्ष्ममें लय करै और सूक्ष्मकौ प्राणायाम धारणा ध्यान केवलसै कारणमै लय करै, जैसै जाग्रत् १,स्वप्न २,सुषुप्ति ३,तीन अवस्था है। जाग्रत् तो स्थूलसम्बन्धी, स्वप्न सूक्ष्म सम्बन्धी, सुषुप्ति कारण संबन्धी है, सो तीनो अवस्था तुरीयास्वरूप जो अरिहन्तकी समाधिहै तामें लय होजातीहै अर्थात् जाग्रतमें प्राणायाम धारणा ध्यानसै सुषुप्ति होना सोई तुरीया समाधिहै। वहा अनहद बाजे बजतेहै और अनन्त सिद्धी, अनन्त दर्शन,अनन्त विलास, मोक्षसिलास्वरूप,सुमेरु जो

पीठका अस्थिहे ताके ऊपर दशवां द्वारके भीतर अरिहन्त-का स्थान है, वहासे परे निर्बीज समाधि सिद्धनका स्थान जाकों स्थानभी नहीं कह्याजाय ऐसा अकह, अपार, अवाच्य, अरूप, अनाम है ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममगलसवादे आसुरीदैवीप्रकृतिश्रावकधर्मदिगम्बरीश्वेताम्बरीव्याख्यानवर्णनो नामाष्टमप्रकाश. ॥ ८ ॥

अनाम उवाच ।

हे प्यारा ! ये च्यार सम्प्रदायवाले आचार्योंनेभी दो अधिकारकी सीढीनका ज्यादा उपदेश दियाहे और लोहेकी छापनको अग्निमें लाल करिके वहुतसे मनुष्यनके स्थूल शरीरकों वृथा दागतेह वे महीनान क्लेशका नरक भोगतेहैं और एक विष्णुकी उपासनामें च्यार भेद करदिये और ये च्यारूंही परमेश्वरसे अपना दासभाव रखतेह । परन्तु दासतो घरमेंसे निकालभी दियाजाताहे पुत्र नहीं निकालाजाता । सो तुम तो ऐसाभाव रक्खो कि हम परमेश्वरके पुत्रहें, क्योंकि वो सवका पिताहे, प्रेम वधानेके वास्ते परस्पर एकरूा एक सेवक वनों और जव सम्प्रदाई आचार्योंका उपदेस मूर्तिपूजाका जगत्में वहुत वढगया तव योगमार्गका उपदेश नहींरह्या । जव परमेश्वरके सगुण

अवतारोनें अवधूतसञ्ज्ञामें प्रगट होके योगमार्गका उपदेश भाषावाणीसै प्रगटकिया कवीर,नानक, दादू, रजव, सुन्दरदास, गरीवदास, चरणदास, लालदास, रैदास, सत्यनामी,परनामी आदि इन्होंने अपने वचनविलासमें प्रथम अधिकारकी सीढीकों न्यून दिखाके योगमार्गकी महिमा करी और उन्होंनें नहीचाहा कि, हमारा कोई जगत्में पंथ चलै, वल्कि भेषकेभी वचनसे ताडना दीहे, क्योंकि ये तो कारक अवतार नहीथे अवधूतथे, निरइच्छा निर्वाणथे, परन्तु इनके पश्चात् और लोग इनके नामके ऊपर भेषधारी होगये और आपसमें कहनेंलगे कि,हम फलानेंपथीहै। सो ऐसेही सबका भेष चलगया और गृहस्थीलोग इनकी सेवा करनेंलगे उन महापुरुषोंनें पंथ नहीं चलाये,नें किसीको बाह्यव्योहार करिके चेलाकिया, ये तो उनके नामपै आपही पथ खडे हो गये वे महात्मा पुरुष तो अचाह ब्रह्मानन्दमें मग्नथे, अपने वचनोसे योगमार्गका उपदेश की सैन देतेथे, सो जोग तो किसी विरलेने धारण किया सो ससारमें गुप्तता सें रहे और भेषोंके लसकर होगये सो छुड्याणीवाले गरीवदास अपणी वाणीमें कहतेहै ।

दोहा-गरीबभेषोके लसकरफिरै, वाणीचोरकठोर ॥
सतगुरुधामनपरसही,चौरासीकेढोर ॥ १ ॥

श्रवण १ और मनन २ आगे दो अधिकारपै याकी गम्य नहीं हुई, वे पूरे सच्चेगुरू योगसिद्ध मिलें जब प्राप्त होतेहैं सो या दयानन्दनें बाह्यविद्याका घमण्डसें उनका खोजनहीं किया इस हेतुसें ये अल्पअधिकारी बडेअधिकारसें अजान रहग-या। सो हे प्यारा! सो निदिध्यास और साक्षात्कार ये दो अधिकार योगसिद्ध सच्चागुरुकी सेवासें प्राप्त होतेहैं।

अथ शारीरिक, आत्मिकअर्थनका निर्णय वर्णन।

हे प्यारा! वेदशास्त्रपुराण आदि जो ऋषि मुनियोंनेंकहे हैं उनके दोअर्थ होतेहैं शारीरिक और आत्मिक सो शारीरिक अर्थतो पढेहुये पण्डितआदि लगादेतेहैं, परंतु आत्मिक अर्थ तो योगसिद्ध महापुरुषोंकोही मालूम होताहै, सो भागवत मैं वेदव्यास मुनिनें दशमस्कंधमें वडी गूढतासें वर्णन कियाहै अर्थात् शान्तरसकौ शृंगाररसमें वर्णन किया सो ये गूढता योगीकी योगीही जानताहै, इन विचारे देहाध्यासी शारीरि-कोंको कैसें मालूम होवे? देखो श्रीकृष्णनें जिससमय रास कियाथा वा समयकी दशवर्षकी अवस्था वर्णन करीहै और राधारानीकी सातवर्षकी कहीहै तो विचार करो उस उमर-मै शारीरिक विषय कहा उदय होतेहैं और ये पण्डित यालीलाकों शारीरिक मानके अर्थ करतेहैं। जो यों कहो कि पीछे वे तरुण होजातेहैं सो वात कहना अनुचितहै, छल

करनां तो असुरनका कामहै और विचार करिके देखो तो घट २ मैं ईश्वरकी शक्तीही सब भोगविलास करतीहै। जो यों कहो कि श्रीकृष्ण छल, चोर, जार कर्म करनेंवाले अवतार थे सोभी कहनां अयोग्यहै। ईश्वर होके खोटा कर्म करै तो और कौंन अच्छा करैगा। जो यों कहो कि "समर्थकों नहि दोष गुसांई। रवि शशि जल पावककी नांई।" सोभी कहनां नही सम्भवै। रवि, शशि, जल, पावक, परमेश्वरकी रचना हैं उनकों क्या सामर्थ्यहै ये तो आपही कलकितहैं। पुरांणनमैंही लिखाहै कि चंद्रमांमैं गौतममुनिके शापसै कालापन है और राहु केतु क्रांतिहीन करतेहै। जलमै काई दुर्गंधताका शाप लगाहै। अग्निमै धूंवां उठनेका शापहै और समर्थ होके नीचकर्म करै तो क्या असमर्थ श्रेष्ठ करैंगे। और गीतामै कृष्णचद्रनें कह्याहै कि जो मैं विधिवत् कर्म नहीं करू तो क्या मै प्रजाकों भ्रष्ट करनें आयाहूं और जो वडे कर्म करतेहै सोई छोटे करतेहै। हे अर्जुन! मोको कर्मकरिके कहा लैनोंहै तोभी प्रजानिमित्त कर्त्ताहू। जो वडे आचर्ण करतेहै सोई छोटे करतेहैं। सो कृष्ण तो महायोगेश्वर परब्रह्मस्वरूप हैं। राधानाम प्रेमाभक्तिकाहै, गोपीनाम शुद्ध श्रुतिनका है, कामदेवका नाम कंसहै, वृंदावन नाम मस्तकका है, सो आत्मिक अर्थनकों आत्मिकही जानतेहैं। ये वाह्य पण्डित्त कृष्णमैं शारीरिक भाव करिके अर्थ करतेहै सो येभी व्यभिचारी होगये और

श्रोता विशेष होगये और स्त्री सुण २ के डूबहीगई यह अर्थ समझके संसारमैं वडा अनुचित कर्म वढगया। फागुणके महीनेमै सव वृजके रहनेवाले जमीदारभी आपसमैं अनुचित वचन वोलतेहैं और कामक्रीडामैं डूबजातेहैं और दशमस्कन्धका पण्डित शारीरिक अर्थ कर २ के कामदेवके ध्यानमैं रत होजातेहैं और स्त्री पुरुष ईश्वरको कामी समझ के कामरूप होजातेहैं और इन अर्थनकों सुण २ के वडे प्रसन्न होतेहैं, क्योंकि इनके मतलवका कथनहै सो हे प्यारा! वेदव्यास मुनिनै तो यह विचार करिके शान्त रसकों शृंगाररसमै कह्याथा कि कामदेवके ध्यानमैं स्त्री पुरुषनको ज्यादा संयमनही करना पडताहे। कामक्रीड़ामै तो सहजमैंही रत होजातेहैं ऐसा विचार करिके, ईश्वरकों, महारसिक वणाके शान्तरसको शृंगाररसमै वर्णन कियाथा कथा को सुणके ससारी मनुष्य ईश्वरके प्रेममैं मग्न होजावेंगे सो इनका कल्याण तो थोडेनका हुवा जो ईश्वरके प्रेममैं मग्न होगये और विगड़ वहुतगये सो कहतेहैं कि "गडवाघडतैं होगई भेर। कहा कहूं राजासौं फेर"॥ सो हे प्यारा! जासो तो रामचंद्रकी कथानमैं मरजाद है वाको सणके लोग मरजादमैं रहतेहैं, जैसे वहते पाणीके पाल वाधदीनी ऐसी कथाहे। एक स्त्री रखनी वडे छोटेका अधिकार मरजादपूर्वक कथन कियाहै कथा तो दशमकी अतिगूढ अति उत्तम आनन्द विलास आत्मारामका वर्णन कियाहै परन्तु

शान्तरसकों शृंगाररसमे कहदिया सो वासमय ईश्वरकी ऐसीही मरजी हुई कि आपेकों लीलाकारिके प्रसिद्ध करो। सो हे प्यारा! अवतारोंनें स्थूल देहमैं सूक्ष्म देहसैं सव लीला करीहे इन भेदनको योगीराज जानतेहै जगत् उनकों स्थूल समझके भक्ति करतेहैं, सो ऐसा करना मुनासिवहे, ऐसी-भक्ती करतै २ असल तत्त्वकों भी पाजायेंगे जे वाहरकीभी भक्ति नहीं करतेहैं वे पशूहें वडी भक्तिके लायक नहीं छोटी करते नहीं वे दोनूसैं हीन हैं। सो ऐसी जो महागूढ कविता योगिराजनकी है सो या दयानन्दके समझमैं नहीं आई। क्योंकि ऐसी गूढता आत्मिकलोग जानसक्तेहै ये दयानन्द शारीरिक था और इसने वेदमैं और पुराणनमैं पृथक्ता समझके कह्या कि ये पुराण सव झूटेहैं क्योंकि याकी पुराणनके गम्भीर आशयनतक गम्य नहीं पहुची, इसकी श्रवण मननतकही गम्य थी निदिध्यास और साक्षात्कार रहगया सो पढनेवालों की सव पंडिताई मननतक है जाका मनन विशेषहै वोही सव पण्डितोंमैं शिरोमणि कह लाताहे और निदिध्यास साक्षात्कार तो सच्चे गुरु नरहरि सगुणस्वरूप महायोगी मिलैंगे वे कृपा करेंगे जव जानेंगे उनकी कृपासे निदिध्यास और साक्षात्कार होजावैगा तव आत्मिक अर्थनका तात्पर्य प्रगट होवेगा इस हेतुसे दया-नन्दकों गूढ अर्थनका तात्पर्य नहीं मालूम हुवा और इसका पण्डितोसैं और सव धर्म मजहवीयोंमैं विरोध होगया

क्योंकि इसने सबको झूठे बताये जब दयानन्दने वेदनको मुख्य रखकर उनके अर्थ अपनी बुद्धिके अनुसार करिके सत्यार्थप्रकाश नाम ग्रंथ बनाया और वामै बहुतसी आज्ञा मतचलानेकी वर्णन करी और कह्या कि मंत्र बोल २ के अग्निमैं नित्य हवन कियाकरो ये वेदका मुख्य धर्महै । याके करनेसैं अग्नि और देवता तृप्त होतेहैं और आकाशका पवन शुद्ध होताहै । हे प्यारा! विचार करो कि इनके तुच्छ हवनसै अग्नि और देवता कैसे तृप्त होवैंगे और ऐसा कहना कि हवनसैं आकाशका पवन शुद्ध होताहै ये पोप उपदेशहै, ये तो ब्रह्माण्डकी सुगध दुर्गंधसैं सदा मिश्रित रहताहै और देखो संपूर्ण पृथ्वीमें चूल्हे भट्टीन करिके लाखो मणि चिकनाई रोजीना अग्निमै हवन होतीहै वासैभी अग्नि तृप्ति नही होता और मत्रनके पढणैसैं देवता हवी लैनेको आतेहैं इस बातकी क्या प्रत्यक्षताहै । फकत तुम्हारे मनका संकल्पहै कुछ सबूत नहीं और तुम अपना घृत थोडा या घना वृथा अग्निमै क्यो जलातेहो ? जासैं तो वा घृतसै भोजन बनाके श्रेष्ठ पुरुषोंको जिमादियाकरो, उनके शरीरके देवता तृप्त होके तुमको आशीर्वाद देवेंगे और उपदेश देंगे जब तुम्हारा कल्याण होवेगा। हे प्यारा ! वेदोमैं बहुतसे रोचक वचनों करिके पोपकर्म कहेहै याने मिथ्या कहेहैं सो दयानन्दको मालूम नहीं हुये ।

प्रश्न–हे परमप्रकाशी क्या वेदोमैंभी मिथ्या कथन है?।

उत्तर–हे प्यारा ईश्वरस्वरूप महापुरुषोंका कथन कोईभी मिथ्या नहीं परन्तु परमेश्वरकी दो शक्तिहै सत्य, असत्य, ऐसा लिखाहै। "सदसच्चाहमर्जुन" सो क्या वेद,क्या पुराण, क्या शास्त्र, कितावै, ग्रंथ, मनुष्योंके उपदेशके निमित्त सब सांच झूठके संवन्धसैही रचेगयेहें और आगेको जे रचैंगे वेभी इनही के संवन्धसैही रचैंगे वे सब रोचक, भयानक, यथार्थ, तीन शब्दों करिके हैं सो तीनों शब्दोमै यथार्थ जो सत्यहै तामैं स्थिर करनेके अर्थ रोचक भयानक शब्द कहेजातेहैं और सब सृष्टिभी सत्य असत्य करिके प्रगटहै, देखो देहादिक असत्यहैं परन्तु जवतक वनरहेहैं तवतक सत्यसे प्रतीत होतेहैं, सदैव सर्वशरीर चराचरोंमैंसै नाश होतेहं ये असत्यता है प्रगट होतेहैं ये सत्यताहै और कहतेहै कि वेदोंके सब ग्रंथोमै प्रमाण दियेजातेहै, वेदोंमै किसीका प्रमाण नहीहे। हे प्यारा! ऐसीही तो रैतकिताव मूसा पैगम्वरकी कहीहुईहै वामैभी किसीका प्रमाण नहीं दियाहै, वाहीका प्रमाण सव किताव जबूर,अजील,कुरानमें दियेहैं और चारवाक आचार्यके कहेहुये शास्त्रोमेंभी किसी का प्रमाण नहींहै।

प्रश्न–हे महाप्रभो! वेद पुराणोंमे कह्याहै और दयानन्दनें सत्यार्थप्रकाश ग्रंथमें कह्याहै कि वेद और सृष्टि ईश्वरनें रचेहै वेद सृष्टिका कर्ता ईश्वरहै।

उत्तर—हे प्यारा! वो जो कुछहै सो अवाच्य आश्चर्यहै वो नैतो रचैहै नै बिगाडैहै यह चराचर सृष्टि अनादिकालसैं स्वतःसिद्ध प्रगट होतीहै और याहीमैंसैं विनाश होतारहताहै। प्रवाह करिके सदा नित्यहै और जैसा कुछ याका स्वतः सिद्ध समय (काल) नियम उत्पत्ति नाशका है वैसाही वना-रहताहै वदलता नहीं और जे वदलनेवालेहैं वे वदलतेभी हैं। जैसै जीवात्माकों कर्मोंके फल नरक स्वर्ग सुख दुःख हैं और लोक परलोकोंमैं आनेजानेका कथन महापुरुषोंनैं अपने वेदरूपी ग्रथोंमै वर्णन कियेहैं वे सव छोटे बडे ब्रह्मा-ण्डमैं स्वतःसिद्ध मरजादके अनुसार होतेहैं। ये सव कुछ दृष्टिगोचर अगोचरहैं इसका परमेश्वर कर्त्ता, हर्ता, भोक्ता नहीं, उसके प्रभावसैं सवकुछ स्वतःसिद्ध होरह्याहै जैसैं देहमे चैतन्यको कुछ करना नहीं पड़ताहै सप्तधातु स्वतःवनतेहैं और जीना, मरना, स्वतःसिद्ध है॥ उस चैतन्यके सकाशसैं देहका संग पाके देहाध्यासी अहंकारहै सो अज्ञानदशासैं देहके कर्मोंका कर्त्ता भोक्ता वनरह्याहै और याके संग दुःख सुख पाताहै सो कर्ता भोक्ताका अभिमान देहाध्यासी अहकारको है और अहंकार स्वतःसिद्ध अपनी सामर्थ्यके अनुसार पृथ्वीकी वस्तुनसैं और तत्त्वनके सयोगसैं अचम्भेकी नई २ रचना प्रगट करताहै सो कर्ता कहो तो याको कहो, परन्तु जाके प्रभावसैं चैतन्यहैं वो कर्ता भोक्ता नहीं वाके प्रभावसैं सवकुछ स्वतःसिद्ध होर

द्याहै और जे वेद और चराचर सृष्टिको, ईश्वरकी रचीहुई बतातेहैं उनसैं पूछो कि जब ये रचेगये तब क्या तुम उसवक्त मौजूद थे इसकी क्या सबूतहै ? ये तुम्हारा कहना मिथ्याहै और सत्यार्थप्रकाश ग्रथमैं शंका करीहै कि ईश्वरके क्या मुखहै जासे वेद रचे उसका दयानन्दनैं समाधान कियाहै कि क्या ईश्वर विना मुखनही रचसक्ताहै याने रचसक्ताहै, तो विचारो कि जो ईश्वर विना देह वेद और चराचर सृष्टि रचताहै तो वाके वेदोंको सब पृथ्वीके मनुष्योको ग्रहण करना योग्यथा फकत भरतखंडमैंही थोडेसे मनुष्योनैं कैसै ग्रहण किया क्या ईश्वरमें ऐसी सामर्थ्य नहीहैं कि जो वाकी कहीहुई विद्याको ग्रहण नहीं करै क्या उसके रचेहुये मनुष्य वासै प्रवल होगये अगर ईश्वरके कहेहुए वेद होते तो सब पृथ्वीमै इनका प्रचार होता और सब पढते और आज्ञा मानते और वेदोंकी कोई निन्दा न करनेपाता और उसमैं निन्दा करनेके लायक कथनभी नहीं होता, सा बुद्ध अवतार और चार्वाक आचार्यनै वेदोंकी निन्दा करीहै और ईश्वर अपनी ईश्वरता प्रगट करनेके अर्थ ऐसा करता कि वेद सब पृथ्वीके मनुष्योंके हृदयमैं स्वतःही प्रकाश होजाते किसी मनुष्यसै नैं पढते अथवा वर्षदिनमै एकदफै तो देवतानकी मारफत ये हुक्म पहुँचाया जाता कि सब पृथ्वीके मनुष्य अपने २

वैठजावो ईश्वर तुम्हें वेद सुनावैगा और ईश्वर आकाश वाणीसैं सवको वेदोंका अर्थ समझाता और वो वाणी ऐसी गंभीर होती कि सव पृथ्वीके अन्त सिवानेलो पहुचती। तव ईश्वर जो वेदोका कर्त्ताहै ताकी ईश्वरता कर्त्तापनेकी प्रगट होती। अब हम कैसैं निश्चय करै कि ईश्वर सवका कर्त्ताहै क्योकि कोई रीतका कर्त्तापना प्रत्यक्षमैं नहीं दीखता, जो तुम कहो कि अब कलियुगहै जासैं ऐसा व्योहार ईश्वर नहीं वरतता तो तुम अव कलियुगमैं वेद पुराण ग्रंथोंका क्या जिकर करतेहो अपने अन्याय कपट कलियुगका फल भोगो और जो ईश्वर चराचर सृष्टिका कर्ताहै और सव सृष्टिमैं मनुष्यदेह सवसै अधिक श्रेष्ठ रचीहै तो मालूम हुवा कि कर्त्ता ईश्वरमैं दुष्टताभीहै कि मनुष्यदेह उत्तमकों दुःख देनेके वास्ते दुष्ट देहभी रचीहै। जैसैं साप वीछू कछले मक्खी मच्छर खटमल ज्यूं चीचडी आदि वहुतसे विष धारी जीव रचे। ये ईश्वरनै वैर किया अगर अच्छे पुरुषोंकों उनका विष वाधा नहींकरता जो वेद धर्मोंको नही ग्रहण करतेहै उनको वाधाकरता तोभी न्यायकर्तापना समझाजाता या कोई आकाशमै आके आज्ञा उसकी तरफसैं करता बुरेनकों सजा देता वेदधर्मकों धारणकरनेवाले श्रेष्ठजनोंकों सुख ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी मिलती तो कर्त्तापना ईश्वरका मालूम होता सो किसी वातकी कर्त्तापनेकी प्रत्यक्षता नहीं

फकत तुमही जवानसैं और पोथियोंसैं कर्त्तापना जारी कर तेहो प्रत्यक्षतामैं कुछ नहीं दीखता सो ये कहना तुम्हारा कि ईश्वर वेद और सृष्टिका कर्त्ताहे सो मिथ्याहे। जो हम ईश्वरकों कर्त्तामानैं तो भोक्ताभी मानाजायगा और जो भोक्ताहुवा तो विकारवान् हुवा और सृष्टि दुःखदाईभी रचींहे यासे दुष्टताभी उसमैं पाईगई, हे प्यारा! परमेश्वर कर्ता नही अनादिकालसे स्वतः सिद्ध वाके प्रभावसैं मरजादके अनुसार सबकुछ होरह्याहे और हे प्यारा! वडा ब्रह्माण्डमैं नैं कोई सतयुगहे नै द्वापर त्रेता कलियुगहे। ये कथन मनुष्यदेहरूप छोटा ब्रह्माण्डका है मनुष्योंके गुण वृत्तियों के नाम च्यारयुगहैं जो वडा ब्रह्माण्डमैं कलियुग होता तो देखो अव वर्तमानकालमै महापुरुष हरिभक्त प्रगट नही होते सो वहुतसे प्रगट हुयेहे। कवीर, नानक, दादू, छुड्यानीवाले, गरीवदास, लालदास, चरणदास आदि वहुतसे हुयेहै। और अब गुप्त प्रगटतासैं मौजूद हैं और होतेही चले जायँगे, श्रेष्ठ जनोंके कपटरूपी कलियुग नहींहे वे अपनी शुद्ध सतोगुणके साथ सतयुगमैं रहतेहै। हे भ्रमनाशक! वेद पुराण शास्त्रोंमे ऐसा कह्याहे कि, ईश्वर सवको रचताहे। सो येभी तो आपनेही कहेहै और अव आप परमेश्वरको अकरता वतातेहो याका व्याख्यान अच्छीतरहसे कृपाकरिके कहो॥

वैठजावो ईश्वर तुम्हैं वेद सुनावैगा और ईश्वर आकाश वाणीसैं सवको वेदोंका अर्थ समझाता और वो वाणी ऐसी गंभीर होती कि सब पृथ्वीके अन्त सिवानेलो पहुंचती। तव ईश्वर जो वेदोका कर्त्ताहै ताकी ईश्वरता कर्तापनेकी प्रगट होती। अव हम कैसैं निश्चय करै कि ईश्वर सवका कर्त्ताहै क्योंकि कोई रीतका कर्त्तापना प्रत्यक्षमैं नहीं दीखता, जो तुम कहो कि अव कलियुगहै जासै ऐसा व्योहार ईश्वर नही वरतता तो तुम अव कलियुगमैं वेद पुराण ग्रथोंका क्या जिकर करतेहो अपने अन्याय कपट कलियुगका फल भोगो और जो ईश्वर चराचर सृष्टिका कर्ताहै और सव सृष्टिमैं मनुष्यदेह सवसै अधिक श्रेष्ठ रचीहै तो मालूम हुवा कि कर्त्ता ईश्वरमै दुष्टताभीहै कि मनुष्यदेह उत्तमकों दु'ख दैनेके वास्ते दुष्ट देहभी रचीहै। जैसैं साप वीछू कछले मक्खी मच्छर खटमल ज्यू चीचडी आदि वहुतसे विष धारी जीव रचे। ये ईश्वरनै वैर किया अगर अच्छे पुरुषोंकों उनका विष वाधा नहींकरता जो वेद धर्मोंको नही ग्रहण करतेहैं उनेको वाधाकरता तोभी न्यायकर्तापना समझाजाता या कोई आकाशसै आके आज्ञा उसकी तरफसै करता वुरेनकों सजा देता वेदधर्मकों धारणकरनेवाले श्रेष्ठजनोंकों सुख ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी मिलती तो कर्त्तापना ईश्वरका मालूम होता सो किसी वातकी कर्त्तापनेंकी प्रत्यक्षता नहीं

फकत तुमही जवानसैं और पोथियोंसैं कर्त्तापना जारी कर तेहो प्रत्यक्षतामैं कुछ नहीं दीखता सो ये कहना तुम्हारा कि ईश्वर वेद और सृष्टिका कर्त्ताहै सो मिथ्याहै। जो हम ईश्वरकों कर्त्तामानैं तो भोक्ताभी मानाजायगा और जो भोक्ताहुवा तो विकारवान् हुवा और सृष्टि दुःखदाईभी रचीहै यासैं दुष्टताभी उसमैं पाईगई, हे प्यारा! परमेश्वर कर्ता नही अनादिकालसैं स्वतः सिद्ध वाके प्रभावसैं मरजादके अनुसार सबकुछ होरह्याहै और हे प्यारा! वडा ब्रह्माण्डमैं नैं कोई सतयुगहै नैं द्वापर त्रेता कलियुगहै। ये कथन मनुष्यदेहरूप छोटा ब्रह्माण्डका है मनुष्योंके गुण वृत्तियों के नाम च्यारयुगहैं जो वडा ब्रह्माण्डमैं कलियुग होता तो देखो अव वर्तमानकालमै महापुरुष हरिभक्त प्रगट नही होते सो वहुतसे प्रगट हुयेहै। कवीर, नानक, दादू, छुड्यानीवाले, गरीबदास, लालदास, चरणदास आदि वहुतसे हुयेहै। और अव गुप्त प्रगटतासैं मौजूद हैं और होतेही चले जायँगे, श्रेष्ठ जनोंके कपटरूपी कलियुग नहींहै वे अपनी शुद्ध सतोगुणके साथ सतयुगमैं रहतेहै। हे भ्रमनाशक! वेद पुराण शास्त्रोंमै ऐसा कह्याहै कि, ईश्वर सवको रचताहै। सो येभी तो आपनेही कहेहैं और अव आप परमेश्वरको अकरता वतातेहो याका व्याख्यान अच्छीतरहसे कृपाकरिके कहो॥

उत्तर—हे प्यारा! वेदपुराण शास्त्रोंमें जो कह्याहै वो छो ब्रह्माण्डका कथनहै तुमनें वाको वडेका समझरक्खाहै। जब ये मनुष्यशरीर उत्पन्न होताहै तब जीवात्माके प्रभावसे स्थूलशरीरके भीतर सूक्ष्मशरीर गुण इन्द्रियोंका सग पाताहै तब प्रपंचरूपी जगत् उत्पन्नहोताहै या मनुष्यदेहके भीतर वृत्तियांरूप सब सृष्टि उपजतीहै वाको योगी योग बलसै सब गुण इन्द्रियोंका संयम करिके अपनी जीवात्माको परमात्मामें लय करताहै तब भीतरका सब जगत् नाश होजाताहै। योगी परम सुषुप्तिमैं लय होजाताहै जब वाकी प्रपंच व्योहाररूपी सृष्टि लय होजातीहै परन्तु जीवात्माकी सुषुप्तिमें तो श्वास चलतारहताहै और योगीरूपी जो परम सुषुप्ति समाधिहै वामै श्वास नहीं चलता ऐसें ईश्वरस्वरूप योगी छोटे ब्रह्माण्डकी सृष्टिका नाश करनेवाला है। पश्चात् स्वत. उत्थानदशाकों महायोगी प्राप्त होताहै तब वासे सब सृष्टि छोटा ब्रह्माण्डमें उत्पन्न होतीहै इसहेतुसैं ईश्वरस्वरूप योगी सृष्टिकी उत्पत्ती विनाश करनेवालाहै तुम उस कथनको वडा ब्रह्माण्डका समझतेहो। हे प्यारा! या वडा ब्रह्माण्डका हाल कौन कहसकताहै? क्योंकि मनुष्यकी सामर्थ्य नहीं कि याको देखसकै। योगी योग-बलसै देहीरूपी छोटा ब्रह्माण्डमैं लोक परलोक अ र सब देहके अध ऊर्द्ध्वके स्थानोंको देखकर कथन करताहैसो छोटा

ब्रह्माण्डका है या वडाब्रह्माण्डकी स्वतः सिद्ध रचनाको कोईभी नहीं देखसकता। चाहै अवताररूप योगीहो चाहैं अयोगीहो परन्तु ये निश्चय करके जानो जो रचना छोटा ब्रह्माण्डमैं है सोई वडामेंहै ऐसे ईश्वरस्वरूप योगी वेद जो अपने स्वरूपका भेदकथन करताहै और छोटा ब्रह्माण्डकी सृष्टिको उत्पन्न और नाश करताहै इसीहेतुसै वेद और जगत् सृष्टिका करता ईश्वर कह्यागयाहै। हे प्यारा! या वडा ब्रह्माण्डका कर्ता हरता कोईनहींहै ये तो आदि अन्तसैं रहित सदैवसै जैसा स्वतःसिद्ध प्रगटहै ऐसा हमेशासे है तुम विचार नहीं करतेहो पहले गीतामै कह्यागयाहै ॥

श्लोक २ गीताका अध्याय १५ ।

न रूपमस्त्येहतथोपलभ्यते नान्तोन चादिर्न च संप्रतिष्ठा॥
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसंगशस्त्रेण दृढे न छित्वा ॥ १ ॥

अध्याय ५ श्लोक १४।

न कर्तृत्वं न कर्म्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ॥
न कर्म फलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ इति ॥

हे प्यारा! तुम तो वासै स्वतः सिद्ध सबकुछ प्रगट समझके उसको ऐसा समझो कि वो करता अकरता दोनूंहै । अकरता तो ऐसै कि वो कुछ नहीं करता, करता ऐसैंहै कि वाके प्रभावसै सबकुछ स्वतः सिद्ध प्रगट होरह्याहै। ऐसै करता, अकरता, वाकौ

दोनों समझो ये सिद्धान्त सबसे श्रेष्ठहै और हे प्यारा! वाहिरकी विद्याके पढनेसै शास्त्रोंके अंगोंसै वाकिफ होजातेहैं और जो उनमैं गूढतत्त्वका कथनहैं वाको नहीं जानसक्के वो योगाभ्याससै अनुभव होताहै। वाहिरकी विद्या पढनेवालोंको फकत कहनेकी शक्ति वढजातीहै वे वाहिरके, पंडित विद्वान्हैं। हे प्यारा! आलिम फाजिल होजाय तो क्या जबतक आमिल नहीं होता तबतक तत्त्वकों नहीं जानता और जानै बाहिरकी विद्या नहींपढी फकत अक्षरदीपकाही पढाहुवाहै तथा नैं पढाहै ऐसा पुरुषभी सत्पुरुषोंका संग पाजावै और उनकी सेवा चाकरी करै और अरजविनती करके परमेश्वरके मिलनेका मार्ग पूछै तो वे याको योगाभ्यासका उपदेश देतेहैं जब ये वा अभ्यासका साधन करतारहै जब योगसिद्धीकी प्राप्ति होय तब याको ऐसी सामर्थ्य होजातीहै कि नये वेद रचलेताहै। हे प्यारा! भीतरकी ब्रह्मविद्या योग ध्यानसैं प्राप्त होतीहै। जिनकों प्राप्त होतीहै वे परमविद्वान पंडितहैं और हे प्यारा! या दयानन्दनैं अपने ग्रथमैं पुराने ग्रंथोंका अर्थ वदलदिया सो व्याकरणसै ऐसीही पोलहै, शब्दोंके अर्थ कईरीतिसैं लगादेतेहैं। दयानन्दनैं दूसरेनके कहेहुये ग्रथोंके शब्दोंकों रद्द किये तव उनके हेतु क्रोधसैं भरे हुये कुवचन नीच मनुष्योंकी तरह वहोतसे खोटेवाक्य वोलेहैं यासैं मालूमहुवा कि

ये उत्तम पुरुष नहीं था कुछ पढगया तो क्या ? और वडा अनर्थ तो याने ये किया कि ऐसे खोटे वचनोको अपने ग्रंथमैंभी लिखदिये उन शब्दोको याके मतके मनुष्य वाचतेहैं तव उनकीभी क्रोधसैं और अहङ्कारसैं भरीहुई बुद्धि होजातीहै। दूसरे मनुष्योंसे वचनवाद करतेहैं तव इनकोंभी क्रोध आजाताहे और वाजे २ फौजदारी कर बैठतेहैं उसकी सजा मसीके सेवकोंसे पातेहैं और इनका क्रोधरूपी सर्पकी थोथरीको मसीके सेवक दडसे कुचल तेहैं। देखो या आर्यदेशको सब देशोंसे श्रेष्ठ वतातेहे और अपने धर्मकर्मोंको सवके धर्मोंसे अधिक मानतेहैं परन्तु जिन देशोंको ये वुरे कहतेहे वहाकेही मनुष्य इनके देशका राज्य करतेहे और उनके कर्म देखो तो इनके कर्मोंको देखतैं मलिनसे दीखतेहैं। पशु पक्षियोकाही आहार कर तेहैं और श्वपचसैंभी सव काम लेतेहैं, कुछ परहेज नहीं करते। और यहाके मनुष्य इनके किंकर तावेदार होके गुजर करतेहैं और ये राज्यलक्ष्मीको पाके सवतरहका सुख विलसतेहे। और इनकी ऐसी तीव्रवुद्धि है कि कलोंकी अनेक रचना रचके सव प्रजाकों अनेक प्रकारका आराम देतेहैं सो तुम सव हाल इनके जानतेहीहो। ज्यादा क्या कहैं और या दयानन्दनैं वहुतसे ग्रंथ झूठे पोप वताये और वेद सच्चे वताये ये याको मालूम नहीं हुवा कि वेदव्यास मुनीनें वेदनकाही सव तात्पर्य पुराणनमैं

राजा और शूरवीर गिरि,वृक्ष, नदी, पशु, पक्षी आदि नाम धरके कथन कियाहै सो या दयानन्दनैं सब धर्म, मजहब, मत, पंथ, ऋषि,मुनि,वर्णाश्रम और जो महापुरुष नानक, कबीर, दादू आदि हुयेहैं इन सबनकौं झूठे बताये और इनके कहेहुये पुराणग्रंथनकों पोप कथा बताई यानै झूंठी कथाहैं सो इसका दोष नहीं क्योंकि ये आप झूठा था, कोई सच्चागुरू योगसिद्ध यानै नहीं खोजा और नैं इसको ईश्व-की भक्ती थी, नै योगीथा, केवल अहंकारी, वाह्य वातोंनीं वृथा गालबजानेवाला था और जब यानै पुराणनकी गूढता नहींपाई तो वेदनकी कैसैं पावे वेद तो परोक्षवाद हैं कहा अर्थ कुछ औरहै उसके छिपानेकुं कह्या कुछ और जाय ताकों परोक्षवाद कहतेहै सो ये दयानन्द तो वाहिरके पण्डितोंमै बुद्धिवान् होरह्याथा। जैसे अन्धनमै एकाक्षी जैसैं कोई दि-ल्लीका हालकी किताब पढके और वाका मनन करिके उस-का सब हाल कथन करै और दिल्ली आंखनसै नहीं देखी तो जानैं ऑखनसै देखीहै वाके सामनें वाके कहनेकी चतुराई नही चलती ऐसैंही वेदशास्त्रनके पढनेवालेकी महापुरुष योगीके सामनें चतुराई नही चलती सो या दयानन्दनैं अपने कथनमैं नैतो भक्ति वर्णन करीहै, नै योगमार्गका कुछ साधन वर्णनकिया, नैं कोई सात्त्विकी आचरणका उपदेश वर्णन किया, फक्त कुछ वेदमंत्रनके बुद्ध्यानुसार अर्थ करदियेहै और अपने

मतवालेनका नाम धराहै । आर्यसमाजी याने चतुराईसे कहनेवाले कुछ प्रेमभक्ति ज्ञानजोगका जिकरभी नही, क्योंकि इनवातनमै याकी प्रीति नहीथी, ये तो वाह्यविद्यावान् वातूनी था और विनासमय संन्यासका धारण करनेवाला मनमुखी वादी था, ऐसेही याके वचन माननें वाले· अहकारी कोमलतासै रहित वहुतनसे विरोध करने वाले केवलवातूनी झूठा वाद विवाद करनेवाले आपेकों वडे वुद्धिवान् समझनेवाले और हरएक वातमैं सवकौ पोप, कहनेवाले सो ये महापोपके पोपहै ये इनका सिद्धातहै कि,जीव कदाचित ब्रह्म नहीहोसक्ता तो विचार करना चाहिये कि क्या वृक्षसै वीज नहीहोताहै कि पालासै पानी नहीहोताहै और ऋग्वेदमैं ऐसै कह्याहै।"प्रज्ञानमानन्दब्रह्म." और यर्जुवेंदमै कह्याहै॥अहब्रह्मास्मि सर्वखल्विदब्रह्म नेहनानास्तिकिंचन"॥ और सामवेदमैं ऐसैं कह्याहै । 'तत्त्वमसि' तत्‌कहिये समुद्र त्वं कहिये विंदु आसिपद पानी दोनूनमै है वो तूहीहै और अथर्वण वेदमै ऐसा कह्याहै "अयआत्माब्रह्म" और जलकी लहर जलमे समाती है, घटाकाश मठाकाश सव महदाकाशमैही है वास्तव सव महदाकाशहीहै जैसैं सुवर्णसै भूपण होते हैं परिणाममैं सव सुवर्णहीहै सो हे प्यारा! ये सव सिद्धान्त पढनसें,कहनेंसें, प्रत्यक्ष नहीं होवैंगे। अष्टागयोग जो मेरे मिलनेका मार्गहै वाकी सिद्धतासै अनुभव होवैंगे समाधिदशामैं सवसें भिन्न, सर्वातीत,

अकह, अवाच्य, अनुभव होवैगा और उत्थानदशामैं अन्वयकाहिये सबसे मिलाहुवा सबका धारक अनुभव होवैगा विना योगसिद्ध हुये वचनसें ब्रह्म आपेकौ मानना सो वाचक ब्रह्मज्ञानी कहलातेहे सो दयानन्दका ये सिद्धान्त कि जीव ब्रह्म नही होसक्ता सो मिथ्याहै योगके साधनसे जीव ब्रह्म होजाताहै। जैसें सुवर्णमेसैं टाका नष्ट होनेसे केवल कुन्दन होजाताहै ऐसैही योगमार्गकी ब्रह्माग्निसैं जीवत्वरूप टाका नष्ट होनेसै ब्रह्म होजाताहै याने उत्थानदशामै महायोगीको सबकुछ ब्रह्मही अनुभव होताहै सो या दयानन्दकी जितनी समझथी उतनी कही ये योगी नहीं था जासैं सबकुछ मालूम होवै और ये आर्यसमाजी सबसे झूठा वादविवाद करते फिरेहैं सो हे प्यारा ! वादीके विरुद्धार्थसैं चुपरहनां सो निग्रहस्थानहै परमेश्वरके जनकौं वादविवादसै क्या प्रयोजन है अपनी जिह्वाकौं वशमै राखै सो ये दयानन्दके मतके अपने मतमें लानेकी वडी कोशिश कररहहैं सो हे प्यारा ! ये मिथ्यामत चलाहै ये महा पोपके पोपहैं इनको सब पोपही भासताहै, ये मैनें जैसा हाल दखाहै ऐसा बयान कियाहै यामें निन्दास्तुति नहीहै, निन्दानाम वाकाहै कि मीठाको, कडवा कहना और स्तुति नाम वाकाहै कि कडवाको मीठा कहना ये तो यथार्थ जैसाहै तैसा कह्याहै ॥ इति ॥

अथ राधास्वामीके मतका तात्पर्य वर्णनम्।

अनाम उवाच ॥

हे प्यारा! राधास्वामी पूरे सन्त हुयेहैं जैसे कवीर, नानक, दादू, गरीवदास, आदि थे राधास्वामीनै अपनी वाणीविलासमैं सवसैं ऊंचेस्थानपर पहुचनेवाला आपकों लिखाहै और कह्योहै कि कवीर, नानक, दादू आदि सत्यलोक तक पहुँचेहें आगे नही गये ये वचन उन्होंनै अपनी महिमाके वास्ते कहादियाहै। देखो जो झूठको छोडके सत्यको पहुचगये फिर सत्यसै आगे क्याहै सत्यसे आगे तो विशेष समाधिमैं लयहोना है सो महायोगी परमसन्त आपही ज्यादा लय होजातेहैं। जा अवस्थाको अलख, अगम्य, अपार, अवाच्य, अनाम, कहतेहै। सो तो सत्यमै ज्यादा लय होनाहै परन्तु राधा स्वामीनैं सेवकोंके मनके फेरनेके वास्ते और अपनी तरफ लगानेंके वास्ते अपनें वडेपनकी महिमा वर्णन करदीनीहै, इन सव महापुरुष परमसन्तोंका एक स्थानहै ये मार्ग ऐसाहै कि याकी तरफ सच्चे गुरुसै मिलकर चलताहै और जाकौ परमेश्वरके मिलनेंका विरह प्रेम ज्यादा वढताहै वाको अभ्यासमै आनन्द आजाताहै वो तो सवतरह मरके अमर होजाताहै, उरै नहीं रहता, या योगमार्गका आनन्दही ऐसाहै कि उसमें गलताही चलाजाताहै वाकी कुछ नहीं रहता। जाके परमेश्वरके मिलनेका विरह कम

उठताहै वाका कई जन्ममें उद्धार होताहै सो हे प्यारा! राधास्वामीने अपनें सेवकोको शब्द योगमार्ग नकली ध्यान वताया और अष्टांगयोगको अपने वचनोंसें रद्दकिया परन्तु यानें तो अष्टागही सिद्धकियाथा क्योंकि अष्टाग सवका मूलहै जो तुमको या कहनेमें सदेह होय तो राधा-स्वामीकी छन्दवद्ध पुस्तक देखो उसमें जहा तहां अष्टाग योगकी सैन दीहै और राधास्वामीने सैन वैनसै कह्या कि सुरतकों भ्रकुटीमें ठैराके कानोंको अंगुलीसें वन्धकर शिरका शव्दके साथ सुरतको उर्द्ध चढावो हे प्यारा! सुरत इस शव्दके संग नही चढेगी कुछ अल्पकालको ठैरजा-वैगी ये तो कुभक पवनके सग चढेगी क्योंकि ये प्राणके सग फेली हुई है और प्राण सुरत एकहै जहा प्राणहै वहा येभीहै जव आसन प्राणायांमसैं प्राणाप्राण मिलकर ऊर्द्धको गवन होवैगा तव मूलाधारसे कुम्भकके वलसैं सुरत चढती जावैगी, षट्चक्रनकों छेदके सप्तम भृकुटीमें जाके ठैरैगी वहा सुरत निरत करिके ओंकार ज्योतिस्वरूप सहस्रकला-नसयुक्तके दर्शन होतेहैं यहातकही महायोगीकों अति कठिनता होतीहै आगे प्रेमके जोर सद्गुरुकी भक्तिके प्रभा-वसें कुम्भक करिके गंगा जमुना सरस्वती पश्चिममें ब्रह्म रध्रकेपास एक होतीहै वो त्रिकुटीस्थानहैं आगेका हाल सुणाचाहो तो इसही पुस्तकका सप्तम प्रकाश पढो। हे प्यारा! योग कईजन्मके साधनसें सिद्ध होताहै। कैवारनैं

कह्याहै "तनथिर मनथिर पवनथिर, सुरत निरत थिरहोय । कहै कवीर ता पलकको, कल्प न पहुँचै कोय" । हे प्यारा ! राधास्वामीको पन्थ चलानेकी इच्छा हुई तव विचारकिया कि पूरे योगका तो अभ्यासी पूरासंस्कारी होताहै और ये सव सतसंगी अल्प अधिकारीहै सो इनको गुरुभक्तिके साथ नकली शब्द योगमार्गका उपदेश करो जासौ इनकी कुछ सुरत इकट्ठी होवै और पवित्रतावढै सो उसने अपनी पुस्तकोंमैं फकत नकली ध्यानकाही उपदेश कथन किया है और राधास्वामीके पीछे जो सतसंगियोंके गुरू वणे सो रजोगुणमै डूवे मान वडाई धन पूजनेकी आसामैं फँसेहुये राधास्वामीके तत्त्वसै हीन रहे क्योंकि पूरे परमपुरुष गुणातीत अवस्थामै स्थिर होके समदृष्टीसै चराचरको देखतेहै पूजते पूजाते नहीं और सेवकलोग उसगुरुके स्थूलकी उच्छिष्ट प्रसादी मानके देखादेखी खानेलगे सो ये तो नाशवान् स्थूलकी नाशवान् प्रसादीहै, गुरूकी प्रसादी तो उनके कहे हुये उपदेशके शब्दहैं जो कोई इनको श्रवण रूप मुखके द्वारा धारण करतेहै उनकी भूख प्यास मिटजातीहै । हे प्यारा ! राधास्वामीके सेवक उसका कथन कियाहुवा नकली शब्द योगका साधन करतेहैं सो देखो "वचन हजूरी वक्तसतसगकी पुस्तकके दफा सातमैं लिखाहै कि, परचा लेनेवाला कोई भक्त होवै तो परचा मिलै,, इस कदर भक्ती किसीकी नहीहै जो परचा देवै ये जो तुम

कररहेहो ये नकलहै सो चिन्ता की वात नहीहै अवके ऐसी-ही मौजहै, ऐसेहीं सबकों त्यारेंगे, सो हे राधास्वामीके सेवकहो तुम वक्तका पूरा सद्गुरु खोजो और खुलासह उपदेशसार वचनमैं दफा ५२ की और ५३ की देखो तुम्ह चेतकरानेको क्या लिखाहै सो विचारो। शब्दयोगका नकली ध्यान करनेसैं सव ऊमरवाले वाल, तरुण, वृद्धोंको कुछ ज्यादा खतरा नहींहै। मनकी कुछ चचलता मिटजातीहै। जो इस अभ्यासको करतारहेगा और उसका गुरु परमेश्वरमैं ज्यादा प्रेम वढजावैगा तो वक्तके सच्चे पूरे गुरूसैं मिलके असली तत्त्वकोभी पहुँचजावैगा सो ये सव सेवक राधास्वामीके धन्यहै। भला ये नकली शब्द योग-मार्गमैं तो लगेहैं, कानोमै अगुली या ठीटी रखनेसैं शब्द सुनतेहैं,असली शब्द प्राणायामके प्रभावसैं सव आपही खु: लजातेहै, उनका व्याख्यान मैंने नो अधिकार करिके पांचवा प्रकाशसैं लेके सातवॉ प्रकाशतक वर्णन कियाहै। हे प्यारा' वाह्य कर्म उपासना तपज्ञानोंसै ये शब्दयोगका ध्यान राधास्वामीका उपदेश कियाहुवा श्रेष्ठहै।

अथ महोम्मद मजहवका व्याख्यान वर्णनम्।

मंगल उवाच।

हे कृपानिधान! महोम्मदके मजहवमे जो महोम्मदकी उम्मतमेंहै इनकाभी कुछ वयान वर्णन करो।

अनाम उवाच ।

शेर "बनामे आकि वो नामे नदारद । वहरनामे कि ख्वानी सर्वरारद" शुरू करताहूं नाम उसका। कि वो कोई नाम नै रक्खै। साथ जिसनामके जपै तू ॥ सो जाहर होवै। हे प्यारा! ये मजहव इसदेशका नहींहै येतो अरवदेश काहै । यवन वादशाहनकी प्रवलतासैं यहां फैलगयाहै। यहाके मनुष्य जवर्दस्ती तरवारके जोरसैं इस मजहवमैं करलियेहैं सो यहा जो या मजहवमैं है सो सव वर्णाश्रमी ह और इस मजहवमैं एक कितावहै जिसका नाम कुरान शरीफहै सो महोम्मद नवीकी वनाईहुईहै ।

प्रश्न-हे महाराज! ये तो कहतेहै कि खुदाके कलाम हैं खुदाकी आयत आसमांनसै उतरींहैं सोई कुरांनहै ।

उत्तर-हा प्यारा! सव कुछ उसीकी तरफसैं है वोही सवमै सवकुछ कररह्याहै,देखो तुम्हारे दिलकोंभी तो रोशनी वोही देरह्याहै, वो तुमको भीतरसैं कुछ नहीं कहै तो तुम वाहर कुछ नही करसक्के हो तुम्हारे भीतर वो भीतरले आसमांनसै सवकुछ मदद देताहै जव तुम वाहर कर्म करतेहो सो ये आयत तो सवकें दिलको हरवक्त उतरती रहतीहैं। ये इन्सानका जिस्म जो पडदाहै इसमें च्यारदरजोंपर होकर खुदाकी तरफसैं कलाम आतेंहै। सो लिखाहै। कि खुदा पडदेसैं वातैं करताहै सो जाकी रुह आलादर्जेकी वन्दगी करिके उसमैं जामिली वो पाकरूह पाकका नूर हो गई उसके कहेहुये कलाम खुदाकेही गिनेंजातेंहै। क्योंकि

उसकी रूह खुदामें जामिली सो कलाम च्यारदर्जोंपर होकर आते हैं सो सुणो। अव्वल तो कलाम लतीफनूरानी लवालवसे भराहुवा मामूरहै १, दूसरा कलाम लतीफरूहानी उसमें कुछ कहनेंकी सुरसरी उठतीहे २, तीसरा कलाम दरम्यानी जो जिगरसे कईवजेसे खयाल कियाजाताहै ३, चौथा हाजरकलामी जो जवानसें बाहर निकलताहे और सवकोई सुनतेहैं ४, जो कामिलमुर्शिद उसमैं लयहोके जो कुछ कहतेहैं सो उसीके कलामहैं। वेही नवी रसूलहे और तुम गौरकारिके देखो क्या खुदाके जिस्म है कि मुह है कि जवानहै जिससे कलाम कहता है। खुदा तो वेशवह, वेनमूद, वेचून, वेसखुन है। नै जिसके जिस्महै, नै रंगहै, नैं रूपहैं, नैं हलकाहै, नैं भारीहै, नैं कही वैठाहै, नैं मकान है, वो तो लाहै, वेसखुन है, उसमें कहनां, सुणना, आना, जाना, कुछ नहीं वनता और जो है तो सवकुछ वोहीहै सिवाय उसके कोई और नहीं सवकुछ आपही होके जहान वनरह्या हे। सवसै वडा ये इन्सान वनाया है इवादत करनेके वास्तै और उसकी कुदरतकों जाननेके वास्ते सो कोई कोई सवसें वडी वन्दगी चौथेदरजे की करिके उसमें अपनी रूहको लय करताहे, वो पाकरूह उस पाकमें मिलजातीहे। उसमें मिलकर पीछे तनज्जुल यानें उतार होताहे। जव सव हाल कहताहे और नीचले

दरजेवालोंको दरजे वदरज उसकी वन्दगी इवादत वताता है सो उसके कहेहुये कलाम खुदाकेही मानेजातेहै नजीर अरवीकी आयत इजात अम्मुल फकर फहुअल्लाहो।जिसवक्त तमाम होतेहै।दरजात फकरके ऊंचे दरजे पहुचा फिर वोही अल्लाहै और मन्सूर शम्शतवरेज जाहिरहैं और लिखाहै कि खुदासैं वात पडदेसैं करी सो नै तो खुदाका कुछ नमूनाहै, नैं मकान है, नैं पडदाहै पडदानाम जिस्मकाहै इस जिस्ममै ही उससैं वातै करीहै। जिस्मआदमका सवसैं वडाहै। आदमको अपनैं नूरसै वनाया यानै अपना नूर जो सव कुदरतहै सो इसकै जिस्ममै सव कुदरत रखदीनी और फरिश्तेनको कही कि आदमको सिजदा करो सो सवनैं सिजदा किया। एक अजाजील फरिश्तेनै नही किया सो राद.गया उसनैं हुक्म नहीमाना सो ईवलीस शैतान करदिया जो हुक्म नहीं मानताहै सोई फिराऊंन शैतानहै। सव मजहव उसकीतरफसैहै सवका एकही मतलवहै परन्तु वो पाकका-मिल कमाल "मुर्शिदविना मिलै" ये हाल रोसन नहीं होता विना उनके मिलें ये शैतानकी भैकावटमै रहताहै और जो असल वातहै सो इस्के दिलमै रोशन नही होती। देखो सवकुछ हलाल होगया परन्तु वदजानवर हलाल नही हुवा सो वदजानवर कौंनहै। वोहै जिसकी गरदन उसके कलामरूपी छुरीके नीचे नही कटी। उसका कलामहै सोई छुरीहै। जिसनै उसको नै माना वोही वद-

जानवरहै और सवके वास्तैं उसका येही कलामहै कि तुम नेक चालचलनसैं रहो, मुझकों खाजो और नेकीकरो। नेकी नाम उसकाहै कि सव रूह तुमकारिके सुखपावै।इन्सान इन्सानकों अन्याय,दगावाजीसै दुःख नै देवै,इन्सानको तकलीफ देना ये सवसैं ज्यादा कसूर है। मेरा वन्दा वेगरूर, रहमदिल कम्तरीन होताहै । आला दरजाकी वन्दगी करनेंवाला मोको वहुत प्याराहै और मेरी इवादत कामिल मुर्शिदसे मिलके करो। येही कलाम उसका सव मजहवोंमे है। मुसलमानी करानैसै मुसलमान होताहै याने शिश्नके अग्रकी त्वचा काटनां सो अविरहामके वक्तसैंहैं। अविरहाम पैगम्वरके इजहाक हुवाथा अव्वल खतन करानेका नमूनां इजहाकसैं जारीहुवा। अविरहामसैं पहिलैं आदमतक किसीने खतन. नहीं करायाथा। क्या खतन करानैसैही मुसलमान होताहै ? येतो नाहक इन्सानोंकों तकलीफ देनाहै मुसलमान नाम उसकाहै जो इमानपर कायम रहै सो इमानतो ये शैतान कामदेव जो नफ्सहै सो विगाडताहै, इसी सववसै ये पैगम्वरोंने खतनः करानेका एक नमूनाकी सेन दीहै, क्या सैंनदीहै कि शिश्नकी खाल काटो तो इमानपर कायम रहसकोगे यानें खालके मजेसैं दूर होवो। जिसका दिल यामजामें गिरफतारहै वो इमानसे खारिज होजाता है। क्या इसका मजा खुदाकी तरफसैं फिराके अपने मजेमें दिलकों लगालेताहै । इस कामदेवके मजेमैं आके

इन्सान एक बीबीको छोडताहै दूसरीकों ग्रहण करताहै, वो विचारी उसको वददुवा देतीहै और ये इस मजेमै आके ऐसा गफलतमै होजाताहै कि जवान२ नई २ खूबसूरत औरतोकों ताकता फिरैहै और वहुतसा वद, लूच्चा,झूंठा, जालसाजी, छिदला, हासी, ठट्ठा, खिल्लीवाजी करनेंवाला शैतानका गुलाम होजाताहै सो ये खालका मज़ा उस खालकसैं अलग करदेताहै सो इस खालको काटनां क्या दिलसै इस मजेकों दूरकरनां येही खालका काटनाहै और खदाकी तरफ दिल लगाना सोई मुसलमानहै,इमाननाम खुदाकोहै उससैं दिलसै महोव्वत करनी,उसके कलामोको मानना सोई मुसलमानहै,सो उसका हुक्म ये है कि एक वीवी व्यभिचारसें वचनेंको राखै और कहीं अपनी रूहकों नैं डुलावै क्योंकि जो ज्यादा डुलाताहै वोभी तो सवर नही पाता। ज्यादा २ वेसवरा होताहै सो ये तो शैतान कामदेवकी आगहै,जितनां सेवैगा तितनी ज्यादा होवैगी सो इस आगको वुझानेके वास्ते एक औरतकों शादी (निका)करिके राखै और इन्सान जिस्म पाके खुदाका खोफमाने और उसका खोज करै कोई कामिल मुर्शिद गृहस्थीहो चाहै फुकराहो जिस मज़हवमैं मिलै उनहींसै महोव्वत करिके खुदाकी राह पूछे और सवसै ज्यादा खुदासै मुहव्वत करै गरूर गुस्सा,कुफर, वेसवरी, हरामखोरी, वदकलामी, शैतानीके सव काम छोडके अपनें चिस्मसै महनत करके खाय दूसरेकी वस्तुकों नैत कै

और रात दिन खुदाकी वन्दगीके इश्कमें रहै मजाजी इश्क-
कों छोडके हकीकी इश्कमें अपनें दिलको डुवावै वोही
सच्चा मुसलमानहै और सव नामके मुसलमानहैं वे तेरवी
सदीमें पैदा हुयेहैं कुरानमें तेरहसदी क्या तेरहसें वरसका
हाल कह्याहै आगेका हाल वयान नही किया।आगे नजदीक
कयामत समझीगई इस सववसै कुछ हाल नही कह्या,
इसविचारसै ऐसा मालूम हुवा कि महोम्मदी मजहव तेर-
ह सदीतकहीहै आगेये मजहव नहीं रहा क्योंकि मजहव
की मयाद पूरी होगई आगे रस्ता नही चला। चोदवी सदीमें
इक्कीसवर्ष वीतगये और आदम जवसें पैदाहुवा तवसें तोरेत
जो मूसापैगम्बरकी कितावहे वाके हिसावसे अजतक ५९०७
वर्ष होतेहै । सन् ईसवी १९०३ तक सम्वत् १९६० तक
होतेहै और वर्णाश्रमी धर्मवालेनके ग्रथोंमें ऐसा लिखाहै कि
कईलाख वर्ष हुये । जव रामचद्रजीका अवतार हुवाथा और
कृष्ण अवतारके ५००४ वर्षहुयेहै सम्वत् १९६० तक और
रामचद्रजीसें पहिलें सतयुगमें दत्तात्रेय, ऋषभदेव, कपिल-
मुनि वामनजी अवतार आदि वतातेहैं सो हे प्यारा।
तोरेतकितावके हिसावसें तो पृथ्वीकी रचना अव्वलसें हुई
उसकों५९०७ वर्ष हुये और वर्णाश्रमियोंके हिसावसे वहुत
होते है अव नेंजानें कौन सच्चाहै सो तुम अपने दिलमें
विचार करलो और शैतानतो आदमके वक्तसेंहीं वहकाता
चलाआयाहै, आदमको खुदानें पैदा करिकै अदन जो व-

हिश्तहै ताकी वाडीमै रक्खा और आदम वहुतसा नींद-
में सोगया जव उसकी पसलीसे हव्वाकों पैदाकरी और
दोनूनको हुक्मदिया कि इस वाडीमै जो पेड वीचावीचहै उसका फल नही खानां और शैतान जो
इवलीसस्याप है वानै हव्वाको वहकादीनी कि तुम
इस वाडीके वीचमे जो पेडहै वाका फल खावो,तव हव्वानें
कहा खानेंकी इजाजत नही शैतान वोला इसके खानेमै
मजा वहुतहै जव तुम खावोगे तो तुम्हारी आखै खुलजा-
वैगी। तव हव्वाके दिलमैं आई तो खानेका इरादा किया
आदमसैं कह्या आदमनैं कहना मानलिया दोनूननै फल
खाया और ईश्वरकी आवाज आई और इनको जिस्मका
ज्ञान हुवा तो आपेको नगा समझके छिपे । तव खुदाने
इनको अदनकी वाडीसे अलगकिया और शापित करादिये
सो हे प्यारा! वो वीचका फल खानेका मजा यहीहै कि जो
मरदऔरत मिलकर जिस्मके वीचमे जो स्थानहै उसका मजा
लेतेहैं वोही वीचका फल खानाहे। जिस्मके वीचमे शिश्न
योनिहै इसका फल जो मजा भोगताहै सो वहिश्तसैं खारिज
होताहै और जव मूसानें सीनेके पहाडपर ईश्वरके दर्शन पाये
तव इसरायेली जो जियारत करनेकों आयेथे उन्होंसै
मूसानैं यों कह्या कितुम तीनदिन पहिले अपने वस्त्र धोके साफ
रक्खो औरतकी मलिनतासैं वचो तो तुमको ईश्वरसैं भेट

होवैगी। जो इन्सान इस मज़ासैं व्चैगा सो उस मजाकों पावैगा और जो इसको भोगैगा सो उसके लायक नै होगा। सो वीचका मज़ा खालकाहै जो उसको दिलसैं काटेगा वोही ईमान पर कायम होगा और जो नहीं काटेगा वो खारिज होगा निजात नही पावैगा और जो इमानपर कायम है वो चाहै जा मजहबमें हो चाह जो जातहो वोही मुसलमांनहै क्या इमानपर कायमहै उसकी खाल कटगई क्या जिस्मानी नजर नहीरही रूहानी नूरानीहोगई जिसकों वर्णाश्रमी दिव्यदृष्टि कहतेहैं और जिस्मानीकों चर्मदृष्टि कहतेहैं। देखो नरमादी जोहैं सो जिस्मानी वीचका फल खालका मजामैं आके गफलतसे कोनसा बुराकाम नहीं करते है। जोनें करनेके काम हैं सो सब करते हैं। हे प्यारा ! ऐसा न समझनां कि बिलकुल सब उमर औरतसैं परेरहै खुदासैं मिलनेके च्यार दरजे है। शरीयत १, हकीकत २, तरीकत ३, मारफत ४, अब शरीयतका हाल सुनो, जबसें ये इन्सान पैदा होतेहैं तब लडकपनसें अपनें मजहबकी किताब पढें और अपनें घरानेका इल्म सीखें और जो वक्तका इल्महो उसकोंभी सीखें पीछे अपने मजहबके माफिक सब काम करिके जवानी आवै जब निकाह अपनें मजहबकी औरतके साथ पढें। मेहनत करिके खाना सोई हलालका खानाहै, हरामखोरी करिके खाना सोई मुरदार

है, विस्मिल्लाह कहके जानवरोंका गला काटतेहैं उसकों हलाल कहतेहैं हलाल तो इसका नामहै कि उसको चारा चराना, पानी पिलाना, झाडना, फटकारना, उसकी खिदमतकरना, जब वो दूध देवै उसको खावै वोही हलालका खानाहै और तमतो उसका गला काटके मुरदार करदेतेहो और जब गला काटते हो तब ये कलाम कहतेहो कि "विस्मिल्लाह अलरहमान् अलरहीम्" क्या शुरू करताहू अल्लाहके नामसैं वो रहमान रहीम हैं तो गौर करो वो तो रहमान् रहीमहै और तुम ये क्या करते हो? रहमान् रहीमके नामपै गला काटते हो और गौर करो कि उसके नामसै शुरूकरना नेककामोकाहै जिसवक्त उसकी बन्दगीकरो उसवक्त ये कलाम बोलो जासे निजात पावो और ये गला काटना तो जबांनका सवाद (जायका) जिस्मकी ताकत बढानेके वास्ते काम कियाहै सो मेहनत करिके खाना सोई हलालका खानाहै और शरीयतवाला इन्सान अहल् इसलाम होवे क्या अपने धर्मैं कायम रहे कुफर नै बोले ज्यादा गुस्सा नैं करै, किसीसैं गरूर नैं करै, सवरसे रहै, वदकलाम नै बोलै, रहमदिल रहै, किसीसैं दगावाजी जालसाजी नै करै, व्याज नैं लेवै और कोई नशेके आधीन नैं होवे, किसीसै वैर नकरै। कुल्ल इन्सानोसै प्यार मोहव्वत राखै चाहै अपने मजहवका हो या दूसरेका हो किसीको अन्यायसे दुःख नै देवै वनै तो सवकेसाथ

नेकी करे । खुदाका खोफ मानें । जो कुछ करताहै सो वोही करताहै, आपेकों कर्ता ने समझे और अपनें मजहबमें लानेकेवास्ते किसीसे दगावाजी जवरदस्ती नेंकरे और जो खुसीसे आवे उसकों राह वतावै सिवाय अपनी औरतके ओरपै अपना इमान नें खोवै, पाचदक्तकी नमाज पढे, तीसदिनका रोजा राखै सो है प्यारा। गौरकरिके देखो शरीयतकी वहुत हलकी वन्दगीहे। पाचवक्तकी नमाजमै इन्सानका थोडासा वक्त लियागया है और विनती करके जिस्मसै सिजदा कराईहे और रोजानमे दिनकों ने खाय तो रातको खाना वतायाहै। इस वन्दगीमें कुछ ज्यादा तकलीफ नहीं शरियतसें ज्यादा मुश्किल हकीकतकी वन्दगीहे, उससै ज्यादा मुश्किल तरीकतकीहै और सवसैं ज्यादा मारफतकी वन्दगीहै सो शेरेइन्सान् नेककाम करिकेभी आपेकों गुन्हगार समझके खुदासै माफी मागे किसी इन्सानकी हासी ठट्टा मसख-री नें करे गरीवी नरमाईसे रहै। उसकी इवादतसैं ज्यादा मोहोव्वत करे। नेकलोगोसैं मोहोव्वत राखै, वद आदमीकी सोहोवत नें करे, उसके वन्दोंसें मिलता रहे और कोई काम ऐसा नेंकरे जो किसीका नुकसान होवे और वो वुराक है, सव काम नेकीके करे, वदीकी निगाहसे भी नेंझाके और सिवाय खुदाके और किसीको नें मानें दिलसें तो क्या मानें शिरसेंभी सिजदा नें करे, वो निराकारहै किसीका

प्यारा ! ये शरीयतका बयान मैंनैं थोडासा तेरे समझानेंके वास्ते किया है ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाम मंगलसम्वादे चारसम्प्रदाय दयानन्द राधास्वामी महोम्मदकी उम्मतकी शरीयतका व्याख्यान वर्णनो नाम नवमप्रकाश.॥९॥

मंगल उवाच ।

हे सर्वप्रकाशी ! ऊपर जो आपनें बयानकिया कि ये शैतानकी भैंकावटमें आगये सो शैतान कौंनहै । किसनैं पैदाकियाहै और क्या इसकी शैतानीहै सो आप इसका हाल कृपाकरिके बयान करो ॥

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! जिसको मन कहतेहैं, दिलकहतेहैं, नफस कहते हैं, ये सब नाम रूह जो जीवात्माहै ताकीलहरके हैं॥ जब ये दिल जो मनहै सो नेककाम करताहै तबतो ये खुदाकी तरफहै क्या खुदाकाहै और जब यही दिल जिस्मानी दुनियाके मजेमें आके गफलतसे शरेसे बाहिर होके नाजायज काम करताहै।वोही शैतानहै, क्योंकि हुक्म नहींमाना फिराऊनसुन किरकाफिरहै क्या शैतानकी औलादहै शैतानकी औलाद बहुतहैं और खुदाकी औलाद उसका हुक्म माननेवाले थोडेहैं जो शैतानकी औलादहैं वे छोटी उमरसेही बुरे ऐ-

आकार वनाके नैमानै और जो सिवाय खुदाके औरकों मा
नतेहे वे वे शरैहै। जैसै वहुतसे इन्सान कव्र या आलाकों
सैयद मानके पूजतेहै, पाणींसै नह्वा फूल वतासै चढातेहैं,
लोवानकी धूंनी देतेहै, नकारा वजाके डोडी पीटतेहै। तो
देखो खुदाकी मसजिदमैं तो नकारा वजाके ऐसी खुसी
नहीमनाते जेसी सैयदकी मनातेहै और फकीर सैयदको
पुजवाके वडे राजी होतेहैं और उसकी झूठ वोलके करा-
मात जतातेहे। और ये नही कहतेहै कि खुदाके सिवाय
तुम किसीको मत पूजो उन्होंनें अपनां रोजगार समझ-
लिया और वहुतसे तावीजवनाके धूनी देतेहे अपने डडन-
पर वांधतेहै और वच्चेनका गला भरदेतेहैं। देखो खुदानै
जिस्म एकवूंद पानीके कतरेका वनायाहै और भीतर पेटकी
आगसै वचाके नापैदसै पैदाकिया उसका ऐतकाद छोडके
यकीन तावीजपर लाये और अपने वाप दादानकी कवर
पूजतेहैं और वहुतसे ताजिया वनातेहैं और गरूंरमै आके
दगा कियाचाहातेहै और वहुतसे फकीर स्यानपत करतेहै,
गंडा तावीज वनाके पाखोसै वच्चेनके झाडा देतेहैं और
पचवीर पीरख्वाजे मदार पुजातेहैं तो गौरकरो खुदाकेसि-
वाय कितनें आकार वनांके पूजे और उसका यकीन
छोडकर ऐतकाद इनपर लाये ये सव पूजना माननां
शरहसैं वाहरहै शैतानकी वहकावटमैं आगये सो हे

प्यारा ! ये शरीयतका बयान मैनें थोडासा तेरे समझानेंके वास्ते किया हे ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाम मंगलसम्वादे चारसम्प्रदाय दयानन्द राधास्वामी महोम्मदकी उम्मतकी शरीयतका व्याख्यान वर्णनो नाम नवमप्रकाश ॥९॥

मंगल उवाच ।

हे सर्वप्रकाशी ! ऊपर जो आपनें बयानकिया कि ये शैतानकी भेकावटमें आगये सो शैतान कौनहे । किसनें पैदाकियाहे और क्या इसकी शैतानींहे सो आप इसका हाल कृपाकरिके बयान करो ॥

अनाम उवाच ।

हे प्यारा ! जिसको मन कहतेहैं, दिलकहतेहैं, नफस कहते हैं, ये सब नाम रूह जो जीवात्माहै ताकीलहरके हैं॥ जब ये दिल जो मनहै सो नेककाम करताहै तबतो ये खुदाकी तरफहै क्या खुदाकाहै और जब यही दिल जिस्मानी दुनियाके मजेमें आके गफलतसे शरेसे बाहिर होके नाजायज काम करताहै।वोही शैतानहै, क्योंकि हुक्म नहींमाना फिराऊनमुन किरकाफिरहै क्या शैतानकी औलादहै शैतानकी औलाद बहुतहै और खुदाकी औलाद उसका हुक्म माननेवाले थोडेहैं जो शैतानकी औलादहै वे छोटी उमरसेंही बुरे ए-

काफिर आपहैं औरोंको काफिर कहतेहैं और दूसरेको अपने मजहबमें लानेके वास्ते बहुतसी जालसाजी दगा-बाजी करतेहै, इसहीको नेककाम समझतेहैं और कहते है, कि ऐसा करनेका हमको खुदाका हुक्महै । भला गौरकरके देखो क्या खुदा बुरेकाम करनेको हुक्म इन्सानको देवेगा तो खुदा पोच ठेरा जो तुमसे दगाबाजीसे अपना काम कराताहै खुदातो सबका मालिक सबका पैदा करनेवाला सबके दिलको नचानेवाला जो चाहै सोई करसके वो तो हाज़र नाज़रहै । जो उसकी येहीमरजी होवे कि सब जिहांनके इन्सान महोम्मदकी उम्मतमें होजावें तो कौन रोक-सक्ताहै उसीवक्त एकलहमेमें ऐसाही होजावेगा देखो इन्सा-नोंमें जो राजा होते हैं वे अपने कानूनका हुक्म जारी करते है तो उन्होके राज्यमें सब इन्सान मानलेतेहैं और वैसाही वरततेहै । जो हुक्म नहीं मानतेहैं वे हुक्म अदूलीकी सजा पातेहै तो खुदातो सबसे वडा है जो चाहै सोईकरै, एकदम सबके दिलको मोडसक्ताहै क्योंकि वो दिलका मालिकहै । जो उसको एकही मजहब जारीकरना होवे और सब मज़हब रद्द खारिज करना होवे तो जहानमें न कोई दूसरे मजहबकी कितावरहै न मजहबरहै जिसको चाहै वोही रहे । सो ऐसा कहना कि हमको जालसाजी दगाबाजी जबरदस्तीसे मज़हबमें लानेके वास्ते खुदाका हुक्मैहै ये बात कहना नाजायज़है बहुत वडा गुन्हाहै । हा अपनी राजीसें

वहुत वडी वन्दगी करताहू ये तो वहुत हलकी वन्दगी हे जैसें वच्चेनकों अलिफ वे तें सिखाते हैं। आलिमफाजिल्लतो कोई २ वहुत मेहनतसे होताहे सो तू किसीकों दु:ख मतदे एक दिन तेरी जानभी गुद्दीकी राह निकासी जावेगी। जो तू जीवतेही अपनी जानको कामिल मुर्शिदसें मिलके गुद्दीकीराह निकालले तो वे गुन्हा पाक होजावेगा, हक्को पहुचैगा हे प्यारा ! जे शेतानी इन्सान् है वे रडीवाज होते है। एक वीवीको छोडके दूसरी तीसरी घरमें घालतेंहे। पडोसीकी और इन्सानोकी वहन वेटी ताकतेंहे, वहकाके लेजाते है, दगावाजीसे धन कुमातेहैं, गुस्सा वहुत रखते हैं, वडे वदकलाम वोलतेंहै। और ऐठ अकड गरूरमें गरक रहतेंहैं, कपडे पहरके वहुत इतरातेंहैं, महदी मिस्सी सुर्मा लगाके आंख मटकातेंहै और अपने गरूरमें किसी इन्सान को इन्सान नहीं समझते। दूसरे मजहवीकी विगडी हुई औरतको घरमें घाललेतेंहे और सवके साथ दगावाजी करते हैं,जवरनदूसरेका ईमान विगाडते है,झूठ जालसाजीका वल रखतेंहे। और मोहोव्वत आपसमें शेतानसें शेतान रखतेंहैं और भलोंके वैरी, दूसरेको चिडाना, ठट्ठामसखरी, तनज, चवावकी वातें करना ये ऐव उनमें ज्यादा होतेंहे और अतर पट्ठोंमें तेल लगाके पान चावके ताजमें फूल रखके पगडी टेढी वांधके मरोडसें वडे लहजेसें सब्वे मटकाके चलते हैं और दूसरे मजहवीसें चलाके छेड करतेंहे, जुल्म करतेंहैं।

काफिर आपहैं औरोकों काफिर कहतेहैं और दूसरेकों अपने मजहवमैं लानेंके वास्ते वहुतसी जालसाजी दगा-वाज़ी करतेहै, इसहीको नेककाम समझतेहै और कहते है, कि ऐसा करनेका हमको खुदाका हुक्महै। भला गौरकरके देखो क्या खुदा वुरेकाम करनेंको हुक्म इन्सानको देवैगा तो खुदा पोच ठैरा जो तुमसै दगावाजीसै अपनां काम कराताहै खुदातो सवका मालिक सवका पैदा करनेंवाला सवके दिलकों नचानेवाला जो चाहै सोई करसकै वो तो हाज़र नाज़रहै। जो उसकी येहीमरजी होवै कि सव जिहांनके इन्सान महोम्मदकी उम्मतमैं होजावैं तो कौन रोक-सक्ताहै उसीवक्त एकलहमेमै ऐसाही होजावैगा देखो इन्सां-नोमैं जो राजा होते है वे अपने कानूनका हुक्म जारी करते है तो उन्होके राज्यमै सव इन्सान मानलेतेहैं और वैसाही वरततेहै। जो हुक्म नहीं मानतेहैं वे हुक्म अदूलीकी सजां पातेहैं तो खुदातो सवसै वडा है जो चाहै सोईकरै, एकदम सवके दिलकों मोडसक्ताहै क्योकि वो दिलका मालिकहै। जो उसकों एकही मजहव जारीकरनां होवै और सव मज़हव रद्द खारिज करना होवै तो जहानमैं नैं कोई दूसरे मजहवकी कितावरहै न मजहवरहै जिसको चाहै वोही रहे। सो ऐसा कहना कि हमकों जालसाजी दगावाजी जवरदस्तीसैं मजहवमैं लानेके वास्ते खुदाका हुक्महै ये वात कहनां नाजायजहै वहुत वडा गुन्हाहे। हा अपनी राजीसैं

इन्सान दूसरा मज़हव मैं आवे तो जो नेकलोग होतेहैं सो परखतेहैं कि ये अपनाही मज़हव छोडताहै तो ऐसे वेइमानका क्या भरोसाहै। देखो सब मज़हब खुदाकी तरफसें हैं जो दगावाजी जवर्दस्तीसे हें वो शैतानी है, खुदा तो पाकहै। अपनें वन्दोको पाककाम करनेंका हुक्म देताहै जो उससे डरतेहैं और अपना जो मजहवहै उसहीमें उसकी वन्दगी करतेहें, सवके साथ नेककाम करते हैं। सूधेचाल चलनसें वे गरूर सच्चे इमानदार सवरदार रहमदिल कमतरीन गरीवीहालमें एक वीवीपे इमान रखनेवाले महनत करिके खानेवाले दगावाजी जालसाज़ी की सोहवतसें परहेंज करनेंवाले शैतानोंकी मडलीसें अलग रहनेवाले खुदाकी वन्दगी चारूदरजेकी करनेवाले सवतरहके लुचपनसें अलग रहनेवाले खुदाके वन्दे होतहैं सो थोडहैं। और शैतानकी तो मन्डली जमाअतकी जमाअत वहुतसी जहांनमैंहैं सो हे प्यारा!खुदाकी तरफसें जो नवीरसूलआचार्य अवतार प्रगट होतेहें सो रजमा करामातकेसाथ आतेहं।उनके कलाम अच्छी नसीहत, अच्छे उपदेश नेकचालके होतेहैं। इसलोकके परलोकके सुख देनेंवाले हे सो इन्सान सव राजी खुसीकेसाथ कवूल करतेहें और जो कुछ शैतानकी तरफसें होता हे सो दगावाजी छलसें दवागतसें जवरदस्तीसें इन्सानोंकी मारफत होताहे वे वहुतसे उसमें जमा होनेंसें जवर्दस्तीभी मोका पाके राज्यकेवलसे करतेहें और मेरा वन्दा सव

मजहवोंमे होताहै वो मेरी इवादतके जोर कामिल मुर्शिदके जरियेसै हकपर पहुंच जाताहै पीछे किसी मजहवका पावंद नही रहता। पक्षपातम अलग होजाताहै रव्वुल् आल्मीन मे लय होजाताहै, और देखो सव जहान मजाज़ी इश्कमैं डूवरह्या है, हकीकीमैं कोई होताहै सो हे प्यारा! ये वाहिरके शरैई लोगोको ये मेरा कह्याहुआ आलिम रूहानी आलादरजेकी नसीहत उपदेश नैं सुणांना क्योंकि वे इनकलामोंके मतलवको तो समझेगे नही तुमसैं दुश्मनी करैग और बुराई करैगे हे प्यारा! मैनैं तुमकौ अवलदरजह शरैका हाल और शैतानी हाल थोडासा वयान करके सुनायाहै। जहानमै थोड़ेहैं जो इन वातोंपर गौर करते हैं जर जोरू ज़मीनमैं सव उलझे हुयेहैं। अव दूसरा दरजा हकीकतका सुनों॥

अनाम उवाच।

हे प्यारा! जो खुदाका खोफ मानतेहैं वे जहानमैं नेककाम करतेहैं शरैके पावन्द होतेहैं और दिलमैं सोचतेहैं कि ऐसा काम करनाचाहियै जिसमैं खुदा राजी होवैं और मैं जो नमाजवगैरे की वन्दगी कररह्याहूं यही खुदाके मिलने का रस्ताहै या कोई और इससैं ज्यादा वन्दगीहै जिसके करनेसै खुदा मिलै और ये जहांनमै उसीकी रोशनी है। आफताव महताव तारे उसकी कुदरतसैं चमक रहेहैं उसके

हुक्ममें रहतेहैं पवन पानी सब उसीके कहेमेंहैं उसके हुक्मविना पत्ता नहींहलै। ऐसा वो करीमका दिरमावृदहै और मेरे जिस्मको पानीके कतरेसे वनायाहै इस जहानमें नापैदसे पैदा मुझको कियाहै मेरे जिस्ममें उसहीकी रोशनी सब काम देतीहै ऐसा वो खालिक कहारहताहै। और वो कैसाहै उसका हाल में कैसे पाऊ और वो कैसे मिले ऐसा हकीकतवाला बन्दा जिगरमें सोचविचार करताहै दुनियांसे उसकी कम मोहब्बत होजातीहै। खुदाका ज्यादा यकीन आजाताहै, रात दिन उसके इश्कमें लगारहताहै और शर्गेमेही नेकीके साथ वनारहताहै और खुदाके रस्तेकी बहुतसी किताबोकों खोजता रहताहै आलिम फाजिल होजाताहै। और जहानमें गुसतासें हलीमहोके रहताहै अपनी वडाई नहीं चाहता खलकतकोफांनी समझताहै। और खुदाके हकीकी इश्कमें आके हरएक मजहबकी कितावें पढ २ के उसका खोज लगाता है।सब किताबनमें कामिल मुर्शिदकी ज्यादा इज्जत पाई और बिना कामिल मुर्शिदके खुदाका खुदरस्ता नहीं मिलता। हकीकतवाले ऐसे दिलमें विचार करतेहैं वे कामिल मुर्शिदसे मिलना चाहते हैं उनके दिलमें खुदाका इश्क वढजाताहै। जहाँतहाँ सब मजहबके इन्सानोंसे साधु फकीरोंसे मिलते है और कामिल मुर्शिदकों खोजतेह ये हकीकतवालोंका हालहै। हे प्यारा! मै आलिमफाजिलोको नहीं पाताहू क्योंकि वे इल्मके गरूरमें

आके कलामोकी अकलमन्दीमें फसतेहैं । मैतो आमिलको मिलताहू अब तीसरादरजा तरीकतका बयान सुणो । हकीकतवालेपै खुदा महरवान होताहै जब इन्सान कामिलमुर्शिद होकर मिलताहै जब ये मुर्शिद हवीबको देखकर फ़िदा होजाताहै और दिल्सें उनके कदमोंकों सिज़दा करताहै । उनकी तन मन धनसें खिदमत करताहै । और नरमाई दीनताके साथ उनसे अर्ज़ करताहै खुदासे मिलनेकी राह और तरीका पूछताहै जब वे महरवान होकर इसको सब भेद बतातेहैं । तब इसका शरैकाबन्दन् दिलसै टूटजाताहै और बाहिरसे बनारहताहै और जवानी इसकी ऐसे नेककामोमेंही ढलजातीहै । जब इसको मुर्शिदकामिल्की महरवानीसें बडे दरजेकी इबादत बन्दगी खुदाकी मिलतीहै । जिसको योगमार्ग कहतेहैं उसकी कसरतपै आमिल्होताहै जब इसके दिलकी आख खुलजाती हैं और रूहानी पाकलतीफ रोशनी होतीहै और जो याका दिल शैतानी काम करताथा सो सब नजर आजातेहैं । और इसके शैतानी काम बहुत कम होजातेहै सुलतान उलूअजकारकी नसीहत दिल्मे कायम होजातीहै । उसके दिल्में हक़ीकी इश्क बढजाताहै। जब वो शरैमें रहकेही खुदाकी आलादरजेकी बन्दगी छिपीहुई करताहै । जो मुर्शिद सुलूतान उलूअजकार कामिलकी बताईहुई है । वो सबसें अलग होकर नमाज पढताहै। सो कैसी नमाज़

है। खांनां, पीनां, जितना हज़म होसकै इतना खाताहै। वडे सुभेही फराग़त जाके जिस्मसैं पाक होके नरम विछोना करिके गर्मी वर्षामैं हवाकी जगै मैदानमै सवसें अलग गोशैतनहाई यानैं एकान्तमैं ऐसी वैठकसैं वैठे कि नींचेके दोनूं दरवाजे वन्द होजावैं और पहिलैं कामिलमुर्शिदकों दिलमै देखै क्या उनका ध्यान करे वो आदमस्वरूप् खुदाहै नज़ीर मोलवीरूमकी मोलवीरूम कहतेहैं। चूंकि करदीजात मुर्शिदराकवूल हम खूदा दरजातसे आदम हम रसूल॥१॥ मुर्शिदकीजातमैं खुदा और पैगम्वर दोनूं आगये। ये उपदेश तरीकतवालोंकोहै। और अपनी निगाहकों वीनींकी अनीपर जमावै और अपने दमकों देखाकरे। और दिल्सैं दिल्कों देखाकरे कि दिल क्या करताहै कि सकाममें उलझा हुवाहै। उसमैंसैं रोकके वीनीकी अनीपर जमावे थोड़ेही अरसमैं वीनींशमांकी वरावर दीखतीहै। आप परवाना होके उसकी अनीपर जमजावे और कवी २ हब्सदम होके अन्दरकीं तरफ दिल्की आखसें जिसकों निजमननूरी कहते हे उससे जिस्मके भीतरका हाल निगाह करे। और जव हब्मदमके जोरसैं अर्शकीतरफ ऊपरको हवा चलती हे तव पहले तवक़की रोशनीका हाल देखेहै। वहा च्यार फिरश्ते रहतेहैं पीछे दूसरे तवककी रोशनीका हाल देखताहे वहा छः फरिश्ते रहतेहैं। तीसरेका जादेसें वहा आठ फरिश्ते रहतेहैं इस तवकके आसमानसें सव जहान

परवरिश पाताहे उसके वाद चौथे तवक़का आसमानमैं वारह फरिश्ते रहतेहे और इस तवक़की रोशनी वहार देखनेवालेको मालूम होवैगी और अर्शसे आवाज़ आनेलगतीहे, उस आवाजसे दिल्मसरूर क्या खुश होके मस्त होजाताहे। फिर वहाकी हालत देखकर दिलमैं कामिलमुर्शिदको सिजदा करके उनके कदमोको चूमताहै। वाद पाचवै तवकमै दाखिल होताहे वहा सव रूह हाजिर होतीहैं। इस आसमानमैं सोलहफरिश्ते रहतेहे, आगे चढना वहुत मुश्किलहे यहांकी रूहतरीकतवाले वन्देका दम् और दिल्को फाड़देतीहैं। लेकिन् तरीकत्तवाला वन्दा शग़ुलिन्सीरा होके क्या अनहदका उसीलासे छठे तवकमै पहुचताहे। वहां स्या सपेद कमलोंकी क्यारी देखताहे इस आसमानमै हवाका वडा जोर रहताहे हज़ारों फरिश्ते फिरतेहें। वहुत वडा चमन गुलजारहे और यहां पहुंचनेवाला वडा मसरूर क्या मस्त होजाताहे और उसके जिस्मानी नफसांनीं गिलाफ वहुतसे दूर होजातेहे। और इस मुकामपर कोई दिन आराम करताहे तरीकतकी वन्दगीसें छठेतवक़के फलक्तक पहुचताहे। यहातक सिफलीके दरजे रहे यहासे आगे उलवीके हैं। अव चौथादर्जा मार्फतका हाल सुनो हे प्यारा! तरीकतवाला वन्दा मुर्शिदकामिलसें जिगरमै वहुतसी वीनती करताहे और मुर्शिद जिगरके भीतर सुरतरूप होकर मौजूद रहतेहे उनके कलामकी मदतसै

और अल्लाहू २ शब्द होताहै यानें सोह २ ये मुकाम पाक-लतीफरूहानी और दूसरा मुकाम ब्रह्मरन्ध्र जिसको त्रिकुटी दशवाद्वार कहतेहैं। शून्य मैंदानहै जहां वहुतसी नफीरी वासुरी वजतीहै और वहुतसे चमन् गुल्क्यारी खिली हैं और नाजनीरूंहे जहा केल करतीहैं और तीसरा मुकाम गाढा अन्धकारमैं पडकर गुफामें होके वेशुमार सैल देखताहुवा हक्कमैं पहुँचताहै जिसको सत्य कहतेहैं वहाका हाल क्या वयान करू जो पहुँचकर देखेगा सो जानैगा। इस मुकामैप पडदेसैं वेपडदे होजाताहै,ऊपर नीचेसैं पडदा फटजाता है वहाँ झींणीं आवाजोंसैं वीणा वजरहींहै और सव रचना नूरकीहै। आवहयातके झिरनें झिररहेहैं और जहां जवाहरातका मेह वर्षरहाहै यहांका पहुंचाहुवा चौथा आलादरजा जिसकों दरजामुकामभी नहीं कह्याजाता सवका अन्तमैं सहज चलाजाताहै, वहाका हाल कहने सुणनेसैं नहीं आता म्हसूस गेरम्हसूस क्या आकार निराकार दोनूंनका अनुभव श्रुनीकों नहीं रहता, खुदमेंखुद मिलजातीहै वहा पालागलके पानी होजाताहै। जिसको वेशवह, वेचून, वेनमूद,वेसखुन सवका अत कहतेंहै। नें जहा गामहै, नें ठामहै, नें मुकामहै,न नामहै,न अनामहै, हैरत वेकलामहै। सो हे प्यारा! मने तेरेवास्ते इन सव मुकामोंका हाल वहुत कम कारिके वयान कियाहै। ज्यादा कह्याजाय तो ग्रथ वहुत वडा होजावे तुझेइश्क पैदाकरनेंको थोडासा

कहदियाहै। जब तूं जावैगा तब सब देखलेगा, थोडेहैं जो इन मुकामोपर आतेहै क्योंकि शैतांन जो खाबीमनहै सो किसीकों आने नहीं देता जिस्मांनी मज़ामे सबको फसाके अपना गुलाम करलेताहै परन्तु मेरेबन्दे वडे ज़बरदस्तहै इसके शिरपर पांव रखके आतेहैं औरजे वन्दे भोलीभावनासे मेरी इवादत करतेहै वे मोकों वहुत प्यारेहै। जैसे इन्सान् छोटे बच्चोंकों बहुत प्यार करतेहै मैं उनसे ऐसे प्यार करताहू॥

अथ यसूमसीके मज़हबका व्याख्यान वर्णनम्।

मंगल उवाच।

हेजगत्पति घणनामी। यसूमसीके मजहबकाभी हाल कृपाकारिके वर्णन करो॥

अनाम उवाच।

हेप्यारा यसूमसी यहुदी देशमे यहुदीयोंमैसे प्रगट हुवाहै सो अतिउत्तम श्रेष्ठ शुद्ध सतोगुणमय अवतार हुवाहै उसकी कहीहुई अजीलनामकरिकै किताबहै ये मजहब अंग्रेजलो-गोंके राज्य होनेसे इस वर्णाश्रमदेशमै आयाहै सो यशूका उपदेश श्रेष्ठहै इसके उपदेशमै सतोगुण प्रधानहै और प्रकृति शुद्धरखना प्रयोजनहै। देखो सब मजहबोंमें अपने २ मजहबकी खैच रक्खीहै और विरोधके वचन उपदेशकिये हैं याने सबधर्मी मज़हबीयोंने ये लिखाहै कि जो तुरा

अपनें मजहबकी निन्दा करते सुनों। तब सामर्थ्य हो तो दण्ड देवो असामर्थ्य हो तो सुणों मत चले जावो और यीशुमसीनें क्या उपदेशकियाहै कि, जो मेरी निन्दा करताहै वो शैतानकी भेकावटसैं करताहै तुम उसका सामनां मतकरो। शैतानके साथ शैतान मतहोवो वने तो उसैं कोमल वचनसैं भीक्षावों नहींतो वेरीसा मत समझो। और परमेश्वरसैं उसकेवास्तै प्रार्थना करो कि उसै बुद्धि वख्शैं तो इस वचनको गौर करके विचारो कैसा विरोध दूर किया और तामसताका खोज नही रक्खा । और क्षमा जमादीनी कैसा कल्याणका वचनहै और कहा है कि जो तुमसे विरोध करैं,बुरा वचन कहै,तुमको स्राप देवै, तो तुम उनके वदलेमैं आशिर्वाद देवो और उनसे कोमलताके वचनोंसैं, बोलो वेरीसे मत समझो। जो तू किसीका अपराध क्षमा करेगा तो तेरा पिता परमेश्वर तेरा अपराध क्षमा करेगा तो देखो कैसा शान्तका उपदेशहै । शैतानको अन्त करणमैं जगेहीं नहीं देता सो हे प्यारा! पूर्व मैंनें तुमको नौ अधिकारकी सीढीका उपदेश वर्णन किया है उनमें तीसरे अधिकारकी सीढ़ीका जो उपदेशहै सोई उपदेश मसीनें अपने सेवकोंको वर्णन कियाहै । दो अधिकार मूर्तिपूजाके छोडदिये उनकी न्यूनता दिखाईहै उन दोनूका सार इस तीसरामें आजाताहै क्योंकि इसमें वृत्तिया शुद्ध रखनेंका उपदेशहै। जो तीसरा न सधे तो वे दोनूं निष्फल

वेगार है और तीसरा अधिकारी या लोक परलोकका फल पाताहे याने विना अन्त.करण शुद्धहुये सब कर्म वृथाहै सवसै श्रेष्ठ वृत्तिनका शुद्ध होनाहै ॥

प्रश्न ॥ हे महाराज ये क्रिश्चियान वहुत हिंसा करतेहै पशूपाक्षियोंकाही आहार करतेहै ॥

उत्तर ॥ हे प्यारा ये ईश्वरका धन्यवाद करके शुद्ध मानके खातेहै और जो पुरुष कर्मनकरिके जीवहिंसासैं वचै परतु स्वभावका दुष्टहोवै, अजोग दुर्वचनोका कहनेवाला और क्रोधी ईर्षाछलछिद्रवाला दम्भी होवै याने जाका अन्त. करण मलीन है शुद्ध नहींहै और वो निरामिष भोजन करताहे तोभी ऊची दशाको नही प्राप्तहोता और जो उसकी कुलामनाय देशकी रितिसै आमिष आहारीभीहे और मन वचन करिके सतोगुणके गुण धारण करताहै तो थोडेही कालमैं उसको ऊची दशाकी भक्ति प्राप्तहोवैगी और ऐसा पुरुष सव रीतिसैं कोईकालमैं अतिश्रेष्ठ होजा-वैगा देखो या जीवकी जड़सज्ञा और चैतन्यसज्ञा दो हैं सो परस्पर जीवोके आहारमै होतीहैं और जीवकी ऐसी शक्तिहै कि चैतन्यसै जड़ होजाताहै और जडसैं चैतन्य होताहै जैसैं पेडसै बीज जडसज्ञा होताहै और वीजोमे चैतन्य जंगम जानवर पडजातेहैं और वहुतसे देश ऐसेहैं कि उनमैं चैतन्य सृष्टि जीवोकी विशेष करिके उदय होतीहे और

वहाके मनुष्य वाकों नेंखॉय तो नष्ट होजावे सो वो उनहींके आहारकों पैदा होतीहे और वहाके नवी अवतारभी ऐसाही उपदेश करतेहें जाकरिके आरोग्यतासें परमेश्वरकी सेवा करे और यीशुमसीका उपदेशमें तो ऐसा वयानहे कि जिसमें नेतो आमिष खानेकी इजाजतहे नें मनाहे वलिक गुप्ततासे मना हे ऐसा लिखाहे कि जो कसाईकी दुकानपे विके सो खावो धर्मवोधके कारण कुछ पूछोमत क्योंकि पृथ्वी और उसकी भरपूरी प्रभूकीहे सो मदिराका विशेष पीना और व्यभिचार झूठ कपट क्रोधका तो विल्कुल मनाहे ये वडा दयालु हुवाहे। लिखाहे कि में तुम्हे आत्मिक दान दियाचहताहू तो क्या तुम्हरा शारीरिक काट्ट्‌वरा तुमकों में आत्माका वोधरूप ज्ञानका सुख दियाचाहताहू तो क्या तुह्मारा शरीरका सुख उपदेशकरिके दूर करू सो उसकी ये दयाहे कि शरीरकाभी सब सुख वनारहे और इनका कल्याण होवे या दया करिके उसनें प्रकृतिका शुद्ध रखनेका उपदेश किया याने स्वभाव क्रोध छल रहित सतोगुणी होवे सोई सार उपदेशहे सो अंजीलमें सक्षेपतासें सार उपदेश कह्याहे । और वर्णाश्रमी धर्ममें परमेश्वरके धर्मका मन वच काया करिके विशेषतासे उपदेश कह्याहे और परमेश्वरकी महिमा और मार्गका ज्यादा कथन किया हे और वडी गुप्तता वर्णन करीहे। परन्तु पीछे पढेहुये मनुष्य मन्द अधिकारीयोंनेंवाक्यछल करिकेअल्पबुद्धिकी

काव्यमें मतमतातर उपासनाकी खैंचातानी करिके छाछ बहुत वढादीनी जासो वो असलवात छिपगईसो या भेदकों तत्त्ववेत्ता जानतेंहे और हे प्यारा परमेश्वरके श्रेष्ठ पुरुष योगसिद्ध अवतार या वर्णाश्रम देशमें बहुतसें प्रगट हुयेह और हे और होतही चलेजायेंगे ओर देशोंमें कम होतेंह औरदेशोंके मनुष्य बाहरी पृथ्वीकी वस्तु खोजनेमें ज्यादा चतुरहे ससारी व्योहारमें हुसियारहें परन्तु परमेश्वरकी तरफका खोज कम करतेंहें इसी सववसें ये देश श्रेष्ठ लिखा-गयाहे परन्तु हालमै हिन्दू मुसलमांनोंको देखतें ईसाई मतके धारण करनेवाले अंग्रेजलोग राज्यलक्ष्मीकों पाके एक स्त्रीके साथ कैसे श्रेष्ठ स्वभावसें रहतेंहें ये मसीके उपदेशका प्रतापहै। राज्यलक्ष्मीको पाके कितने सृधे सरल अभिमान अहकार रहित क्षमावान् सत्यवक्ता दयालुहे परन्तु पहिलें के अंग्रेजोको देखतै अव हालकेनमै कुछ विकार वढगया हैं वे हाकिमी पाके गरूरमै आके गुस्सा वहुत रखतैंह, जिस्मके सुखाभिलाषी विषयभोगोंमै वडे आसक्तिहे, अपने मातेट सेवकोंको अन्यायसैं हरएक वातकी तकलीफ देतेंहें, क्षमा दया कोमलता नहीं रखते, जैसा मसीनें उपदेश दियाहै उन आज्ञानको कम धारण करतेंहें सो लिखाहै कि अन्तमें वहुतनका प्रेम ठडा होजावैगा और ऐसाभी लिखा-है कि ज्यों २ वो अन्तका दिन नजदीक आवै त्यों २ ज्यादा प्रेम करो और हालमैंभी वहुतसे पादरी या हाकि-

मलोग सूधे सरल कोमलमिजाजसे रहतेंहै परन्तु जो झीनां उपदेश अंजीलमैं योगमार्गकाहै वो इनकी निगाहमें नहीं आया। वो विनामिलै सच्चे सद्गुरु कामिल मुर्शिदके निगाह नहीं आता वेही पवित्रात्माहै और बाइबिलमें लिखाहै कि मेरे वचनोपर छापहै क्या ढकेहुयेहै परन्तु नष्ट होनेवालोंको ढकेंहै सो प्यारा हो पवित्रात्मा जो वक्ता कामिल मुर्शिद देह धारण करिके मसीस्वरूप रव्वीहै। वासैं जब मेल होवैगा और उनकी सेवा सत्संग करोगे और उनके वचन ग्रहण करोगे जब तुम्हारे दिलकी आंख खुलैगी तब सब गुप्त हाल प्रगट होवैंगे। हे मंगलप्यारा! जब तुझकौं मेरे इश्कके मार्गमें भीड पडीथी और मैं देह-स्थूलरूपसे तुझसें अलग हुवाथा जब मैंने वचनरूप यीशु मसी खीष्टको तेरेपास भेजाथा।

मंगल उवाच।

हां स्वामी जब आप देहछोडके विदेह होके मेरे भीतर वास करतेथे जब मोकों अज्ञान जो मन शैतानहै वाने आपके विश्वाससे डिगा दियाथा। और जब मैंने आपके योग-मार्गमें शारीरिक क्लेश पाया तब शब्द स्वरूप यीशु मेरे-पास आया उन्होंनें अपनें शब्दसें मुझको मार्गके दुःखोंके भेद सब दीने जो मैं मार्गमें दुःख पारख्याथा। जिनकाभी हाल मालूम हुवा और जो आगे चलनेसे दुःख होंगे उन-

काभी हाल पाया जव मैं शब्दस्वरूप यीशुकेसाथ आगेकों चढताही चलागया और आपसैं जामिला उसवक्त परमेश्वरके इश्कके क्लेशोंमे शब्दरूप यीशुने मेरी वडी सहाय करी ये आपका वडा अनुग्रह हुवा नहीं तो अज्ञानरूप मन शैताननैं कष्टोंके सववसैंगिरादियाथा लेकिन् सहायकता होगई और आपेको आपकी प्राप्तिहुई जो हमारा जीवन आत्मिक होवे तो चलनभी होना चाहिये ॥

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! इस अजीलमैं मेरे योगमार्गका कथनहै और जो मार्गमैं क्लेश होतहैं सो ज्यादा वयान कियेहैं और यीशुमसीने अपने सेवकोको शारीरिक वोझ नहीं दिये मन जो शैतानहै उसके खोटे स्वभावोसैं वचायेहैं और दूध पिलाया है कडवा भोजन नहीं खिलाया सो लिखाहै कि इतने समयमैं चाहिये था कि तुमलोग उपदेशक होते परन्तु अवभी आवश्यक होताहै कि परमेश्वरके धर्मोपदेशके मूलसूत्रोंको कोई तुमलोगोंको फिरके सिखावे और तुम्हे दूध पिलावे कि कडवा भोजन खिलावे क्योंकि हरेक जो दूध पीयाकरताहै सो धर्मके वचनोमैं अप्रवीणहै क्योंकि वो बच्चाहै परन्तु कड़वा भोजन सियानेलोगोंको है कि अभ्यास करनेसे वे भले और बुरेका विचार करनेंकों चैतन्यके निपुणहुयेहं। सो हे प्यारा! इन दूध पीनेवालोमैंसैही

कोईज्यादा दूध पीके जवान होजावैगा तो कडवा भोजन जो योगाभ्यासहै उसकोभी ग्रहण करेगा सो हे प्यारे! अंग्रेज ईसाईहो तुम वाहिरकी वस्तु खोजनेमें वडे चतुरहो परन्तु मसीका गुप्तज्ञान जो वूझनेसे वाहिरहै उसका तुम ज्यादा खोज नहीं करते सो लिखाहै कि जो वस्तु तुम देखतेहो उसपै क्या मन लगातेहोवो, जो नहीं दीखतीहैं उसपे मन लगावो, जहां मसी पिताकी दहनीओर वैठाहै उस अदेस भूमिमें विश्वाससे चलो और सारे मन वुद्धि प्राणसे प्यार करौ और तू जगत कों प्राप्त करे और अपना प्राण खोवे तो प्राणके वदलेमें परमेश्वरको क्या देगा ? सो लिखाहै कि जो मसीके लोगहैं उन्होंने शरीरकों उसके स्वभाव और कामनाओंसमेत क्रूसपर माराहै और लिखाहै कि पिता मुझे इसलिये प्यार करताहै कि मै अपना प्राण देताहूं कि मै उसे फेर लेऊं कोई मनुष्य उसको मुझसें नही लेता परन्तु मैं आपसै देताहूं उसें दैनेंकों मुझे अधिकारहै और उसे फेरलैनेको मुझे अधिकारहै सो हे प्यारा! हो यीशु अपना प्राण देताहै और लेताहै और ये सैंन वो आपेसे देताहै और कोईलेतानही सो तुम क्यों नही लेते अपने सिर सीधेकरो, अपनी आख उठावो, तुम्हारे छुटकारेका समय आयाहै च्यार पवनोको वन्धकरो और ऐसी प्रार्थना करो कि तुम्हारे शरीरके पसीनेके समान लोहू निकले हमारा पलभरका हलकासा क्लेश वडीभारी महि-

माकों प्राप्त करताहै, प्रेमरूप जलका वपतिस्मा लेके अग्निका वपतिस्मा लेवो जासैं पवित्रात्मा प्रगट होवै मनकी ऑखसैं भीतरकी वस्तु खोजो अपना क्रूस उठाय खोपरीके स्थानको चलो जो प्राणदेवैगा सो बचावैगा और जो बचावैगा सो खोवैगा तू अपने भोजनसै प्रभुका कार्य मत विगाडे, वहुत सोये अव नींदसैं जागनेका वक्तहै, निस्तारका समय अवहै, ग्रहणकरनेका समय अवहै, अपने शरीरको परमेश्वरके अर्पणकरो जासो उत्तम वलिदान होवै, हमारा तम्बूसा घर जो पृथ्वीपर है उजड़जावै तो स्वर्गमें अविनाशी घर तैयार है, इसमें हम आहे खैंचतेहै अपना स्वर्गीय घर पहिनलेनेको जीसै चाहतेहै, जवलो हम इस तम्बूमै हैं वोजसैं दवेहै, आहे खैंचतेहै तोभी नही चाहते कि उतारै परतु उसपर पहरायेजावै जासै मृताई जीवनसैं निगल लीजाय, हमतो इसीके लियै तैयार कियेगयेहे सो परमेश्वरहै, जवलों हम देहमैं हैं तवलों प्रभूसैं वियोगीहै और लिखाहै कि उस वातका अग्र सोचो जो जगत्को और परमेश्वरको प्यारी लगे, मैं अपने क्लेशोमै आनन्दके मारे उझलाही जाताहू, हमारी वाहरी मनुष्यता विगडतीहै तो भीतरकी तो नई होतीजातीहे, हम वेसुधहै, ये परमेश्वरके लिये है, सुधमे तुह्मारे लियेहै, हम कुछ नही रखते परतु वहुतनको धनी करनेवाले है, मै दुर्वलहू जव वलवानहू क्योकि दुर्वलतामैं मेरा

वल सिद्ध ठेरताहै, मेरेलिये सव ठीकहैं परन्तु मैं किसीके आधीन नैं होऊं, मेरा मन मुझे किसीवातमैं दोप नहींदेता तोभी मैं इससैं निर्दोप नहींहू अपने मोती सूकरोके सामैंनैं मत फेको क्यौंकि वे रौंधेगे, अपनें पवित्र भोजन कुत्तोंकों मत देवो क्यौंकि वे उलटे काटखावेंगे, देखो धोईहुई सूकरी दल २ कौं जातीहे तुमनैं उजालेसैं अधेरेकों ज्यादा प्यारकिया जवतक जगतसे और जगतकी वस्तूसैं ज्यादाप्यार करतेहो तवतक मेरेयोग्यनहीं मेरे पीछैआयाचाहो तो अपनीं इच्छाको मारो और अपना नित्यप्रति क्रूस उठावो और माता,पिता, भाई, स्त्री, वालक, अपनें प्राणसैंभी जो वैर नहींकरै तो मेरा शिष्य नहीं होसक्ता, जहा मैंहूं वहा मेरा सेवकभी होगा, कोई चाहे जो दशामैं हो परन्तु प्रभूमैंहो ईश्वर किसीकी वाहरी दशा नहीं देखता, भीतर हृदयको जांचताहै, प्रभूकाहै सो प्रभूकी वात खोजताहै, ससारकाहै सो संसारसैं प्यार करताहै, सव जीवात्मा एकसे नहींहैं परखो प्रभुकी तरफसैं हैं कि शैतानकी तरफसैं है, जो वचनकी शिक्षा देतेहैं वे दूनें आदरके योग्य हैं, जो तुह्मे आत्मिक पदार्थोंमै शामिल करै तुम उनकौं शारीरिकौंमैं शामिल करो क्योंकि तुम्हारे पास शारीरिक हे, क्या उनके सुन्दर पांवहैं जो शान्तका मंगलसमाचार सुनातेहैं तुम ऐसेनको परखो अपना धन स्वर्गकों पहुचावो, जहा तुह्मारा धन वहा तुह्मारा मन होगा। मनुष्य दोस्वामीकी सेवा नहीं करसक्ता

एकसै प्रीत करैगा दूसरेसै वैर करैगा जो धनको चाहताहै सो धनीका नही और जो धनीका है सो धनका नही और व्यभिचारी जो है सो अपने शरीरका वैरी होताहै और लिखाहै कि अवभी मेरी वहुतसी वात कहनेंकोहै परन्तु तुम अव उनको सह नहीं सक्तेहो जव वह सच्चाईका आत्मा आवैगा तव वह सारी सच्चाईका मार्ग वतावैगा क्योंकि वह अपनी नै कहेगा परन्तु जो कुछ वह सुनैगा सो वोलैगा और जो आनेवाला है सो तुह्मे वतावैगा वो मेरी महिमा प्रकाश करैगा क्योंकि वो मेरी वातोंसे पावैगा सो हे प्यारा! हो ! वो सच्चाईका आत्मा कामिल सच्चा सद्गुरु वक्तका है उनके विनामिलैं मसीका जो गुप्त ज्ञानहै और गुप्त मार्गहै सो नहीं प्राप्त होता, और लिखाहै कि परमेश्वरकी भक्ताईका वडाभेदहै, परमेश्वर शरीरमें प्रगट हुवा, आत्म सैं सत्य ठैरायागया, स्वर्गदूतोको दिखाई दिया, अन्तदेशी-योमें प्रचारकियागया, जगतनें विश्वासकिया, ऐश्वर्यकों वह ऊपर उठायागया और लिखाहै कि व्यवस्थासै कुछ सिद्ध नहींहुवा पर आसानें प्रवेशकिया उसके द्वारा हम परमेश्वरके समीप पहुंचतेहैं और लिखाहै कि जो यीशुके द्वारासे परमेश्वरके पास आतेहै, उन्है वो सपूर्णतालो वचा-नेकों शक्तिमान है क्योंकि वो सदा जीताहै और यीशु-मसी कल्ह और आज सदाकाल एकसाहै सो हे ईसाई प्याराहो ! जो यीशुमसी सदाकाल एकसा जीताहै सो

सच्चा सद्गुरु वक्तका रव्वी कामिलमुर्शिद है वो जगतमै हमेसा देह धारण करिके गुप्त या प्रगट फकीरीहालमै या गृहस्थमै मौजूद रहताहै, उससै तुम्हारी भेटहोवेगी जव परमेश्वरके पास जावोगे जो तुम योकहो कि हम मरेगे जव जावैगे सो वात नही ऐसा लिखाहै कि तुमसै सच कहताहूं, यदि मनुष्य जलसें और आत्मासें उत्पन्न ने होवे तो वह परमेश्वरके राज्यमै प्रवेश नही करसक्ता सो तुम परमेश्वर-सें प्रेम करो, और जो सच्चासद्गुरु मसीरूप मनुष्य होकर मौजूदहै वासे मिले वो परमेश्वर और जगतके वीच एक मनुष्य विचवईहै । सो यीशुरूप सद्गुरु परमसन्त महापुरुषहै सो हे ईसाईहो ! तुम्हारे जिसमके भीतर सात ज्योतिहैं जिन्होमें वो फिरताहै वाको तुम खोजो और सन्तोकी सकेतके भागी होजावो जो तुम किसीपै दया करोगे तो तुमपैभी कीजावैगी सो हे प्यारे ईसाईहो ! तुम अच्छे चालचलनसै रहतेहो परन्तु तुम जो कामिल सच्चा सतगुरू रव्वीहै उसकों नहीं खोजते ये तुमलोगोंमें वडी भूल और हरज है, वक्तके सच्चे मुर्शिदके विनामिलैं परमेश्वरके पास जीतेंजी नहीं जासक्ते उनसें मिलकर जो गुप्तमार्ग योगका परमेश्वरके मिलनेका है सो पावोगे परन्तु थोडे है जिन्होंका ईश्वरसै ज्यादा प्रेमहै और मं[illegible] सव अपराध क्षमा करदूगा परन्तु पवि[illegible] वु[illegible] सो माफ नहीं कियाजायगा, ने पृ[illegible] कर-

ने हारा नही, कोई खोजी नही, सव भूले भटके है, सव-
केसव निकम्मेहै, धन्यहै वे जो आज्ञानकों पालन करतेहै।
हे प्यारा ! या अंजीलमैं च्यार मंगलसमाचारहै उनमैं उप-
देशहैं और महिमाहैं और कुछ थोडासा वेदान्तहै और
योगमार्ग गुप्ततासे हैं और जितनी पत्री पौलसकीसे आदि
लेके हैं उन सवनमें नीत प्रेमभक्ति सात्त्वकीचलन और
योगमार्गकी गुप्ततासे सैन है और प्रकाश वचनोंमे योग-
सिद्ध मार्गका वर्णन कियाहै ये वाईविल गूढहै आशय
जाका ऐसी अतिउत्तम कितावहे जव तुम वक्तके सचा
रव्वीसे मिलोगे तव याकी गूढता पावोगे, वो जो सच्चा
सद्गुरु रव्वी है सव उत्तमनाम उसीके है, कहीं यीशुमसी
ख्रीष्टकरिके कह्याहै, कही मल्किसदिकनाम कह्याहै, कही
हनूंकनाम कह्याहै, कही पेगम्वर नवीरसूल,औलिया गोस-
कुतवकरिके कह्येहे, कहीं पवित्रात्मा सत्यका आत्मा ऋषी
मुनी अवतार अनेककितावोंमें अनेक नामकरिके वयान
किया है, सव किताव जो परमेश्वरकी तरफसै है सवका
मतलव एकहीहै,परन्तु जव सच्चे सद्गुरुसै मिलोगे जव ये
वात जानोगे इतने कोईसाही मजहवकी शरेमै वधेई रहोगे
और मुनासिवहे कि जवतक वे नै मिलैं तवतक अपने
मजहवकी शरेमै रहै उनसै मेल होजावे तव उनकी
आज्ञानुकूल रहे हे प्यारेहो ! जीतेजी परमेश्वरसे मिलो
इस मनुष्य जन्मका यही फलहै कि परमेश्वरकी प्राप्ति

होवे और हे प्यारा ! या अजील किताबकी गूढवातोंका वयान खोलना मैने सुनासव नहीं समझा जव पवित्रात्मा, सत्यका आत्मा, वक्तका सद्गुरुसै मिलोगे और उनकी खिदमति निष्कपट प्रेमसै करोगे और उनकी आज्ञानुकूल रहोगे, उनका वताया योगमार्गका अभ्यास करोगे तव सव गुप्तता प्रगट होजावेगी थोडेहैं सौ उसकौ पातेहैं हे यीशुमसीके सेवकहो ! तुम धन्यहो जो उसकी आज्ञानका पालन करतेहौ और वो तुमसैं दूर नहींहै ऐसा लिखाहै कि मैं शरीर करिके दूरहूं परन्तु आत्मा करिकेतो पासहूं आमीन पितापरमेश्वरकी कृपा कुशल वनी रहै आमीन ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसम्वादे शैतान्‌राहकीकततरीकतमारफतकेसिवायच्यारमुकाम्कायीशुमसीकेमजहवकाव्याख्यानवर्णनो नाम दशमप्रकाश १०

मगल उवाच ।

दोहा—नामनाम सवकोऊ कहै, नाम न जानै कोय ।
नाम विहूना नामहै, नहचेहीमैं जोय ॥

हे जगजीवनघणनामी सांख्यशास्त्र और योगशास्त्र दोहैं कि एकहै और वेदान्तशास्त्र, मन्त्रशास्त्र, मीमांसाशास्त्र, तर्कशास्त्र, जाकों न्यायशास्त्रभी कहतेहैं और धर्मशास्त्र, ज्योति-

षशास्त्र, सगीतशास्त्र वैद्यकशास्त्र जाको आयुर्वेदभी कहतेहैं और कर्मकाण्ड इन सवनका व्याख्यान कृपाकरिके वर्णन करो ॥

अनाम उवाच ।

हे सुरुचे ! सवका वर्णन करताहूं सावधान होके श्रवण करो हे प्यारा ! सांख्यशास्त्रमें तत्त्वनका वर्णन कियाहै सो केई महायोगियोंने तो च्यारतत्त्वका शरीर मानाहै, किसीनें पाचका, कोईने सातका, नोका, किसीनें पंदरह सतरहका, किसीनें तेईस चौवीसका, किसीनें पचीस अट्ठाईसका मानाहै सो हे प्यारा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गध ये पाच तन्मात्राहै । पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश ये पाच तत्त्वहैं श्रवण, त्वचा, नेत्र, रसना, नासिका, ये पाच ज्ञानेन्द्रियहै, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ, ये पाच कर्मेन्द्रिय है। मन बुद्धि, चित्त, अहकार, ये च्यार अन्तःकरण है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ये च्यार उपविकारहैं । रज, तम, सत येतीन गुणहै । सव मिलके इकतीस होतेहैं और महत्तत्त्व प्रकृति पुरुष जाको जीवात्मा कहतेहै ये चौतीस हुये और पैतीसवां वो सत्तास्वरूप परमात्मा जामें ये सव प्रकास होरहेहैं वो अवाच्य अनाम है। सो हे प्यारा ! ये सांख्यका हिसाव योगकी सिद्धताके समय योगीकों सव प्रत्यक्ष होजाताहै, जव की जिज्ञासू सद्गुरूका संग पाके उनके उपदेशसैं

योगमार्ग होके अपनी आत्माको परमात्मामें लय करताहै याहीका नाम योगहै सो योगीनेही स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीरोंके सब तत्त्व निर्णय कियेहैं सो हे प्यारा! सांख्यशास्त्र और योगशास्त्र दोनोंही एकहीहै जैसें वैद्यकग्रंथसे कोई रस वणानेकी क्रिया पढले और वाके गुण दोषभी याद करले और क्रिया करिके किसी गुरुसों रस वनाना नहीं सीखा और वरतावसे नहीं लाया तो केवल वचनसें कथन करिके कहना सो वृथाहै, ऐसेंही योगमार्ग सिद्ध हुये-विना सांख्यका कथनमात्र वृथाहै जब योगाभ्याससें योगी अजर अमर निर्वाणपदको प्राप्त होताहै तब सब गुप्तस्थान प्रगट होजातेहैं और स्थूल सूक्ष्म कारण तीनो शरीरोंको देखताहै । स्थूलके सब स्थान देखके सूक्ष्मके सब स्थान देखताहै । इन दोनू शरीरनकी वृत्ति गुणनकों कारणमें लय करताहै । इसीका नाम सांख्यज्ञान है योगसें-हीं सांख्यज्ञान होताहै और सांख्यसे योग होताहै । जैसें सद्गुरु वचनकी सैन करिके योगमार्ग वतातेहै, वा वचनके वलसे अदेख भूमिनकों जाताहै सो सद्गुरुके वचन ज्ञान जो सांख्यहै ताकरिके योग सिद्ध हुवा, याहीप्रकार गी-तामें कह्योहै ।

श्लोक ॥ यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ॥
एकं सांख्यं च योग च य पश्यति स पश्यति ॥ इति ॥

सो योगी जो परमपुरुष विद्वान् पण्डितहैं सो सब भेद जानतेहैं, अयोगी केवल वचनविलासका आनन्द करलो तत्त्वकों नहीं पहुचता योगाभ्याससैंही पांचों तत्त्वनसैं और गुण वृत्तिनसैं अलग होताहै जब सब तत्त्वनका ज्ञान आपही होजाताहै और जो पहिलै वचन करिकै ज्ञानहै सोभी योगाभ्याससैंही सिद्ध होवैगा क्योंकि विचारसे कर्म सिद्ध होताहै और कर्मसैं विचार सिद्ध होताहै जबतक योगाभ्यास करिकै निवृत्ति जो समाधिदशाहै वो सिद्ध नहीं होती तबतक गुण वृत्तिनमैंही फसा रहताहै सो सांख्ययोग दो नहीं एकहीहै योगियोनैंही सांख्यका कथन कियाहै और हे प्यारा ! गीतामैंभी मैंनैं योगकोही श्रेष्ठ कह्याहै ।

श्लोक ॥ तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपिमतोऽधिकः ॥
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥ इति ॥

सो योगके आठ अंगहै यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८, और ग्यारह विक्षेपशक्तिहैं आलस्य १, व्याधि २, प्रमाद ३, संशय ४, दौर्मनस्य ५, काहा अनेक गुण वृत्तिन करिकै रोंधागया मन अश्रद्धा ६, चित्तअनवस्थित ७, भ्रम ८, भ्रान्ती ९, त्रिविधक्लेश १०, काहा अधिभूत, अधिदैव, अध्यात्म और अजोगविषयका लोलुपता ११, इन ग्यारह विक्षेपसैं अभ्यासके समय सावधान रहै।

अथ वेदान्तशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम् ।

हे प्यारा! वेदान्तनामभी साख्यकाही है क्योंकि माया ब्रह्मका जो विचारहै सोई वेदान्तहै सो मायाको अनित्य कहके ब्रह्मको नित्य कह्या याहीका नाम वेदान्तहै और ब्रह्महीको माया कह्या कहा सब दृश्यमात्र ब्रह्मका स्वरूपहै और दृश्यमात्र सबका अत्यन्त अभाव कह्या जहा सब दृश्यका अभाव होताहै सो ब्रह्महै । हे प्यारा! ये सब सिद्धान्त योगकरिकेही सिद्ध होतेहै विना योग सिद्ध हुये तत्त्वका वेत्ता नही होना केवल वचनसै ब्रह्म बनतेहै वे वाचक ब्रह्मज्ञानी है। क्षर, अक्षर, निहअक्षर, ये तीनहै । क्षरनाम शरीरकाहै, अक्षरनाम तुरीये प्रकाशकाहै और निहअक्षर तुरीयातीतका नामहै और मायामैं शामिल और मायासैं अलग ये दोनू योगकरिकेही सिद्ध होतेहैं । योगी समाधि दशामै सबैसै अलगहै उत्थानदशामै सबसैं शामिलहै वेदान्तशास्त्र जो है सो योगीकी सिद्धअवस्थाका रहस्यहै जब योगीका योगकर्म सिद्ध होगया तब समाधि दशाकौ प्राप्तभया वहाँ एकोह कलनाहू नहीरही सर्वातीत अवाच्यपदकों प्राप्त होगया।वहा अत्यन्त दृश्यका अभाव होजाताहै और जब योगी उत्थानदशाकों प्राप्त भया तब वाहीसत्तास्वरूपसै शरीररूप ब्रह्माण्डकौ धारण किया तब योगी दृश्यमात्रको अपनाही स्वरूप देखताहै सो उसका देखना

और शुद्ध सतो गुणका वर्ताव जोहै और योगीका अन्तः करणका विचार जोहै वाहीका नाम वेदान्तहै क्यौंकि योगी समाधि उत्थान दोनूंनका ज्ञाता होताहै।सवका अन्तसमाधिदशाहै और सवमैं शामिल उत्थानदशा है सो महायोगीकी कोईकालम उत्थान समाधि एक होजातीहै । जैसें वालक खेलता २ सुषुप्तिमै सोजाताहै ऐसें जानो सो परमयोगीकी निरहंकार वालवत् क्रीडा गुणातीत पदकी रहजातीहै जवतक जीवात्माके अज्ञानका आवरण छारह्याहै तवतक जीवसज्ञा है और जव योगाभ्याससै आवरण दूर होता है तव ज्ञानस्वरूप ईश्वरहै और परमेश्वर वोहै जो सवकुछ गुप्त प्रगटहै । हे प्यारा कुछकालमैं योगकी सिद्धतासै आपमै स्वयही ज्ञान होजाताहै सो गीतामेंभी मैंनें ऐसे ही कह्याहै ॥

श्लोक ॥ न हिज्ञानेनसदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धिकालेनात्मानविंदति ॥ इति ॥

प्रश्न ॥ हे महाप्रभु ये वाचक ब्रह्मज्ञानी यो कहतेहै कि केवल सद्शास्त्रनके विचार मनन ज्ञानके अभ्यास करनेंसे निर्वासना होताहै, योग समाधिसैं निर्वासना नहीं होता जैसै एक वहुरूपियानै राजा रिझानेके वास्ते समाधि लगाना साधा जव उसकी समाधि लगगई तव राजा वाकी महिमा सुणकर दर्शन करनेको आया जव वाकी समाधि जगी तव

बहुरूपियाकी बोली बोलके राजाके सामनें क्रीडा करनेलगा सो जा वासना करिके वो समाधिमैं लय हुवाथा सोई प्रगट होगई सो योग समाधि करिके वासना नष्ट नही होती सद्शास्त्रनके ज्ञान विचारके अभ्याससै नष्ट होतीहै सो हे स्वामी! या दृष्टान्तका तात्पर्य कृपाकरिके कहो ।

उत्तर ॥ हे प्यारा ! ऐसा वचन कहना अनुचितहै ये अज्ञानी आत्मज्ञानसैं रहित बाह्यविद्या पढके शास्त्र ग्रथनके वचन सीखके वाचक ज्ञानियोंने अपनी सिद्धताके वास्ते दृष्टान्त बनालियाहै । हे प्यारा! समाधि दशामै वासना कहां रहती है रज तमकी भोगवासना तो समाधिसैं पहिलैंही सात्त्विक गुणकी वृद्धितामैं नाश होजातीहैं और प्राणायाम जब सिद्ध होताहै तब वासना नष्ट होतीहै और वासना जब नष्ट होवैगी तब प्राणायाम सिद्ध होवैगा प्राणायामके प्रभावसैं योगी गुणातीत प्रकाश स्वरूप तुरीया है और तुरीयातीतका नाम समाधिहै, तुरीया जो प्रकाशरूप अनन्तसिद्धि करिके प्रकाशित ब्रह्मानद है ताके बीचमैं योगी मग्न होजाताहै । और तुरीयातीत जो समाधिहै वहातो एकोहकलनाहूं नहीं रहती याने आपाभी नहींहैं, सर्वातीतपद जो अवाच्य है सो है । हे प्यारा! येदृष्टान्त तो नकली समाधिवाले दम्भतासे छल करिके पाखड रोपलेतेहैं उनकाहै, सो जैसे

ये नकली वाचक ज्ञानी वचनकरिकै ब्रह्म वननेवाले हैं ऐसाही इन्होंने दृष्टान्त दियाहै क्योंकि इनकी बुद्धिमैं गूढ आशय प्रगट नही होतेहै ये वेदान्तके वचन सीखके वैखरीके द्वारा ब्रह्म वनतेहैं ब्रह्मतो तव होवैगा जव योगाभ्यास करिकै ब्रह्मरन्ध्रके पार जावैगा, षट्चक्रनमै तो जीवरूपहीहै, वेदान्त शास्त्र जोहै तामै योगीकी उत्थानदशा जो जाग्रतहै वाकी रहस्यका वर्णन योगीनैंही कह्याहै ये वाचकज्ञानी विना साधन सजमके वचनसै ब्रह्म वनके मायाके रस भोगनेमै लोलुप है। रजोगुणियोके रिझानेवाले आलसी शरीरके पालनेवाले रस खाखाके शरीरकी चमक दमक दिखातेहै परंन्तु वहुतसे मनुष्य वाह्य कर्मी तपस्वीनसै ये श्रेष्ठहैं जे सद्शास्त्रनके विचार करनेवाले॥ शुद्ध आचरण रखतेहे और जैसें वहुतसी उपासनाहै ऐसे ही येभी एक उपासनाहे जो आपेकौं ब्रह्म मानतेहे सो वसिष्ठादि कई ऋषिमुनियोंनै इसका कथन कियाहै। और हे प्यारा! कलियुग जो कपटहै तामैं वेदमार्ग नष्ट होजाताहै यानै सवकौं वेधनेवाला जो मार्गहै सोई वेदमार्गहै। सो प्रथम तो वेदकी आदिमै जो आज्ञा वर्णन करीहैं उनकौं धारण करैं और शुभकर्मनसै अशुभकर्मनको वेधै याने त्यागै पश्चात् वेदके मध्यमै जो आज्ञा कहीहै तिनको धारण करै और शुभकर्मन करिके अन्त.करणकी शुद्धीके अर्थ उपासना ईश्वर सद्गुरुकी धारण करै उपरात वेदके

अन्तमैं जो आज्ञा वर्णन करीहै उनका नाम वेदान्तहै अर्थात् वेदके अन्तमै जो है सोई वेदान्तहै जब शुभकर्मनके प्रभावसै शुद्ध अन्तःकरणसैं ईश्वर सद्गुरुकी उपासनाके बलसैं योग जो प्राणायाम धारणा ध्यानके प्रभावसैं चारू तत्त्वनको और अन्त.करणकी सब वृत्तिनकों वेधके यानैं छेदके पंचवातत्त्व जो खं ब्रह्महै तामै महायोगी लय होताहै जिसको शून्यसमाधि कहतेहैं वहां राज्ययोग सिद्ध होताहै तापीछे महायोगी परमसमाधिमै लय होजाताहै जाको महाशून्य,परमाकाश,अवाच्य, अनाम, कहतेहैं सो वेदके अन्तमै जो कथन है ताहीका नाम वेदान्तहै । ये मनमुखी मनुष्य पाहिलै वेदके आदि मध्यमैं जो आज्ञाहैं तिनकोंतो धारण नहीं करते और वेदके अन्तमै जो वेदान्त योगीकी सिद्ध अवस्थाका ज्ञानहै ताकौं पढके वेदान्ती कहलातेहै ऐसे वाचक ज्ञानी शुभकर्म शुद्धवृत्तीनसै हीन होतहैं और उनके मलिन आचरण वनेहीं रहतेहैं और वहुतसे तरुण अवस्थामै वाह्य वैराग्यकों धारण करिकै मनमुखी ब्रह्म वनेफिरतेहै सो हे प्यारा! ऐसे पाखडी वेदमार्गसै विपरीत भये और ससारी मनुष्य इनके सगमै शुभकर्म शुभ आचरणोंसै हीन होके आपेको कल्पित ब्रह्म मानके पाप करनेमै अभय होगये और सूमता धारण करके धन स्त्रीनके गुलाम,शिश्नोदरके दास,

अभिमानी, दयाहीन होगये सो हे प्यारा! तुलसीदासनैंभी ऐसे पुरुषोंके मामलेमैं कह्याहै ॥

दोहा—ब्रह्मज्ञान बिन नार नर, कहै न दूसर बात ।
कौडीलागे लोभ लल, करैं विप्र गुरु घात ॥इति॥

अथ मंत्रशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम् ।

हे प्यारा! मन्त्रशास्त्र जो हैं सो भी एक योगाभ्यासका मार्गहै आसनपै एकान्त बैठके प्रयोग अनुष्ठान करैं कहा मत्र जप २ के मनकी वृत्तिनकों रोकनेंकी जुक्त है सो जप चारप्रकारसें होताहै मुखसै, श्वाससें, मनसै, श्रुतिसें, सो वर्णात्मक जप तो मुखसै मन श्वाससें होताहै और ध्वन्यात्मक श्रुतीसै होताहै जो मुखसै जप करतेहै वे मनुष्य हैं और जो श्वास मनसै करतेहै वे देवताहै और जो शब्दमै श्रुति लगाके ज्योतिमै लय रहतेहै वे हसस्वरूप है, सो मत्रशास्त्री योगी अनुष्ठान करिके जगत्के अनुचित विषयजालसें मनका उच्चाटन करताहै पीछे नासाग्रध्यान-के वलसें स्थंभन करताहै कहा स्थिर करता है और मनकों वशीकरण करताहै शब्दयोग करिके मोहन करताहै और प्राणायामकी अग्निमें पापपुरुषका मरण करताहै और भूमि जो अन्तःकरणहै ताको शुद्ध करिके प्राणप्रतिष्ठा करताहै अर्थात् प्राणायाम करिके भीतर—जो षट्चक्रहै सो भैरवीं चक्रहै उनहीका नाम त्रिकोण, चतुष्कोण, षट्कोण, अष्ट-

द्वादश, षोडशकोंण आदि नाम जन्त्रहैं और महाशक्ति जो तुरीयाप्रदीपहै सो सबका बीजस्वरूपहै वो कोई चक्रमैं तो क्लीं शब्द बीजहै,कोईमै ओं शब्द करिके बीजहै, किसी मै ह्रीं शब्द बीजहै,किसी चक्रजन्त्रमे सोह शब्द बीजहै,कोई चक्रमें हूं २ शब्द बीजहै और सबका महाबीज वो महा प्रकाशस्वरूप तुरीयाशक्ति है और जो वामै लयरहताहै सो शिव महेश्वर महायोगी है और वोही तुरीय स्वरूप ब्रह्महै सो शक्ति नाम करिके तो स्त्रीवाचक है बल नाम करिके नपुंसकवाचक है और पराक्रम नाम करिके पुल्लिगवाचक है त्रिधा वचन करिके एकही स्वरूपहै और बाहर जो मंत्रनकरिके सिद्धि होतीहै सो याका विश्वास करिके होतीहैं। जैसा याका विश्वासहै ऐसा वो सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् पूरण कर्ता है ॥

अथ मीमांसा शास्त्रका व्याख्यान वर्णनम् ।

हे प्यारा! मीमासा शास्त्रमैं यज्ञकर्म प्रधान प्रयोजनहै सो सब कर्मनकी सिद्धिके अर्थ है बिना यज्ञ यालोक परलोकका कोई कार्य सिद्ध नहीं होता सब कर्मनके आदिमें यज्ञही प्रधानहैं सो यज्ञका कथन मैंने पूर्व तीसरे प्रकाशमैं वर्णन किया है और सब यज्ञनमैं लघु और सबनमें मुख्य जो यज्ञहै सो सुण,योगी जो ब्राह्मण है सो नित्य यज्ञ करनेकी जो अग्निहे ताय भुजनै न देवै सो नित्य यज्ञ करनेकी

कौनसी अग्निहै, ये जो नाभिपै जठरा होकर विराजैहै सोईहै सो इसका भुजना कहाहै अजुक्त भोजनसै मन्दाग्नि होजातीहै सो जुक्त भोजन करै जासो ये अग्नि जगीहुई रहै यासोही योग सिद्ध होताहै ऋग्वेदमै ऐसे लिखाहै "यज्ञोभवनस्यनाभी"इति। सो नाभियज्ञवेदीमैं नित्य भोजन करना येही हव्य आहुती है और या वाहरकी अग्निमै जो सव विश्वका काष्ठ अन्न फल रस हवन होजाय तोभी ये तृप्त नहीं होता क्योकि तेजतत्वसै पृथ्वी जलकी उत्पत्ति है सो तेज दोनोको भस्म करनेवाला है। इति॥

अथ न्यायतर्कशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

न्यायशास्त्र जो है सो केवल वाग्यविलासहै याके कथनमै नै तो कोई सङ्गमहै, नैं अभ्यासहै, नै भक्तिहै, नै आत्मिकज्ञानहै,केवल वचनका वादानुवाद है। हे प्यारा चारूं आश्रमोको साधताहुवा योगाभ्यास करिके अपनी आत्माको परमात्मामे लय करे याहीका नाम न्यायहै। और यह कार्य मनकी चचलतासैं नै होसकै और चौरासीकी अनेक योनियोमै जीवात्मा क्लेश पावै याहीका नाम अन्यायहै सब उपाधी त्यागकै अपने स्वरूपमै स्थित होना याहीका नाम न्यायहै। और नैयायिक कहतेहै कि सृष्टि तत्त्वोके सूक्ष्म प्रमाणोसें उपजती है, प्रलयमै स्थूलतत्त्व प्रलय होतेहै सो ये कहना इनका ठीक नहीं परमाणुतो

दो तत्त्वनके होतेहैं पृथ्वीके अरु जलके, अग्नि अरु वायुके क्या परमाणुहैं एक अनुमानताहै कि ज्यादाहै कमतीहै और अग्निकाभी परमाणु पृथ्वीके संग अनुभव होताहै और वायु आकाशके तो कुछ परमाणुही नहीं और आकाशका तो कहनाही कहा वोतो निराकारहै और ये यों कहतेहैं कि प्रलयमैं स्थूलतत्त्व नाश होतेहैं सो वात नहीं प्रलय महाप्रलयमैं स्थूल सूक्ष्म सब कारणमैं लय होजातेहैं प्रलय महाप्रलयमें इतना भेदहै कि प्रलयमें स्वयंभ्रू औज़ूं जाग आताहै महाप्रलयमैं लय होजाताहै जागने सोनेसे रहित होजाताहै सो हे प्यारा! मैनें तुमकों पहलेही कहदियाहै कि ये न्यायतर्कशास्त्र फक्त वचनविनोदके अर्थ है इसके पढनेवाले श्वानकपाली वातूनी हैं इसीका नाम न्यायहै जामैं परमेश्वरकी प्राप्ति होवे और स्मृतिभी ऐसे कहतीहैं "सर्वेषामपि चैतेषामात्मज्ञान परं स्मृतम्" इति सर्वज्ञानोमै आत्मज्ञानसैं परे और कोई श्रेष्ठ नहींहैं सो योग करिकै सिद्ध है ॥

अथ धर्मशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

हेप्यारा! धर्मशास्त्र जोहै सो प्रवृत्ति निवृत्तिके अर्थ है सो इसजगह याका व्याख्यान वर्णन नहीं किया क्योंकि चौथे प्रकाशमै चारवर्ण चारआश्रमनके धर्म वर्णन कियेहै और वारहवा प्रकाशमै राजानकों नरनारीनकों धर्म

कर्मकी शिक्षा वर्णनकिजावैगी और हे प्यारा! सव धर्मनमै श्रेष्ठ सवका सार धर्म कहताहू सो श्रवण करो । सव धर्मनमै मुख्य धर्म येहै कि माता पिता गुरुको प्रसन्न रखना याने इनकी आज्ञानुकूल रहना पितासै दशगुणां अधिक माताका अधिकारहै और आज्ञा पिताकी मानना योग्यहै और माता पिता दोनूनसै अनन्तगुणा गुरूका अधिकारहै क्योंकि माता पिता तो स्वार्थी है अपना कर्म सिखाके भवसागरमे फसातेहैं और गुरू पर मार्थीहै जीवात्माको सव उपाधीनसैं सुलझाके निजरूपको प्राप्त करतेहै इनतीनोको प्रसन्न रखना ये सव धर्मनका मूलहै और सत्य वचन वोलना येभी परम धर्महै ऐसा लिखाहै कि " नहि सत्यात्परो धर्म " इति। झूठ वोलनेसैं परे और कोई पाप नहींहै ऐसा कह्याहै "नानृतात् पातकपरमइति"।सव प्राणीमात्रसै निर्वैर रहना, भूखे प्यासेपै दया करना, कोमल वचन सत्यताके साथ वोलना, अपने उद्यमके कर्म करके अच्छे श्रेष्ठ जनोका सग करना, परमेश्वरका भजन करना, येही परमधर्महै। इति ॥

अथ ज्योतिःशास्त्रका व्याख्यानवर्णनम् ।

हे प्यारा! ज्योतिपशास्त्र जो है ताय योगीही जानतेहैं, क्यौकि चद्रमा सूर्य जोहै सो कालकी सूचना करनेवाले हैं कहा वारहमास छ. ऋतुनकी सूचना कराते है, छ· ऋतु येहैं फाल्गुन अर्धसैं लेके वैशाख अर्धतक वसन्तऋतु १

और वैशाख अर्धसें आपाढ अर्धतक ग्रीष्महै २, और आपाढ अर्धसे अर्धभाद्रपदतक वर्षाऋतु ३, और अर्ध भाद्रपदसैं अर्ध कार्तिक तक शरदऋतु है ४, और कार्तिक अर्धसैं पौष अर्धतक हिमहै ५, और अर्ध पौषसै फाल्गुन अर्धतक शिशिर ऋतुहै ६,सो सब ऋतु चंद्र सूर्य करिकै है, चद्र सूर्यसैं योगीका बहुतसा काम पडताहै,सूर्यमै अग्नितत्त्व विशेषहै, जलतत्त्व न्यूनहै और चद्रमामै जलतत्त्व अधिकहै, अग्नितत्त्व न्यूनहै, सूर्य एक वर्षमें उत्तर दक्षिण फिरताहै,चद्रमा एकमासमैंही फिरजाताहै और तारे कमावेशी करिके फिरतेहैं इनकी चाल ऋपिलोगोंनै ग्रहलाघव ग्रथमें बाधीहै सो गणित तो सत्यहै ग्रहनकी फलस्तुति ठीक नहीहै, इन चद्र सूर्यमैं रोशनी तुरीयाज्योतिस्वरूपकी है और बोधरूप जाग्रत सूर्यहै और स्वप्नरूप निशा चंद्रमा है और बारहराशि, नो ग्रह, सत्ताईस नक्षत्र हैं सो ये सब दिशारूप है, इनके गुण दोषके फल योगी जानतेहैं, दश इन्द्रिय मन बुद्धि इनकी जे वृत्तियाहै तेई राशिहैं और महाशक्तिसैं तीनशक्ति जो हुई रज, तम, सत, सो परस्पर तिनान्तिनो होगई सोई नो ग्रह हैं, इन नोनमै तीन तो पापिष्ठग्रह हैं और तीन नींचहै । तीन उच्चहै,पीछे प्रकृतिके प्रभावसै नो त्रिधारूप होके सत्ताईस होगये इनहीका नाम सत्ताईस नक्षत्रहैं सो ये सब ॐ जो प्रकाशरूप तुरीयाहैं ताका प्रभाव है यही यज्ञोपवीत सत्ताईसतारनकें

योगी जो ब्राह्मणहैं सो धारण करतेहे ॐ जो ब्रह्मगॉठहे तासैं सबका अग्र मिल रह्याहे सो योगी ज्योतिषीहैं जो सजम करिके श्रुतिका ज्योति सा रूप भया तामै स्थित है, वहासे भूत भविष्यत् वर्तमानकाल सव ग्रह नक्षत्रनकों देखते रहतेहे जे ग्रह कारजकों विगाड़तेहे उनको लय करते रहतेहे और इनकी सैल करतेहैं कौतुकीहैं सो योगी जो ज्योतिरूप होके ज्योतिषीहैं वो सव दिशा ग्रहनका वेत्ता होताहे और सव दिशानका गुण दोषनकों निवर्त करता रहताहे वोही सच्चा ज्योतिषीहे ॥

प्रश्न ॥ हे महाराज ! ये सूर्य कहां छिपजाताहे ?

उत्तर॥ हे प्यारा ! ज्योतिही अपना अशको खैच लेतीहै, देखो तुम्हारे शरीरके भीतर जव चैतन्य जाग्रत अवस्थामै अन्तवाहक होजाताहे तव सव जाग्रतकी सृष्टिशून्य होजातीहै और जाग्रत् स्वप्न दोनू सुषुप्तिमैं लय होजातेहैं, पुन. जाग्रत् अवस्था होतीहै तव चैतन्यरूप सूर्य उदय होताहै और पृथ्वी जो देहहै वाका सग पातेंही सर्वत्र प्रकाश फैलजाताहे यानैं जाग्रत् अवस्थाके सवकर्मनकी वृत्ति उदय होजातीहै ये गूढताके वचन तवहीं तुम जानोंगे जव योगाभ्यास करिके आपेमे सवकुछ देखोंगे, पहिलैं ये वात समझमैं नही आती जैसे विवाहकरीहुईकी वात कारी नही जानैं क्योंकि विवाहकरीहुईका आशय वचनमै नही आसके तो कारी कैसै जानै प्राप्तीसैं साक्षात्कार होताहे।

अथ संगीतशास्त्रका व्याख्यानं वर्णनम् ।

हे प्यारा ! संगीत शास्त्र शारीरिक विषयानंदकों और आत्मिक प्रेम भजनानन्दकों उभयको उपजानेवाला है सो आत्मिक जनौंको तो आत्मिक गानाहीं योग्यहै और आत्मिक गानाही श्रवण करना योग्यहै, सगीतशास्त्रमैं सातस्वर तीनग्राम होतहैं । सो सातस्वर इक्कीस होजातेहैं, सात चढेहुये उदात्त ,सात उतरेहुये अनुदात्त, सात वरावर मध्यमभावके और सात स्वर येहैं,सा रे ग म प ध नी पीछै चढीहुई सा स्वरसैं उतर आतेहै, सा नी ध प म ग रे सा और सा स्वर नाभिस अलापा जाताहे १, रे नासिकासे २, ग कपोलसै ३, म हृदयसै ४, प गलासै ५, ध कपाल सै ६,नी तालूसे ७, इन्हीं सातस्वर तीनग्रामोसे छ॰ राग और तीस रागनी गाईजातीहे, छ रागनके नाम सुणों राग भैरव शिवस्वरूप है गानेसे कोल्हू चलताहे १, राग हिन्डोल ब्रह्मास्वरूप है गानेसे हिंडोला हलताहे २, राग मालकोश विष्णुस्वरूप है गानेसैं सूकावन हरा होजाताहे ३, श्रीराग चद्रमास्वरूप है गानेसै शान्ति उपजैहै ४, राग दीपक भानुका स्वरूपहे गानेसें दीपक जलतेहैं ५, मेघ राग इन्द्रका स्वरूप है गानेसे मेह वर्षताहै६,और एक २ रागकी पाच २ रागनी हैं भैरव रागकी पाच रागनींनके नाम येहे भैरवी १, गुर्जरी २, टोडी ३, रामकली ४, वडाडी ५, राग

हिन्डोलकी रागनी येहै वसन्ती १, पंचमी २, हिन्डोली ३, ललित ४, मालश्री ५, मालकोश रागकी रागनी येहै वागेस्वरी १, कुकव २, पर्य्यंक ३, शोभनी ४, खमावती ५, श्रीरागकी रागनी येह मालवी १, वावणी २, गौरी ३, पूर्वी ४, गौराश्री ५, दीपक रागकी रागनी येहैं प्रदीपका १, धनाश्री २, जयतश्री ३, पलासिका ४, नाटिका ५। मेघरागकी रागनी येहैं मलारी १, सोरठ २, सारग ३, वडहसिका ४, मध्यमा ५, राग रागनीनके तीन अग हैं। अंश, न्यास, ग्रह, अश रागका जीवहै, तानके अन्तमै विश्राम न्यासहै,प्रारम्भहै सो ग्रह कहलाता है और देशान्तरकी ध्वनि जो है उनकेभी नाम धरलियेहै जैसै देश, माड, झजोटी, काफी, आदि जानो और नृत्य दोप्रकारका है तान्डव, लास्य, तान्डव पुरुषनृत्य होताहै, लास्य स्त्रीनृत्य है, ताल पाचहै चौताला १, तिताला २, धीमातिताला ३, आडातिताला ४, इकताला ५। वाजा साडैतीन हैं फूकसै, तारसै, खालसैं, आधेमै मजीरा, झाज, घूंघरू, आदि जानो। इति।

अथ वैद्यकशास्त्रका व्याख्यानवर्णनम्।

हे प्यारा! वैद्यकशास्त्र जो आयुर्वेद कहलाताहै सो जोगीके अरु भोगीके दोनूनके काम आताहै, शरीरकी आरोग्यताके निमित्त दोनूनको सेवन करणा होताहै,शरीर

करना उचित नही वे तो जीवनमुक्त है और देह सहित विदेहहैं, उनकी गति वेही जानते है और जाको वे जनादे वैजान और उनकों अन्तमे देह छोडनेका कुछ शोच फिकर नहींहे स्वतः सिद्ध समय पाके चाहे जहा छूटजावें क्योंकि वे तो जीवतेही दोनूं देहनसें अलग हैं ब्रह्मानन्दमें मग्न निर्वाण पदमैं स्थितहै । हे प्यारा देहके जन्म मरणतो योगी अयोगीके एकसेही हैं देह प्राण एकसीही चेष्टा करते है परमेश्वरने ऐसाही कायदा रखाहै परन्तु अयोगी जव तक जीवै तवतक देहादि शुभाशुभ वृत्तिनमैंही फसा रहताहे अन्तमें जा वृत्तिका याकों सग रहे वाके साथ कारणरूप प्रकृतिमें मिलके उन्ही संस्कारोंके लियें जन्मातर पाताहे और योगी कई जन्ममें सिद्ध योगको प्राप्त होताहै जव उनके शरीरका अन्त आजाताहे । तव शरीर प्राण स्वतःचाहे जैसी चेष्टा करो वेतो अपने निजरूपमे लीन होजातेहें । सो वे क्या जीतें क्या मरतैं निजरूपहीमे लीन रहतेहै ॥ इति ॥

अथ च्यारप्रकारके भक्तनका वर्णन ।

मंगल उवाच ।

हे दीनवन्धु आपके भक्त ससारमें के प्रकारके हातहै सा कृपा करिके कहो ॥

अनाम उवाच।

हे प्यारा च्यारप्रकारके होतेहै दु:ख निवारणके वास्ते जो भक्ति करतेहैं वे आर्त कहलातेहैं १, अपना अर्थ सिद्ध करनेवाले अर्थार्थी नाम करिके है २, और जे मेरे कह्येहुये वेद शास्त्र महापुरुषनके ग्रन्थपुराण है उनकी आज्ञानुकूल रहते हैं वे जिज्ञासु कहलातेहैं उनके अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, च्यारूही सिद्धहोतेहै ३, और जे वेदशास्त्रनके वेत्ता ज्ञानवांन है ओर सव आज्ञानकों धारण करनेवाले मेरे भक्तहै। वे विद्यावान ज्ञानी भक्तहैं ४, और सव ज्ञानीनमें ज्ञानी वेहै जे योगमार्ग करिके जीवात्माकों परमात्मामें लय करतेहै वे मेरेही स्वरूप है क्योंकि उनकी आत्मा मोमें लय होगई और जे मनुष्य कैसाही उपराम पाके मेरे सरणै होते है उनका मै भवदु ख निवारण करताहू मेरा भक्तका नाश कदाचित् नही अनेकजन्मनकी सिद्धी करके मोहीमें मिलजा तेहैं मेरा जनकों कोईभी गजन नही करसकैहे भूत,प्रेत, पिशाच, जक्ष,ग्रह आदि कोईभी नही सता सकैहै जेसै राजाका प्याराकी सव ओदहदार खातर करतेहैं ऐसे जानो और ससारमै जितने भेषधारीहै वे सव सद्गुरुकी फोजहै इनसैभी जगत्का कल्याण होताहै और धर्मका पालन होताहै इनके द्वारा मेरी कथा कीर्तन वास्यविलास ज्ञान-चरचा होतीहै और वहुतसे जनोका कल्याण होताहै और

इन भेषधारियोमैंही सब अधिकारके पुरुष होतेहे। हे प्यारा! संसारमैं जो अजोग कर्मभोग वर्त्ततेहै वे असाधू कहलातेहैं और जे ब्रह्मचर्य अथवा गृहस्थाश्रममै जुक्त कर्म भोगनके साथ तन मन प्राण मेरे मिलनैंके अर्थ साधतैहै वे साधूहै और जे वानप्रस्थ अवस्था पाके भोगनसैं अरुचि होके योगमार्गके अभ्यासमै विशेष आरूढ होतैहैं वे हसरूप सन्त है और जे चौथा आश्रम पाके तनमनसै सन्यास होके योगमार्गसैं जीवात्माकों परमात्मामैं लय करतेहैं वे परमहस परमसन्त महायोगेश्वर मेरेही स्वरूप है वे परमयोगी याही भेषमैं अभेष होके निरपेक्ष गुप्तस्वरूप होकर रहतेहै सो प्रवृत्ति निवत्ति सब भेषनके शहनशा. महाचक्रवर्ती परमभूप हैं जब उनकी मौज होतीहै तब प्रगट होतेहैं या कोई अत्यन्त प्रेमीजनके निमित्त प्रगट होतेहै वेही मेरे सगुणस्वरूप नित्य अवतार है

अथ परमेश्वर कर्ताहै कि अकर्ता ताका निर्णय वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे स्वामी! श्रावक मतवाले तो यों दृश्यरूप ब्रह्माण्डका कोई कर्ता नहीं बतातेहै कहतेहै कि सब सृष्टि स्वत.सिद्ध आदि अन्तसैं रहित सदासैं ऐसीहीहै और बहुतसे मजहब यहूदी महोम्मदी ईसाई कर्ता मुख्य रखतेहै और वर्णाश्र-

मी धर्मवाले परमेश्वरको कर्ता अकर्ता दोनूं रीतिसे मान तेहैं सो इनका तात्पर्य कृपाकरिके वर्णन करो।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! परमेश्वरकी अपार महिमाहै जो कोई जाभाव नासैं मानताहै वैसाही दरसैहै जैसै दर्पनमें अपनेमुखकी चेष्टा करै वैसीही दरशेहे ये श्रावक धर्मवाले यो कहतेहै कि शुभाशुभ जो जीव कर्म कर्ताहै ताका फल जीवही भोगताहै और जीवही भुगाताहै कर्ता भोगता जीवहीहै तो इन लोगोंनें जीवही कर्ता मानाहै जीवही खोटे कर्मनके संग दु.ख पाताहै जीवही उत्तम कर्मनके सग सुख पाताहै। और जीवही सव कर्मनकों त्यागके योगमार्गहोके अपनें निज स्वरूपको प्राप्त होताहै तव अरिहन्त दशा है और जीवही समाधि सिद्धमें सिद्धस्वरूपहै और कोई दूसरा कर्ता नही जो कर्ता होता तो अनुचित कर्म नहीं करनें देता और अपने धर्म मजहवकी रक्षा करता विगडनै नहीं देता सो कर्ता कोई नही सवकुछ स्वत. सिद्ध है सो इनका येभी कहनां ठीकहै परन्तु जो अकर्ता मानांजाय तो देखो सष्टि कैसी चतुराईसै उत्पन्न होतीह और कैसी रचनासै सुंदर चित्र विचित्र रक्षासहित उदय होतीहै मनुष्य सवसैं सुन्दर और श्रेष्ठ वनायाहै देखो नेत्रनके ऊपर भौं रक्खीहै कि पसीनांका पाणी नै आवैं और पलक वनाईहैं कि धूल तुनका नैं जावैं

कानोंकी वरावर कोई खवर देनेवाले नहीं और नेत्रनकी वरावर कोई रोशनी नहीं सो परमेश्वरनें सवकों दियेहैं और परमेश्वरनें मनुष्य शरीर चौरासीलाख देहनसैं अति श्रेष्ठ आपके मिलनेका निजमन्दिर वनाया और याहीमैं आप सव ऐश्वर्यसहित विराजमान हैं सो ये मनुष्य इन्द्रि-यनके भोगनकी लोलुपताकरिके ऐसे स्वामीकों भूलगये वाल्यावस्था तो अज्ञानतासैं हँस खेलमैं खोई और जव तरुण भये तव स्त्रीके भोग विलासमैं अचेत होगये स्त्रीका भोगही परम सुख दृष्टि आया सो ये मनुष्य तरुणअवस्थामैं मद-नके सुखाभिलाषमैं अन्धहोजातेहैं । यहविचार नहींकरते कि ये आनन्द तो सव जूंणनमैं है मनुष्योंसैंभी ज्यादा वहुतसे जीव विषय भोगतेहैं देखो वहुतसी हिरणीनमैं एक हिरण रहताहै और वहुतसी वकरीनमैं एक वकरा रह-ताहै और भोग करनेंकी उनकों इतनीं वडी सामर्थ्य दीनीहै, कि रातदिन मदान्ध होके पुकाराही करतेहैं । सो हे मनु-ष्यहो तुमारा भोग तो पशुनकी वरावरभी नहीं और स्प-र्शका आनन्द सवके वास्ते एक साही हैं जो तम यो कहो कि हमतो फूलनकी शैयापर अत्तर लगाके दम्पति सोतेहैं सो एस तो वहुतसे मक्खी कीडे, फूलनके वीचमैं सोतेहैं और जव तुम्हारी अपानवायु गवन करतीहै तव पुष्प शयाका सुख भ्रष्ट होजाताहै और जो तुम यों कहो कि हम सिरदार धनवान् साहूकार राजा हैं हम वहुतसे पट्रस

नके अनेकभातिकै व्यजन खातेहै तो देखो अनेकभांतिके व्यजनोमै स्वाद नहींहै अरु हैभी परन्तु स्वाद तो शुद्ध जठराग्निमै है जो जठराग्निशुद्ध नहीहोय तो सब व्यंजन निरस लगतेहैं और जो शुद्ध तीव्र होवै तो लूखी रोटी वेजड़कीमै ऐसा स्वाद आवै तैसा व्यंजनोमैंभी नहीं आवै और जे धनवान् राजा होके शिश्नोदरका ज्यादा भोग भोगतेहै सो ज्यादा भोगनेंसै भी तो अन्त.करण तृप्त नहीं होता भोगनकी तृष्णामें कंगालही रहतेहै और जे मजदूर मजूरी करिके स्त्री भोगतेहं वेभी भोगनसैं कगालही रहतेहै सो क्या राजा क्या रक भोगनकी तृष्णामैं दोनूंही कगाल है। सो हे प्यारा ! ये मनुष्य शरीर कामदेवकेही भोग भोगनेकौ नहीं है रामदेवकाभी ब्रह्मानन्द खोजनां चाहिये मनुष्य शरीर जो सत, तत,(जत) सुमरन, नेकी करने, नाम लेनेंके वास्ते है केवल शिश्नोदरके भोगनकों नहींहै, देखो कामअध दुरासधहै, क्रोध वहरा दाहकहै, लोभ निर्लज्ज नीचहै मोह चावला वेहोशहै, और जे मनुष्य देह पाके भोगनमैंही आसक्तहै और ईश्वरसैं नैतो प्रीति करतेहैं नैं डरतेहं वे मनुष्य नहीं महा पशु हैं धिक्कारहै ऐसे मनुष्यनकौं जो मनुष्य जन्म पाके परमेश्वरसैं प्रीत नही करते नै डरते हैं ऐसे विमुखनको मैं वाहिरका अन्धकारमैं डालताहूं जहा काम क्रोधकी आगमै रातदिन कडवाहटके साथ जलतेहैं और दात पीसते हैं और रोतेहैं कसाईकेसे वकरेहैं

जैसैं वकरा काम मदान्ध होताहै। पीछै कसाई वाका नाश करताहै ऐसैंही जे हरिसैं विमुख है इनकोंभी कालकसाई अचानक आके नाश करताहै। और सव धन धाम राज्य खजाना कुल कुटम्व छोडके चले जातेहैं जा देहीकों मल २ के धौता पूछता था अतर फूलेल लगाके शृगार करताथा सोभी लारै नहीं चली निरजीव देहका जगलमैं वास होजाताहै। और थोडी देरमैंही राख होगई हवासैं वोभी उडगई कहीं खोज नहीं रह्या ये तो ये जानताथा कि इस हवेली, चौंवारा,वारहदरी, कमरा, कोठी, महलमैं रहूगा ये तो थोडेसे दिनमैंही नाच कूदके न जानैं कहा चलागया ये सव मकान इसके धरेही रहे।सो हे प्यारा ये काल वली किसी कोंभी नही छोडता न राजाकों न रककों न पीरको न फकीर को न रसूलकों न पैगम्वरको न देवको न दानवकों न अवतारकों सव देहधारिनका नाश करताहै । जो तू ऐसा शत्रूसै उवरा चाहै तो सन्तसमागम कर उनकी सेवा कर उनकी कृपासै जव तू भक्ति सहित योगमार्गमैं अपना मरना जीवतैंही देखलेगा कि ये मरना है यातैं प्राण गवन करैंगे जव तोकों औजू मरना नहीं पडेगा तैनैं तो जीवतैंहीं अपना मरना देखलिया और तू जीवतेहीं परमेश्वर अजर अमरमैं लय होगया सो वाहीका स्वरूप होगया यही मनुष्य जन्मका फल है और सव पशूनकी तरह विषयनके सग गफलतमैं मरतैंहै सो ऐसैं तो अनन्त जीव मरतेहै।

मनुष्य जन्मका लाभ नहीं हुवा 'और जो तू वहुत कालतक' जीया वडी ऊमरपाई। और अपने धर्मका परमेश्वरके मार्गका खोज नही किया जासैं जीवात्माका कल्याण होता और तू या गृहस्थाश्रमके फन्देमैं आके अनेक आसानकी फासीनमै हारिसैं विमुख होकर ज्यादा जीया तो क्या जीया ऐसे तो कौवा स्याप क्या वहुत नही जीतेहै। "ऐसा तेरा ज्यादा जीना निष्फल है और कुटुम्वके मोहमै आके अनेक क्लेश पाताहै"। सो हे अज्ञानी नर ! तू मनुष्य जन्म पाके परमेश्वरका मार्ग क्योनही खोजता अव वृद्धपणामैं भी रातादिन धन भोगनके सगमै वृथा अजोग क्यो पचता है घणा पसारा वधानेकी तृष्णा तो को हैरान करतीहै। कार्यनिमित्तका पसारामैं सन्तोप करिके एकान्त वैठके हे मित्र अवतो परमेश्वरसै लो लगाके ध्यानकर जासौं कुछ जन्म ! सुधरे।

अथ लक्ष्मीके उभयस्वरूपका वर्णन।

अनाम उवाच।

हे प्यारा ! लक्ष्मीके दो स्वरूप होतेहैं दाहक और शान्त सो पापीनके घरमै तो उसका नाश करनेको वढती हैं। वे अन्यायसौं उसको सचय करतेहैं और वहुतसे मनुष्यनसैं छल करिके दु.ख देके लेतेहै और रात दिन उनको जक नही पडती, उसके वधानेके फिकरमै फॅसके क्लेश

पातेहै ।सबसैं विरोध करतेहैं और शुभ मार्गमें खरच नहीं करते कछ विषयदण्डकी मान बडाईमें खरच करते हैं वाके चक्रमैं पच २ के क्लेश पातेहैं शान्ति नहीं पाते उसहीके आसरे जहरी स्यॉपरूप होके मनुष्य जन्मकी ऊमर खोतेहैं और अन्तमैं सब छोडके चलेजातेहैं सो ये लक्ष्मी जे हरिसैं विमुखहैं उन पापीनकों अग्निसमान है और जे हरिजनहै उनकों शान्तरूपहै विनापरीश्रम सहजके कर्मनमैंही वहुतसी होजातीहैं वासैं सबतरहका आराम पाके संतुष्ट होतेहैं और आप भोगतेहैं और शुभमार्गमें लगातेहैं साधु सन्त श्रेष्ठजनोंकी सेवा करतेहैं और लक्ष्मीका आसरा पाके निर्विघ्न मेरा सुमरन करतेहैं और मेरे मार्गका खोज करतेहैं सतोप दयाके साथ सतुसंगमैं मेरे गुणानुवाद सुणतेहैं सुणातेहैं और श्रद्धासहित दान पुण्य करतेहै और मेरी भक्तियोगमें तत्पर होतेहैं उन जनोंको लक्ष्मी शान्तरूप मोक्ष करनेंवाली है ।

अथजगत्मै च्यार कथाहै तिनका वर्णन करतेहै।

हे प्यारा! जगत्में च्यार कथाहैं अपकथा १, परकथा२, राज्यकथा ३,हरिकथा ४,सो तीन कथानमें तो सब मनुष्य उलझ रहेहैं वृथा अपनां काल खोतेहैं अपकथा तो येहं अपनीं वडाई करतेहैं मैंनें ऐसें किया, वहागया, वो लाया

वहदिया, वहलिया १, पर कथा वोहै वानै क्याकिया, वो ऐसाहै, वो भलाहै, वो बुराहै, वाकी क्या बातहै २, और राज्यकथा वोहै जामै राजाके घरका जिकर कियाजाय वो राजा ऐसाहै,यह राजा ऐसाहै,याके हाथी घोडा वाग महाल बहुतहै वाके रानी वहुतहै, वामैं ऐगुणहै, यामैं ये अवगुणहै ३और चौथी हरिकथा हैं वो हरिजन करतेहै आज कथा ऐसी सुनी, क्या अच्छी वची और आपसमैं कथा वाचतेहै, चरचा करतेहै, प्रसन्न होतेहैं, भजन गातेह सो चौथी कथा बहुत थोडेजन करतेहै और तीन कथानमैं सव नरनारी मलीन होतेहै वृथा काल खोतेहे जो प्रेमीजन है सो सन्तत सुमरण करतेहैं हरवक्त लौ लगाये रहतेहे।

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलमम्वादे सर्वशास्त्रनका च्यारप्रकारके भक्तनका कर्त्ता अकर्त्ताका बोधके हेतु उपदेशका व्याख्यानवर्णनो नाम एकादश प्रकाशः ॥ ११ ॥

अथ जगत्की मूर्खताका वर्णनम्।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! या जगतनै किसीकोभी अच्छा नहीं कह्या ये गुणकों छोडके अवगुण गहताहै देखो रामचद्रके राज्यमै एक धोवी था। वानै अपनी स्त्रीकों पीटके घरमैसै निकाल

पातेहै । सबसैं विरोध करतेहैं और शुभ मार्गमें खरच नहीं करते कछ विषयदण्डकी मान वडाईमें खरच करते हैं वाके चक्रमै पच २ के क्लेश पातेहैं शान्ति नहीं पाते उसहीके आसरे जहरी स्यॉपरूप होके मनुष्य जन्मकी ऊमर खोतहैं और अन्तमैं सब छोडके चलेजातेहै सो ये लक्ष्मी जे हरिसैं विमुखहै उन पापीनकों अग्निसमान हैं और जे हरिजनैंह उनकौं शान्तरूपहे विनापरीश्रम सहजके कर्मनमैंही वहुतसी होजातीहैं वासैं सबतरहका आराम पाके संतुष्ट होतेहै और आप भोगतेहैं और शुभमार्गमें लगातेहैं साधु सन्त श्रेष्ठजनोकी सेवा करतेहैं और लक्ष्मीका आसरा पाके निर्विघ्न मेरा सुमरन करतेहैं और मेरे मार्गका खोज करतेहे संतोष दयाके साथ सत्सगमैं मेरे गुणानुवाद सुणतेहें सुणातेहें और श्रद्धासहित दान पुण्य करतेहै और मेरी भक्तियोगमे तत्पर होतेहै उन जनोंको लक्ष्मी शान्तरूप मोक्ष करनेंवाली हैं ।

अथजगत्‌मै च्यार कथाहै तिनका वर्णन करतेहैं।

हे प्यारा! जगत्‌मैं च्यार कथाहैं अपकथा १, परकथा२, राज्यकथा ३,हरिकथा ४,सो तीन कथानमें तो सब मनुष्य उलझ रहेहैं वृथा अपनां काल खोतेहैं अपकथा तो येह अपनीं वडाई करतेहें मैनें ऐसैं किया, वहागया, वो लाया

वहदिया, वहलिया १, पर कथा वोहै वानै क्याकिया, वो ऐसाहै, वो भलाहै, वो वुराहै, वाकी क्या वातहै २, और राज्यकथा वोहै जामै राजाके घरका जिकर कियाजाय वो राजा ऐसाहै,यह राजा ऐसाहै,याके हाथी घोडा वाग महाल वहुतहै वाके रानी वहुतहै, वामै ऐगुणहै, यामै ये अवगुणहै ३और चौथी हरिकथा है वो हरिजन करतेहै आज कथा ऐसी सुनी, क्या अच्छी वची और आपसमैं कथा वाचतेहैं, चरचा करतेहै, प्रसन्न होतेहै, भजन गातेहै सो चौथी कथा वहुत थोडेजन करतेहैं और तीन कथानमै सव नरनारी मलीन होतेहै वृथा काल खोतेहै जो प्रेमीजन है सो सन्तत सुमरण करतेहैं हरवक्त लौ लगाये रहतेहै।

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममगलसम्वादे सर्वशास्त्रनका च्यारप्रकारके भक्तनका कर्त्ता अकर्त्ताका वोधके हेतु उपदेशका व्याख्यानवर्णनो नाम एकादश प्रकाशः ॥ ११ ॥

अथ जगत्की मूर्खताका वर्णनम्।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! या जगतनै किसीकोभी अच्छा नहीं कह्या ये गुणकों छोडके अवगुण गहताहै देखो रामचन्द्रके राज्यमै एक धोवी था। वानै अपनी स्त्रीकों पीटके घरमैसै निकाल

के पालन करताहै सुख देताहे वाका राज्य कदाचित् नही विगडैगा और जो अन्याय करिकें दु.ख देताहै उसका राज्य कोईकालमैं नष्ट होजावैगा और राजाकौ चाहिये कि जे अपने राज्यमैं श्रेष्ठपुरुष हैं धर्मशीलके धारण करनेंवाले विद्यावान् चतुर अजोग्य लोभसै व्यभिच्यारसै रहित शुद्ध आचरणके रखनेवाले जगत्मैं जिनके श्रेष्ठ कर्मोंकी कीर्ति फैलीहुई होय ऐसे पुरुपनसै हरेक वातकी सला लेनी चाहिये और ऐसेही पुरुपनकों अध्यक्ष यानै हाकिम करना योग्य है और वे हाकिमी पाके साधु असाधुनको परखके क्षोभरहित होके न्याय करैगे और फुरसत पाके सन्तनका सग परमेश्वरका सुमिरण दयाकेसाथ करैगे वेही राज्यरूपी उत्तम गतिकौ पावैंगे और जे अजोग लोभी अन्याई कामी क्रोधी मलिन हैं आचरण जिनके दयाहीन छलसै धनके कुमानेवाले व्यभिचारी जगतमैं जिनकी अपकीर्ति होरही है और वे विद्यावान् चतुर वडे कुलकेभी है तौभी ऐसेनको अध्यक्ष करना योग्य नहीं ऐसे पुरुपनकौं हाकम करनेसैं यह लोक परलोक राजाके दोनू नष्ट होतहैं और राजा च्यारू नीतनकौं धारण करिके राज्य करे साम१, दान२, दण्ड३, भेद४, साम कहा महिमा करदेनी, दान कहा धन देना२, भेद कहा आपसमें फूट करादेनी३ दण्ड कहा सजादेनी४, सो दण्ड तीनप्रकारका है दृष्टि१, वचन२, ताडना३, उत्तम पुरुपनकों राजाकी कुदृष्टिकी

सजा मोतकी वरावर है मध्यम पुरुपनकौ वचनकी ताडना दैर्नी कनिष्ठ जो नींचहै उनकों पिटवाना योग्यहै सो राजाकों चाहिये कि जैसी सजाकै लायक पुरुप हो ऐसी दैंनी उत्तमकौ नीच सजा नै दैर्नी और नींचकौ उत्तम न देर्नी और राजा आलस्य छोडके प्रजाका नित्यप्रति न्याय करता रहे ये प्रथम धर्म है और राजाकों चाहिये कि जे अपनें राज्यमैं श्रेष्ठजन और साधु सन्त है उनकी सेवा करै और जे परम सन्त तत्त्ववेत्ता जिनके सहजके वचन प्रकाशमय योगसिद्ध महापुरुष होवे उनकी सेवा सतसग करे उनके सगसैं राजाका वडा कल्याण होताहै क्यौंकि राजाकी वुद्धि विषयनके सगसैं कुण्ठित होतीहै सो ऐसे पुरुपनके सगसैं वुद्धि तीव्र धारवाली होजातीहै जो कार्य वुद्धिवार्नींसे होसकै तो तरवार नै चलावैं क्यौंकि तरवारचलानेसें (वुद्धिरूपी) तरवार श्रेष्ठहैं ये जो वाहिरके राजा वादशाहहै सो आत्मज्ञानविना अति कगाल इद्रियनके पीटेहुये । विषयनसै ग्रसित परमेश्वरसैं विमुखहैं और जे परमसन्त महायोगी महाभूप शहनशा· भीतरका राज्य करतेहै उनका सग ये वाहरके राजा वादशाह पावैं तो वे कृपा करिके इनकों भीतरकी थोडीसी जागीर वखसै वाके प्रतापसैं इनकी वुद्धि विचारमैं वलवान् होजातीहै वा वुद्धिके वलसै ये वाहिरका राज्य अतिश्रेष्ठ

तासैं करतेहैं और जो वे भीतरका जाकों राज्य देवैं तो वाकों पाके वाहिरका राज्य जो सव पृथ्वीका भी होवै। सोभी तुच्छ मालूम होताहै और वासैं गिलानी आजाती हैं जैसैं ध्रुव, प्रह्लादादि, गोपीचद, भरथरी, वलखवुखाराका वादशाह आदि वहुतसे राजा राज्य छोडके ब्रह्मानदमैं मग्न होगये अजर अमर निर्वाण पदकौ प्राप्त हुये।

अथ च्यारनको परमेश्वरकी प्राप्तिहोना कठिनहै तिनका वर्णनम्।

अनाम उवाच

हे प्यारा! इन च्यारनकों परमेश्वरकी प्राप्ति होना कठिनहे राजा १, स्त्री २, पण्डित ३, मूर्ख ४, सो राजा तो भोगनमैं लोलुप होजातेहैं परमेश्वरको नहीं खोजते और स्त्री भोगस्थान है याको अपने शृगारसेंही फुरसत नहीं होती और उत्तम संग मिलना कठिनहै और पण्डित विद्याके अभिमानसैं अन्ध होजातेहैं किसी महात्माका संग नहीं करते और चौथा जो मूर्खहै वाको विवेक होना कठिन है और जो इन च्यारनको ईश्वरकी प्राप्तिका ज्ञान होजावे तो राजा, पण्डित, स्त्री, इनका प्रताप वाहिर वडा अधिक फैले क्योंकि ये वाहिरके व्योहारोंमें वडे प्रवल हैं और हे प्यारा! जो राजा होकर कृपण होताहे और अपने धर्म मजहवसैं वाकिफ नहीं होता तो वाका वहुत वडा

अकल्याण है राजा होके ब्राह्मण पण्डित होके त्यागी होके ये श्रेष्ठ आचरणको धारण नै करै तो इनका जन्म निष्फल है क्यौंकि सामर्थ होके हीन् होतेहैं सो राजसी लोगोको चाहिये कि सात्विकी पुरुषोकी सेवा सत्सग करै जासो उनकी राजस शुद्ध बनी रहैं और परमेश्वरका मार्ग नै रुकै क्योकि सतोगुण तो गुणातीत जो तुरीयाहै ताकेसगसै शुद्ध रहतीहै और रजोगुणका संग पाके मलिन होतीहै और रजोगुण सतो गुणके सगसै शुद्ध रहतीहै और तमोगुण रजोगुणसै शुद्ध रहतीहै केवल तमोगुण अज्ञान क्लेश दु ख को लिये हैं और ये सब गुण न्यूनाधिक करिके आपसमैं मिलेहुये हैं। हे प्यारा !जो राजा भोगनमैं अन्ध होजावै और श्रेष्ठ जन वाके राज्यमैं क्लेश पावै तो वा राजाका वडा अकल्याण होताहै और जो मनुष्य धन पाके श्रेष्ठ जनोंकी सेवा करतेह उनके वहुतसे कष्ट निवारण होतेहं सूलीकीसजा काटेपर टल जातीहै और जो दान देवे तो सुकचके कंजूस-पनैसैं नै देवे दिल खोलकै दानदेतो दानका फल पाताहै हे प्यारा ! देश काल पात्र विचारके दान देवै, देश कहा शुद्ध पवित्र लोगोंके पास रहनेवाला होवै अथवा एकात पवित्र भूमिमै तपके हेतु रहनेवाला होवै काल कहा जा समयमें आवश्यक वस्तु विना पीडिन होवै जैसैं क्षुधा आतु-रकों भोजन और पात्र कहा हरि गुरु भक्त धर्मनीतिका

अपने पतिका बतायाहुवा मार्गमैं परमेश्वरका भजन करै और पुरुष अपनी एक स्त्रीपैही नीति राखै व्यभिचारसैं बचै माता पिता बालबच्चे पाडोसी सबकौं यथायोग्य बरतै पुत्र सोलै वर्षका होजावै जब कठोर वचनभी नै कहै मित्रभावसै समझावै अपनी स्त्रीको या लोक परलोककी शिक्षा देता रहै सबसे मित्र भावसैं कोमल वचन बोलै दुःखमैं घबरावै नहीं सुख सपतिमैं क्षमा धारण करै अपनी मरजादसैं ज्यादा आपकों नै समझै आपसै दूसरेका भला देखै सबका आदर करै दया राखै हरिकथा सुणै बाचै विचारै शुभगुण धारण करै और कृतघ्नी नै होवै दूसरेनै अपने साथ नेकी करी ताकों नै भूलै कोई नशेके आधीन नैं होवै न मेलमैं नैं मिलै जगतको और परमेश्वरकों जो बात अच्छी लगै ताका अग्र सोचै अपना वक्त हासी ठट्ठामै खराब नैं खोवै गुरूकी सेवा सत्सग करै अपने उद्यमके कर्मनसैं फुरसत पाके परमेश्वरका भजन गुप्ततासैं करै दान पुण्य परमेश्वरके निमित्त फलवाछा छोडके देवै जसमें रुचि राखै सब व्योहार अपना शुद्धतासैं वरतै ॥ ये श्रेष्ट गुण पुरुषनके भूषणहै और जे पुरुष परमेश्वरके निमित्त तन मन प्राणका सजम करतेहै और अजोग भोगनका त्याग करतेहै उनके मन इद्रिया जो पहिलैं शत्रु थे सो मित्र होजातेहै उनके सब भोग पीछे दिव्य होजातेहै पश्चात् वे दिव्य भोगनकों भोक्तेहुये परमेश्वरकी

भक्तियोग करिके तद्रूप होजाते हैं कहा योगाभ्यास करिके अपना जीवात्माको परमात्मामै लय करतेहै वे पुरुष या लोक परलोक दोनूनके भोग भोक्तेहैं जिनके च्यारूं आश्रम शुद्ध होतेहै वे समाधिसिद्ध महायोगी परमपुरुष सब प्राणी मात्रके सुखदु ख अपनेंसम देखके सबसै मित्रभाव करिके सबकों सुखी चाहतेहै और समदर्शी है सबको ब्रह्मभाव करिके देखतेहै ऐसे महापुरुष कर्म नही करै तो दोषकेभागी नहीं होते और जो करैं तो कुछ अधिकता नहीं। वे पाप पुण्यसै रहित है उनकी समाधि उत्थान एक होजातीहै जीवनमुक्ति देहसहित विदेहहैं बालवत् निरहकार लीला करतेहैं ये रहस्य योगसमाधि सिद्ध महापुरुषोंकी होतीहै वाचक ज्ञानियोंकी नहीं होती।

अथ जे मनुष्य दम्भी झूठे जती बनतेहै तिनका वर्णन।

मगल उवाच।

हे महाप्रभू! बहुतसे भेषधारी कामदेवके मारनेके अर्थ केईतो शिश्न काटतेहै, केई शिश्नकी खालमै कडी पहिरातेहैं, केई शिश्नके वल देदेके उसकी नस मारतेहै, केई गाजा चरस पीके कामदेव मारतेहै सो इनका हाल कृपाकरिके वर्णन करो।

अनाम उवाच ।

हे प्यारा ! ये सव दम्भी पाखंडी है शिश्नके काटनेसैं नस मारनेसैं क्लीव यानें नामर्द होजातेहैं और ज्यादा जती रहनेसै भी क्लीव होजातेहै, कामदेव तो मनसै प्रगट होताहै इसहेतुसै याका नाम मनोज है और ये मनका मथन करताहै तासैं मन्मथ नाम है और जो गाजा चरस पीके कहतेहै कि हम याको पीके कामदेव मारतेहैं सो झूठेहैं जो कामको जगानेंवाली जीभ है वासै तो अनेक रस खातेहैं ओर सुलफा पीके कामदेव मारतेहैं तो कामदेव वडा पोच ठैरा जो चरस पीनेसैं मरजायगा महादेवनैं तो सव विश्वका जहर पिया जवभी कामदेव नहीं मरा मोहनी स्वरूपकों देखके भगेडोले ओर ये सुलफा पीके काम मारतेहैं देखो वहुतसे गृहस्थीलोग पीतेहैं और जहां ये चरस पैदा होताहै वहा तो सर्दीके सववसै सवही पीतेहैं कोई २ नही पीता होगा सो ये कहना इनका झूठाहै कि चरस गाजा पीके कामदेव मारतेहै ये तो दुर्व्यसन हैं खोटी सोहवतका फल है ओर हे प्यारा ! जो किशोर अवस्थामैं भेष लेके जवहीसे जितेन्द्री रहतेहैं वल वीर्य शरीरमैं वधातेहैं और वा वलकों पाके आसन प्राणायामके कर्म नही साधते तो उनका वल वीर्य वृथाहै नैं गृहस्थाश्रमके काममैं आया नैं परमेश्वरके काम आया रोकनेका वृथा अहकार करतेहैं

सनातन मार्गकों छोडके कुमार्गमै चलतेहैं तरुण अवस्थामे तो गृहस्थाश्रम धर्ममै यथायोग्य अपनी स्त्रीको वीर्यदान देके पीछे जितेंद्रीय रहके अपने बल वीर्यसैं सद्गुरुकी आज्ञा लेके आसन प्राणायाम योगके अगनका साधन करै सोई अतिश्रेष्ठ जती है लालदास महापुरुष कहतेहैं "बगलमे रोटी सगमैंनार लालदास जब रह करार" सो हे प्यारा जब ये शिश्नोदरकी आग शान्त रहै तब भजनमै मन लगताहै और कामदेव तो अष्टप्रकारसैं व्यापताहै ।

दोहा–नारी सुमरन श्रवण पुनि, दृष्टि भापणा सोय ।
गुह्यशारता हास्यरत, बहुर स्पर्शै कोय ॥ १ ॥

सो हे प्यारा ! कामदेव तो दुरासाध्य है ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, गुण इंद्रिय आदि जबतक स्थूल शरीरहै । तबतक बनेही रहतेहैं नाश नही होते परन्तु ये सुमरण भजनके प्रतापसै शान्त रहतेहैं और योगकी सिद्ध अवस्थामै तो सबश्रुतीसहित लय होजातेहै वो अकहपदहै जबतक योगमार्गसैं ब्रह्मानन्द प्रगट नही होवै तबतक अभिलाषा भोगनकी मरे जबतक बनीही रहतीहैं गीतामैभी मैनै ऐसा कह्याहै ।

श्लोक–विषया विनिवर्तंते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्ज्यं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ इति ॥

अर्थ–आहारकरिके रहित जो प्राणीहै, तिनके बाहिरके विषय निवर्त होजातेहै परन्तु विषयनकी अभिलाषा अर्थात् वासना बनी रहतीहै नष्ट नही होती विषयनके रसकी वासना परमश्वरकी प्राप्तिसैं निवर्त होतीहै अन्न जल छोडनैसैं नही होती सो हे प्यारा! जगततो विषयानन्दमैं मग्नहै हरिजन भजनानन्दमै मग्नहैं जीवन्मुक्त ब्रह्मानन्दमैं मग्नहै विषयानन्द अलपहै भजनानन्द विशेषहै ब्रह्मानन्द नित्य सदा एकरस है सो हे प्यारा! ये मन आनन्दमैंहीं रहताहै विषयानन्द जब छूटैहै तब ब्रह्मानन्द प्राप्त होजाताहै विषयानन्दसै मन तृप्त नहीं होता जो राजा होके भी मनवांछित भोग भोगे तोभी ये मन तृप्त नहीहोता भोगनकी वासनामैं कगालही रहताहै क्यौंकि ये मन अपना ब्रह्मानन्दसै विछटाहुवाहै अनित्य शरीरके भोगनमै कैसैं तृप्त होवै ये तो ब्रह्मानन्द जो नित्यस्वरूप है तामैं तृप्त होवैगा जैसै कोई चक्रवर्ती महाभूपका पुत्र अपने अधिकारसें नष्ट होगयाहै और वाकौ एकगामकी विस्वेदारी मिलै तो वासैं वो कैसैं सन्तुष्ट होवै वो तो अपनी महिमाके स्थानको पाके तृप्त होवैगा ऐसैं जानो।

प्रश्न॥ हे स्वामिन् बाजे २ मनुष्य शब्दको जड बतानेहैं। याका व्याख्यान कृपाकरिके कहो।

उत्तर–हेप्यारा! जडतो कोई वस्तु नहींहै क्योकि जड वो कहलाताहै जोबदलाव नहीं खाताहै सो सब वस्तु बदलाव

खातीहै इसहेतुसै जड कोईभी नहीं हा जडसज्ञा तो है याने जडसीदिखाई देवै और जड नहींहै और शब्दको जड कहना तो महामूर्खताहै शब्दकातो परमचैतन्य ओंकारस्वरूप सब सृष्टिको रचनेवाला सबकी आदिमैं है परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरी ये याके स्थानहै और शब्दसैही वेद शास्त्र पुराण अनेक ग्रथ कर्माकर्म धर्माधर्म गुरु शिष्य उपदेश आदि राजानके राज्यके हेतु न्यायके कानून सब जगत्का व्योहार कहना सुणना सब याहीसे होतेहैं और हरेक जगे कथा-नके प्रसगनमैं वर्णनहै कि परमेश्वरकी आकाशवाणीसैं अवतारआदि प्रगट हुयेहैं और साख्यशास्त्रमैं ऐसा कथनहै कि प्रथम परमेश्वरका ये शब्द हुवा कि मै एकहू बहुत होजाऊ और शब्दसैही मायाब्रह्मका कथनहै और जड चैतन्यताका येही निर्णय करताहै शब्द सबसैं आदि परम-चैतन्य प्रगट परमेश्वरस्वरूप है और जासे शब्द प्रगट भया वो चैतन्यका चैतन्य शब्दातीत है जे शब्दको जड बतातेहैं वे महामूर्खहै ।

अथ सक्षेपतासैं महापुरुष भक्तनकी नामावली वर्णनम् ।

मगल उवाच ।

हे हरिजनप्यारामित्रहो ! परमेश्वरके पहिलै बहुतसे भक्त ब्रह्मऋषी, देवऋषी, राजऋषी, हुयेहैं । उनका व्याख्यान पुराणनमै वेदव्यासजीनैं वर्णन कियाहै सनक, सनन्दन,

सनातन, सनतकुमार, शिव, वशिष्ठ, विश्वामित्र, नारद, वाल्मीक, भुशुण्डी, अंगिरा, पुलह, पुलस्त, भारद्वाज, भृगु, गौतम, च्यवन, वामदेव, देवल, कपिल, पारासर, पुडरीक, दधीचि, व्यास, अगस्त्य, अत्री, अष्टावक्र, जडभरत, मार्कंडेय, जमदग्नि, शुकदेव, शुक्राचार्य, शुक, शौनक, अम्वरीष, भागीरथ, भीष्म, रुक्मांगद, प्रह्लाद, ध्रू, हनूमांन, विभीषण, हरिश्चद्र, मोरध्वज, राजा नल, वलि, गजेद्र, अंगद, उद्धव, अर्जुन, विदुर, व्याध, गीध, अजामेल द्रौपदी, शवरी, और मैणावती, मीरा, कर्मा, गनिका गोरख, गोपीचद, भरथरी, सजना, सेना, नामदेव, नरसी, काल्ह, कूवा, धन्ना, घाटमरंका, वकासेऊ, सम्मन, सुलतान, मनसूर, शमशतवरेज, वाजीद, फरीद, हेतम, कवीर, नानक, दादू, पीपा, लालदास, रैदास, धर्मदास, सूरदास, तुलसीदास, गरीवदास, चरणदास, सुदरदास, रजव, राधास्वामी, परनामी, आदि जिनके वारपारनहीं अनन्तहैं पहिलेहुये अवहै और होवैगे उनकों मेरी वारवार अहर्निशि प्रणाम है। हे प्यारे हो! ये तीन महापुरुष परम संत महायोगेश्वर अव हालमे प्रगट हुयेहैं गरीवदासजी छुडाणी वाले, कक्करमहाराज और वेनामी महाराज।

अथ कक्कर महाराजका जीवन चरित्र वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे प्यारे मित्रहो ! कक्करनाम बलवान शरीरकाहै। महा-
राज गरीबदासजी हरियाणामै छुड्याणीग्राममै प्रगट हुये
वा ग्रामके पास मिलकपुरग्रामहै वाके कक्कर महाराज
लंबरदार थे उनका गंगाराम नाम था वासमय यवन बाद-
शाहनका राज्य था राज्यका बन्दोबस्त इनका ठीक नहींथा
लूट खोस बहुतसी होतीथी सो गंगारामजी धाडेतीनमै
नामजादीक थे सो येभी तीस चालीस सवारनके संग धाडा
मारते थे और गरीबनको नही सताते थे धनवानोंका घर
लूटतेथे और हरिकी भक्तिका अंकुर इनके हृदयमैं जभीसें
था ब्राह्मण साधु सन्तकी सेवा करतेथे। एकरोज अपने
ग्रामकी थडीमैं बैठेथे जब बसन्तऋतुमै कुछ मेह वर्षनें
लगा वासमय गुप्त भेससै महापुरुष एक धौलीचादर ओडे
पावनमैं पगरखी पहिरैंहुये वर्षादेखके इनकी थड़ीकी चोला
लीनमै भीतके सहारै जाके खडे होगये उनकों गंगारामजीनै
भीतर बुलाये परन्तु वे कुछ नेबोले और भीतर नहीं गये
बाहिर चोलालीनमैंही खडेरहे। थोडी देरके बाद मेहकी
बूंद ठैरगई तब वे महापुरुष चलेगये और जो गंगाराम-
जीके पास मनुष्य बैठेथे सो भी चलेगये उस समय

एकमुहूर्त दिन था जब गंगारामजीके मनमैं विचार हुवा कि ये मनुष्य कोनथा जाको हमनैं भीतर बुलाया और वो नही आया कोई भेदी मनुष्य तो नही था तब गगाराम थडीसै बाहिर आके ग्वालियानसैं पूछा कि हे बच्चेहो एक मनुष्य गौरवर्णका सपेद पछेवडा ओडे तुमनै देखाथा? जब उन ग्वालीयाननै कहा हां हमनैं देखाहै जोडपै पचवीरनका चौतरापै बैठेहै तब गगारामजीभी उतीकों चलेगये जाके देखैं तो चादरकों चौलडा करिकै वाके ऊपर आसन जमाकै बैठेहै जब इन्होनैं सन्त समझके ढोकदीनी और हाथ जोडकै अर्ज करी कि महाराज जैसी रसोई फरमावैं ऐसी हाजर करैं पक्की कच्ची या सीधा सामान जब उन्होने कहा सामान लावो तब गंगारामजी झटपट घरकों गये जाके आटा गुड घृत लिया च्यार छाणा बगलमैं दीया और चुपकेस रस्तेमैंसैं अग्नि लेके महाप्रभू दीनदयालके पास गये उन्होंनै अगोछामै आटा लिया और जोडकेपास सिल धोके आटा ओसना उसीमै गुड घृत गेरलिये गंगारामजीनै जमीन साफ करिकै छिडका देकै छाणा फोडके जगरा लगादिया आच गेरदीनीं और महाराज कृपानिधांनसै अर्ज करी कि स्वामी मैभी भोजन करि आऊ जब उन्हौनें कह्या हा तब गगारामजी घर जाके भोजन करिके महाराजकेपास वापिस आये वे महापुरुषभी भोजन करिके आसनपर बैठेथे गंगारामजीभी ढोक देके बैठगये तीन

घटा बैठेरहै आपसमैं बोला चाली नहीं हुई चादनी शुरू वैशाखकी खिली हुईथी जब गंगारामजीनै विनयपूर्वक दीन वचनोसैं हाथ जोडकर अर्ज करी कि महाप्रभू मुझकों परमेश्वरके मिलनेका मार्ग बतावो तब परमसन्त थोडी देरके बाद बोले कि हम एकचीज मँगावैं तुम लावोगे जब गगारामजी बोले हा स्वामी जो मेरेपास होवैगी और उपाय-सै मिलैगी तो मै जरूर लाऊगा उन्होंनै कह्या एक तरवार वाड (साण) लगीहुई तैयार होवै सो लावो तब गगाराम-जीनै कह्या जो हुकुम और ये घरकों आये रस्तेमैं इन्होंने विचारकिया कि मैंनै तो इनसैं परमेश्वरका मार्ग पूछाथा और इन्होंनै तरवार क्यों मँगाई क्या ये मेरा शिरकाटैगे कोई भेदी दुश्मन तो नहीहैं पीछे मनमै विचार किया कि परमेश्वरके नामके ऊपर जो ये तेरा शिरभी काटै तो कुछ चिन्ताकी बात नहीं क्योंकि धनके निमित्त धाडेमैं मरनेसैं ये मरना अच्छाहै क्यौंकि परमेश्वरके निमित्त है सो ये निश्चय करिके घरजाके अपनी तरवार लेके चुपकेसे चले आये और तरवार महा-योगेश्वरके सामनैंरखदीनी जबउन्होंने कह्या इसकों म्यानसैं बाहर करो तब गंगारामजीनें बीडा खोलकर नंगीकर महा राजकी तरफ मूठ करिके धरदीनी वा समय शुरू वैसाखकी अर्द्ध रात्रीकी चांदनी शिरपर खिली हुई थी जब महाप्रभू नैं उनके अन्त.करणकी परीक्षा करिके पूरी दृढता

देखकै योगमार्गका उपदेश किया आसन प्राणायाम ध्यानका भेद बताया और कह्या कि या मार्ग होके धीरजता और गुप्तताके साथ अपने आपेकों आप मारले कोई क्लेश रस्तेमें होय तो वाकों सजमसै निवारण करिके अभ्यासमें लगाईरहना और सब काम काज घरके ससारकेसे अलग होके अपने ग्राममैं एकान्त स्थानमैं निवास करना और वाहिरका कुछ स्वाग नैं बनानां सबसैं हिलामिला रहना परन्तु घरका कुछ काम न करना इसी अभ्यासके साधनमें लगा रहना युक्त आहार विहारके साथ जीवतैही अपने मरनेकी सैल देखना कुम्भकसैं श्वासका उर्द्धगवनको देखताहुवा क्लेशोंकों शान्त संजमसैं करताहुवा सहज २ धीरजताके साथ अपने मरणको देखना जो मार्गमैं आनन्द क्लेश होवै सो अपने दिलमें गुप्त रखनां जब तुम निजस्थानको जा पहुचोगे कहा कुम्भकमें शान्त सुषुप्ति होजावैगी और थोडा वहुत कालका प्रमाण कुछ श्रुतीको नैं रहैगा आपेमैं गरगाप होजावैगा जब सब कुछ गुप्त प्रगट रोशन होवैगा लगनमै लगाही रहना छोडनां नहीं मरजाना जासे मरने जीनैंका सब हाल मालूम होजावै और तू वोही होजावैगा जो कुछ है। ये उपदेश देके पीछे गंगारामजीको शीखदीनी और कह्या कि अपनी तल-वार लेतेजावो जब गगारामनै घर जाके विश्राम किया और प्रातःकाल अपने वेटे भाईयोंसैं कह्या कि हे भाईहो!

तुम हमारी वात सुनो जितना तुमसैं घरका काम होसकै उतना करो हमारे भरोसै कोई काम मत करो हम तुम्हारा कुछभी काम नहीं करैंगे ये कहके अपनी च्यारपाई विस्तर लेके ग्राममै मंदिरके नीचै कोटड़ीथी वामै डेरा जा लगाया वा समय गंगारामजीकी उमर पचासवरसकी थी और वे महापुरुष फिर तीसरेदिन जोडपर आये तव ग्वालयाननै आके गावमै कही जव गगारामनै सुणी तव रात्रिकों उनकेपास गये जव महापरुपनै इनकी और दृढता करदीनी तापीछे वे महापुरुपोत्तम शरीर करिके नहीं मिले और गंगाराम उस कोटरीमे अभ्यास करतेरहे और एकात जंगलमै भी चलेजातेथे परन्तु स्थान कोटरी छप्परमैही रक्खा और घरसै दोनूं वक्त रसोई आजातीथी पाणीकी जेगड़ घरकी स्त्री आदि भरजातीथी उसी साधनमैं उसी जगै वाईसवर्ष रहे परमशान्त निर्वाण समाधि सिद्ध हुई पीछे घरसे उठके उत्तरदिशाकी वारहवर्ष सैलकरी वाद गदरकी साल सम्वत् १९१४का मैत्रजकी तरफ आये कोसीकसवामैं गोमतीके पास टीवापै रहे वहा मकान कच्चे वनगये सो वहा गुप्ततासै रहतेरहे एकसमय पांच सात नशेवाज इनके पास आये उनमैंसै एकनै पूछा कि वावाजी आपका क्या नाम है तव इन्होंनै कह्या प्रभू क्या वतावै जव नशेवाजोंनैं कह्या नामतो सवका होताहै आप क्यो नही वतावै

तव महाराजने कह्या कि हे प्रभू पहिलै तो गगाराम कहवो करैहा पीछै चित्तभगभी कहनेलगे और वावलाभी कहतेथे अव आपकी मरजी होय सो कहो उन नशेवाजोंमैंसे एक वोला कि इनका नाम कक्कड़खसो क्योंकि ये लंवे चौड़े वडे जवर आदमी हैं सो इनका शरीर गौरवर्ण लम्वाथा और शरीरमे अस्थि वहुत भारीथे वडा वलवान् शरीर था नै मोटे थे नै दुवलेथे। इति।

अथ महायोगेश्वर परमसन्त वेनामीजीका जीवन चरित्र वर्णनम्।

दोहा—ब्रह्महिके हम वालके, ब्रह्म हमारी जात।
ब्रह्महिसो उत्पन्नहै, ब्रह्महिमांहि समात॥

वेनामीजी महाप्रभू कोसी कस्वाके लम्वरदार थे रणजीत इनका नाम था ये वडे चतुर प्रवीण थे ओडपासके गावनमै नामीथे परमेश्वरकी भक्तिका इनको प्रेमथा मादिरमै कथा श्रवण किया करतेथे ब्राह्मण साधूनकी सेवा करतेथे और ओडपासके वहुतसे गॉवनका पंचायती फैसला करतेथे घरके आसूदे थे एक ब्राह्मणसै नो अध्याय गीता को पढेथे वासै महामत्रका उपदेश लिया गुरु मानके सेवा करतेथे जव उस ब्राह्मणनैं कह्या इस महामन्त्रका तुमसैं होसकै इतना नित्य जप कियाकरो तुम्हारे सव काम सिद्ध होवैंगे तव रणजीतजीका महामन्त्रमैं प्रेम वढगया पहरके

तडके उठके शरीरका सवखटका स्नानआदि करके जवही सैं महामन्त्रका जप करतेथे दिनके दोपहरतक एकलक्ष नाम नित्यप्रति लेतेथे और इनकी ब्राह्मणोमैं वहुत प्रीति थी उनसव यात्रा पर्वनमैं श्रद्धासहित भोजन करातेथे और साधु सन्तनकी सेवा करते थे एकसमय निम्बार्क सम्प्रदायके आचार्य वैष्णवनके साथ साहूकारनके गुरू साहूकारनके वुलायेहुये कोसीमे आये जव किसी महाजनके साथ रणजीतजीनेंभी झॉकी कीनीं तव इनको मनमे प्रेम उपजा कि मैभी इनका शिष्य होके उपदेश लेऊं। वे साहूकारनके गुरू सखीभावमै रहतेथे उनसैं रणजीतजीनै किसी साहूकारकी मारफत अपना हाल जारी कराया तव उन्होनैं उनकी श्रेष्ठकीर्ति सुनकर शिष्य करनेकी हामल भरलीनी जव रणजीतजीनै इनकी मण्डलीकों रसोई जिमाई और श्रद्धासहित भेट करी तव उस सखीभाववैष्णवनै इनसैं इनके सुमरणका हाल पूछा के मानसीपूजन श्रीकृष्ण राधाराणीका सखीनसहित उपदेश किया और वे कुछकाल रहके चलेगये पीछे रणजीतजी वैसैही पूर्ववत् पहरके तड़के उठ स्नान करिके एकान्त स्थानमे मानसी पूजनका भीतर अन्त.करणमे अभ्यास करने लगे जव थोडेही कालमै इनकी ऐसी प्रीति वढगई कि रस्तेमें नेत्रनके आगे राधाकृष्णकी मूर्ति दीखनेलगी तव तो मनमे ये वडे मग्न हुये

और मनहीमनमै वडा आनन्द मान्या और या हालमै वडे प्रसन्न रहनेलगे और गानविद्याम लय होके, वडे ऊंचे स्वरोसे भजन गातेथे और मनसै विचार करतेथे कि। ये जो मोको दिनमै आखनके आगे भगवानकी झाकी होतीहै। ये वात मेर मनकी कौनसे कहूं कोई प्रेमी मनुष्य मिलै अथवा उपदेश देनेहारे गुरूमहाराजा मिलै उनसैं अपनें मनका हाल कहूं कोई दिनके वाद एक आदमी वोला कि भगतजी एक महात्मा गोमतीके पास रहतेहै उनकी तुमनैं झाकी कीहै कि नहीं जव रणजीतजी वोले हमनैं तो नही कीनीं अव करैंगे तव रणजीतजी कक्कड् महाराजके पास गये और दण्डवत् करिके नैवेद्य निवेदन किया और पास वैठगये झाकी करिके वडे प्रसन्न हुये कि महायोगेश्वर कक्कड महाराज नेत्र मीचे अति धीरज परमशान्तस्वरूप स्थिर वैठे देखे पीछे कक्कडमहाराजनै रणजीतजीके हाथसै कुछ थोडासा नैवेद कहा मिठाई लेके भोजन किया वाकीकी और मनुष्यनकों वाटीगई पीछे रणजीतजीके मनमें विचार हुआ कि इनसे अपनें मनका हाल कहना योग्यहै क्योंकि ये अतिधीरजवान शान्तस्वरूप है जव एकान्त समय पाके हाथ जोडके अपनें मानसी ध्यानका हाल महाराजके सामनै वर्णन किया कि महाप्रभू मै मानसी ध्यान किया करताहू सो हे स्वामी मोकों श्रीकृष्णकी दिनमैंभी कईदफै आखनके आगे झाकी

होतीहे तब महाराजनै इनके वचन सुनकर कह्या कि तेरही मनकी भावनाहे इतनी कहके चुप होगये जब रणजीतजीनैं मनमै विचार किया कि मैतो यामें मग्न होरह्याहूं इनकै तो कुछ भावैंभी नही तब रणजीतजी कक्कड महाराजकी सेवा चाकरी करनेलगे मोका पाके अर्ज करी कि हे स्वामी परमेश्वरका मार्ग मोको कृपाकरिके बतावो जब उन्होने योगमार्गके अभ्यास करनेका उपदेश दिया तब रणजीतजी युक्त व्योहारोके साथ महाराजके पास और एकान्त स्थानोंमै आसन प्राणायाम धारणा ध्यानका अभ्यास करते रहे और महाराजका संग करतेरहे। अपनी शुद्ध वृत्तिनसै शुद्ध व्योहार वर्ततेरहे सो पहिला मांनसी ध्यानके साधनसै मनपैतो सवार थेही वर्ष च्यारेक साधन किया पीछे ध्यानमै ज्यादा वृत्ति खिचगई और शरीरकी ऊमर पचास वर्षकी होगईथी सम्वत् १९१९ का था तब महाराज कक्कडके स्थानमैही शुरू मगसिरके महीनेमै सिद्धासन लगाके रातदिन अभ्यासमै वहाई रहनेलगे ऐसैही डेडमहीना होगया जब योग सिद्ध हुवा तब कक्कड महापुरुषनै हुक्म सैनवैनसै दिया कि अब मौजहै जब रणजीतजी रण जीतके वहासै उठके श्मशानमै तिवाराकी कोटडीमें जा निवासकिया वो तिवारा जंगलमै एकान्त था तब लोगोंनै कह्या ये तो बावला होगया रोटी पाणीकी सेवा घरसैही होतीथी पीछे कौसीसै तीन कोस उरैधैगावहै वहां आरहे जंगलमै ग्वालियानमै खेला

करतेथे पीछे सम्वत् १९२१ के श्रावणके महनिमैं अलवर शहरमैं पधारे जव मुज मगलको दीदार हुवा तव शरीरकी ऊमर वीसवर्षकी थी सो सव निजहाल पूर्व चौथाप्रकाशमं कह्याहै और मैनैं महाराज दोनूनसे समैं पाके अरज करीथी जव उन्होनैं निज मुखपकजसैं सव हाल अपना पिछला वर्णन किया सोई मैने तुम्हारेवास्तैं वर्णन कियाहै पहिलें अलवरमैं वेनामीजी महाराज आये तव विष्णुदत्त पण्डितके पिताकी छतरी वगीचामैं निवास किया जो मदारघाटीके नीचेहैं जव सत्संगीयोंनैं उनसैं उनका नाम पूछा तव वे वोले कि हे प्यारेहो ! नाशवान् शरीरका क्या नाम वतावैं कोईभी नाम नहीं जव एकनें कह्या येतो वेनाम हैं तवहींसैं महाराजका नाम वेनामी प्रसिद्ध होगया पीछे १९२५ की सालमैं श्रावणके महीनेमैं भक्तनकी प्रार्थनासैं भूरासिद्धके वारेमै पधारे श्रावणके महीनेंसैं माघका महीनातक तो अलवरमै निवास करतेथे और फागणशुरूसैं आपाढ सुदीतक व्रजमें डडोला लालपुरग्रामके पास है तहा रहतेथे सम्वत् १९२९ का श्रावणसुदी तीजको महाराज वेनामीजीनें देह छोडी पीछै सत्सगीजन कक्कडमहाराजको कोसीसो अलवर भूरासिद्धमैं लाये सम्वत् १९३० के श्रावणके महीनेमें आये सात महीना कक्कडमहाराजका शरीर रह्या फागणसुदी चौदश शिवरात्रीको कक्कडमहाराजनें देह छोडी ।

अथ शिक्षा उपदेश सवसज्जनोंकों वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे प्यारा मित्रहो ! या जीवात्माका सगा कोईभी नहीं केवल ईश्वर सद्गुरु साधुसन्त है सिवाय इनके और सव डुवानेवाले है पहिले सन्त होगये उनके कहेहुये ग्रंथ वचनविलास पढते सुणते रहो और जो हालमैं वक्तके सच्चे सत्गुरु महायोगी निरपक्ष ज्ञान विज्ञान सहित जिनके सहजके वचन विलास प्रकाशरूप अन्त.करणमैं प्रवेश करनेवाले भरम अज्ञानके छेदनेवाले ऐसे जहाँ प्रगट होवैं तहां जाके सेवा सतूसंग करिके अपने निज वोधका कार्य सिद्ध करो उनके सामने अपनी वुद्धिकी चतुराई पेस मतकरो प्रेमसै उनकी रहस्य देखो और किसीसै वादविवाद मतकरो परमेश्वरके जनोकों झगडा करना नहीं चाहिये वाद विवादसै वचै गुरूकी सेवाकरै गुरूनाम वडेकाहै और जो सव तरह वडा होय सो सद्गुरु कहलाताहै अभ्यतर ब्रह्मविद्यावान होय शीलवान ज्ञानवान ध्यानवान योगसमाधिमैं सिद्ध होय सो सद्गुरुहै शिष्यकों चाहिये कि वडे दरजेका गुरुकों खोजै उनका सतूसंग सेवा करिके अपने परलोकका कार्य सिद्ध करै । हे मित्रहो ! जव अनेक जन्मोका शुभकर्मनका फल उदय होवैगा और परमेश्वरकी प्रेमभक्तिका विरह वहुत वटजावैगा तव सव गुरुनसों पीछै सद्गुरु नरहरि-

स्वरूप सर्वगुण संपन्न योगसिद्ध महापुरुष परमसन्त मिलैंगे जब सब कार्य सिद्ध होवैंगे छोटे अधिकारके गुरूनकी सेवा सत्सगसैं कोई २ शिष्यका अन्तःकरण शुद्ध होजावैगा तापीछे सद्गुरुका संग पाके रग मजीठी-चढैगा। देखो धुपेहुये वस्त्रपैं रंग चटताहे जो मैलसे भराहै उसपै नही चढता वामैं तो मैलका रग चढरह्याहै जैसै जमीनकों पहिले किसान जोत देदेके बाकी सब आट-खूंटडी निकालकर नरम करलेताहै तापीछै समय पाके बीज बोताहे वो बीज बडी प्रबलतासै उदय होताहै ऐसैहि अपने अन्तःकरणकी पहिलैं शुभकर्मन करिके शुद्धी करै तापीछै सद्गुरुका सग पाके परमेश्वरका प्रेम बढताहे जब सद्गुरुके वचनोकी सैन समझताहै। हे प्याराहो ! ज्ञान-रूप वचनको सब सुण २ के चलेजातेहैं शब्दका भेद पाना हरेक मनुष्योंका काम नहींहै कोई उत्तम संस्कारी शूरवीर ग्रहण करैगा जो सच्चे पूरे गुरूका प्रियपुत्र है वो शब्दका गूढ तात्पर्यको पहुचैगा महापुरुष योगी उजाला स्वरूप हैं अन्धेरेके लोग उजालेके पास नहीं जाते क्योंकि उजालेमैं उनके कर्म प्रगट होजावैं जासे उनके पास हरेक पुरुष नही जाते और जे जावै तो उनके मन उच्चाटन होजातेहे ठैर नहि सक्ते और जिनके उत्तम सस्कारहैं परमेश्वरके खोजीहै बैठे रहतेहैं और जे छोटे अधिकारीभी सग करतेहे वे बहुतसे मनुष्योंसै श्रेष्ठ हैं जैसें जो पाषाण जलमैं रहताहे

वो शीतलहै बेसक वाके भीतर जल प्रवेश नही करता तोभी जें वाहिरीकी घामसैं तपतेहैं उनसे श्रेष्ठ है ऐसेही मन्द संस्कारीभी सद्गुरुका संग पाके बहुतसी बाहरकी खोटी वृतिनसे शान्त रहते है और थोडेही कालमैं उनके उत्तम संस्कार होजाते हैं ऐसे मनुष्योका या जन्ममैं उद्धार नहीं होय तो वे सच्चे संगके प्रभावसे श्रेष्ठ कलमैं मनुष्य जन्मही पातेरहतेहैं अनेक जन्मनकी सिद्धि करिके अन्तका जन्ममैं च्यारूं आश्रम सिद्ध प्रेमभक्ति करिके होवेगे जब योगमार्ग होके परमेश्वरसै मिलैगे। और महापुरुष योगि योंको वडी सामर्थ्य होतीहै अति छोटे अधिकारीको जो कुछभी लायक नहींहै और उनकी शरणागति जाय आज्ञा-नुकूल रहै। तो वो थोड़ेही कालमै वडा अधिकारी होजा-ताहै उनकी कृपासै योगमार्ग सिद्ध होवैगा जब परमेश्वरसै मिलकर परमेश्वरका स्वरूप होजावैगा सो सब सज्जनोको चाहिये जे जन वर्णाश्रमीहै श्रावक मतके धारण करनेवाले है और श्वेताम्बरी ढूडिया है। च्यारू सम्प्रदायवाले जंगम, जोगी, सन्यासी, गुसाईं, सब पथी भेषधारी है और जितने मजहवी, यहुदी, ईसाई, महोम्मदी, सब ऊच नीच जनोको पहिलै गुरुमुखी होके अपने धर्म मजहवमै रहके सच्चे सद्गुरू वक्तके महाभूप शहनशा, कामिलमुर्शिद, सत्यका आत्मा, पवित्रात्माका खोजै ये सबको योग्यहै उनके विना मिले परमेश्वरकी

खुदाकी गाडकी प्राप्ती नहीं होवैगी उनके मिलनेसैंही निजरूपकी प्राप्ती होवेगी सत्य है हक्क है आमीन सबका सार उसका नाम लैनाहै ।

अथ ग्रन्थ सुणानेकी तथा नैंसुणानैकी आज्ञा वर्णनम् ।

यह सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार ग्रन्थ अतिउत्तम सबका सार है परमश्रुतीका कह्याहुवा परमवेदहै यामैं योगमार्गका विषय है सद्गुरुकी महिमा प्रयोजनहै जेजन प्रेमप्रीतसैं मन-सजम करिकै पढैगे श्रवण करैंगे तिनके सब कार्य सिद्ध होवैंगे और परमबोध हृदयमै उदय होवैगा और जे सद्गुरुका संग पाके साधन करैंगे सो निजस्वरूपकों प्राप्त होवैंगे। यह शास्त्र जो भक्तिहीन होय। नगुरा मनमुखी होय जाकी परमेश्वरमैं प्रीत नैं होय मूर्ख अज्ञानी होय पक्षपातका वादानुवादी होय तिनको श्रवण नहीं करना ऐसे जन सुणकर भड़क जावैंगे और निन्दा करैंगे और जे गुरुभक्त होयँ श्रेष्ठ जनोंके सतसगी होयँ। परमेश्वरके भक्त योगमार्गमैं श्रद्धावान् होयँ शास्त्रोके ज्ञाता पक्षतासैं रहित होंय सार असारका विचार करनेंवाले होयँ तिनको प्रेम प्रीतसे श्रवण करावो सुणनेंवाले सुणानेवाले दोनूंनका सबतरहसै कल्याण ओर सदा आनन्दमंगल होवैगो हे प्याराहो! ये उपदेश याद रखनेके लायक हैं कि मनुष्य